AASHIQANE RASOOL KI 130 HIKAAYAT MA-A MAKKE MADEENE KI ZIYARATEN (HINDI)

आ़शिक़ाने रसूल की 130 हि़कायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें

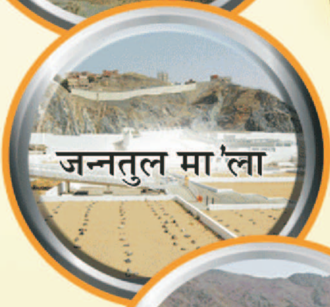

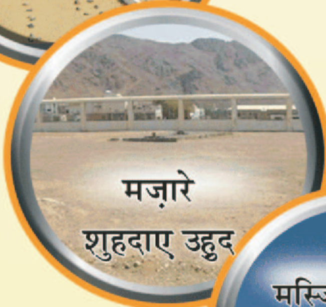

मोअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,
बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।***

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।*

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें

येह किताब **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार कादिरी रज़वी** ने "उर्दू" **ज़बान** में तह़रीर फ़रमाई है। **मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी बेशी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح

ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئِ	ू = وٗ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
म-दनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइर्राना मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुअ़ह मस्जिदे क़ैसैन

मक़ामे इब्राहीम हजरे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे हिरा जबले उहुद मेहराबे नबवी मिम्बरे रसूल

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुतालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइ़र्रानह मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुअ़ह मस्जिदे क़िब्लतैन
मक़ामे इब्राहीम हजरे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे हिरा जबले उहुद मेहराबे नबवी मिम्बरे रसूल

आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें

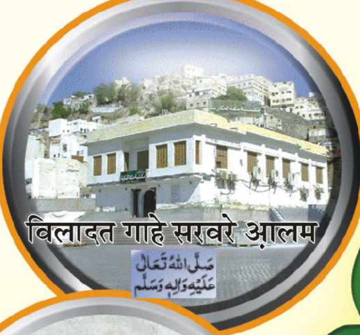

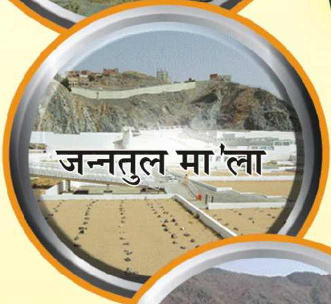

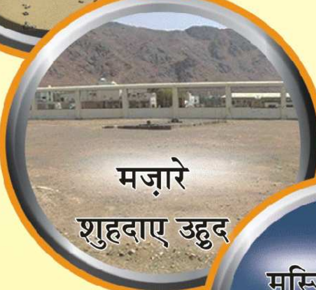

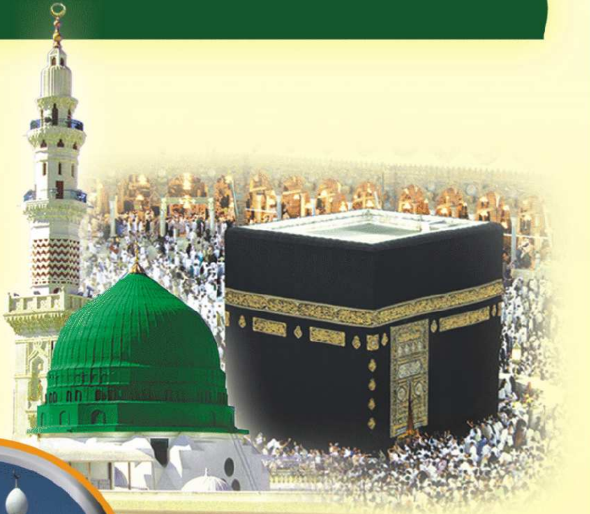

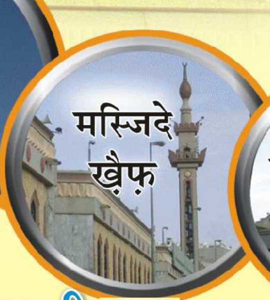

मोअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,
बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नाम किताब : आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात
मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें

मोअल्लिफ़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

सिने तबाअ़त : जमादिल आख़िर, सि. 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद - 1

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁... **देहली** : 421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

❁... **मुम्बई** : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट
ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

❁... **नागपूर** : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने,
मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

❁... **अजमेर** : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार,
स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385

❁... **हुबली** : A.J. मुधल कोम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड,
ऑल्ड हुबली, कर्नाटक - 08363244860

❁... **हैदराबाद** : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी,
हैदराबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	11	﴾27﴿ मदीने में सुवारी से परहेज़	41
ज़ाइरीने मदीना की 51 हिकायात	12	﴾28﴿ ज़िक्रे नबी के वक़्त रंग बदल जाता	42
﴾1﴿ रौज़ए पाक से बिशारत	12	﴾29﴿ दर्से ह़दीष़ पाक का अन्दाज़	43
﴾2﴿ दरे रसूल पर ह़ाज़िर होने वाला बख़्शा गया	13	﴾30﴿ बिच्छू ने 16 डंक मारे मगर दर्से ह़दीष़ जारी रखा	43
﴾3﴿ ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ	15	﴾31﴿ अह़ादीष़ के अवराक़ पानी में डाल दिये मगर...	44
﴾4﴿ देखो मदीना आ गया !	16	﴾32﴿ इश्क़े रसूल में रोने वाले मोह़द्दिष़ की क़द्रदानी	45
﴾5﴿ सब्ज़ घोड़े सुवार	17	﴾33﴿ ख़ाके मदीना की तौहीन करने वाले के लिये सज़ा	45
﴾6﴿ दूसरे का सलाम पहुंचाने की बरकत से दीदार हो गया	18	﴾34﴿ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रम से बाहर जाया करते	46
﴾7﴿ ह़ाज़िरीन ने रौज़ए अन्वर से जवाबे सलाम सुना	20	﴾35﴿ मस्जिदे नबवी में आवाज़ धीमी रखो	46
﴾8﴿ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا وَلَدِى	21	﴾36﴿ रौज़ए रसूल की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगो	48
﴾9﴿ وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يَا مُحَمَّد هَاشِمُ التَّتَوِى	22	﴾37﴿ जिस से हो सके वोह मदीने शरीफ़ में मरे	49
﴾10﴿ क़ब्रे अन्वर से दस्ते मुबारक निकला	22	﴾38﴿ मदीने में वफ़ात, ब वक़्ते रुख़्सत नेकी की दा'वत	50
﴾11﴿ मैं सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया हूं	23	﴾39﴿ मह़बूब को मनाने के निराले अन्दाज़	51
﴾12﴿ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाना भिजवाया	24	﴾40﴿ अज़ाने बिलाल	52
﴾13﴿ सरकार ने खाना खिलाया	25	﴾41﴿ ग़र्नात़ा का मायूसुल इलाज मरीज़	54
﴾14﴿ सरकार ने दिरहम अ़त़ा फ़रमाए	27	﴾42﴿ जम जम का बा कमाल साक़ी	55
﴾15﴿ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोटी अ़त़ा फ़रमाई	28	﴾43﴿ तीन रूपिया मदीना......तीन रुपिया मुल्तान	57
﴾16﴿ जागा तो आधी रोटी हाथ में थी !	29	﴾44﴿ आक़ा के करम से गुमशुदा बेटा मिल गया	60
﴾17﴿ शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता	30	﴾45﴿ आक़ा को पुकारने से कमज़ोरी दूर हो जाती	61
﴾18﴿ मांगो तो बड़ी चीज़ मांगो	31	﴾46﴿ गुम्बदे ख़ज़रा देख कर दम निकल गया !	62
﴾19﴿ आ'ला ह़ज़रत ने मिना में दुआ़ए मग़फ़िरत करवाई	34	﴾47﴿ क़र्ज़ अदा करवा दिया	63
﴾20﴿ तुम ज़ियारत को न आए तो हम आ गए	35	﴾48﴿ तुर्क मरीज़ का इलाज	64
﴾21﴿ हम ने तुम्हारा उ़ज़्र क़बूल कर लिया है	36	﴾49﴿ मदीने की मिट्टी और फलों में शिफ़ा	66
﴾22﴿ बेटा क़ैद से रिहा हो गया	37	﴾50﴿ साल भर का बुख़ार एक दिन में जाता रहा	66
﴾23﴿ ग़ैबदान आक़ा ने ख़्वाब में बारिश की बिशारत दी	38	﴾51﴿ ख़ाके शिफ़ा से वरम का इलाज	67
﴾24﴿ कुंवें से रिहाई दिलवाई	39	**हाजियों की 42 हिकायात**	68
मशहूर आ़शिक़े रसूल इमामे मालिक की 12 हिकायात	40	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	68
﴾25﴿ मदीने में नंगे पाऊं	40	शहनशाहे अनाम عَلَيْهِ السَّلَام का सलाम अपने एक गुलाम के नाम	68
﴾26﴿ हर रात दीदारे सरवरे काइनात	41	﴾52﴿ वालिदे मर्ह़ूम पर जंगल में करम बालाए करम	69

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
﴾53﴿ अपने आक़ा से पहले त़वाफ़ नहीं करूंगा	71	हुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल	104
﴾54﴿ 20 पैदल सफ़रे हज	72	अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने वाले ह़ाजियों के लिये मदनी फूल	108
﴾55﴿ आक़ा के साथ बारिश में त़वाफ़ की सआ़दत	74	क्या अपने ह़ज्जो उ़मरह की ता'दाद बयान करना गुनाह है ?	109
﴾56﴿ मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो	75	दो हज ज़ाएअ़ कर दिये	110
﴾57﴿ ह़ल्क़ में सूई चुभने का ज़म ज़म से इलाज हो गया	76	नेकियां छुपाओ	110
﴾58﴿ प्यास का बीमार और आबे ज़म ज़म की बहार	76	﴾77﴿ एक बुज़ुर्ग का शैत़ान से मुकालमा	111
﴾59﴿ अ़त़ाओं का कुंवां, सज़ाओं का कुंवां	77	﴾78﴿ बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई	112
﴾60﴿ हिन्द से यकायक का'बे के रू बरू	79	﴾79﴿ हज की ख़्वाहिश थी मगर पल्ले ज़र न था	113
﴾61﴿ अनोखा कोढ़ी	80	﴾80﴿ हर दिल अ़ज़ीज़ ख़लीफ़ा	115
﴾62﴿ जब बुलाया आक़ा ने खुद ही इन्तिज़ाम हो गए	84	﴾81﴿ बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या	116
﴾63﴿ हम ने तेरी बात सुन ली है	86	﴾82﴿ ब कषरत रोने वाला ह़ाजी	118
﴾64﴿ सब्र करते तो क़दमों से चश्मा जारी हो जाता	87	﴾83﴿ ह़ाजियों की ह़ैरत अंगेज़ ख़ैरख़्वाही	121
﴾65﴿ एक त़ाइफ़ की निराली दुआ़	88	﴾84﴿ इमाम शाफ़ेई की सफ़रे ह़रम में सख़ावत	123
﴾66﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर	90	﴾85﴿ मैं क्यूं न रोऊं ?	123
﴾67﴿ ऐ काश ! मैं भी रोने वालों में से होता	92	﴾86﴿ लब्बैक कहते ही बेहोश हो गए	124
﴾68﴿ वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों की मग़फ़िरत हो गई	92	﴾87﴿ अपाहज ह़ाजी	125
﴾69﴿ आक़ा के नाम का हज करने वाले पर करम बालाए करम	93	﴾88﴿ ईदे क़ुरबान में जान क़ुरबान कर दी	126
﴾70﴿ 60 हज करने वाला ह़ाजी	94	﴾89﴿ पुर असरार ह़ाजी	129
﴾71﴿ रुख़्सत की इजाज़त के मुन्तज़िर जवान को बिशारत	95	﴾90﴿ बिग़ैर हज किये ह़ाजी	131
﴾72﴿ मायूस न होने वाला ह़ाजी	96	﴾91﴿ शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का हज	136
दुआ़ क़बूल न होने की ह़िक्मतें	97	﴾92﴿ छे लाख में से सिर्फ़ छे !	137
﴾73﴿ किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला !	98	﴾93﴿ ग़ैबी अंगूर	138
﴾74﴿ ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ और एक आ'राबी	99	**मस्तूरात की 4 ह़िकायात**	140
﴾75﴿ जिन का हज क़बूल न हुवा उन पर भी करम हो गया	100	﴾94﴿ आ़शिक़े रसूल ख़ातून ने रोते रोते जान दे दी	140
﴾76﴿ सफ़रे हज के बेहतरीन हम सफ़र	101	﴾95﴿ उम्मुल मोअमिनीन ने नफ़्ली हज से इन्कार फ़रमा दिया	141
अ़जीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त	102	﴾96﴿ एक ह़ज्जन के त़ुफ़ैल सब का हज क़बूल हो गया	142
हुब्बे जाह की लज़्ज़त इबादत की मशक़्क़त आसान कर देती है	103	﴾97﴿ पैदल सफ़रे हज करने वाली नाबीना बुढ़िया	143

उ़नवान	सफ़हा
उ़-लमाए अहले सुन्नत की 17 हिकायात	144
﴾98﴿ आ'ला हज़रत के वालिदे गिरामी को ख़ुसूसी बुलावा मिला	144
﴾99﴿ अस्ले मुराद हाज़िरी उस पाक दर की है	145
﴾100﴿ इमाम अहमद रज़ा और दीदारे मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم	146
﴾101﴿ मश्हूर आ़शिक़े रसूल अ़ल्लामा यूसुफ़बिन इस्माईल नब्हानी का अन्दाज़े अदब	149
﴾102﴿ पीर महेर अ़ली शाह की ज़ियारते मकीने गुम्बदे ख़ज़रा ब मक़ामे वादिये हमरा	150
﴾103﴿ सगे मदीना की नाज़ बरदारी	152
﴾104﴿ आक़ा बुलाएं तो उड़ कर जाना चाहिये	153
﴾105﴿ मौलाना सरदार अहमद की खजूरे मदीना से महब्बत	155
﴾106﴿ मदीने में अपने बाल व नाख़ुन दफ़्न फ़रमाए	156
﴾107﴿ अब कुछ भी नहीं हम को मदीने के सिवा याद	156
﴾108﴿ मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में	157
﴾109﴿ ऐ मदीने के दर्द तेरी जगह मेरे दिल में है	159
﴾110﴿ जन्नतुल बक़ीअ़ में लाशों के तबादले	159
﴾111﴿ ग़ज़ालिये ज़मां और मुफ़्ती अहमद यार ख़ां पर सुल्ताने दो जहां ﷺ का एह्सां	162
﴾112﴿ अ़ल्लामा काज़िमी साहिब और ख़ारे मदीना	163
﴾113﴿ बा'दे विसाल आ'ला हज़रत की दरबारे मुस्तफ़ा में हाज़िरी	163
﴾114﴿ क़ुत्बे मदीना और ग़रीब ज़ाइरे मदीना	165
जिन्नात की 7 हिकायात	166
﴾115﴿ का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें	166
﴾116﴿ चमकीला सांप	167
﴾117﴿ सांप नुमा जिन्न ने हजरे अस्वद चूमा	168
﴾118﴿ पानी की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला जिन्न	169
﴾119﴿ ग़ौषे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم के क़ाफ़िलए हज का पुर असरार जवान	170
﴾120﴿ बाग़ के जिन्नात	171
﴾121﴿ अ़जीबो ग़रीब छोटा सा परन्दा	174
हैवानात की 9 हिकायात	176
﴾122﴿ दरिन्दा भी ताबेअ़ हो गया	176
"क्या येह शोहरत नहीं" ? की वज़ाहत	177

उ़नवान	सफ़हा
﴾123﴿ शेर ने रास्ता बताया	177
﴾124﴿ क़ुरआने करीम की ता'ज़ीम करने वाले बन्दर की हिकायत	178
﴾125﴿ बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ाषा	178
﴾126﴿ हिरनी की पुकार ब हुज़ूरे शहनशाहे अबरार	179
﴾127﴿ ऊंट ने त़वाफ़े का'बा किया और फिर....	181
﴾128﴿ ऊंटों ने आक़ा को सजदा किया	182
﴾129﴿ ग़मे मुस्त़फ़ा में जान देने वाले दो बे ज़बान	183
﴾130﴿ ह़रम शरीफ़ के कबूतरों की आस्तानए मह़बूब से महब्बत	184
मक्के की ज़ियारतें	185
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	185
मक्कतुल मुकर्रमा के फ़ज़ाइल	185
मक्कतुल मुकर्रमा अम्न वाला शहर है	186
मक्कतुल मुकर्रमा के दस हुरूफ़ की निस्बत से मक्के के दस नाम	187
रमज़ाने मक्कतुल मुकर्रमा	187
मक्कतुल मुकर्रमा नबिय्ये करीम عليه الصلوة والسلام को महबूब है	188
मक्कतुल मुकर्रमा अफ़्ज़ल है या मदीनतुल मुनव्वरा सवाब में फ़र्क़ क्यूं ?	189
	190
मक्कतुल मुकर्रमा की ज़मीन क़ियामत तक ह़रम है	192
मक्कतुल मुकर्रमा और मदीनतुल मुनव्वरा में दज्जाल दाख़िल नहीं होगा	193
मक्कतुल मुकर्रमा की गर्मी की फ़ज़ीलत	193
मक्कतुल मुकर्रमा में बीमार होने वाले का अज्र	194
मक्कतुल मुकर्रमा में फ़ौत होने वाले से हिसाब नहीं होगा	194
मक्कतुल मुकर्रमा में मोह़तात़ रहिये !	195
मक्कतुल मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?	196
मक्के में रहने के क़ाबिल ह़ज़रात	197
मक्के में मुलाज़मत व तिजारत करने वाले ग़ौर फ़रमाएं	197
मक्के में ज़ियादा रहने से का'बे की हैबत में कमी आ सकती है	198
बदन कहीं भी हो मगर दिल मक्के मदीने में रहे	199
मक्कतुल मुकर्रमा की 19 ख़ुसूसिय्यात	200

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात	202	मर्द व औ़रत पथ्थर बन गए	221
ह़रम में दरिन्दे शिकार का पिछा नहीं करते	202	बीबी हाजिरा की सअ्य की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	222
का'बा सारे जहान के लिये राहनुमा है	203	मक़ामे इब्राहीम	223
का'बा शरीफ़ के बारे में 12 मदनी फूल	203	ह़जरे अस्वद	225
बीमार परन्दे हवाए का'बा से इ़लाज करते हैं	205	ह़जरे अस्वद की 4 ख़ुसूसिय्यात	226
का'बे की ज़ियारत इ़बादत है	206	**मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفاً وَّتَعْظِیْماً की मसाजिद**	227
का'बा क़िब्ला है	206	(1) मस्जिदुल ह़राम	227
का'बे के अन्दर नमाज़ में कहां रुख़ करे ?	207	मस्जिदुल ह़राम में 70 अम्बियाए किराम के मज़ारात	227
सिर्फ़ तीन मस्जिदों के लिये सफ़र की ह़दीष मअ़ तशरीह़	207	मस्जिदुल ह़राम में नमाज़े मुस्त़फ़ा के 11 मक़ामात	228
हर क़दम पर नेकी और ख़त़ा की मुआ़फ़ी	209	(2) मस्जिदे जिन्न	229
सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام और का'बा	209	बूढ़ा जिन्न	230
विलादत की ख़ुशी में का'बे पर झन्डा	210	(3) मस्जिदुर्राया	230
का'बे की एक ज़बान और दो होंट हैं	210	(4) मस्जिदे ख़ैफ़	231
लश्करे सुलैमान और का'बा	211	(5) मस्जिदे जिइर्राना	232
का'बा सोने की ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर में लाया जाएगा	211	(6) मस्जिदे तनई़म	233
बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा	213	अबू लहब और उस की बीवी की क़ब्रें	234
त़वाफ़ के फ़ज़ाइल	214	मस्जिदे तनई़म की ता'मीरात	235
त़वाफ़ की इब्तिदा कैसे हुई ?	214	(7) मस्जिदे निमरह	235
त़वाफ़ में हर क़दम के बदले दस नेकियां और......	215	(8) मस्जिदे ज़ी तुवा	235
ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब	215	(9) मस्जिदे कब्श	236
ग़ुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत	215	ग़ारे मुर्सलात	237
रोज़ाना 120 रह़मतों का नुज़ूल	216	विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	237
पचास मरतबा त़वाफ़ करने की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत	216	जबले अबू क़ुबैस	238
त़वाफ़ नमाज़ की त़रह़ है	217	ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मकाने जन्नत निशान	239
त़वाफ़े का'बा के लिये वुज़ू वाजिब है	217	ग़ारे जबले षौर	240
शदीद गर्मी में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत	218	ग़ारे ह़िरा	241
बरसात में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत	218	दारे अरक़म	242
जब हम बारिश में त़वाफ़ कर चुके तो.....	218	मह़ल्लए मस्फ़ला	243
आ'ला ह़ज़रत ने बारिश में त़वाफ़े का'बा किया	219	जन्नतुल मा'ला	243
आज कल बारिश में त़वाफ़ की दुश्वारियां	220	मज़ारे मैमूना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا	244
सफ़ा मरवह	221	बा'दे वफ़ात सय्यिदतुना मैमूना ने अंगूर खिलाए	245

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
मदीने की ज़ियारतें	247	हुजरए मुबारका में विसाल व तदफ़ीन	268
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	247	शैख़ैने करीमैन की हुजरए मुतह्हरा में तदफ़ीन	269
मदीनतुल मुनव्वरा के फ़ज़ाइल	247	हुजरए मुक़द्दसा दो हिस्सों में तक़्सीम था	270
कुरआने पाक में ज़िक्रे मदीना	248	शैख़ैने करीमैन के बा'द कोई यहां दफ़्न नहीं हुवा	272
मदीने के 12 नाम	249	हुजरए मुबारका का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया	273
मदीनतुल मुनव्वरा में मरने की फ़ज़ीलत	249	हुजरए मुबारका की दीवारों की ता'मीर	273
दज्जाल मदीनतुल मुनव्वरा में दाख़िल नहीं हो सकता	250	जाली मुबारक की तारीख़	274
मदीनतुल मुनव्वरा हर आफ़त से महफ़ूज़	250	तीन क़ब्रों की नक़्ली तसावीर	275
मदीने के ताज़ा फल	251	रौज़ए अन्वर पर गुम्बदे अत़्हर की ता'मीर	275
मदीना लोगों को पाको साफ़ करेगा	252	बड़े और छोटे गुम्बद शरीफ़ की ता'मीर	277
मदीने को यषरिब कहना गुनाह है	252	मोअज़्ज़िन पर दौराने अज़ान आस्मानी बिजली गिरी	279
यषरिब कहना क्यूं मन्अ़ है ?	253	सब्ज़ गुम्बद कब बनाया गया	280
मदीने की सख़्तियों पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत	254	दोनों गुम्बदों में एक छोटा सा सूराख़ रखा गया	280
मदीनतुल मुनव्वरा बेहतर है	255	गुम्बद शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ रंग	281
मदीनतुल मुनव्वरा की तंगदस्ती पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत	256	मस्जिदे नबवी के 8 सुतूने रह़मत	282
मदीनए तृय्यिबा की तकालीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत	257	(1) उस्तुवानए ह़न्नाना	282
मदीने में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?	257	(2) उस्तुवानए आ़इशा	283
मदीने में इस्तिन्जा करने के मुतअ़ल्लिक़ हिकायत	258	अगर लोगों को पता लग जाए तो क़ुर्आ़ अन्दाज़ी करें	283
मदीने का अस्ल क़ियाम आक़ा के अह़काम पर अ़मल करना है	259	(3) उस्तुवानए तौबा	284
मदीनतुल मुनव्वरा की 18 ख़ुसूसिय्यात	259	(4) उस्तुवानतुस्सरीर	285
मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ علی صاحبہا الصلوۃ والسلام की अराज़ी का हुसूल	262	(5) उस्तुवानतुल ह़रस	285
बारगाहे रिसालत में जिब्रईले अमीन की ह़ाज़िरी	263	(6) उस्तुवानए वुफ़ूद	286
मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ علی صاحبہا الصلوۃ والسلام की ता'मीर	264	(7) उस्तुवानए जिब्राईल	286
ता'मीरे मस्जिदे नबवी में आक़ा ने शिर्कत फ़रमाई	265	(8) उस्तुवानए तहज्जुद	287
मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ علی صاحبہا الصلوۃ والسلام में नमाज़ के फ़ज़ाइल	265	दीगर सुतून भी मुतबर्रक हैं	287
रौज़ए रसूल के बारे में दिलचस्प मा'लूमात	266	रौज़तुल जन्नह (जन्नत की क्यारी)	288
सरवरे दो जहान का मकाने अ़र्श निशान	267	मेह़राबे नबवी علی صاحبہا افضل الصلوۃ والتسلیم	289
		मिम्बरे रसूल	290

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइ़र्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुअ़ह | मस्जिदे शैख़ैन

मक़ामे इब्राहीम | हजरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुअ़ह | मस्जिदे शैख़ैन

उनवान	सफ़्हा
अस्ल मिम्बरे मुनव्वर लकड़ी का था	290
मक़ामे अज़ाने बिलाल की निशान देही नहीं हो सकती	291
सुफ़्फ़ा शरीफ़	293
मसाजिदे मदीना	295
(1) मस्जिदे क़ुबा	296
उमरे का षवाब	296
फ़ारूक़े आज़म और क़ुबा	296
अ़ब्दुल्लाह बिन उमर और क़ुबा	297
(2) मस्जिदे फ़ज़ीख़	297
(3) ख़मसा (या सबआ़) मसाजिद	298
(4) मस्जिदे ग़मामा	299
(5) मस्जिदे इजाबा	300
(6) मस्जिदे सुक़्या	301
(7) मस्जिदे सजदा	302
(8) मस्जिदे ज़िबाब (या मस्जिदे राया)	303
(9) मस्जिदे ऐ़नैन	303
(10) मस्जिदे मशरबा उम्मे इब्राहीम	304
(11) मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा	305
(12) मस्जिदुन्नूर	306
(13) मस्जिदे फ़स्ह़	307
(14) मस्जिदे बनी ज़फ़र (या मस्जिदे बग़ला)	308
(15) मस्जिदे माइदा	309

उनवान	सफ़्हा
(16) मस्जिदे बनी ह़राम	310
(17) मस्जिदे शैख़ैन	311
(18) मस्जिदे मिसतराह़	312
(19) मस्जिदे मिस्बह़ (या मस्जिदे बनी उनैफ़)	313
(20) मस्जिदे बनी ज़ुरैक़	313
(21) मस्जिदे क़तीबा	314
(22) मस्जिदे बनी दीनार	315
(23) मस्जिदे मीनारतैन	316
मरी हुई बकरी	317
(24) मस्जिदे जुमुआ़	318
(25) मस्जिदे मि'रास	318
(26) मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा	319
(27) मस्जिदे क़िब्लतैन	320
जबले उहुद	321
मज़ारे सय्यिदुना हारून	322
मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा	322
बा'ज़ शुहदाए उहुद के मज़ारात की निशान दही	323
शुहदाए उहुद عَلَيهِمُ الرِّضْوَان को सलाम करने की फ़ज़ीलत	324
सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम	324
शुहदाए उहुद को मजमूई सलाम	325
माख़ज़ो मराजेअ़	327

मनासिके ह़ज सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की चार ऑडियो केसिटों का सेट ह़ासिल कीजिये और वीडियो सीडीज़ (1) ह़ज का त़रीक़ा (2) उ़मरह का त़रीक़ा (3) मदीने की ह़ाज़िरी भी मुलाह़ज़ा कीजिये। नीज़, रिसाला "एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन" पढ़िये और अपनी उलझनें दूर कीजिये।

मक़ामे इब्राहीम | ह़जरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह किताब मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा हो जाएगा और आप मक्के मदीने की हाज़िरी के लिये बेताब हो जाएंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि साहिबे मे'राज, महबूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब कोई बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस दुरूद को ले कर ऊपर जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : इस दुरूद को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ येह दुरूद अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा और उस (बन्दए ख़ास) की आंखें इसे देख कर ठन्डी होती रहेंगी।" (جمع الجوامع ج ٦ ص ٣٢١ حديث ١٩٤٦١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ाइरीने मदीना की 51 हिकायात

(इन हिकायात में मदीने की हाज़िरी वग़ैरा का बिल ख़ुसूस ज़िक्र है)

﴾1﴿ रौज़ए पाक से बिशारत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ و اٰلِه وَسلَّم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में जल्वागरी के तीन रोज़ बा'द एक बद्दू हाज़िर हुवा और उस ने अपने आप को क़ब्रे मुनव्वर पर गिरा दिया और उस की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ و اٰلِه وَسلَّم ! जो कुछ आप ने **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से सुना है वोह हम ने आप से सुना है । (और वोह येह है :)

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ٥،النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर* ***अल्लाह*** *से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर* ***अल्लाह*** *को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है (या'नी गुनाह किये हैं) और आप की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि आप मेरे वासित़े इस्तिग़फ़ार फ़रमाएं। क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई : "قَدْ غُفِرَ لَکَ" या'नी तह़क़ीक़ तेरे गुनाह बख़्श दिये गए हैं। (वफ़ाउल वफ़ा, जि. 2, स. 1361)

ऐब मह़शर में खुला ही चाहते थे मैं निषार
ढक के पर्दा अपने दामन का छुपाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 304)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) दरे रसूल पर ह़ाज़िर होने वाला बख़्शा गया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "उ़यूनुल ह़िकायात" ह़िस्सए दुवुम सफ़्ह़ा 308 पर इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने बयान किया : एक मरतबा मैं रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर था कि एक आ'राबी (या'नी अ़रब के दीहात का रहने वाला) आया और हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर जो सच्ची किताब नाज़िल फ़रमाई उस में येह आयत भी है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ٥، النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाएं तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

ऐ मेरे आक़ा व मौला (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं **अल्लाह** गफ़ूर عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाह व कुसूर की मुआ़फ़ी त़लब करते हुए ह़ाज़िरे दरबार हूं और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना शफ़ीअ़ बनाता हूं।" येह कह कर वोह आ़शिक़े रसूल रोने लगा और उस की ज़बान पर येह अश्आ़र जारी थे :

يَا خَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ ۔۔۔ فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَكَمُ

رُوْحِى الْفِدَاءُ لِقَبْرٍ اَنْتَ سَاكِنُهٗ ۔۔۔ فِيْهِ الْعِفَافُ وَفِيْهِ الْجُوْدُ وَالْكَرَمُ

तर्जमा : (1)......ऐ वोह बेहतरीन ज़ात जिस का मुबारक वुजूद इस ज़मीन में दफ़्न किया गया तो इस की उ़म्दगी और पाकीज़गी से मैदान और टीले मुअ़त्तर हो गए।

(2)......मेरी जान फ़िदा हो उस क़ब्रे अन्वर पर जिस में आप (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आराम फ़रमा हैं ! जिस में पाक दामनी, सख़ावत और अ़फ़्वो करम का बेश बहा ख़ज़ाना है।

वोह आ़शिक़े रसूल काफ़ी देर तक इन अश्आ़र की तकरार करता रहा, फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हुवा अश्कबार आंखों से वहां से रुख़्सत हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : जब मैं सोया तो ख़्वाब में सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''اِلْحَقِ الرَّجُل فَبَشِّرْهُ اَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ غَفَرَ لَهُ بِشَفَاعَتِي'' या'नी उस आ'राबी से मिलो और उसे ख़ुशख़बरी सुनाओ कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी सिफ़ारिश की वजह से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी है।'' (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 378, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सर गुज़िश्ते ग़म कहूं किस से तेरे होते हुए किस के दर पर जाऊं तेरा आस्ताना छोड़ कर

बख़्शवाना मुझ से आ़सी का रवा होगा किसे !

किस के दामन में छुपूं दामन तुम्हारा छोड़ कर (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुअ़ज़्ज़म पर खड़े हो कर दुआ़ की :

"या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने तेरे ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अत़्हर की ज़ियारत की, अब तू मुझे ना मुराद न लौटा।" आवाज़ आई : "ऐ बन्दे ! हम ने तुम्हें अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा तुर्बत की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुम्हें पाक करना मन्ज़ूर फ़रमाया, अब तुम और तुम्हारे साथ ज़ियारत करने वाले मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम से और उन से राज़ी हो गया जिन्हों ने प्यारे नबी मुह़म्मदे मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए पुर अन्वार का दीदार किया।"

(الروض الفائق ص ٣٠٦)

अल्लाह *عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बन्धना दियारे त़यबाह को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾4﴿ देखो, मदीना आ गया !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास عليه رحمةُ اللهِ الجواد फ़रमाते हैं : मैं एक सफ़र में शिद्दते प्यास से बेताब हो कर गिर पड़ा, तो किसी ने मेरे मुंह पर पानी छिड़का, मैं ने आंखें खोलीं तो क्या देखता हूं कि एक ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग ख़ूब सूरत घोड़े पर सुवार खड़े हैं। उन्हों ने मुझे पानी पिलाया और फ़रमाया मेरे साथ सुवार हो जाओ।

अभी चन्द क़दम ही चले थे कि फ़रमाया : देखो ! क्या नज़र आ रहा है ? मैं ने कहा : "येह तो मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا है।" फ़रमाया : उतरो और जाओ, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सलाम अ़र्ज़ करो और येह भी अ़र्ज़ करना कि ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) ने भी आप की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया है। (رَوضُ الرَّياحين ص١٢٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना
कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ सब्ज़ घोड़े सुवार

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इमरान वासिती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से सूए मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के दीदार की निय्यत से चला, रास्ते में मुझे इतनी सख़्त प्यास लगी कि मौत सर पर मन्डलाने लगी, निढाल हो कर एक कीकर के दरख़्त के नीचे बैठ गया। दफ़्अ़तन (या'नी यकायक) **सब्ज़ लिबास** में मलबूस एक **सब्ज़** घोड़े सुवार नुमूदार हुए, उन के घोड़े की लगाम और ज़ीन भी सब्ज़ थी नीज़ उन के हाथ में **सब्ज़** शरबत से लबालब **सब्ज़**

प्याला था, वोह उन्हों ने मुझे दिया और फ़रमाया : पियो ! मैं ने तीन सांस में पिया मगर उस प्याले में से कुछ भी कम न हुवा। फिर उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : कहां जा रहे हो ? मैं ने कहा : मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا ताकि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا की बारगाहों में सलाम अ़र्ज़ करूं। फ़रमाया : जब तुम वहां पहुंचो और अपना सलाम अ़र्ज़ कर लो तो उन तीनों बुलन्दो बाला हस्तियों से अ़र्ज़ करना कि **रिज़्वान** (फ़िरिश्ता, ख़ाज़िने जन्नत) भी आप ह़ज़रात की ख़िदमात में सलाम अ़र्ज़ करता है।

(رَوضُ الرَّیاحین ص ۳۲۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जां बलब हूं जां बलब पर रह़्म कर
ऐ लबे ई़सा दौरां अल ग़ियाष (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾6﴿ दूसरे का सलाम पहुंचाने की बरकत से दीदार हो गया

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं अपने मुल्क, यमन के शहर सनआ़ से ब इरादए **ह़ज** निकला तो काफ़ी आ़शिक़ाने रसूल रुख़्सत करने के लिये शहर से बाहर तक आए। एक आ़शिक़े रसूल ने मुझ से कहा कि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन और दीगर सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن की मुबारक ख़िदमातों में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर

देना। जब मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا हाज़िर हुवा तो उस आ़शिक़े रसूल का सलाम अ़र्ज़ करना भूल गया, जब वहां से रुख़्सत हो कर ज़ुलहुलैफ़ा पहुंचा और एह़राम बांधने का इरादा किया तो मुझे उस आ़शिक़े रसूल का सलाम पहुंचाना याद आ गया। मैं ने अपने रुफ़क़ा से कहा कि मेरे वापस आने तक मेरे ऊंट का ख़याल रखना, मुझे मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا एक ज़रूरी काम के लिये जाना है। साथियों ने कहा कि अब क़ाफ़िले की रवानगी का वक़्त है और हमें अन्देशा है कि अगर तुम क़ाफ़िले से जुदा हो गए तो फिर इसे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا तक भी न पा सकोगे। मैं ने कहा : तो फिर मेरी सुवारी को भी अपने साथ ही लेते जाना।

मैं वापस मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आया और रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हो कर उस आ़शिक़े रसूल का सलाम शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان की मुबारक बारगाहों में पेश किया। रात हो चुकी थी, मैं मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बाहर निकला तो एक शख़्स ज़ुलहुलैफ़ा की त़रफ़ से आता हुवा मिला, मैं ने उस से क़ाफ़िले के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उस ने बताया कि क़ाफ़िला रवाना हो चुका है। मैं मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में लौट आया और ख़याल किया कि किसी दूसरे क़ाफ़िले के साथ चला जाऊंगा और सो गया। आख़िरे शब में ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा। ह़ज़रते

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! येही वोह शख़्स है।" हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा और फ़रमाया : "**अबुल वफ़ा** !" मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी कुन्यत तो अबुल अ़ब्बास है। फ़रमाया : तुम **अबुल वफ़ा** (या'नी वफ़ादार) हो। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में और वोह भी ख़ास मस्जिदुल ह़राम में रख दिया ! मैं ने **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में 8 दिन तक क़ियाम किया। इस के बा'द मेरे रुफ़क़ा का क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहुंचा।

(رَوضُ الرَّیاحین ص ٣٢٢)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

ग़मज़दों को रज़ा मुज़्दा दीजे कि है
बे कसों का सहारा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾7﴿ ह़ाज़िरीन ने रौज़ए अन्वर से जवाबे सलाम सुना

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुन्नस्र अ़ब्दुल वाह़िद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मुह़म्मद बिन अबू सईद सूफ़ी कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं **ह़ज** से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आया और रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हुवा, हुजरए

शरीफ़ा के पास बैठा हुवा था कि हज़रते शैख़ अबू बक्र दियार बिकरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तशरीफ़ लाए और चेहरए अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ तो मैं ने और तमाम हाज़िरीन ने सुना कि रौज़ए अन्वर के अन्दर से आवाज़ आई : وَعَلَیْکَ السَّلَامُ یَا اَبَابَکْرٍ

(اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوٰی ج ٢ ص ٣١٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
उस जवाबे सलाम के सदक़े ता क़ियामत हों बे शुमार सलाम

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا وَلَدِی (8)

हज़रते शैख़ सय्यिद नूरुद्दीन ईजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब रौज़ए अक़्दस पर हाज़िर हुए तो अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ तो जितने लोग उस वक़्त वहां हाज़िर थे उन सब ने सुना कि रौज़ए अन्वर से जवाब आया : وَعَلَیْکَ السَّلَامُ یَاوَلَدِی (या'नी और तुझ पर सलाम हो ऐ मेरे बेटे !)

(اَلْحَاوِی لِلْفَتَاوٰی ج ٢ ص ٣١٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत
है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो ! (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइर्रानह मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुअ़ह मस्जिदे शैख़ैन मक़ामे इब्राहीम हजरे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे हिरा जबले उहुद मेहराबे नबवी मिम्बरे रसूल

﴾9﴿ وَعَلَيكُمُ السَّلامُ يا مُحَمَّد هاشِمُ التَّتوى

शैख़ुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना मख़्दूम मुहम्मद हाशिम ठठवी عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने जब मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हो कर सलातो सलाम अ़र्ज़ किया तो प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़े मुबारका सुनाई दी : ''وَعَلَيكُمُ السَّلامُ يا مُحَمَّد هاشِمُ التَّتوى۔''

(अन्वारे उ़-लमाए अहले सुन्नत, सिन्ध, स. 714, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

ऐ मदीने के ताजदार सलाम | *ऐ ग़रीबों के ग़मगुसार सलाम*
तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे | *सो दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾10﴿ क़ब्रे अन्वर से दस्ते मुबारक निकला

हज़रते सय्यिदुना शैख़ सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيه जब हज से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हुए तो अ़रबी में दो अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है : ﴾1﴿......दूरी की ह़ालत में, मैं अपनी रूह़ को ख़िदमते अक़्दस में भेजा करता था तो वोह मेरी नाइब बन कर आस्तानए मुबारका को चूमा करती थी

﴾2﴿......और अब बदन के साथ ह़ाज़िर हो कर मिलने की बारी आई है तो अपना दस्ते मुबारक दराज़ फ़रमाइये ताकि मेरे होंट उस को चूमें। जूंही अश्आ़र ख़त्म हुए **दस्ते अन्वर क़ब्रे मुनव्वर से बाहर निकला और उन्हों ने उस को चूमा।** (اَلْحاوِی لِلْفَتاوی ج ٢ ص ٣١٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾11﴿ मैं सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आया हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अबू सालेह़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दो जहान के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्ताने अ़र्श निशान पर एक दिन ख़लीफ़ा मरवान ह़ाज़िर हुवा, वहां उस ने एक साह़िब को क़ब्रे मुनव्वर पर मुंह रखे हुए देखा तो उस की गर्दन पर हाथ रख कर कहा : जानते हो क्या कर रहे हो ? वोह **"हां जानता हूं"** कह कर उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तो वोह मह़बूबे बारी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ़ज़मत में ह़ाज़िर

हुवा हूं किसी पथ्थर के पास नहीं आया और मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि दीन पर उस वक़्त न रोओ जब कि इस का वाली अहल (या'नी लाइक़) हो लेकिन उस वक़्त ज़रूर रोओ जब कि इस का वाली ना अहल (या'नी ना लाइक़) हो। (اَلْمُستَدرَك ج ٥ ص ٧٢٠ حديث ٨٦١٨)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उ़श्शाक़े रौज़ा सजदे में सूए ह़रम झुके
***अल्लाह** जानता है कि निय्यत किधर की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾12﴿ सरकार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खाना भिजवाया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र बिन मुक़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हम तीनों मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ाज़िर थे, दो दिन से खाना नहीं मिला था, भूक से निढाल हो चुके थे। जब इशा का वक़्त आया तो मैं ने रौज़ए पाक पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! "اَلْجُوع !" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! "भूक !" मैं ने इस के सिवा और कुछ

ज़बान से न कहा और लौट आया, मैं और अबुश्शैख़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ सो गए और त़बरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی बैठे किसी के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, इतने में किसी ने हमारे मकान पर दस्तक दी, हम ने दरवाज़ा खोला तो एक अ़लवी साहिब अपने दो गुलामों के हमराह तशरीफ़ लाए, दोनों के पास खाने से भरी हुई एक एक टोकरी थी, वोह अ़लवी बुज़ुर्ग कहने लगे : शायद आप साहिबान ने बारगाहे रिसालत में **भूक** की शिकायत की है क्यूंकि मैं ख़्वाब में **जनाबे रिसालते मआब** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم आप हज़रात के बारे में फ़रमा रहे थे : "**इन को खाना खिलाओ ।**" बहर हाल उन्हों ने हमारे साथ मिल कर खाना खाया और जो कुछ बच गया वोह हमें दे दिया और तशरीफ़ ले गए । (جَذبُ القُلوب ص ٢٠٧ ، وفاء الوفا ج٢ ص١٣٨٠)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं
सुल्तानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾13﴿ सरकार ने खाना खिलाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم

अपने गुलामों पर नज़रे करम फ़रमाते, मुसीबत में फंस जाने की सूरत में इमदाद को आते और भूकों को खाना खिलाते हैं, इस ज़िम्न में एक और ह़िकायत मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में सख़्त भूक के आ़लम में सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं। यकायक आंख लग गई, दरीं अस्ना किसी ने जगा दिया और मुझे साथ चलने की दा'वत दी, चुनान्चे मैं उन के साथ उन के घर आया, मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा : पेट भर कर खा लीजिये क्यूंकि मुझे मेरे जद्दे अमजद, मक्की मदनी **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है। आयन्दा भी जब कभी भूक मह़सूस हो हमारे पास तशरीफ़ लाया करें। (حُجَّۃُ اللّٰہِ عَلَی الْعٰلَمِیْن ص ۵۷۳)

पीते हैं तेरे दर का, खाते हैं तेरे दर का
पानी है तेरा पानी, दाना है तेरा दाना (सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾14﴿ सरकार ने दिरहम अ़ता फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं तीन महीनों तक जंगलों में फिरता रहा यहां तक कि मेरी सब खाल गल गई। बिल आख़िर मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हुवा और मैं ने ग़मज़दों के दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا की बारगाहों में सलाम अ़र्ज़ किया और सो गया। ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : "**अह़मद**" तू आ गया, देख क्या ह़ाल हो गया है ! मैं ने अ़र्ज़ की : اَنَا جَائِعٌ وَّاَنَا ضَيْفُكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم या'नी या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं और **आप का मेहमान हूं**। सरकारे दो जहां, मालिके कौनो मकां صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**हाथ खोल**" ! जब मैं ने अपना हाथ खोला तो उस में चन्द **दिरहम** थे, जब आंख खुली तो वोह दिरहम मेरे हाथ में मौजूद थे, मैं ने बाज़ार से जा कर **रोटी** और **फ़ालूदा** ख़रीद कर खाया। (جَذبُ القُلوب ص٢٠٧،وفاء الوفاء ج ٢ ص ١٣٨١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

मंगता तो हैं मंगता कोई शाहों में दिखा दे
जिस को मेरे सरकार से टुकड़ा न मिला हो ! (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

﴾15﴿ सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोटी अ़ता फ़रमाई

हज़रते सय्यिदुना इब्नुल जला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में हाज़िर हुवा और मुझ पर दो एक फ़ाक़े गुज़रे । सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَنَا ضَيْفُكَ يا رسولَ الله صلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلِهٖ وسلَّم या'नी "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं आप का मेहमान हूं ।" फिर मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा । वालिये दो जहान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर मुझे **एक रोटी** इनायत फ़रमाई, मैं ख़्वाब ही में खाने लगा, अभी आधी खाई थी कि आंख खुल गई, मज़ीद आधी अभी मेरे हाथ में बाक़ी थी ।

(جذبُ القُلوب ص ٢٠٧ ، وفاء الوفا ج ٢ ص ١٣٨٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمین صلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइर्रानह मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुअ़ह मस्जिदे क़ैसैन
मक़ामे इब्राहीम हजरे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे हिरा जबले उहुद मेहराबे नबवी मिम्बरे रसूल

﴾16﴿ जागा तो आधी रोटी हाथ में थी !

हज़रते सय्यिदुना अबुल ख़ैर رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक शहर मीठे मीठे मदीने में ह़ाज़िर हुवा तो **पांच दिन के फ़ाक़े** से था, मैं ने शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا की मुक़द्दस बारगाहों में भी सलाम पेश किया : फिर अ़र्ज़ की : اَنَا ضَیْفُکَ یارسولَ اللّٰہ या'नी "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं आप का मेहमान हूं।" इस के बा'द मिम्बरे मुनव्वर के पास जा कर सो गया सर की आंखें तो क्या बन्द हुई दिल की आंखें खुल गईं, करम बालाए करम हो गया और मैं ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़याब हुवा, शैख़ैने करीमैन और मौला मुश्किल कुशा **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان भी हमराह थे, मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने मुझे हिलाया और फ़रमाया : "उठो ! मह़बूबे खुदा, अह़मदे मुज्तबा, **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं।" मैं ने उठ कर (ख़्वाब ही ख़्वाब में) ह़बीबे रब्बे क़य्यूम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी चूम ली। नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई, मैं ने आधी ख़्वाब ही में खा ली और जब आंख खुली तो बाक़ी **आधी रोटी** मेरे हाथ में थी। (شواھد الحق فی الاستغاثۃ بسیدالخلق ص ٢٤٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं
सुल्तानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾17﴿ शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता

हज़रते सय्यिदुना अबू इमरान मूसा बिन मुहम्मद बन्ज़रती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में हाज़िर था, माली परेशानी की फ़रियाद ले कर **सरकारे** वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : يَاحَبِيْب، يارسولَ الله! اَنَا فِى ضِيَافَةِ اللّٰهِ وَ ضِيَافَتِکَ मैं **अल्लाह** तआ़ला और आप की ज़ियाफ़त (या'नी मेहमानी) में हूं। नमाज़े अ़स्र के इनतिज़ार में बैठे बैठे मुझे ऊंघ आ गई। क्या देखता हूं कि हुजरए मुबारक खुल गया है और इस में से **तीन हज़रात** बाहर तशरीफ़ लाए हैं, मैं शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में सलाम पेश करने के लिये उठने लगा तो मेरे साथ बैठे हुए शख़्स ने कहा : बैठ जाओ, क्यूंकि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **हुज्जाजे किराम** को "सलाम" का तोहफ़ा इनायत करना और जो बे सरो सामान हैं उन में "खाना" तक़सीम फ़रमाना चाहते हैं। मैं ने कहा : "मैं भी इन्हीं में से हूं।" चुनान्चे जब हबीबे ख़ुदा, अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो **हुज्जाज** को सलाम इर्शाद फ़रमाया : मैं ने भी

मुसाफ़हा और दस्त बोसी का शरफ़ हासिल किया । आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हल्वे की मानिन्द कोई चीज़ मेरे हाथ में रख दी जो मैं ने उसी वक़्त मुंह में डाल ली। जब आंख खुली तो उस को निगलने के लिये मुंह चला रहा था और उस चीज़ का ज़ाइक़ा भी मुंह में मौजूद था। जब बाहर निकला तो **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे ऐसा शख़्स मुहय्या फ़रमा दिया जिस ने बिला उजरत सुवारी का बन्दोबस्त कर दिया और एक शख़्स की ज़िम्मेदारी लगा दी जो मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहुंचने तक मेरी ख़िदमत करता रहा। (شواھد الحق ص ٢٤١ ملخّصًا)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शुक्र एक करम का भी अदा हो नहीं सकता
दिल तुम पे फ़िदा हो जाने ह़सन तुम पे फ़िदा हो (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾18﴿ मांगो तो बड़ी चीज़ मांगो

एक शख़्स का बयान है कि मैं मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में मुक़ीम था, मुझे भूक ने परेशान किया तो मज़ारे अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : یارسولَ اللّٰہ!اَلْجُوۡع या'नी या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं भूका हूं।" येह अ़र्ज़ करने के बा'द मैं हुजरए मुबारका के क़रीब ही बैठ गया। **एक सय्यिद साहिब** मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहा : "चलिये।" मैं ने

पूछा : "किधर ?" जवाब दिया : "हमारे घर पर ताकि आप कुछ खा पी लें।" मैं उन के साथ चल दिया, उन्हों ने मुझे षरीद का एक बहुत बडा पियाला दिया जिस में गोश्त और ज़ैतून शरीफ़ वाफ़िर (या'नी कषीर) मिक़्दार में था। मैं ने ख़ूब खाया और वापसी का इरादा किया, उन्हों ने फ़रमाया : "मज़ीद खाइये।" मैं ने थोड़ा और खा लिया, जब वापस होने लगा तो उन्हों ने नसीहत के **मदनी फूल** मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुए फ़रमाया : "ऐ भाई ! ज़रा सोचिये तो सही !" आप हज़रात कितने दूर दराज़ अ़लाक़ों से चलते जंगलो बियाबान तै करते, समुन्दर को उ़बूर करते हो, अहलो इयाल को पीछे छोड़ते हो और फिर कहीं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ होते हो, मगर यहां पहुंच कर आप का मुन्तहाए मक़्सूद (या'नी सब से बडा मक़्सद) येही रह जाता है कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! रोटी का टुकड़ा अ़ता कर दीजिये ! ऐ मेरे भाई ! अगर आप ने **जन्नत** मांगी होती, गुनाहों की **मग़फ़िरत** का सुवाल किया होता, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी का मुत़ालबा किया होता या इसी क़िस्म का कोई अ़ज़ीम मक़्सद व मुद्दआ़ इन के हुज़ूर पेश किया होता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से वोह **अ़ज़ीम मक़ासिद** भी ह़ासिल हो जाते। (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 240)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ''ला'' है न ह़ाजत ''अगर'' की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेह्न में रहे ! सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी भूक की फ़रियाद करने में مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلّ कोई क़बाह़त (या'नी ऐ़ब) नहीं, बल्कि येह भी बहुत बड़ी सआ़दत है और इस सिलसिले में मुतअ़द्दिद उ़-लमा व मोह़द्दिषीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की **ह़िकायात** पीछे गुज़रीं। ताहम सय्यिद साह़िब के **मदनी फूल** भी अपनी जगह मदीना मदीना हैं कि जब ब अ़त़ाए रब्बुल उ़ला कुल आ़लम के सख़ी दाता, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में दामन पसारा है तो कम क्यूं मांगे ? आप की बारगाह में तो दुन्या व आख़िरत की बहुत सारी भलाइयों का सुवाल करना चाहिये। मालो जान की ह़िफ़ाज़त, दीनो ईमान पर इस्तिक़ामत, मीठे मदीने में आ़फ़िय्यत के साथ शहादत, बक़ीअ़ शरीफ़ में जाए तुर्बत, बे ह़िसाब मग़्फ़िरत और जन्नतुल फ़िरदौस में ख़ुद उन ही का जवारे रह़मत मांग लेना चाहिये।

मांगने का शुऊ़र देते हैं जो भी मांगो हुज़ूर देते हैं
कम मांग रहे हैं न सिवा मांग रहे हैं
जैसा है ग़नी वैसी अ़त़ा मांग रहे हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾19﴿ आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने मिना में दुआ़ए मग़्फ़िरत करवाई

इसी त़रह़ किसी बुज़ुर्ग से हुस्ने अ़क़ीदत और बारगाहे इलाही में उन की मक़्बूलिय्यत होने का हुस्ने ज़न क़ाइम हो तो उन से फ़क़त़ दुन्यवी ह़ाजत पूरी होने की दुआ़ की दरख़्वास्त करने के बजाए बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ का भी कहना चाहिये। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه का बुज़ुर्गों से सिर्फ़ दुआ़ए मग़्फ़िरत करवाने का मा'मूल था। चुनान्चे फ़रमाते हैं : (पहली बार ह़ाज़िरिये मदीना के मौक़अ़ पर जब मिना शरीफ़ की मस्जिद में से सब लोग चले गए) तो मस्जिद के अन्दरूनी ह़िस्से में एक साह़िब को देखा कि क़िब्ला रू वज़ीफ़े में मसरूफ़ हैं, मैं सह़ने मस्जिद में दरवाज़े के पास था और कोई तीसरा मस्जिद में न था। यकायक एक आवाज़ गुनगुनाहट की सी अन्दर मस्जिद के मा'लूम हुई जैसे शहद की मख्खी बोलती है। फ़ौरन मेरे क़ल्ब में येह ह़दीष आई : "अहलुल्लाह के क़ल्ब से ऐसी आवाज़ निकलती है जैसे शहद की मख्खी बोलती है।" (المستدرك ج٢ ص ١٨٠ حديث ١٨٩٨)

मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उन की त़रफ़ चला कि इन से दुआ़ए मग़्फ़िरत कराऊं, कभी मैं किसी बुज़ुर्ग के पास بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی दुन्यावी ह़ाजत ले कर न गया, जब (भी) गया इसी ख़याल से कि उन से **दुआ़ए मग़्फ़िरत** करवाऊंगा। ग़रज़ दो ही क़दम उन की त़रफ़ चला था कि उन बुज़ुर्ग ने मेरी त़रफ़ मुंह कर के आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर तीन मरतबा फ़रमाया :

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِیْ هٰذَا' اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِیْ هٰذَا، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِیْ هٰذَا"

(ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई को बख़्श दे, ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** मेरे इस भाई को मुआ़फ़ फ़रमा।) मैं ने समझ लिया कि फ़रमाते हैं "हम ने तेरा काम कर दिया अब तू हमारे काम में मुख़िल (रुकावट) न हो। मैं वैसे ही लौट आया।"

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 490)

दा'वा है सब से तेरी शफ़ाअ़त पे बेशतर
दफ़्तर में आ़सियों के शहा, इन्तिख़ाब हूं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

20 तुम ज़ियारत को न आए तो हम आ गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन बुनानुल ह़म्माल علیہ رحمۃ اللّٰہ الجلال फ़रमाते हैं कि हमारे बा'ज़ दोस्तों ने बताया कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیمًا में एक बुज़ुर्ग थे जो "इब्ने षाबित" के नाम से मश्हूर थे, वोह मुतवातिर 60 साल तक हर साल फ़क़त शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की बारगाहे अक़्दस में सलाम अ़र्ज़ करने की निय्यत से मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیمًا हाज़िर होते रहे। एक साल किसी वजह से हाज़िर न हो सके तो एक दिन उन्हों ने अपने हुजरे में बैठे हुए कुछ ग़ुनूदगी की ह़ालत में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم इर्शाद फ़रमा रहे थे : **"इब्ने षाबित ! तुम हमारी ज़ियारत को न आए तो हम आ गए।"** (اَلْحاوِی لِلْفَتاوٰی ج۲ ص۳۱٦)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

देखी जो बे कसी तो उन्हें रह़्म आ गया

घबरा के हो गए वोह गुनहगार की त़रफ़ (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾21﴿ हम ने तुम्हारा उ़ज़्र क़बूल कर लिया है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद बिन नुऐ़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन या'ला किनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی कषरत से नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस तुर्बत की ज़ियारत किया करते थे, नीज़ अकषर ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़े आषार से भी शरफ़याब होते थे। एक दिन दरबारे ह़बीब की ह़ाज़िरी के इरादे से निकले लेकिन पाऊं में चोट लगने के सबब सफ़रे मदीना जारी न रख सके। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने एक रुक़्आ़ लिख कर किसी ह़ाजी को दिया और फ़रमाया : "मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के क़रीब मेरा येह रुक़्आ़ रख कर अ़र्ज़ करना : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! किनानी मअ़स्सलाम मुल्तजी है कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم जानते हैं कि किनानी की ह़ाज़िरी में क्या चीज़ रुकावट बनी है !" उस शख़्स ने ऐसा ही किया। ह़ज़रते सय्यिदुना किनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی के ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ किनानी ! तुम्हारा ख़त़ पहुंच गया है और हम ने तुम्हारा उ़ज़्र भी क़बूल कर लिया है।" (الروض الفائق ص۲۰۶)

पास वाले येह राज़ क्या जानें
दूर से भी सलाम होता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾22﴿ बेटा क़ैद से रिहा हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अज़्दी अन्दलुसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि **अन्दलुस** में रूमियों ने एक आ़शिक़े रसूल के फ़रज़न्द को क़ैद कर लिया। वोह साहिब बारगाहे रिसालते मआब में फ़रियाद के इरादे से सूए मदीना रवाना हो गए। सरे राह बा'ज़ शनासाओं (या'नी जानने वालों) से मुलाक़ात हुई, बर सबीले तज़्किरा उन साहि़बान ने कहा : प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से तो घर बैठे भी इस्तिग़ाषा (या'नी फ़रियाद) की जा सकती है, इस मक़्सद के लिये हाज़िरी ही ज़रूरी नहीं, लेकिन उन्हों ने सफ़रे मदीना जारी रखा। मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا पहुंच कर बारगाहे रिसालत में हाज़िरी से मुशर्रफ़ हुए और बा'दे सलाम अपना मुद्दआ़ अ़र्ज़ किया। करम ने यावरी की, रात ख़्वाब में सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ियारत बख़्शी और इर्शाद फ़रमाया : "अपने शहर पहुंचो, तुम्हारा मक़्सद पूरा हो चुका है।" जब वोह अपने वत़न पहुंचे तो उन का फ़रज़न्दे दिलबन्द (या'नी प्यारा बेटा) सचमुच घर आ चुका था, इस्तिफ़्सार पर बेटे ने बताया : फ़ुलां रात मुझ समेत बहुत सारे क़ैदियों को रूमियों की क़ैद से अचानक रिहाई नसीब हो गई ! जब आ़शिक़े रसूल ने हि़साब लगाया तो येह वोह रात थी जिस में ख़्वाब के अन्दर बिशारत मिली थी। (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 225)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मिटते हैं जहां भर के आलाम मदीने में   बिगड़े हुए बनते हैं सब काम मदीने में

आक़ा की इनायत है हर गाम मदीने में   जाता नहीं कोई भी नाकाम मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 401)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾23﴿ ग़ैबदान आक़ा ने ख़्वाब में बारिश की बिशारत दी

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मोहतरम उस्ताद हज़रते इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में क़हत़ साली हुई, एक साहिब हुज़ूरे अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अत़्हर पर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपनी उम्मत के लिये बारिश त़लब फ़रमाइये, कि लोग हलाक हो रहे हैं।" जनाबे रिसालते मआब صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन साहिब के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया : उ़मर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और उन को ख़बर दो कि बारिश होगी। (مُصَنَّف ابن أبی شَیبه ج ۷ ص ۴۸۲ حدیث ۳۵ مختصراً، فتاویٰ رضویہ ج۹ ص ۲۹۵) वोह साहिब सह़ाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ थे। (فَتحُ الباری ج ۳ ص ۴۳۰ تحت الحدیث ۱۰۱۰) हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर

अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने फ़रमाया : येह रिवायत इमाम इब्ने अबी शैबा رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने सहीह़ अस्नाद के साथ बयान की है। (ऐज़न)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالى عليه واله وسلَّم

बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾24﴿ कुंवें से रिहाई दिलवाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सलावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक बार जब मैं सफ़र पर रवाना होने लगा तो सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या सय्यिदल कौनैन صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! दौराने सफ़र मेरा **सह़रा** व **बयाबान** से गुज़र होगा, जब कोई मुसीबत दरपेश हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करूंगा और आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वसीला इख़्तियार करूंगा।" शैख़ैने करीमैन ह़ज़राते सय्यिदैना अबू बक्र व उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर भी इसी त़रह़ अ़र्ज़ की। हफ़्ताभर जंगलो बयाबान में सफ़र करता रहा, **उसी दौरान एक कुंवें के अन्दर गिर गया,** उस में काफ़ी पानी था, चाश्त से ले कर अ़स्र के बा'द तक कुंवें में ग़ोते खाता रहा, मौत सर पर मन्डला रही थी कि इतने में

बारगाहे रह़मते कौनैन और शैख़ैने करीमैन से रुख़्सत होते वक़्त जो कुछ अ़र्ज़ किया था, याद आ गया चुनान्चे मैं ने अ़र्ज़ की : "या ह़बीबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! मेरी इल्तिजा क़बूल करते हुए मेरी दस्त्गीरी फ़रमाइये।" और इसी तरह़ ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से दरख़्वास्त की, देखते ही देखते किसी ने मुझे कुंवें की तह से उठा कर मुन्डेर पर बिठा दिया ! यूं मैं मह़बूबे रब्बुल इ़बाद عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم की इमदाद से मौत के मुंह से बाहर निकल आया। (शवाहिदुल ह़क़्क़ स. 231)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मश्हूर आ़शिक़े रसूल
इमाम मालिक की 12 ह़िकायात

﴾25﴿ मदीने में नंगे पाऊं

करोड़ों मालिकियों के अ़ज़ीम पेशवा **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मदीनए पाक** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की गलियों में नंगे पैर चला करते थे। (الطبقاتُ الکُبریٰ لِلشَّعرانی الجزء الاول ص ٧٦)

﴾26﴿ हर रात दीदारे सरवरे काइनात

हज़रते सय्यिदुना मुषन्ना बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد का बयान है : हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق फ़रमाते थे : कोई रात ऐसी नहीं गुज़री मैं ने जिस में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न की हो । (हिल्यतुल औलिया, जि. 6, स. 346)

मिट जाए येह ख़ुदी तो वोह जल्वा कहां नहीं
दर्दा मैं आप अपनी नज़र का हिजाब हूं

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾27﴿ मदीने में सुवारी से परहेज़

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं ने मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में हज़रते सय्यिदुना **इमाम मालिक** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे देखे जो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बतौरे हदिय्या (GIFT) पेश किये गए थे, इस क़दर आ'ला घोड़े मैं ने कभी न देखे थे । चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : "येह घोड़े कितने उ़म्दा हैं !" फ़रमाया : "मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक घोड़ा अपने लिये तो रख लीजिये ।" फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रोन्दूं जिस में उस के प्यारे पयम्बर, बीबी आमिना के दिलबर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं या'नी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है ।" (احياء العلوم ج ١ ص ٤٨،الروض الفائق ص ٢١٧)

हां हां रहे मदीना है, ग़ाफ़िल ज़रा तो जाग
ओ पाऊं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

﴾28﴿ ज़िक्रे नबी صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वक़्त रंग बदल जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के इश्क़े रसूल का आ़लम येह था कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता तो उन के चेहरे का रंग बदल जाता और वोह ज़िक्रे मुस्त़फ़ा की ता'ज़ीम के लिये ख़ूब झुक जाते। एक दिन आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "अगर तुम वोह देखते जो मैं देखता हूं तो इस बारे में सुवाल न करते।" (الشفاء ج۲، ص ٤١ ـ ٤٢)

जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ू करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

﴾29﴿ दर्से ह़दीषे पाक का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡخَالِق (ने 17 बरस की उ़म्र में दर्से ह़दीष देना शुरूअ़ किया) जब अह़ादीषे मुबारका सुनानी होती (तो ग़ुस्ल करते), चौकी (मस्नद) बिछाई जाती और आप उ़म्दा लिबास ज़ेबे तन फ़रमा कर ख़ुश्बू लगा कर निहायत आ़जिज़ी के साथ अपने हुजरए मुबारका से बाहर तशरीफ़ ला कर उस पर बा अदब बैठते (दर्से ह़दीष के दौरान कभी पहलू न बदलते) और जब तक उस मजलिस में ह़दीषें पढ़ी जातीं अंगेठी में ऊ़द व लूबान सुलगता रहता। (بُسۡتَانُ الۡمُحَدِّثِين ص ١٩، ٢٠)

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्क तर ग़ुबार !
अदना सी येह शनाख़्त तेरी रहगुज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾30﴿ बिच्छू ने 16 डंक मारे मगर दर्से ह़दीष जारी रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह **इमाम मालिक** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡخَالِق दर्से ह़दीष दे रहे थे कि **बिच्छू** ने आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को 16 मरतबा डंक मारे। दर्द की शिद्दत से चेहरए मुबारक ज़र्द (या'नी पीला) पड़ गया मगर दर्से ह़दीष जारी रखा। (और पहलू तक न बदला) जब दर्स ख़त्म हुवा और लोग चले गए तो मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आज मैं ने आप में एक अ़जीब बात देखी ! आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : हां ! मगर मैं ने ह़दीषे रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम की बिना पर सब्र किया। (الشفاء ج٢ ص٤٦)

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें
ढूंन्डा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾31﴿ अह़ादीष के अवराक़ पानी में डाल दिये मगर...

आ़शिक़े मदीना हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने फ़न्ने ह़दीष की बा क़ाइदा मुरत्तब किताब सब से पहले मुदव्वन (या'नी मुरत्तब) फ़रमाई जो कि **मोअत्ता इमाम मालिक** के नाम से मश्हूर है। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيه ख़ुलूस के पैकर थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद अ़ब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی नक़्ल करते हैं : **इमाम मालिक** जब ''मोअत्ता'' की तसनीफ़ से फ़ारिग़ हुए तो उन्हों ने अपना **इख़्लास** षाबित करने के लिये **मोअत्ता** के मुसव्वदे के तमाम अवराक़ (papers) पानी में डाल दिये और फ़रमाया : ''अगर इन में से एक वरक़ भी भीग गया तो मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं है।'' लेकिन येह ह़ज़रते इमाम मालिक عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की सिद्क़ निय्यत और इख़्लास का षमरा था कि एक वरक़ भी न भीगा। (شرح الزرقانی علی المؤطاء ج ۱ ص ۳٦ ملخصًا)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर
क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾32﴿ इश्क़े रसूल में रोने वाले मोह़द्दिष की क़द्रदानी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से किसी ने (आप के उस्ताज़े मोह़तरम) ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی के बारे में पूछा तो फ़रमाया : मैं जिन ह़ज़रात से अह़ादीषे मुबारका रिवायत करता हूं वोह उन सब में अफ़्ज़ल हैं, मैं ने उन्हें दो मरतबा **सफ़रे ह़ज** में देखा कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का ज़िक्रे अन्वर होता तो वोह इतना रोते कि मुझे उन पर रह़्म आने लगता। जब मैं ने ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा और इश्क़े रसूल का येह आ़लम देखा तो मुतअष्षिर हो कर उन से ह़दीष रिवायत करना शुरूअ़ की। (الشفاء ج ۲ ص ٤١)

यादे नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर
मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾33﴿ ख़ाके मदीना की तौहीन करने वाले के लिये सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के सामने किसी ने येह कह दिया कि "मदीने की मिट्टी ख़राब है" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه ने फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (ऐज़न स. 57)

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आ़लम
उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

«34» क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रम से बाहर जाया करते

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना की ख़ातिर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की, इस के लिये हमेशा ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूर थे। (بستان المحدثين ص ١٩)

ऐ ख़ाके मदीना तू ही बता किस त़रह़ पाऊं रखूं यहां
तू ख़ाके पा सरकार की है आंखों से लगाई जाती है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

«35» मस्जिदे नबवी में आवाज़ धीमी रखो

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गुफ़्तगू के दौरान ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आवाज़ बुलन्द की तो उस से फ़रमाया : ऐ ख़लीफ़ा ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द मत करो, **अल्लाह** तआ़ला ने बारगाहे रिसालत में आवाज़ें धीमी रखने वालों की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) फ़रमाई है, चुनान्चे पारह 26 सूरतुल हुजुरात की तीसरी आयते मुबारका में फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۳﴾

(پ۲۶،الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं **रसूलुल्लाह** के पास, वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा षवाब है।*

जब कि आवाज़ें बुलन्द करने वालों की इन अल्फ़ाज़ में मज़म्मत बयान फ़रमाई है, चुनान्चे इसी सूरत की चोथी आयते करीमा है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ (پ۲۶،الحجرات:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं इन में अकषर बे अ़क़्ल हैं।*

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो हुर्मत यक़ीनन आज भी इसी त़रह़ है जिस त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी में थी। इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की इस गुफ़्तगू से अबू जा'फ़र ख़ामोश हो गया। (الشفاء ج۲ ص۴۱)

तुझ से छुपाऊं मुंह तो करूं किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《36》 रौज़ए रसूल की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगो

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने दर्याफ़्त किया कि मैं (रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर) क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगू या नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ रखूं ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق ने फ़रमाया : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तुम क्यूंकर मुंह फैर सकते हो ? हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे और तुम्हारे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये भी वसीला हैं, तुम नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ मुंह कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगो, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त ज़रूर क़बूल फ़रमाएगा, **अल्लाह** रब्बुल इबाद عَزَّ وَجَلَّ ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

(پ٥، النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

(الشفاء ج٢ ص٤١)

मुजरिम बुलाए आए हैं "जाऊ-क" है गवाह
फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ जिस से हो सके वोह मदीने शरीफ़ में मरे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "مَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ يَّمُوتَ بِالْمَدِينَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَإِنِّي أَشْفَعُ لِمَنْ يَّمُوتُ بِهَا" या'नी जो मदीने में मर सके वोह वहीं मरे क्यूंकि मैं मदीने में मरने वालों की शफ़ाअ़त करूंगा।" (ترمذی ج ٥ ص ٤٨٣ حدیث ٣٩٤٣)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसलमानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को या'नी जिस मुसलमान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि खुदा (عَزَّوَجَلَّ) नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे खुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ दुआ़ करते थे कि "मौला ! मुझे अपने मह़बूब के शहर में शहादत की मौत दे।" आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰه फ़ज्र की नमाज़, मस्जिदे नबवी, मेह़राबुन्नबी, मुसल्लए नबी, और वहां शहादत। मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरा में हैं, हुदूदे

मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए, **हज़रते इमाम मालिक** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق का भी येही दस्तूर रहा। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 222)

﴾38﴿ मदीने में वफ़ात, ब वक़्ते रुख़्सत नेकी की दा'वत

सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की वफ़ात 179 हि. के माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र या रब्बीउ़ल अव्वल शरीफ़ की 10 या 11 या 14 तारीख़ को मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुए। ब वक़्ते रिह़लत आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने **नेकी की दा'वत** दी। सय्यिदुना यह़्या बिन यह़्या मस्मूदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق बयान करते हैं कि सय्यिदुना रबीआ़ ने फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को नमाज़ के मसाइल बताना रूए ज़मीन की तमाम दौलत सदक़ा करने से बेहतर है और किसी शख़्स की दीनी उल्झन दूर कर देना **सो ह़ज** करने से अफ़्ज़ल है।" नीज़ सय्यिदुना **इब्ने शहाब ज़ोहरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के ह़वाले से बताया कि उन्हों ने फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को दीनी मश्वरा देना **सो ग़ज़वात** में जिहाद करने से बेहतर है।" सय्यिदुना यह़्या बिन यह़्या رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : इस गुफ़्तुगू के बा'द सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने कोई बात नहीं की और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। (बोस्तानुल मुह़द्दिषीन, स. 38-39)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तयबाह में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾39﴿ मह़बूब को मनाने के निराले अन्दाज़

किसी ने **मह़मूद ग़ज़नवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ह़ाज़िरिये मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के दौरान मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में फ़क़ीराना लिबास पहने, कन्धे पर मश्कीज़ा उठाए ज़ाइरीने ह़रम को पानी पिलाते देख कर कहा : क्या आप ग़ज़नी के शहनशाह नहीं ? येह क्या ह़ाल बना रखा है ? जवाब दिया : मैं शहनशाह हूं मगर ग़ज़नी में, इस दरबार में तो शहनशाह भी फ़क़ीर व गदा होते हैं। पूछने वाले को येह दीवानगी भरा जवाब बहुत ही प्यारा लगा। कुछ देर बा'द उस ने देखा कि **मिस्र का शहनशाह** शाही कर्रो फ़र और रो'बदाब के साथ चला आ रहा है, उस शख़्स ने बढ़ कर कहा : "आप ने इतनी बड़ी जसारत की ! मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी और येह शाही दबदबा !" जो जवाब मिस्री शहनशाह ने दिया वोह भी सुन्हरी ह़ुरूफ़ से लिखने के क़ाबिल है। शाहे मिस्र बोला : ऐ सुवाल करने वाले ! येह बताओ येह बादशाही किस हस्ती ने अ़त़ा की ? यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ही इनायत फ़रमाई है। लिहाज़ा शाही ताजो लिबास के साथ ह़ाज़िर हुवा हूं। ताकि देने वाला अपनी मुबारक आंखों से देख ले। (बारह तक़रीरें, स. 204 बित्तग़य्युर)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में
दुन्या तेरी गली में उ़क़्बा तेरी गली में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾40﴿ अज़ाने बिलाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े बे मिषाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का नाम ज़बान पर आता है तो बे साख़्ता एक सर ता पा आ़शिक़े रसूल हस्ती का तसव्वुर क़ाइम हो जाता है ईमान लाने और ग़ुलामी से आज़ादी पाने के बा'द आ़शिक़े बे मिषाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारे लेकिन विसाले ज़ाहिरी के बा'द हिज्रे रसूल की ताब न ला कर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से हिजरत कर के मुल्के शाम के अ़लाक़े "दारय्या" में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई। कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द एक रात ख़्वाब में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़ आषार से मुशर्रफ़ हुए, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मतो मह़ब्बत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "مَاهٰذِهِ الْجَفْوَةُ يَا بِلَال! اَمَا آنَ لَكَ اَنْ تَزُوْرَنِى يَا بِلَال!" या'नी ऐ बिलाल !

येह क्या जफ़ा है ! क्या अभी वोह वक़्त न आया कि तुम मेरी ज़ियारत के लिये ह़ाज़िरी दो।'' आ़शिक़े बे मिषाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बेदार होते ही हुक्मे सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'मील में **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की जानिब रवाना हो गए और सफ़र करते हुए मर्कज़े उ़श्शाक़ दयारे मदीना की नूरानी और पुरकैफ़ फ़ज़ाओं में दाख़िल हो गए, बेताबाना मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुए, ज़ब्त़ के बन्धन टूट गए, आंखों से आंसूओं का तार बन्ध गया और अपना चेहरा मज़ारे पाक की मुबारक ख़ाक पर मस करने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ की आमद की ख़बर सुन कर गुलशने रिसालत के दोनों महकते फूल सय्यिदैना ह़सनैने करीमैन (या'नी ह़ज़राते सय्यिदैना ह़सनो ह़ुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا भी तशरीफ़ ले आए। ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बे साख़्ता दोनों शहज़ादों को अपने साथ लिपटा लिया और प्यार करने लगे। शहज़ादों ने फ़रमाइश की **: ऐ बिलाल !** हमें एक बार फिर वोह **अज़ान** सुना दीजिये जो आप नानाजान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में दिया करते थे। अब इन्कार की गुंजाइश कहां थी ! चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की छत पर उस ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए जहां वोह हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में **अज़ान** दिया करते थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना

बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने "**अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर**" से **अज़ान** का आग़ाज़ फ़रमाया तो मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में हलबली मच गई और लोग बेताब हो गए, जब "اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" के कलिमात कहे तो हर त़रफ़ आहो बुका का शोर बरपा हो गया, फिर जब इस लफ़्ज़ पर पहुंचे : "اَشْھَدُاَنَّ مُحَمَّدًارَّسُوْلُ اللّٰہ" तो लोग बेताबाना एक दूसरे से पूछने लगे : "क्या सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ारे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ ले आए हैं ?" सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में उस दिन से ज़ियादा कभी गिर्या व ज़ारी नहीं हुई। इस वाक़िए के बा'द आ़शिक़े बे मिषाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ता दमे ह़यात साल में एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर होते और **अज़ान** दिया करते थे।

(تاریخ دِمَشق ج۷ص۱۳۷ وفتاوٰی رضویہ مُخرجہ ج۱۰ ص۷۲۰مُلَخّصًا)

जाहो जलाल दो न ही मालो मनाल दो

सोज़े बिलाल बस मेरी झोली में डाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

《41》 ग़र्नात़ा का मायूसुल इलाज मरीज़

अबू मुह़म्मद इश्बीली अपना एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हैं कि ग़र्नात़ा में एक ऐसे बीमार के हां ठहरे जो त़बीबों की त़रफ़ से ला इलाज क़रार दिया जा चुका था। उस बीमार के एक ख़ादिम

इब्ने अबी ख़िसाल ने सरकारे आ़लम मदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में अ़रीज़ा लिखा जिस में उस ने अपने आक़ा की बीमारी का ज़िक्र किया था और दरख़्वास्त की थी कि उसे शिफ़ा नसीब हो। अबू मुह़म्मद फ़रमाते हैं : वोह अ़रीज़ा लिये एक ज़ाइरे मदीना ग़र्नात़ा से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا हाज़िर हुवा, उस ने ज्यूंही येह ख़त़ दरबारे रिसालत में पढ़ा बीमार को ग़र्नात़ा में शिफ़ा मिल गई।

(वफ़ाउल वफ़ा, जि. 2, स. 1387 मुलख़्ख़सन)

फ़क़त़ अमराज़े जिस्मानी की ही करता नहीं फ़रियाद
गुनाहों के मरज़ से भी शिफ़ा दो या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 551)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾42﴿ ज़म ज़म का बा कमाल साक़ी

शैख़ अबू इब्राहीम वर्राद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : मैं ने एक मरतबा **ह़ज** व ज़ियारत की सआ़दत पाई, ज़ादे क़ाफ़िला की क़िल्लत (या'नी अख़राजात की कमी) के सबब क़ाफ़िले वाले मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में मुझे अकेला छोड़ कर रवाना हो गए। मैं ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे रुफ़क़ा मुझे तन्हा छोड़ कर जा चुके हैं।" जब सोया तो ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मक्का शरीफ़ जाओ, वहां

एक शख़्स **ज़म ज़म** के कुंवें पर पानी खींच खींच कर लोगों को पिला रहा होगा, उस से कहना, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है कि मुझे मेरे घर तक पहुंचा दो।" मैं ह़स्बे इर्शाद मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا पहुंचा और **ज़म ज़म** शरीफ़ के कुंवें पर गया, जहां एक शख़्स पानी खींच रहा था, इस से पहले कि मैं कुछ कहूं, वोह कहने लगा : "ठहरो ! मैं ज़रा लोगों को पानी पिला लूं।" जब वोह फ़ारिग़ हुवा तो रात हो चुकी थी। उस ने कहा : "बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर लो फिर मेरे साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا के बालाई (या'नी ऊंचाई वाले) हिस्से की त़रफ़ चलो" चुनान्चे मैं त़वाफ़ से मुशर्रफ़ होने के बा'द उस के साथ उस के क़दम ब क़दम चल पड़ा। जब सुब्ह़ क़रीब हुई तो मैं ने खुद को ऐसी वादी में पाया जिस में बहुत घने दरख़्त और पानी के चश्मे थे, मैं ने सोचा येह वादी तो मेरी वादी "शफ़शावह" जैसी लगती है। जब अच्छी त़रह़ सपैदए सह़र (या'नी फ़ज्र का उजाला) नुमूदार हुवा और मैं ने ग़ौर से देखा तो वाक़ेई वोह वादी "**शफ़शावह**" ही थी। मैं खुशी खुशी अपने अहलो इ़याल के पास पहुंचा और अपने मकान पहुंचने की दास्ताने करामत निशान सुना कर सब को वर्त़ए ह़ैरत में डाल दिया ! लोगों ने मेरे क़ाफ़िले के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया। मैं ने उन्हें बताया कि वोह तो मुझे मुफ़्लिसो नादार समझ कर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में अकेला छोड़ कर सूए वत़न रवाना हो गए थे। कुछ लोगों ने मेरी

बात को दुरुस्त तस्लीम किया और बा'ज़ ने मुझे झुटलाया, चन्द माह गुज़रे तो मेरा क़ाफ़िला आ पहुंचा और लोग ह़क़ीक़ते ह़ाल से वाक़िफ़ हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सब ने मुझे सच्चा मान लिया। (شواھدُ الحق ص ۲۲۹) (चूंकि पहले ज़माने में ऊंटों और ख़च्चरों वग़ैरा पर सफ़र हुवा करता था, ग़ालिबन इसी वजह से क़ाफ़िला कुछ महीनों के बा'द पहुंचा।)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

तिन्का भी हमारे तो हिलाए नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मिह़न फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾43﴿ तीन रुपिया मदीना......तीन रुपिया मुल्तान

येह ह़िकायत किसी ने मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) काफ़ी अ़र्सा क़ब्ल सुनाई थी अपनी याददाश्त के मुत़ाबिक़ अपने अल्फ़ाज़ में बयान करने की सअ़्य करता हूं : ह़ाजियों का एक क़ाफ़िला मदीनतुल औलिया मुल्तान (पाकिस्तान) से मदीनतुल मुस्त़फ़ा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا चला, उस में **एक मदीने का दीवाना** भी शामिल था। ह़ज्जे बैतुल्लाह और ह़ाज़िरिये मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से फ़राग़त के बा'द जब सब मुल्तान शरीफ़ पहुंच गए। एक ह़ाजी ने दीवाने को छेड़ते हुए कहा : तुझे बारगाहे रिसालत से कोई सनद भी अ़त़ा हुई या नहीं ? वोह बोला : नहीं। उस ह़ाजी ने अपने ही

हाथों लिखी हुई एक चिठ्ठी दीवाने को दिखाते हुए कहा : देख ! मुझे रौज़ए अन्वर पर येह सनद मिली है ! चिठ्ठी में लिखा था : "तेरी मग़्फ़िरत कर दी गई है।" **दीवाना** येह पढ़ कर बे क़रार हो गया, उस ने रोना धोना मचा दिया और येह कहते हुए चल पड़ा : मैं भी अपने प्यारे **आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मग़्फ़िरत की सनद लूंगा' गिरता पड़ता जब रोड पर आया तो एक बस खड़ी थी और कन्डक्टर आवाज़ लगा रहा था : "**तीन रूपिया मदीना ! तीन रूपिया मदीना !!**" दीवाना लपक कर बस में सुवार हो गया, तीन रुपिये अदा किये और बस चल पड़ी। कुछ ही देर बा'द कन्डक्टर ने सदा लगाई : मदीना आ गया !! मदीना आ गया !! दीवाना बस से उतर गया, ! سُبۡحٰنَ اللّٰه वोह सचमुच मदीने ही में था, और उस की निगाहों के सामने **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** अपने जल्वे लुटा रहा था। उस ने बेताबी के साथ क़दम आगे बढ़ाए, मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुवा और सुन्हरी जालियों के रू बरू ह़ाज़िर हो गया, उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के रास्ते उमंडने लगा, बा'दे अ़र्ज़े सलाम उस ने बरसती हुई आंखों से मग़्फ़िरत की सनद की इल्तिजाए शौक़ पेश कर दी। नागाह एक पर्चा उस के सीने पर गिरा, बे क़रार हो कर उस ने पढ़ा तो लिखा था : "**तेरी मग़्फ़िरत कर दी गई है।**" उस ने वोह काग़ज़ एहतियात से जैब में रखा और ख़ुश ख़ुश बाहर निकला। वोही बस नज़र आई। कन्डक्टर सदाएं लगा रहा था। "**तीन रुपिया, मुल्तान ! तीन रुपिया मुल्तान !!**"

दीवाना बस में सुवार हो गया, तीन रुपिये अदा किये बस चल पड़ी, कुछ ही देर के बा'द कन्डक्टर ने आवाज़ लगाई : "**मुल्तान आ गया ! मुल्तान आ गया !!**" दीवाना उतरा और अपने क़ाफ़िले वालों के पास आ पहुंचा, चूंकि येह सब चन्द लम्हों में ही हो गया था लिहाज़ा तमाम **हुज्जाज** अभी वहीं मौजूद थे, उन्हों ने जब दीवाने के पास "सनद" देखी तो हैरान रह गए, उन्हों ने दीवाने का बड़ा एह़तिराम किया, खुसूसन जिस ह़ाजी ने दीवाने के साथ मज़ाक़ किया था, वोह फूट फूट कर रोने लगा और उस ने अपने जुर्म से तौबा की, दीवाने से भी मुआ़फ़ी मांगी। और अ़ज़्म किया कि जब तक "सनद" अ़ता न हुई **हर साल ह़ज** करूंगा और ह़ाज़िरे दरबारे मदीना हो कर "सनदे मग़फ़िरत" की ख़ैरात मांगता रहूंगा । मुझे अपने करीम आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से उम्मीदे वासिक़ है कि मुझ गुनहगार को मायूस नहीं फ़रमाएंगे। दीवाना अपने आप में न था चन्द ही रोज़ में उस का इन्तिक़ाल हो गया । और वोह ह़ाजी अब तक हर साल बराबर ह़ाज़िरिये ह़रमैने शरीफ़ैन से मुशर्रफ़ हो रहा है।

(ता दमे तह़रीर (8 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि.) वाक़िआ़ सुने कमो बेश 35 साल का अ़र्सा गुज़र चुका है, फ़िलह़ाल उस ह़ाजी के अह़वाल मा'लूम नहीं ।)

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े मह़शर
येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾44﴿ आक़ा के करम से गुमशुदा बेटा मिल गया

शैख़ अबुल क़ासिम बिन यूसुफ़ इस्कन्दरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में था, एक आ़शिक़े रसूल को देखा कि वोह क़ब्रे अन्वर के पास कुछ इस त़रह से फ़रियाद कर रहा है : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप का वसीला पकड़ता हूं ताकि मेरा बेटा मुझे वापस मिल जाए।" मेरे इस्तिफ़्सार पर उस ने बताया : "जिद्दा शरीफ़ से आते हुए मैं क़ज़ाए ह़ाजत के लिये गया इसी अस्ना में मेरा बेटा ला पता हो गया।" चन्द साल बा'द वोह शख़्स मुझे मिस्र में मिला तो मैं ने उस के बेटे के बारे में दर्याफ़्त किया। उस ने बताया : "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरा बेटा मिल गया था, हुवा यूं था कि एक क़बीले ने उसे ज़बरदस्ती अपना गुलाम बना कर ऊंट चराने पर लगा दिया था। उसी क़बीले की एक आ़शिक़े रसूल और नेक सीरत ख़ातून ने ख़्वाब में बहूरो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहनशाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना के मेहरो माह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कुछ यूं फ़रमाया : "मिस्री नौजवान को आज़ाद करवा कर उस के घर भेज दो।" चुनान्चे उस आ़शिक़े रसूल ख़ातून की सिफ़ारिश पर मेरे बेटे को आज़ाद कर दिया गया।

(شواھد الحق فی الاستغاثة بسید الخلق ص ۲۳۰ مُلَخَّصًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो "आह" करे दिल से

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

❁45❁ आक़ा को पुकारने से कमज़ोरी दूर हो जाती

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सालिम सिजिल्मासी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं मोह़तरम नबी, मक्की मदनी, मह़बूबे रब्बे ग़नी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत की निय्यत से पैदल चलने वाले क़ाफ़िलए मदीना का मुसाफ़िर बन गया। दौराने सफ़र जब कभी कमज़ोरी मह़सूस होती तो अ़र्ज़ करता : **اَنَا فِیْ ضِیَافَتِكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ** या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप की ज़ियाफ़त (या'नी मेहमानी) में हूं तो वोह नातुवानी (या'नी कमज़ोरी) फ़ौरन ज़ाइल हो जाती।

(शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 231)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

थका मान्दा है वोह जो पाऊं अपने तोड़ कर बैठा

वोही पहुंचा हुवा ठहरा जो पहुंचा कूए जानां में

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾46﴿ गुम्बदे ख़ज़रा देख कर दम निकल गया !

मौलाना हाफ़िज़ बसीरपूरी अपने सफ़रनामए हज में लिखते हैं : सि. 1972 ई. में मुझे मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में रमज़ानुल मुबारक का महीना नसीब हुवा। ग़ालिबन रमज़ानुल मुबारक का दूसरा जुमुआ़ था, एक आ़शिक़े रसूल अपने साथियों को मजबूर कर के मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से क़ब्ल अज़ वक़्त ही मदीनए तृय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا ले आया और आते ही सामान से बे परवाह हो कर आक़ाए दो जहां, सुल्ताने कौनो मकां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे अक़्दस में हाज़िर हो गया। सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द दो नफ़्ल अदा किये और बाबे जिब्रील से बाहर निकला, पलट कर **गुम्बदे ख़ज़रा** पर नज़र डाली और ग़श खा कर गिर पड़ा, मुंह से ख़ून बहने लगा और तड़पे बिग़ैर ठन्डा हो गया। (अन्वारे क़ुत्बे मदीना, स. 62)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़ते ही
खा के ग़श में गिर जाता फिर तड़प के मर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 410)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾47﴿ क़र्ज़ अदा करवा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर عليه رَحمة اللهِ المُقتَدِر के साहिबज़ादे बयान करते हैं कि **यमन** के एक आदमी ने मेरे वालिद साहिब के पास 80 दीनार रखवाते हुए अ़र्ज़ की : "अगर ज़रूरत पड़े तो इन्हें ख़र्च कर लेना, जब वापस आऊं तो मुझे अदा कर देना" और **वोह** ख़ुद जिहाद के लिये चला गया। उस के जाने के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में सख़्त **क़ह़त** और ख़ुश्क साली ने ग़लबा किया, वालिद साहिब رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه ने वोह दीनार लोगों में तक़्सीम कर दिये। थोड़ा ही अ़र्सा गुज़रा था कि वोह शख़्स वापस आ गया और उस ने अपनी रक़्म त़लब की। वालिदे मोह़तरम ने कहा : "कल तशरीफ़ लाइये।" और ख़ुद उस रात मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ में ठहरे रहे, कभी मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर ह़ाज़िर होते और सरकारे नामदार صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम बार के त़लबगार होते और कभी मिम्बरे अत़्हर के पास आ कर दुआ़ व इल्तिजा करते, ह़त्ता कि सपैदए सह़र नुमूदार होने लगा, धुंदलके में एक शख़्स ने थेली आगे बढ़ाते हुए कहा : "ऐ मुह़म्मद बिन मुन्कदिर ! येह लीजिये।" आप رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه ने हाथ बढ़ा कर थेली ले ली, खोल कर देखा तो उस में 80 दीनार थे। सुब्ह़ हुई तो रक़्म रखवाने वाला शख़्स आ गया, आप رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه

ने 80 दीनार उस के ह़वाले कर दिये । यूं आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ इस बारे क़र्ज़ से नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम से सबुकदोश हो गए । (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 227)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हर त़रफ़ मदीने में भीड़ है फ़क़ीरों की
एक देने वाला है कुल जहां सुवाली है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾48﴿ तुर्क मरीज़ का इलाज

मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में एक शख़्स को देखा गया जो ज़ख़्मों से चूर चूर था, मा'लूम हुवा वोह तुर्की का बाशिन्दा है और 15 साल से बीमार है, तुर्की में इलाज नाकाम रहा, किसी ने मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की **ख़ाके शिफ़ा** इस्ति'माल करने का मश्वरा दिया, तुर्क मरीज़ ने हिदायत पर अ़मल किया, जो मरज़ पन्दरह साल में ठीक न हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह एक साल में दो हिस्सा ख़त्म हो गया । वोह तुर्क रो रो कर अपना दर्दनाक वाक़िया सुनाया करता और **ख़ाके मदीना** के गुन गाया करता ।

(मदीनतुर्रसूल, स. 133 मुलख़्ख़सन)

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से

उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! बेशक ख़ाके मदीना में **अल्लाह** तआ़ला ने शिफ़ा रखी है, अगर ए'तिक़ाद सादिक़ हो तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की मिट्टी में शिफ़ा होने की बिशारतें अह़ादीषे मुबारका में मौजूद हैं। चुनान्चे **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ شِفَاءٌ مِّنَ الْجُذَامِ या'नी **ख़ाके मदीना** में जुज़ाम से शिफ़ा है। (جامع صغير ص٣٥٥ حديث٥٧٥٣) ह़ज़रते अ़ल्लामा क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि इस की मुबारक ख़ाक कोढ़ और सफ़ेद दाग़ की बीमारियों बल्कि हर बीमारी से शिफ़ा है। (اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة ج٣ ص٤٣١)

﴾2﴿ غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ يُبْرِئُ الْجُذَامَ या'नी **ख़ाके मदीना** जुज़ाम को अच्छा कर देती है। (جامع صغير ص ٣٥٥ حديث ٥٧٥٤)

﴾3﴿ وَالَّذِىْ نَفْسِى بِيَدِهٖ اِنَّ فِىْ غُبَارِهَا شِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है बेशक **ख़ाके मदीना** हर बीमारी की शिफ़ा है। (الترغيب والترهيب ج ٢ ص١٢٢ حديث١٨٨٥)

﴾49﴿ मदीने की मिट्टी और फलों में शिफ़ा

जज़्बुल क़ुलूब में है **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की **मिट्टी** और **फलों** में शिफ़ा रखी है और कई अहादीषे मुबारका में आया है, **ख़ाके मदीना में हर मरज़ से शिफ़ा है** और बा'ज़ अहादीषे मुबारका में مِنَ الْجُذَامِ وَ البَرَص या'नी कोढ़ और फुलबहरी (या'नी बरस) से शिफ़ा का ज़िक्र है और बा'ज़ "अख़्बार" में मदीने के एक ख़ास मक़ाम सुऐब (अ़वाम इस जगह को "ख़ाके शिफ़ा" बोलते हैं) का तज़्किरा है बा'ज़ रिवायात में है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सहाबा को हुक्म फ़रमाया कि वोह इस ख़ाक से **बुख़ार** का इलाज करें। बुज़ुर्गों से इस ख़ास मक़ाम "सुऐब" की ख़ाक मुबारक से इलाज की **हिकायात** भी मिलती है। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 27 मुलख़्ख़सन)

﴾50﴿ साल भर का बुख़ार एक दिन में जाता रहा

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मजदुद्दीन फ़िरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मेरा ग़ुलाम साल भर से **बुख़ार** में मुब्तला था, मैं ने (मक़ामे सुऐब (या'नी ख़ाके शिफ़ा) से) ख़ाके मदीना ली और पानी में (क़लील मिक़दार में) घोल कर पिलाई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उसी दिन शिफ़ायाब हो गया। (ऐज़न)

﴾51﴿ ख़ाके शिफ़ा से वरम का इलाज

शैख़े मोहक़्क़िक़, हज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल हक़ मोहद्दिष देहल्वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जिन दिनों मेरी मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में हाज़िरी थी, किसी मरज़ के सबब मेरा पाऊं सूज गया, त़बीबों ने मिल कर उसे मोहलिक आ़रिज़ा (या'नी हलाक कर देने वाला मरज़) क़रार देते हुए इलाज से हाथ रोक दिया। मैं ने (मक़ामे सुऐ़ब से) ख़ाके पाक ली और इस्ति'माल शुरूअ़ किया اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों मे बड़ी आसानी से वरम (या'नी सूजुन) से नजात मिल गई। (ऐज़न) आ़शिक़ाने रसूल "मक़ामे सुऐ़ब" को "**ख़ाके शिफ़ा**" के नाम से जानते हैं, अफ़्सोस ! वोह मुबारक जगह अब छुपा दी गई है, बसा अवक़ात उ़श्शाक़ खोद कर "ख़ाके शिफ़ा" ह़ासिल कर लेते हैं, मगर इन्तिज़ामिया डामर वग़ैरा डाल कर फिर से बन्द कर देती है।

मदीने की मिट्टी ज़रा सी उठा कर

पियो घोल कर हर मरज़ की दवा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 347)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

हाजियों की 42 हिकायात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे अनाम عَلَيْهِ السَّلَام का सलाम अपने एक गुलाम के नाम

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक कूमसानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं : मेरे पास ख़ुरासान से एक आशिक़े रसूल आया और कहने लगा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सोया हुवा था कि जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ पर ख़्वाब में करम फ़रमाया : लबहाए मुबारका वा हुए, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : जब तू हमज़ान जाए तो अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक को मेरा सलाम कहना। मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन पर इस करम की वजह ? फ़रमाया : "वोह रोज़ाना 100 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है।" सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर वोह ख़ुरासानी (मुझ से) कहने लगा : मुझे भी वोह दुरूदे पाक बता दीजिये (जिस का आप विर्द करते हैं) तो मैं ने उसे बताया कि मैं रोज़ाना 100 या इस से ज़ियादा मरतबा येह दुरूदे पाक पढ़ता हूं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ جَزَى اللّٰهُ مُحَمَّدًا عَنَّا مَاهُوَ اَهْلُهٗ

उस आ़शिक़े रसूल ने येह दुरूदे पाक मुझ से सीख लिया और क़सम खा कर कहने लगा : मैं आप को जानता था न आप का कभी नाम सुना था, आप के बारे में मुझे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ही बताया । ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : मैं ने उस ख़ुश नसीब आ़शिक़े रसूल को तोह़्फ़ा पेश किया ताकि अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में कुछ मज़ीद उस से सुनूं, लेकिन क़बूल करने से इन्कार करते हुए वोह बोला : मैं सुल्ताने अम्बियाए किराम, रसूले ज़ी एह़तिराम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पैग़ाम पहुंचाने का कोई दुन्यवी बदला नहीं चाहता । इस के बा'द उस आ़शिक़े रसूल को मैं ने दोबारा कभी नहीं देखा । (تاریخ الاسلام للذهبی ج۳۲ ص۶۳)

﴾52﴿ वालिदे मर्ह़ूम पर जंगल में करम बालाए करम

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने दौराने त़वाफ़ एक आ़शिक़े रसूल को हर क़दम पर हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए देखा तो पूछा : "भाई ! "سُبۡحٰنَ اللّٰه , لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" के बजाए सिर्फ़ दुरूदे पाक पढ़े जाने में क्या राज़ है ?" तो उस ने मेरा नाम दर्याफ़्त किया, फिर कहा : मैं अपने वालिदे गिरामी के साथ **ह़ज्जे बैतुल्लाह** के लिये चला, अस्नाए सफ़र (या'नी सफ़र के दौरान) वालिदे बुज़ुर्गवार शदीद

बीमार हो गए, हम एक मक़ाम पर ठहर गए। इलाज मुआ़लजा किया मगर क़ज़ाए इलाही से वोह वफ़ात पा गए, यकायक उन का चेहरा सियाह और आंखें तिरछी हो गईं और पेट भी फूल गया। येह देख कर मैं घबरा गया और रोते हुए पढ़ा : "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾" [1] मैं ने मर्हूम के चेहरे पर चादर उढ़ा दी। इसी परेशानी के आ़लम में मुझे नींद ने आ घेरा, मैं ने ख़्वाब में इन्तिहाई साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक हुस्नो जमाल के पैकर मुअ़त्तर मुअ़त्तर बुज़ुर्ग की ज़ियारत की, ऐसा साहिबे हुस्नो जमाल मेरी आंख ने कभी नहीं देखा था और ऐसी ख़ुश्बू भी मैं ने कभी नहीं सूंघी थी, वोह मेरे वालिदे मर्हूम के क़रीब तशरीफ़ ले आए, चादर हटाई और अपना नूरानी हाथ उन के चेहरे पर फैरा। देखते ही देखते मर्हूम के चेहरे की सियाही नूर में तब्दील हो गई, आंखें और पेट भी दुरुस्त हो गए, जब वोह नूरानी बुज़ुर्ग वापस जाने के लिये पलटे तो मैं उन के दामन से लिपट गया और अ़र्ज़ की : "आप कौन हैं? जिन के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे वालिदे मर्हूम पर इस वीराने में येह एह़सान फ़रमाया है।" फ़रमाया : "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ?" **मैं साहिबे कुरआन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हूं, तुम्हारे वालिद गुनहगार थे लेकिन मुझ पर **कषरत से दुरूदे पाक** भेजते थे, जब येह इस तकलीफ़ में मुब्तला

---

1 : ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना है।* (پ۲،البقرۃ:۱۵۶)

हुए तो मुझ से फ़रियाद की थी और बेशक **जो मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है मैं उस की फ़रियाद रसी करता हूं।''** फिर मेरी आंख खुल गई, मैं ने देखा कि ह़क़ीक़त में भी मेरे वालिदे मर्हूम के **चेहरे पर नूर** फैला हुवा था और पेट भी अपनी अस्ली ह़ालत पर आ चुका था। (مُلَخَّص از تفسیرِ رُوحُ البیان ج۷ ص۲۲۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम
लिल्लाह अब हमारी फ़रियाद को पहुंचिये !
बेह़द है ह़ाल अबतर तुम पर सलाम हर दम (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(53) अपने आक़ा से पहले त़वाफ़ नहीं करूंगा

महबूबे रब्बे ग़नी, आक़ाए मक्की मदनी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सुल्ह़े हुदैबिया** के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना सफ़ीर बना कर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا भेजा कि कुफ़्फ़ार से मुज़ाकरात करें क्यूंकि उन लोगों ने येह तै किया था कि इस साल शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُم को मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दाख़िल नहीं होने देंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ **ह़रमे का'बा** पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि इस साल आप लोग **ह़ज**

नहीं कर सकते। कुफ़्फ़ारे मक्का ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : चूंकि आप यहां आ गए हैं, इस लिये चाहें तो **त़वाफ़** कर लीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे नबी मक्की मदनी صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर **त़वाफ़** करना गवारा न हुवा लिहाज़ा फ़रमाया : "مَا كُنْتُ لِاَفْعَلَ حَتّٰى يَطُوْفَ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या'नी मैं उस वक़्त तक तवाफ़े का'बा नहीं करूंगा जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तवाफ़ न कर लें।" (مسند امام احمد بن حنبل ج٦ص٤٨٩ حديث١٨٩٣٢)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह से क्या प्यार है उ़षमाने ग़नी का
मह़बूबे ख़ुदा यार है उ़षमाने ग़नी का (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾54﴿ 20 पैदल सफ़रे ह़ज

राकिबे दौशे मुस्त़फ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया, बरादरे शहीदे करबला, जिगर गोशए फ़ात़िमा, दिलबन्दे मुर्तज़ा, सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा फ़रमाया : मैं बहुत शर्मिन्दा हूं, आह ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किस त़रह़ मुलाक़ात करूंगा ! अफ़्सोस ! उस के पाक घर (या'नी का'बए मुशर्रफ़ा) तक कभी पैदल चल कर नहीं आया। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 20 बार मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا **ह़ज** के लिये पैदल आए। मन्क़ूल है : एक

मक़ामे इब्राहीम | ह़जरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे ह़िरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल | मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुअ़ह | मस्जिदे क़ैबतैन

मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने **ख़ानए का'बा** का त़वाफ़ किया फिर **मक़ामे इब्राहीम** पर दो रक्अ़त नमाज़ वाजिबुत्त़वाफ़ अदा की फिर अपना रुख़्सारे मुबारक मक़ामे इब्राहीम पर रख दिया और ज़ारो क़ित़ार रोते हुए इस त़रह़ मुनाजात की : "ऐ मेरे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ ! तेरा ह़क़ीर बन्दा तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है, तेरा भिकारी तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है, तेरा मिस्कीन बन्दा तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है," इन्हीं अल्फ़ाज़ को बार बार दोहराते और **रोते** रहे। इस के बा'द मस्जिदुल ह़राम से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का गुज़र चन्द मिस्कीनों के पास से हुवा जो बैठे (स-दक़े की) रोटियों के टुकड़े खा रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन को सलाम किया, जवाबे सलाम के बा'द उन्हों ने खाने की दा'वत दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बिला तकल्लुफ़ उन के दस्तरख़्वान पर बैठ गए और फ़रमाया : अगर येह रोटियों के टुकड़े स-दक़े के न होते तो आप ह़ज़रात के साथ खाने में ज़रूर शिर्कत करता, मगर हम आले रसूल के लिये स-दक़ा ह़राम है। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन मिस्कीनों को अपनी क़ियाम गाह पर साथ ले आए और सब को उ़म्दा खाना खिलाया, फिर रुख़्सत होते वक़्त सब को **दिरहम** भी इनायत फ़रमाए। (المستطرف ج ١ ص ٢٣)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वोह ह़सन मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दौशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾55﴿ आक़ा के साथ बारिश में त़वाफ़ की सआ़दत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बारिश में त़वाफ़ की भी क्या बात है ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इक़ाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस** बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ मैं ने **बारिश में त़वाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की, जब "मक़ामे इब्राहीम" पर हम दो रक्अ़त अदा कर चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : नए सिरे से अ़मल करो बेशक तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये गए हैं, **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इसी त़रह़ फ़रमाया और हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **बारिश में त़वाफ़ का शरफ़ ह़ासिल किया ।**

(ابنِ ماجہ ص٥٢٤ ج٣ حدیث٣١١٨)

सिलसिला है त़वाफ़ का या रब्ब	*आज है रू बरू मेरे का'बा*
बारिशे नूर में नहा या रब्ब	*अब्र बरसा दे नूर का कि लूं*

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾56﴿ मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो

ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ इलाह आबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی हिन्द के बाशिन्दे और जलीलुल क़द्र आ़लिमे दीन थे, चालीस साल से ज़ाइद मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम पज़ीर रहे। इल्तिज़ामन (ज़रूर) हर साल **ह़ज** करते । एक साल ज़मानए **ह़ज** में आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه बहुत अ़लील और साहि़बे फ़िराश (या'नी बीमार हो कर बिस्तर पर पड़े) थे, (ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम की) नवीं तारीख़ अपने तलामिज़ा (या'नी शागिर्दों) से कहा : "मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो !" कई आदमी उठा कर लाए, का'बए मुअ़ज़्ज़मा के सामने बिठाया, **ज़म ज़म शरीफ़** मंगा कर पिया और दुआ़ की, कि "इलाही (عَزَّوَجَلَّ) **ह़ज** से मह़रूम न रख ।" उसी वक़्त मौला तआ़ला ने ऐसी **कुव्वत** अ़त़ा फ़रमाई कि उठ कर अपने पाऊं से अ़रफ़ात शरीफ़ गए और **ह़ज** अदा किया ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हि़स्सा. 2, स. 198 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर यक़ीने मोह़्कम हो तो बेशक आबे ज़म ज़म पीने के बा'द जो दुआ़ मांगी जाए क़बूल होती है और क्यूं न हो कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ज़म ज़म जिस मुराद के लिये पिया जाए उसी के लिये है ।"

(ابن ماجه ج٣ص٤٩٠ حديث ٣٠٦٢)

येह ज़म ज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़म ज़म में जन्नत है इसी ज़म ज़म में कौषर है

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

﴾57﴿ ह़ल्क़ में सूई चुभने का ज़म ज़म से इलाज हो गया

ह़म्ज़ा बिन वासिल अपने वालिदे गिरामी से नक़्ल करते हैं : ह़रमे मोह़तरम में एक आदमी ने सत्तू खाए, उस में **सूई** थी जो कि ह़ल्क़ में चुभ गई और उस की जान पर बन गई, लाख जतन करने के बा वुजूद आराम न हुवा, उस ने कराहते हुए कहा : मेरा आख़िरी इलाज **ज़म ज़म** है मुझे **आबे ज़म ज़म** पिलाओ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ठीक हो जाऊंगा। चुनान्चे उसे **आबे ज़म ज़म** पिलाया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आबे ज़म ज़म शरीफ़ की बरकत से उसे सिह़्ह़त मिल गई।** रावी कहते हैं : मेरे वालिद साह़िब ने उस आदमी को कई दिन बा'द ह़रम शरीफ़ में देखा कि वोह पुर सुकून और मुकम्मल सिह़्ह़तयाब है। (شفاء الغرام ج ١ ص ٣٣٨)

मैं मक्के में जा कर करूंगा त़वाफ़ और
*नसीब आबे **ज़म ज़म** मुझे होगा पीना*

(वसाइले बख़्शिश, स. 323)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾58﴿ प्यास का बीमार और आबे ज़म ज़म की बहार

एक यमनी जो कि इस्तिस्क़ा (اِس۔تِس۔قا)(या'नी पेट बढ़ जाने और शदीद प्यास लगने) के मरज़ में मुब्तला था, यमन के त़बीबों ने उसे ला इलाज क़रार दे दिया था मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا ह़ाज़िर हुवा, यहां के त़बीबों ने भी मा'ज़िरत कर ली। **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दिल में डाला कि वोह **आबे ज़म ज़म** पिये चुनान्चे **उस ने ख़ूब पेट भर कर आबे ज़म ज़म** पिया और **रब्बुल अरबाब** عَزَّوَجَلَّ **के फ़ज़्लो करम से शिफ़ायाब हो गया।** (ऐज़न स. 255)

तू मक्के की गलियां दिखा या इलाही
*वहां ख़ूब **ज़म ज़म** पिला या इलाही*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾59﴿ अ़ताओं का कुंवां सज़ाओं का कुंवां

मुजाहिद बिन यह्या बल्ख़ी फ़रमाते हैं : एक ख़ुरासानी 60 साल से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में रहता था जो कि बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद शब ज़िन्दादार शख़्स था, दिन को कुरआने करीम पढ़ता, सारी रात त़वाफ़ करता। एक नेक और सालेह़ आदमी और उस ख़ुरासानी के दरमियान दोस्ती थी। उस सालेह़ मर्द ने अपने ख़ुरासानी दोस्त को दस हज़ार दीनार बत़ौरे अमानत दिये और सफ़र पर चला गया। जब सफ़र से लौटा तो पता चला उस का ख़ुरासानी दोस्त फ़ौत हो चुका है, येह उस के वारिषों के पास गया और अपनी अमानत मांगी, उन्हों ने ला इल्मी का इज़्हार किया। उस सालेह़ शख़्स ने फ़ुक़हाए मक्कए मुकर्रमा से इस वाक़िए का ज़िक्र किया, उन्हों ने फ़रमाया : हमें उम्मीद है मर्हूम ख़ुरासानी जन्नती होगा, तुम आधी रात के बाद **बिअरे ज़म ज़म** के अन्दर झांक कर इस त़रह़ आवाज़ देना : "ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत दी थी।" वोह जवाब दे देगा। उस ने ऐसा ही किया मगर **ज़म ज़म के कुंवें** से जवाब न आया। उस ने फिर उ़-लमाए मक्कए मुकर्रमा से राबित़ा किया, उन्हों ने इज़्हारे अफ़्सोस करते हुए कहा : शायद वोह जन्नतियों में से नहीं वरना उस की रूह़ बिअरे ज़म ज़म में होती, अब तुम **यमन** में बिअरे बरहूत पर जा

कर इसी त़रह़ बुलाओ। वोह कुंवां जहन्नम के कनारे पर है वहां जहन्नमियों की रूहें होती हैं। चुनान्चे येह यमन पहुंचा और बिअरे बरहूत में झांक कर आवाज़ दी : "ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत दी थी।" वहां रूहों को चीख़ते सुना, एक से पूछा : तू क्यूं अ़ज़ाब में मुब्तला है ? उस ने कहा : "मैं ज़ालिम था ह़राम खाता था मलकुल मौत ने मुझे यहां फैंक दिया है।" दूसरी रूह़ बोली : "मैं अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान की रूह़ हूं, ज़ुल्म की वजह से यहां अ़ज़ाब में हूं।" उस मर्दे सालेह़ का बयान है : मैं ने तीसरी आवाज़ सुनी जो कि मर्हूम ख़ुरासानी दोस्त की थी, मैं ने पूछा : तुम यहां कैसे ? तुम तो आ़बिदो ज़ाहिद थे ! ख़ुरासानी ने कहा : "मेरी एक मा'ज़ूर बहन थी जिस से मैं ने ला परवाही और क़त़्ए़ रेह़मी की (या'नी रिश्ता तोड़ा) जिस की वजह से सारी इ़बादत तबाह हो गई और मुब्तलाए अ़ज़ाब हूं।" उस ने पूछा : मेरी अमानत कहां है ? ख़ुरासानी ने कहा : "मेरे मकान के फ़ुलां कोने में मदफ़ून है जा कर निकाल लो।" चुनान्चे येह मर्दे सालेह़ **मर्हूम ख़ुरासानी** के मकान पर गया, वहां से अपनी रक़म निकाली और फिर उस की **बहन** के पास पहुंचा, उस की ज़रूरियात पूरी कीं, वोह ख़ुश हो गई। मर्दे सालेह़ ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हो कर **बिअरे ज़म ज़म** में झांक कर आवाज़ दी, मर्हूम ख़ुरासानी ने जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **बिरे बरहूत** से नजात मिल गई है और अब **बिअरे ज़म ज़म** में **अम्नो** चैन से हूं।

(بلد الامین ص ۹۸،۹۹)

या इलाही ! रिश्तेदारों से करूं हुस्ने सुलूक
क़त़ए रेह़मी से बचूं इस में करूं न भूलचूक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾60﴿ हिन्द से यकायक का'बे के रू ब रू

हिन्द में मौजूद एक घास काटने वाले बूढ़े साहिब को 9 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम के रोज़ ख़याल आया कि आज यौमे अ़रफ़ा है, ख़ुश नसीब हुज्जाजे किराम मैदाने अ़रफ़ात में जम्अ़ होंगे येह ख़याल आते ही बूढ़े साहिब ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर निहायत ह़सरत से कहा : ऐ काश ! मैं भी **ह़ज** से मुशर्रफ़ हुवा होता। **क़ुदवतुल कुब्रा**, मह़बूबे यज़्दानी, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सय्यिद अशरफ़ जहांगीर समनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی क़रीब ही तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने उस की ह़सरत भरी आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : "इधर आइये !" बूढ़े साहिब क़रीब आए, अब ज़बान से नहीं सिर्फ़ दस्ते मुबारक के इशारे से फ़रमाया : "जाइये !" इशारा होते ही उस बूढ़े साहिब ने हाथोंहाथ अपने आप को मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की मस्जिदुल ह़राम में ऐ़न का'बे के सामने खड़ा पाया ! उन्हों ने झूम झूम कर त़वाफ़ किया, अ़रफ़ात पहुंचे और दीगर मनासिके ह़ज अदा किये। जब अय्यामे ह़ज पूरे हो गए तो बूढ़े ह़ाजी साहिब के दिल में ख़याल आया कि अब अपने वत़न किस त़रह़ पहुंचूंगा ! इस ख़याल का आना था कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जहांगीर समनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی

को अपने सामने खड़ा पाया, फ़रमाने लगे : "जाइये !" बूढ़े हाजी साहिब ने जूंही सर उठाया तो हिन्द में अपने घर के अन्दर थे ।

(लताइफ़े अशरफ़ी हिस्सा. 3, स. 602-603 बित्तसर्रुफ़)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से हसन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾61﴿ अनोखा कोढ़ी

हज़रते सय्यिदुना अबुल हुसैन दर्राज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : एक साल मैं अकेला **हज** पर रवाना हुवा और तेज़ी से मन्ज़िलें तै करता हुवा "**क़ादिसिय्या**" जा पहुंचा । वहां किसी मस्जिद में गया तो मेरी नज़र एक मज्ज़ूम या'नी कोढ़ी शख़्स पर पड़ी । उस ने मुझे सलाम किया और कहा : "ऐ अबल हुसैन ! क्या **हज** का इरादा है ?" उसे देख कर मुझे बहुत ज़ियादा कराहत (या'नी घिन) मह़सूस हो रही थी लिहाज़ा मैं ने बड़ी बे रुख़ी से कहा : "हां ।" वोह कहने लगा : "फिर मुझे भी साथ ले चलिये ।" मैं ने दिल में कहा : "येह एक नई मुसीबत आन पड़ी ! मैं तो तन्दुरुस्त लोगों की रफ़ाक़त (या'नी हमराही) से भी भागता हूं और एक **कोढ़ी** मुझे अपने साथ रखने की फ़रमाइश कर रहा है !" मैं ने साफ़ इन्कार कर दिया । वोह लजाजत से बोला : "आप की बड़ी मेहरबानी होगी, मुझे साथ ले लीजिये ।" मगर मैं ने क़सम खा ली : "ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ

की क़सम ! मैं हरगिज़ तुम्हें अपना रफ़ीक़ (साथी) न बनाऊंगा।" उस ने कहा : "अबुल हुसैन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि ताक़तवर भी हैरान रह जाते हैं !**" मैं ने कहा : "तुम ठीक कहते हो मगर मैं तुम्हें साथ नहीं रख सकता।" अ़स्र की नमाज़ पढ़ कर मैं ने दोबारा सफ़र शुरूअ़ किया और सुब्ह के वक़्त एक बस्ती में पहुंचा तो हैरत अंगेज़ तौर पर उसी **कोढ़ी शख़्स** से मुलाक़ात हुई, उस ने मुझे देखते ही सलाम किया और बोला : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि ताक़तवर भी हैरान रह जाते हैं !**" उस की येह बात सुन कर मुझे उस के बारे में अ़जीबो ग़रीब ख़यालात आने लगे। बहर हाल मैं वहां से रवाना हुवा, जब मक़ामे "**क़र्आ**" पहुंच कर नमाज़ पढ़ने मस्जिद में दाख़िल हुवा तो उसे भी वहां बैठे देखा, उस ने कहा : "ऐ अबल हुसैन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि ताक़तवर भी हैरान रह जाते हैं !**" येह सुन कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और मैं ने बड़े अदब से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं **अल्लाहो ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं और आप से भी दरगुज़र का ख़्वास्तगार हूं, मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये।" फ़रमाने लगे : "येह आप कैसी बातें कर रहे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : मुझ से बहुत बड़ी ग़लती हो गई कि आप के साथ सफ़र न किया, बराहे करम ! मुझे मुआ़फ़ी से नवाज़ते हुए शरीके सफ़र कर लीजिये। फ़रमाया : "आप मुझे साथ न रखने की क़सम खा चुके हैं और मैं आप की क़सम नहीं तुड़वाना चाहता।"

मैं ने कहा : अच्छा ! फिर इतना करम फ़रमा दीजिये कि हर मन्ज़िल (पड़ाव) पर अपनी ज़ियारत की तरकीब फ़रमा दीजिये । फ़रमाया : "اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" फिर वोह मेरी निगाहों से ओझल हो गए और मैं भी आगे बढ़ गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस नेक बन्दे की बरकत से बाक़ी सफ़र में मुझे भूको प्यास और थकावट का एह़सास तक न हुवा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे हर मन्ज़िल पर उस बुज़ुर्ग की ज़ियारत होती रही यहां तक कि मैं मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की मुश्कबार फ़ज़ाओं से फ़ैज़याब होने के बा'द **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहुंच गया । वहां पर ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन मुज़य्यिन** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِمَا से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा । जब मैं ने उन्हें येह **ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़** सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : "अरे नादान ! जानते हो वोह कौन थे ? वोह **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم थे, हम तो दुआ़एं मांगते हैं कि काश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने इस **वली** का दीदार नसीब फ़रमाए । सुनो ! अब जब भी तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो हमें ज़रूर बताना । दसवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को जब मैं ने **जम्रतुल अ़क़्बा** या'नी बड़े शैत़ान को रमी की (या'नी कंकरियां मारीं) तो किसी शख़्स ने मुझे अपनी त़रफ़ खींचा और कहा : "ऐ अबुल ह़ुसैन ! السلام علیکم " जैसे ही मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो मेरे सामने वोही बुज़ुर्ग या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم मौजूद थे । उन्हें देखते ही मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई

और मैं रोते रोते बेसुध हो कर गिर पड़ा ! जब मेरे हवास बहाल हुए तो वोह तशरीफ़ ले जा चुके थे। फिर आख़िरी दिन तवाफ़े रुख़्सत कर के "मक़ामे इब्राहीम" पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने के बा'द मैं ने जैसे ही दुआ़ के लिये हाथ उठाए अचानक किसी ने मुझे अपनी तरफ़ खींचा, देखा तो हज़रते सय्यिदुना **अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَيُّوْم थे, फ़रमाने लगे : "अबल हुसैन ! घबराने या शोर मचाने की ज़रूरत नहीं ! बे फ़िक्र रहिये।" मैं ख़ामोश रहा और मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में **तीन दुआ़एं** की, उन्हों ने मेरी हर दुआ़ पर "**आमीन**" कहा। इस के बा'द वोह मेरी नज़रों से ओझल हो गए और दोबारा नज़र नहीं आए। मेरी **तीन दुआ़एं** येह थीं, ﴾1﴿ ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे नज़्दीक "फ़क्र" ऐसा महबूब बना दे कि दुन्या में इस से ज़ियादा कोई शै मुझे प्यारी न हो ﴾2﴿ मुझे ऐसा न बनाना कि मेरी कोई रात इस हालत में गुज़रे कि मैं ने सुब्ह के लिये कोई चीज़ ज़ख़ीरा कर के रखी हो। फिर ऐसा ही हुवा कई साल गुज़र गए लेकिन मैं ने कोई चीज़ अपने पास ज़ख़ीरा कर के न रखी और तीसरी दुआ़ येह थी : ﴾3﴿ ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! जब तू अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को अपने दीदार की दौलते उ़ज़्मा से मुशर्रफ़ फ़रमाए तो मुझे भी उन में शामिल फ़रमा लेना।" मुझे अपने रब्बे मजीद عَزَّوَجَلَّ से पूरी उम्मीद है कि मेरी इन दुआ़ओं को ज़रूर पूरा फ़रमाएगा क्यूंकि इन पर एक वलिय्ये कामिल ने "**आमीन**" की मुहर लगाई थी। (उ़यूनुल हिकायात, स. 291)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ज़ो'फ़ माना मगर येह ज़ालिम दिल
उन के रस्ते में तो थका न करे

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

《62》 जब बुलाया आक़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी किताब उ़यूनुल ह़िकायात में तह़रीर करते हैं : एक परहेज़गार शख़्स का बयान है : "मैं मुसल्सल तीन साल से **ह़ज** की दुआ़ कर रहा था लेकिन मेरी ह़सरत पूरी न हुई, चौथे साल **ह़ज का मौसिमे बहार** था और दिल आरज़ूए ह़रम में बे क़रार था। एक रात जब मैं सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा। आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।**" मेरी आंख खुली तो दिल ख़ुशी से झूम रहा था, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह मीठी मीठी आवाज़ कानों में रस घोल रही थी, "**तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।**" बारगाहे नबुव्वत से **ह़ज** की इजाज़त मिल चुकी थी, मैं बहुत शादां व फ़रहां था। अचानक याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह (या'नी सफ़र

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइर्रानह मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुअ़ह मस्जिदे क़िब्लतैन

मक़ामे इब्राहीम हज्रे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे हिरा जबले उहुद मेहराबे नबवी मिम्बरे रसूल

का ख़र्च) तो है नहीं ! इस ख़याल के आते ही मैं ग़मगीन हो गया। दूसरी शब महबूबे रब, शहनशाहे अ़रब صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में फिर ज़ियारत हुई, लेकिन मैं अपनी ग़ुर्बत का ज़िक्र न कर सका। इसी त़रह़ तीसरी रात भी ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से हुक्म हुवा : "**तुम इस साल ह़ज को चले जाना ।**" मैं ने सोचा अगर मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चौथी बार ख़्वाब में तशरीफ़ लाए तो मैं अपनी माली ह़ालत के **मुतअ़ल्लिक़** अ़र्ज़ करूंगा।

आह ! पल्ले ज़र नहीं रख़्ते सफ़र सरवर नहीं
तुम बुला लो तुम बुलाने पर हो क़ादिर या नबी

चौथी रात फिर सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे ग़रीब ख़ाने में जल्वागरी फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : "**तुम इस साल ह़ज को चले जाना ।**" मैं ने दस्तबस्ता अ़र्ज़ की : "मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे पास अख़राजात नहीं हैं।" इर्शाद फ़रमाया : "तुम अपने मकान में फ़ुलां जगह खोदो वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह मौजूद होगी।" इतना फ़रमा कर सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए। सुब्ह़ जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत ख़ुश था। नमाज़े फ़ज्र के बा'द आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बताई हुई जगह खोदी तो वहां वाक़ेई एक **क़ीमती ज़िरह** मौजूद थी वोह बिल्कुल साफ़ सुथरी थी गोया उसे किसी ने इस्ति'माल ही न किया हो ! मैं ने उसे चार हज़ार दीनार में बेचा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे **ह़ज** का खुद ही इन्तिज़ाम हो गया। (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 326 मुलख़्ख़सन)

जब बुलाया आक़ा ने
ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾63﴿ हम ने तेरी बात सुन ली है

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الحَق फ़रमाते हैं : मैं ने **हज** की सआ़दत हासिल की, का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ किया, **हजरे अस्वद** का बोसा लिया, दो रक्अ़त नमाज़े त़वाफ़ पढ़ी और का'बा शरीफ़ की दीवार के साथ बैठ कर **रोने** लगा और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** ! मैं ने तेरे पाक घर के गिर्द न जाने कितने ही चक्कर लगाए मगर मैं नहीं जानता कि क़बूल हुए या नहीं !" फिर मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई, मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी : "ऐ अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ ! हम ने तेरी बात सुन ली है, क्या तू अपने घर में सिर्फ़ उसी को नहीं बुलाता जिस से तू महब्बत करता है !" (الروض الفائق ص ۵۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बन्धना दियारे त़यबाह को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾64﴿ सब्र करते तो क़दमों से चश्मा जारी हो जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुनैफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं **ह़ज** के इरादे से चला, बग़दाद पहुंचने तक ह़ालत येह थी कि लगातार चालीस दिन तक कुछ न खाया था। सख़्त प्यास की ह़ालत में जब एक कुंवें पर गया तो वहां एक **हिरन** पानी पी रहा था, मुझे देखते ही हिरन भाग खड़ा हुवा, जब मैं ने कुंवें में झांका तो पानी बहुत नीचे था और इसे बिग़ैर डोल के निकाला नहीं जा सकता था।" मैं येह कहते हुए चल दिया : "मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरा मरतबा इस **हिरन** के बराबर भी नहीं !" तो मुझे पीछे से आवाज़ आई : "हम ने तुझे आज़माया था लेकिन तू ने सब्र न किया, अब वापस जा और पानी पी ले।" जब मैं गया तो कुंवां ऊपर तक पानी से भरा हुवा था, मैं ने ख़ूब प्यास बुझाई और अपना मश्कीज़ा भी भर लिया तो ग़ैब से एक आवाज़ सुनी : "हिरन तो **मश्कीज़े** के बिग़ैर आया था लेकिन तुम मश्कीज़े के साथ आए हो।" मैं रास्ते भर उसी मश्कीज़े से पानी पीता और वुज़ू करता रहा मगर पानी ख़त्म न हुवा। फिर जब **ह़ज** से वापसी हुई और जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो वहां **ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने मुझे देखते ही इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम लम्ह़ा भर भी सब्र कर लेते तो तुम्हारे क़दमों से चश्मा जारी हो जाता।" (الروض الفائق ص ۱۰۳)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन के तालिब ने जो चाहा पा लिया
उन के साइल ने जो मांगा मिल गया (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾65﴿ एक ताइफ़ की निराली दुआ

हज़रते सय्यिदुना **क़ासिम** बिन उ़षमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان जो कि साहिबे इल्मो फ़ज़्ल और मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे, फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को देखा कि दौराने तवाफ़ सिर्फ़ येही दुआ किये जा रहा था : اَللّٰهُمَّ قَضَيْتَ حَاجَةَ الْمُحْتَاجِيْنَ وَحَاجَتِيْ لَمْ تَقْضِ या'नी "ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! तू ने सब हाजतमन्दों की हाजत पूरी फ़रमा दी और मेरी हाजत पूरी नहीं हुई।" मैं ने उस से जब इस **निराली दुआ** की तकरार के बारे में इस्तिफ़्सार किया तो बोला : हम **सात अफ़राद** जिहाद में गए, ग़ैर मुस्लिमों ने हमें गिरिफ़्तार कर लिया, जब ब इरादए क़त्ल मैदान में लाए, मैं ने यकायक ऊपर सर उठाया तो क्या देखता हूं कि आस्मान में **सात दरवाज़े** खुले हैं और हर दरवाज़े पर एक **हूर** खड़ी है, जैसे ही हमारे एक रफ़ीक़ को शहीद किया गया, मैं ने देखा कि एक **हूर** हाथ में रूमाल लिये उस शहीद की रूह लेने के लिये ज़मीन पर उतर पड़ी, इसी तरह मेरे छे रुफ़क़ा शहीद किये

गए और सब की रूहें लेने एक एक **हूर** उतरती रही, जब मेरी बारी आई तो एक दरबारी ने अपनी ख़िदमत के लिये मुझे बादशाह से मांग लिया और मैं शहादत की सआ़दत से महरूम रह गया। मैं ने **एक हूर** को कहते सुना : "ऐ महरूम ! आख़िर इस सआ़दत से तू क्यूं महरूम रहा ?" फिर आस्मान के सातों दरवाज़े बन्द हो गए। तो ऐ भाई ! मुझे अपनी महरूमी पर सख़्त अफ़्सोस है। काश ! मुझे भी शहादत की सआ़दत इनायत हो जाती येही वोह हाजत है जिस का आप ने दुआ़ में सुना। हज़रते सय्यिदुना **क़ासिम** बिन उ़षमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक उन सातों ख़ुश नसीबों में सब से अफ़्ज़ल **येही सातवां** है जो क़त्ल से बच गया, इस ने अपनी आंखों से वोह रूह परवर मन्ज़र देखा जो दूसरों ने नहीं देखा फिर येह ज़िन्दा रहा और इन्तिहाई ज़ौक़ो शौक़ से नेकियां करता रहा। (المستطرف ج ١ ص٢٤٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

मालो दौलत की दुआ़ हम न ख़ुदा करते हैं
हम तो मरने की मदीने में दुआ़ करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾66﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : **अल्लाह रह़मान** के भरोसे पर तीन मुसलमान बिग़ैर ज़ादे राह **ह़ज** के लिये रवाना हुए। दौराने सफ़र उन्हों ने ईसाइयों की एक बस्ती में क़ियाम किया, इन में से एक की नज़र एक ख़ूबसूरत नसरानी (क्रिस्चैन) औ़रत पर पड़ी तो उस पर उस का दिल आ गया। वोह "आ़शिक़" ह़ीले बहाने से उस बस्ती में रुक गया और **दोनों ह़ाजी** आगे रवाना हो गए, अब उस आ़शिक़ ने अपने दिल की बात उस औ़रत के वालिद से की, उस ने कहा : "इस का महर तुम नहीं दे सकोगे।" पूछा : "क्या महर है ?" जवाब मिला : "ईसाई (क्रिस्चैन) हो जाओ।" उस बद क़िस्मत ने ईसाइय्यत इख़्तियार कर के उस औ़रत से निकाह़ कर लिया और दो बच्चे भी पैदा हुए। आख़िरश वोह मर गया। उस के दोनों रुफ़क़ा ह़ाजी किसी सफ़र में दोबारा उस बस्ती से गुज़रे तो तमाम ह़ालात से बा ख़बर हुए, उन्हें सख़्त अफ़्सोस हुवा, जब वोह नसरानियों (या'नी ईसाइयों) के क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़रे तो उस की (आ़शिक़े नाशाद की) क़ब्र पर एक औ़रत और दो बच्चों को रोते पाया, वोह दोनों ह़ाजी भी (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर याद कर के) रोने लगे, औ़रत ने पूछा : "आप लोग क्यूं रो रहे हैं ?" उन्हों ने मरने वाले की मुसलमान होने की ह़ालत में नमाज़ व इ़बादत और ज़ोहदो तक़्वा वग़ैरा का तज़्किरा किया। जब औ़रत ने येह सुना

तो उस का दिल **इस्लाम** की त़रफ़ माइल हो गया और वोह अपने दोनों बच्चों समेत **मुसलमान** हो गई । (الروض الفائق ص١٦ ملخصا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसा दिल हिला देने वाला मुआ़मला है कि राहे ह़रम का नेक परहेज़गार मुसाफ़िर यकायक **इश्क़े मजाज़ी** के चक्कर में फंस कर दिल के साथ साथ **दीन** भी दे बैठा और मुख़्तसर सा वक़्त रंगरेलियां मना कर मौत के रास्ते अन्धेरी क़ब्र की सीढ़ियां उतर गया ! इस **ह़िकायत** से दर्से इ़ब्रत लेते हुए हम सभी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर** से डरते और ख़ातिमा बिल ख़ैर की दुआ़ करते रहना चाहिये कि न जाने हमारे साथ क्या मुआ़मला हो ! मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा सनसनी खेज़ V.C.D या ऑडियो केसेट "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर**" ख़रीद कर ज़रूर मुलाह़ज़ा कीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप उठेंगे ।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾67﴿ ऐ काश ! मैं भी रोने वालों में से होता

दुआए अ़रफ़ात में **हाजियों** की अश्कबारी और आहो ज़ारी जब जारी हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना **बक्र** رَحْمَةُاللهِ تعالی عَلَيْه फ़रमाने लगे : "ऐ काश ! मैं भी इन रोने वाले हाजियों में से होता।" और ह़ज़रते सय्यिदुना **मुत़र्रिफ़** رَحْمَةُاللهِ تعالی عَلَيْه ने ख़ौफ़े ख़ुदा से मग़लूब हो कर बत़ौरे आ़जिज़ी अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मेरी (ना फ़रमानियों की) वजह से इन हाजियों को रद न फ़रमाना। (الروض الفائق ص ٥٩)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلّى الله تعالى عليه واٰله وسلّم

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम
तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾68﴿ वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों की मग़फ़िरत हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर عليه رحمة الله المُقتَدِر ने **33 ह़ज** अदा करने की सआ़दत पाई, अपने आख़िरी ह़ज में मैदाने अ़रफ़ात के अन्दर मुनाजात करते हुए अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने इसी **अ़रफ़ात** में 33 बार वुक़ूफ़ किया, एक मरतबा अपनी त़रफ़ से, और एक एक बार अपने मां और बाप की जानिब से **ह़ज** से मुशर्रफ़ हुवा। **या रब्ब** عَزَّ وَجَلَّ ! मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मैं ने बाक़ी 30 **ह़ज** उस शख़्स को हिबा

(या'नी तोहफ़े में) कर दिये जो यहां **अ़रफ़ात** में ठहरा लेकिन उस का वुक़ूफ़े अ़रफ़ा क़बूल ना किया गया।" जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ अ़रफ़ात से **मुज़्दलिफ़ा** पहुंचे तो ख़्वाब में निदा दी गई : "ऐ इब्ने मुन्कदिर ! क्या तू उस पर करम करता है जिस ने करम पैदा किया ? क्या तू उस पर सख़ावत करता है जिस ने सख़ावत पैदा फ़रमाई ? तेरा रब عَزَّوَجَلَّ तुझ से फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ने वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों को अ़रफ़ात पैदा करने से दो हज़ार साल पेहले ही बख़्श दिया था।" (الروض الفائق ص٦٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं
तेरी अ़ता का इशारा जो हो गया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾69﴿ आक़ा के नाम का ह़ज करने वाले पर करम बालाए करम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَق ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से **कई ह़ज** किये, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुवफ़्फ़क़ ! क्या तुम ने मेरी त़रफ़ से **ह़ज** किये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया :

"तुम ने मेरी त़रफ़ से तल्बिया कहा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : "मैं क़ियामत के दिन तुम्हें इन का बदला दूंगा और मैं मह़शर में तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें जन्नत में दाख़िल करूंगा जब कि लोग अभी ह़िसाब की सख़्ती में होंगे ।" (لبابُ الاحیاء ص۸۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 304)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾70﴿ 60 ह़ज करने वाला ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الحَق का येह **साठवां ह़ज** था, ह़रमे मोह़तरम में ह़ाज़िर थे उन के ज़ेह्न में यकायक ख़याल आया कि कब तक **ह़ज** के लिये हर साल वीरानों और जंगलों की ख़ाक छानोगे ! इतने में नींद का ग़लबा हुवा, सो गए और ग़ैबी आवाज़ सुनी : "उस के लिये ख़ुशख़बरी है जिसे उस के मौला عَزَّوَجَلَّ ने दोस्त रखा और अपने घर बुला कर बुलन्द रुत्बे से सरफ़राज़ फ़रमाया ।" (روض الریاحین ص ۱۰۷ ملخصا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ज़ो'फ़ माना मगर येह ज़ालिम दिल
उन के रस्ते में तो थका न करे !

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾71﴿ रुख़्सत की इजाज़त के मुन्तज़िर जवान को बिशारत

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने का'बए मुशर्रफ़ा के पास एक जवान को देखा जो मुसल्सल **नमाज़** पढ़े जा रहा था और रुकने का नाम ही न लेता था। मौक़अ़ मिलने पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से फ़रमाया : क्या बात है कि वापस जाने के बजाए मुसल्सल नमाज़ें पढ़े जा रहे हो ! कहने लगा : अपनी मर्ज़ी से कैसे जाऊं ? रुख़्सत की इजाज़त का इन्तिज़ार है ! हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अभी हम बातें ही कर रहे थे कि उस जवान के ऊपर एक रुक़्आ़ गिरा, उस में लिखा था : "येह ख़त **ख़ुदाए अ़ज़ीज़ो ग़फ़्फ़ार** की जानिब से इस के शुक्र गुज़ार व मुख़्लिस बन्दे के लिये है, वापस जा तेरे अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हैं।" (روض الریاحین ص ۱۰۸ ملخصاً)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾72﴿ मायूस न होने वाला ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : एक आ़बिद कहते हैं : मैं मुतवातिर कई साल तक **ह़ज** की सआ़दते उ़ज़्मा से सरफ़राज़ होता रहा और हर साल एक दरवेश को का'बए मुअ़ज़्ज़मा का दरवाज़ा पकड़े देखा। जब वोह "لَبَّيْكَ ط اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ط" कहता तो ग़ैब से आवाज़ सुनाई देती : "لَا لَبَّيْكَ" मैं ने **चोदहवें साल** उस शख़्स से पूछा : ऐ दरवेश तू बहरा तो नहीं ? उस ने जवाब दिया : "मैं सब कुछ सुन रहा हूं।" मैं ने कहा : फिर येह तकलीफ़ क्यूं उठाता है ? उस ने कहा : या शैख़ ! मैं ह़ल्फ़िया बयान करता हूं कि अगर बजाए 14 साल के चोदह हज़ार साल मेरी उ़म्र हो और बजाए साल भर के, हर रोज़ हज़ार बार येह जवाब "لَا لَبَّيْكَ" सुनाई दे तो फिर भी इस दरवाज़े से सर न उठाऊंगा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अभी हम मसरूफ़े गुफ़्त्गू थे कि अचानक आस्मान से एक काग़ज़ उस के सीने पर गिरा, उस ने वोह काग़ज़ मेरी त़रफ़ बढ़ाया, मैं ने पढ़ा तो उस में लिखा था : "ऐ मालिक बिन दीनार ! तू मेरे बन्दे को मुझ से जुदा करता है कि मैं ने इस के **कई साल के ह़ज** क़बूल नहीं किये, ऐसा नहीं बल्कि इस मुद्दत में आने वाले तमाम ह़ाजियों के ह़ज भी इसी की पुकार की बरकत से क़बूल किये हैं ताकि कोई मेरी बारगाह से मह़रूम न जाए।"

दुआ़ क़बूल न होने की हिक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से हमें येह भी मदनी फूल मिले कि क़बूलिय्यते दुआ़ में ख़्वाह कितनी ही ताख़ीर हो दिलबर्दाश्ता नहीं होना चाहिये, हम ताख़ीर की मस्लिहतें नहीं जानते, यक़ीनन क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर बल्कि सिरे से दुआ़ की क़बूलिय्यत का इज़्हार न होना भी हमारे हक़ में मुफ़ीद होता है। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन **हज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के फ़रमान का ख़ुलासा है : हिक्मते इलाही कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ त़लब करता है और (वोह عَزَّوَجَلَّ) बराहे मेहरबानी तेरी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता क्यूंकि तू जो मांग रहा होता है वोह अगर अ़ता कर दिया जाए तो तुझे नुक़्सान पहुंचे। मषलन तू **दौलत** मांगे और तुझे मिल जाए तो **ईमान** ख़त़रे में पड़ जाए, या तू **सिह़्ह़त** मांगे और उस का मिलना तेरी **आख़िरत** के लिये नुक़्सानदेह हो इस लिये वोह तेरी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता। पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 216 में इर्शाद होता है :

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।*

येह क्यूं कहूं मुझ को येह अ़ता हो येह अ़ता हो
वोह दो कि हमेशा मेरे घर भर का भला हो (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾73﴿ किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला !

दुआ़ क़बूल हो या न हो मांगने में कोताही नहीं करनी चाहिये अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ को पुकारते रहना भी बहुत बड़ी सआ़दत और ह़क़ीक़त में इबादत है। इस ज़िम्न में एक मज़ीद **हिकायत** मुलाह़ज़ा हो : एक ज़ईफुल उ़म्र बुज़ुर्ग एक नौजवान के साथ **ह़ज** करने गए जूं ही एह़राम बांध कर कहा : "لَبَّيك" (या'नी तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं) ग़ैब से आवाज़ आई : "لا لَبَّيك" (या'नी तेरी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं) नौजवान ह़ाजी ने उन से कहा : क्या आप ने येह जवाब सुना ? **बुढ़े ह़ाजी** ने फ़रमाया : जी हां, मैं तो **70** साल से येह जवाब सुन रहा हूं ! मैं हर बार अ़र्ज़ करता हूं لَبَّيك और जवाब आता है لا لَبَّيك, **नौजवान** ने कहा : फिर आप क्यूं आते, सफ़र की तकालीफ़ उठाते और ख़ुद को थकाते हैं ? **बूढ़े ह़ाजी** साहिब रो कर कहने लगे : **फिर मैं किस के दरवाज़े पर जाऊं** ? मुझे ख़्वाह रद किया जाए या क़बूल, मैं ने तो बस यहीं आना है, इस दर के सिवा मेरी कहीं पनाह नहीं। ग़ैब से आवाज़ आई : "जाओ ! तुम्हारी सारी ह़ाज़िरियां क़बूल हो गईं।"

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि.10, स. 176)

वोह सुनें या न सुनें उन की बहर ह़ाल ख़ुशी
दर्दे दिल हम तो कहे जाएंगे اِنْ شَآءَالله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾74﴿ ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ और एक आ'राबी

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने सख़्त गर्मियों के मौसिम में दौराने सफ़रे ह़ज मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا जाते हुए राह में पड़ाव किया, नाश्ते के वक़्त ख़ादिम से कहा : किसी मेहमान को ढूंड लाओ ! वोह गया और उस ने पहाड़ की त़रफ़ एक **आ'राबी** (या'नी दीहाती, बद्दू) को सोया हुवा देख कर पाऊं से ठोकर मार कर जगाया और कहा : तुम को गवर्नर **ह़ज्जाज** बिन युसूफ़ ने त़लब फ़रमाया है। वोह उठ कर ह़ज्जाज के पास आया। ह़ज्जाज ने कहा : "मेरे साथ खाना खा लो।" उस ने कहा : मैं आप से बेहतर **करीम** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं।" पूछा : "वोह कौन है ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कि उस ने मुझे **रोज़ा** रखने की दा'वत दी और मैं ने रख लिया। ह़ज्जाज बोला : ऐसी शदीद गर्मी में रोज़ा ? जवाब दिया : हां, क़ियामत की सख़्त तरीन गर्मी से बचने के लिये। ह़ज्जाज ने कहा : अच्छा तो अब कल रोज़ा न रखना और मेरे साथ खाना खा लेना। कहा : क्या आप **कल** तक मेरे जीने की ज़मानत दे सकते हैं ? बोला : "येह तो मेरे बस में नहीं। कहा : तअ़ज्जुब है कि आप आख़िरत के मुआ़मले में बेबस होने के बा वुजूद दुन्या त़लबी में लगे हुए हैं ! ह़ज्जाज ने कहा : येह खाना निहायत उ़म्दा है। जवाब दिया : इसे न आप ने उ़म्दा किया है न ही त़ब्बाख़ (या'नी बावर्ची) ने, बल्कि इसे सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत बख़्श होने की ख़ूबी ने उ़म्दा किया है या'नी जो मरीज़ हो उस को लज़्ज़त नहीं आती मगर

सिह्ह़त मन्द को येह ख़ूब भाता है और सिह्ह़तो आ़फ़िय्यत देने वाली ज़ात रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की है, लिहाज़ा उस क़ादिरे मुत्लक़ عَزَّوَجَلَّ की दा'वत पर रोज़ा रखना चाहिये। (رفیق المناسک ص۲۱۴)

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾75﴿ जिन का ह़ज क़बूल न हुवा उन पर भी करम हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الحَق फ़रमाते हैं : मैं ने 50 साल से ज़ाइद **ह़ज** किये, सिवाए एक के सब का षवाब जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ख़ुलफ़ाए अरबआ़ (या'नी चार यार) رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और अपने वालिदैन को ईसाल किया, अब **एक ह़ज** बाक़ी था (जिस का अभी तक ईसाले षवाब न किया था), मैं ने मैदाने अ़रफ़ात में मौजूद लोगों को देखा और उन की आवाज़ें सुनीं तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर इन लोगों में कोई ऐसा शख़्स है जिस का **ह़ज** मक़्बूल नहीं हुवा तो मैं ने अपने **ह़ज** का उसे **ईसाले षवाब** किया। फिर उस रात जब मैं **मुज़-दलिफ़ा** में सोया तो **अल्लाहुरब्बुल** عَزَّوَجَلَّ का ख़्वाब में दीदार किया। **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ ! क्या तू मुझ पर सख़ावत करता है ? मैं ने **अ़रफ़ात** में मौजूद तमाम अफ़्राद, इन की ता'दाद के बराबर मज़ीद और इन से भी दुगने

लोगों की मग़फ़िरत फ़रमा दी है और इन में से हर फ़र्द की उस के अहले ख़ाना और पड़ोसियों के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है। (روض الرياحين، ص١٢٨)

कोई ह़ज का सबब अब बना दे　　मुझ को का'बे का जल्वा दिखा दे
दीदे अ़रफ़ातो दीदे मिना की
मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 678)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾76﴿ सफ़रे ह़ज के बेहतरीन हम सफ़र

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم से अ़र्ज़ की : "मुझे ह़ज का सफ़र दरपेश है, कोई ऐसा हम सफ़र बताइये जिस की सोह़बते बा बरकत का फ़ैज़ लूटते हुए मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो सकूं।" फ़रमाया : "ऐ भाई ! अगर तुम **हम नशीन** चाहते हो तो तिलावते क़ुरआने मुबीन की **हम नशीनी** (या'नी सोह़बत) इख़्तियार करो और अगर साथी चाहते हो तो फ़िरिश्तों को अपना साथी बना लो और अगर **दोस्त** दरकार हो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने दोस्तों के दिलों का मालिक है और अगर **तोशा** (या'नी ज़ादे सफ़र) चाहते हो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर **यक़ीन** सब से बेहतरीन तोशा है और का'बतुल्लाह को अपने सामने तसव्वुर करते हुए ख़ुशी से इस का त़वाफ़ करो।" (بحرالدموع ص١٢٥)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

मो'जिज़ा शक़्क़ुल क़मर का है "मदीना" से इयां
"मह" ने शक़ हो कर लिया है "दीन" को आग़ोश में

शे'र का मत़लब : अपना तख़य्युल पेश करते हुए इस शे'र में शाइ़र ने निहायत उ़म्दा बात कही है, कि बत़ौरे मो'जिज़ा चांद के जो दो टुकड़े हुए हैं उस का लफ़्ज़े "मदीना" से यूं इज़्हार हो रहा है कि "मदीना" का पहला ह़र्फ़ م और आख़िरी ह़र्फ़ ه मिला दें तो "مہ" या'नी चांद हुवा और "مہ" के दोनों हुरूफ़ م और ه के बीच में लफ़्ज़े "دِین" मौजूद है जिस से लफ़्ज़ "مدینہ" बन गया ! और यूं गोया मदीना ने "दीन" को अपने दामन में लिया हुवा है !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़जीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुर्तइश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने बहुत से **ह़ज** किये और इन में से अक्सर सफ़रे ह़ज किसी क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये। फिर मुझ पर आश्कार (या'नी ज़ाहिर) हुवा कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूंकि एक मरतबा मेरी मां ने मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुक्म गिरां (या'नी बोझ) गुज़रा, चुनान्चे मैं ने समझ लिया कि **सफ़रे ह़ज** में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त़ अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूंकि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक ह़क़्क़े शरई पूरा करना (या'नी मां की इत़ाअ़त करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेह़द दुश्वार क्यूं मह़सूस होता।" (الرسالۃ القشیریۃ،ص١٣٥)

हुब्बे जाह की लज़्ज़त इबादत की मशक़्क़त आसान कर देती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن कैसी **मदनी सोच** रखते और किस क़दर आ़जिज़ी के ख़ूगर होते हैं। बा'ज़ों की आ़दत होती है, कि वोह आ़म लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रवय्या जारिहा़ना, ग़ैर अख़्लाक़ी और बसा अवक़ात सख़्त दिल आज़ार होता है। क्यूं ? इस लिये कि अ़वाम में उ़म्दा अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा मक़्बूलिय्यते आ़म्मा का बाइ़ष बनता है जब कि घर में हुस्ने सुलूक करने से इ़ज़्ज़तो शोहरत मिलने की ख़ास उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अ़वाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं ! इसी त़रह़ जो इस्लामी भाई बा'ज़ मुस्तह़ब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर कुरबानियां पेश करते मगर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मषलन मां बाप की इता़अ़त, बाल बच्चों की शरीअ़त के मुता़बिक़ तर्बिय्यत और ख़ुद अपने लिये **फ़र्ज़ उ़लूम** के हुसूल में ग़फ़्लत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस **हि़कायत** में इ़ब्रत के निहायत अहम **मदनी फूल** हैं। ह़क़ीक़त येह है कि जिन नेक कामों में "शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है" वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सरअन्जाम पा जाते हैं **क्यूंकि हुब्बे जाह** (या'नी शोहरतो इ़ज़्ज़त की चाहत) **के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक़्क़त आसान कर देती है।** याद रखिये ! "हुब्बे जाह" में हलाकत ही हलाकत है। इ़ब्रत के लिये दो **फ़रामैने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ताअ़त (या'नी इबादत) को बन्दों की तरफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की महब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं। (فردوس الاخبار ج١ ص ٢٢٣ حديث ١٠٦٧) ﴾2﴿ दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही **हुब्बे मालो जाह** (या'नी मालो दौलत और इ़ज़्ज़तो शोहरत की महब्बत) मुसलमान के **दीन** में मचाती है। (ترمذی ج٤ ص١٦٦ حديث ٢٣٨٣)

हुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल

"हुब्बे जाह" के तअ़ल्लुक़ से एह़याउल उ़लूम की जिल्द 3 सफ़्ह़ा 616 ता 617 को सामने रख कर कुछ **मदनी फूल** पेशे ख़िदमत हैं : "(हुब्बे जाहो रिया) नफ़्स को हलाक करने वाले आख़िरी उमूर और बातिनी मक्रो फ़रेब से है, इस में उ़-लमा, इबादत गुज़ार और आख़िरत की मन्ज़िल तै करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हैं, इस त़रह़ कि येह ह़ज़रात बसा अवक़ात ख़ूब कोशिशें कर के इबादात बजा लाने, नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने बल्कि शुबुहात से भी ख़ुद को बचाने में काम्याब हो जाते हैं, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरी गुनाहों से भी बचा लेते हैं मगर अ़वाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये की जाने वाली काविशों जैसे कि मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात (करने या ना'त पढ़ने) के लिये इतनी इतनी तारीख़ें "बुक" हैं, मदनी मश्वरे में रात इतने बज गए और आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज़ बैठी हुई है। "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र है, इतने इतने मदनी क़ाफ़िलों में या मदनी कामों के लिये फुलां फुलां शहरों,

मुल्कों का सफ़र कर चुका हूं वग़ैरा वग़ैरा के इज़्हार के ज़रीए़ अपने नफ़्स की राह़त के त़लबगार होते हैं, अपना इल्मो अ़मल ज़ाहिर कर के मख़्लूक़ के यहां मक़्बूलिय्यत और उन की त़रफ़ से होने वाली अपनी ता'ज़ीमो तौक़ीर, वाह वाह और इ़ज़्ज़त की **लज़्ज़त** ह़ासिल करते हैं, जब मक़्बूलिय्यत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़्स चाहता है कि इल्मो अ़मल लोगों पर ज़ियादा से ज़ियादा ज़ाहिर होना चाहिये ताकि और भी इ़ज़्ज़त बढ़े लिहाज़ा वोह अपनी नेकियों, इल्मी सलाहि़य्यतों के तअ़ल्लुक़ से मख़्लूक़ की इत्तिलाअ़ के मज़ीद रास्ते तलाश करता है और **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ के जानने पर कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरे आ'माल से बा ख़बर है और मुझे अज्र देने वाला है क़नाअ़त नहीं करता बल्कि इस बात पर ख़ुश होता है कि लोग उस की **वाह वाह और ता'रीफ़** करें और **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ह़ासिल होने वाली ता'रीफ़ पर क़नाअ़त नहीं करता, **नफ़्स** येह बात ब ख़ूबी जानता है कि लोगों को जब इस बात का इल्म होगा कि फ़ुलां बन्दा नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तारिक है, शुबुहात से बचता है, राहे ख़ुदा में ख़ूब पैसे ख़र्च करता है, इ़बादात में सख़्त मशक़्क़त बर्दाश्त करता है ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में ख़ूब आहो ज़ारी करता और आंसू बहाता है, मदनी कामों की ख़ूब धूमें मचाता है, लोगों की इस्लाह़ के लिये बहुत दिल जलाता है, ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता कराता है, ज़बान, आंख और पेट का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाता है, रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के इतने इतने दर्स देता है, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान), सदाए मदीना, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का बड़ा ही पाबन्द है तो उन (लोगों) की ज़बानों पर उस (बन्दे) की ख़ूब ता'रीफ़ जारी होगी, वोह उसे इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की निगाह से देखेंगे,

उस की मुलाक़ात और ज़ियारत को अपने लिये बाइषे सआ़दत और सरमायए आख़िरत समझेंगे, हुसूले बरकत के लिये मकान या दुकान पर "दो क़दम" रखने, चल कर दुआ़ फ़रमा देने, चाय पीने, दा'वते त़आ़म क़बूल करने की निहायत लजाजत के साथ दरख़्वास्तें करेंगे, इस की राय पर चलने में दो जहां की भलाई तसव्वुर करेंगे, उसे जहां देखेंगे ख़िदमत करेंगे और सलाम पेश करेंगे, इस का झूटा खाने पीने की ह़िर्स करेंगे, उस का तोह़्फ़ा या उस के हाथ से मस की हुई चीज़ पाने में एक दूसरे पर सबक़त करेंगे, उस की दी हुई चीज़ चूमेंगे, उस के हाथ पाऊं के बोसे लेंगे, एह़तिरामन "ह़ज़रत ! हुज़ूर ! या सय्यिदी !" वग़ैरा अल्क़ाब के साथ ख़ाशिआ़ना अन्दाज़ और आहिस्ता आवाज़ में बात करेंगे, हाथ जोड़ कर सर झुका कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करेंगे, मजालिस में उस की आमद पर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएंगे, उसे अदब की जगह बिठाएंगे, उस के आगे हाथ बांध कर खड़े होंगे, उस से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करेंगे, आ़जिज़ाना अन्दाज़ में तोह़्फ़े और नज़राने पेश करेंगे। तवाज़ोअ़ करते हुए उस के सामने अपने आप को छोटा (मषलन ख़ादिमो ग़ुलाम) ज़ाहिर करेंगे, ख़रीदो फ़रोख़्त और मुआ़मलात में उस से मुरव्वत बरतेंगे, उस को चीज़ें उ़म्दा क्वॉलिटी की और वोह भी सस्ती या मुफ़्त देंगे। उस के कामों में उस की इ़ज़्ज़त करते हुए झुक जाएंगे। **लोगों के इस त़रह़ के अ़क़ीदत भरे अन्दाज़ से नफ़्स को बहुत ज़ियादा लज़्ज़त ह़ासिल होती है और येह वोह लज़्ज़त है जो तमाम ख़्वाहिशात पर ग़ालिब है,** इस त़रह़ की अ़क़ीदत मन्दियों की लज़्ज़तों के सबब गुनाहों का छोड़ना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूंकि "हुब्बे जाह" के मरीज़ को नफ़्स गुनाह करवाने के बजाए उल्टा समझाता

है कि देख गुनाह करेगा तो अ़क़ीदतमन्द आंखें फैर लेंगे ! लिहाज़ा नफ़्स के तआ़वुन से मो'तक़िदीन में अपना वक़ार बर क़रार रखने के जज़्बे के सबब इबादत पर इस्तिक़ामत की शिद्दत उस को नर्मी व आसानी मह़सूस होती है क्यूंकि वोह बाति़नी तौ़र पर लज़्ज़तों की लज़्ज़त और तमाम शहवतों (या'नी ख़्वाहिशात) से बड़ी शहवत (या'नी अ़वाम की अ़क़ीदत से ह़ासिल होने वाली लज़्ज़त) का इदराक (या'नी पहचान) कर लेता है, वोह इस ख़ुश फ़हमी में पड़ जाता है कि मेरी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला के लिये और उस की मर्ज़ी के मुता़बिक़ गुज़र रही है, ह़ालांकि उस की ज़िन्दगी उस पोशीदा (ह़ुब्बे जाह या'नी अपनी वाह वाह चाहने वाली छुपी) ख़्वाहिश के तह़्त गुज़रती है जिस के इदराक (या'नी समझने) से निहायत मज़्बूत़ अ़क़्लें भी आ़जिज़ो बेबस हैं, वोह इबादते ख़ुदावन्दी में अपने आप को मुख़्लिस और ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला के महा़रिम (ह़राम कर्दा मुआ़मलात) से इजतिनाब (या'नी परहेज़) करने वाला समझ बैठता है ! ह़ालांकि ऐसा नहीं, बल्कि वोह तो बन्दों के सामने ज़ैबो ज़ीनत और तसन्नुअ़ (या'नी बनावट) के ज़रीए ख़ूब **लज़्ज़तें** पा रहा है, उसे जो इ़ज़्ज़त व शोहरत मिल रही है इस पर बड़ा ख़ुश है । **इस त़रह़ इबादतों और नेक कामों का षवाब ज़ाएअ़ हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िक़ों की फ़ेह़रिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समझ रहा होता है कि उसे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का क़ुर्ब ह़ासिल है ।**

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो

कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने वाले हाजियों के लिये मदनी फूल

बा'ज़ मालदार बार बार हज्जो उमरह को जाते, इस की गिनती ख़ूब याद रखते, बारहा बिग़ैर ज़रूरत बे पूछे लोगों को अपने हज्जो उमरह की ता'दाद बताते और सफ़रे मदीना के "कारनामे" सुनाते हैं उन को एह़सास तक नहीं होता कि कहीं रियाकारी की तबाहकारी में न जा पड़ें। **ह़त़ीम** शरीफ़ का दाखि़ला भी ह़ालांकि ऐ़न का'बए मुशर्रफ़ा ही का दाखि़ला है जो हर एक को नसीब हो सकता है मगर इस का तज़्किरा कोई नहीं करता और अगर किसी को दरवाज़ए का'बा के अन्दर दाखि़ला या किसी मुल्क के सर बराह के साथ सुन्हरी जालियों के अन्दर ह़ाज़िरी की सआ़दत मिल जाए तो अपने मुंह से अपने फ़ज़ाइल बयान करते नहीं थकता। इसी त़रह़ बा'ज़ लोग अपने फ़ज़ाइल इस त़रह़ बयान करते भी सुनाई देते हैं कि साह़िब ! वहां तो हम ने जो मांगा वोह मिला, हर तमन्ना पूरी हुई, फ़ुलां की मुलाक़ात की ख़्वाहिश हुई थोड़ी ही देर में मिल गए वग़ैरा। इस त़रह़ अपने मुंह "मियां मिठ्ठू" बन कर येह लोग समझते होंगे कि हमारा वक़ार बुलन्द होगा ह़ालांकि ऐसा होना ज़रूरी नहीं, हो सकता है बा'ज़ लोग इस का मत़लब येह भी लेते हों कि "येह ह़ाजी साह़िब" मक़ामाते मुक़द्दसा की अ़ज़मत के बयान के साथ साथ अपनी "करामत" भी सुना रहे हैं ! हां बत़ौरे तह़दीषे ने'मत या दूसरों को रग़बत दिलाने की निय्यत से अपने ऊपर होने वाले इन्आ़माते इलाहिय्या के तज़्किरे में ह़रज नहीं। बहर ह़ाल हर एक को अपनी निय्यत पर ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि मैं फ़ुलां बात क्यूं कहने लगा हूं।

अगर बताने में आख़िरत की भलाई का पहलू है तो बोले वरना चुप रहे। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखते है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।" (بُخاری حدیث۶۰۱۸ ج ٤ ص ۱۰۵)

क्या अपने हज्जो उ़मरह की ता'दाद बयान करना गुनाह है ?

अपने हज्जो उ़मरह की ता'दाद बयान करना हर सूरत में गुनाह नहीं, ह़दीषे पाक में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। (بخاری حدیث۱ ج۱ ص۲) अगर कोई तह़दीषे ने'मत (या'नी अपने ऊपर ने'मते इलाही की ख़बर देने) के लिये अपने **ह़ज** की ता'दाद बयान करे तो ह़रज नहीं मगर इल्मे दीन और सोह़बते अख़्यार की कमी के बाइ़ष फ़ी ज़माना इस्लाहे निय्यत बेह़द दुश्वार और रियाकारी का ख़त़रा शदीद। फ़र्ज़ कीजिये ! आप ने बिग़ैर पूछे किसी को बता दिया कि "मैं ने **दो ह़ज** किये हैं।" इस पर अगर वोह पूछ बैठे कि जनाब ! मुझे बताने की ज़रूरत कैसे पेश आई ? अब अगर आप ने घबरा कर कह दिया कि तह़दीषे ने'मत (**अल्लाह** तआ़ला की ने'मत का चर्चा करने) के लिये अ़र्ज़ किया है। इस पर हो सकता है कि साइल ख़ामोश हो जाए, मगर ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क्या येह कहते वक़्त कि "मैं ने दो ह़ज किये हैं" वाक़ेई आप के दिल में तेह़दीषे ने'मत या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का चर्चा करने की निय्यत थी ? अगर थी फिर तो ठीक वरना झूट के गुनाह का वबाल सर पड़ा और "दिल में कुछ ज़बान पर कुछ" की वजह से निफ़ाक़ और

बताते वक़्त अगर مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ दिल में रिया और दिखावे का इरादा था तो रियाकाराना अ़मल को तेह़दीषे ने'मत में खपाने की "रियाकारी दर रियाकारी" का इल्ज़ाम मज़ीद बर आं। मदनी इल्तिजा है कि ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना लगाने की कोशिश कीजिये कि ज़बान की ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली लग़्ज़िश भी जहन्नम में झौंक सकती है !

दो ह़ज ज़ाएअ़ कर दिये

मश्हूर मुह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی कहीं मदऊ़ थे मेज़बान ने अपने ख़ादिम से कहा : उन बरतनों में खाना खिलाओ जो मैं दूसरी बार के **ह़ज** में लाया हूं, सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने सुन कर फ़रमाया : मिस्कीन ! तू ने एक जुम्ले में **दो ह़ज** ज़ाएअ़ कर दिये ! (احسن الوعاء لآداب الدعاء، ص ۱۵۷)

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत

न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकियां छुपाओ

बे ज़रूरत अपने **ह़ज्जो उ़मरह** की ता'दाद, तिलावत कर्दा क़ुरआने पाक और दुरूदे पाक और दीगर अवराद पढ़ने की गिनती बताने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। (इख़्लास के मुतलाशी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का जारी कर्दा बयान का ऑडियो केसेट "नेकियां छुपाओ" ह़ासिल कर के सुनिये) बिला ह़ाजत अपने आप को ह़ाजी, क़ारी, ह़ाफ़िज़ कहने

लिखने वाले भी ग़ौर करें कि वोह **हज** या फ़न्ने क़िराअत या हिफ़्ज़े कुरआने पाक से मुशर्रफ़ होने का बह बांगे दुहुल ए'लान कर के क्या लेना चाह रहे हैं ? हां, लोग अपनी मर्ज़ी से ऐसों को हाजी साहिब, क़ारी साहिब या हाफ़िज़ साहिब कहें तो इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं । अलबत्ता बुजुर्गों के **हज** की ता'दाद का मुआमला भी इसी तरह है कि या तो उन के खुद्दाम ने इन को रिवायत किया होगा या तहदीषे ने'मत के लिये ब ज़बाने खुद इर्शाद फ़रमाया होगा । सरापा इख़्लास बन्दों का मन्शा हरगिज़ नेक नामी या अपनी पारसाई का सिक्का जमाना नहीं होता । यहां येह भी अ़र्ज़ करता चलूं कि अगर कोई हाजी अपने **हज** वग़ैरा की ता'दाद बताए भी तो हमें उसे रियाकार कहने की इजाज़त नहीं क्यूंकि दिलों का हाल रब्बे ज़ुल जलाल जानता है, हम पर लाज़िम है कि हुस्ने ज़न से काम लें ।

﴾77﴿ एक बुज़ुर्ग का शैतान से मुकालमा

किसी बुज़ुर्ग ने हज के रोज़ अ़रफ़ात शरीफ़ के मैदान में शैतान को ब शक्ले इन्सान इस हाल में देखा कि वोह निहायत कमज़ोर व ज़र्द रू है, उस की पीठ टूटी हुई है और रो रहा है । बुज़ुर्ग के पूछने पर उस ने अपने **रोने** का सबब कुछ यूं बताया कि चूंकि यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **हाजी** इकठ्ठे हुए हैं, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को रूस्वा नहीं करेगा, मुझे येह डर है कि कहीं सारे ही बख़्श न दिये जाएं ! अपनी **कमज़ोरी** का सबब उस ने राहे खुदा के मुसाफ़िरों के घोड़ों का हनहनाना (ہِن۔ہِ۔نانا) बताया और बसद अफ़्सोस कहा कि अगर येह सुवार (या'नी राहे खुदा के

मुसाफ़िर) मेरी पसन्द के (या'नी ग़फ़्लतों और गुनाहों भरे) रास्तों पर होते तो बहुत ख़ूब था। **ज़र्दरूई** या'नी पीला पड़ जाने का सबब उस ने इबादत पर लोगों का एक दूसरे की मदद करना क़रार दिया। उन बुज़ुर्ग ने जब येह पूछा कि तेरी **कमर** क्यूं टूटी हुई है? तो बोला : बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता है : "या **अल्लाह** ! मेरा **ख़ातिमा बिल ख़ैर** फ़रमा" तो मुझे सख़्त सदमा होता है और मेरी ख़्वाहिश होती है कि येह अपने नेक अ़मल को "कुछ" (या'नी बड़ा कारनामा) समझे, इस पर ख़ूब इतराए और फूले ताकि बरबाद हो, मुझे इस बात का ख़ौफ़ आता है कि कहीं इस को येह समझ न आ जाए कि अपने अ़मल पर इतराना नहीं चाहिये बल्कि सिर्फ़ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए आ़जिज़ी इख़्तियार करनी चाहिये।

(इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 322 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾78﴿ बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में सफ़ा और मरवह के दरमियान एक ख़च्चर सुवार देखा, कुछ ग़ुलाम "हट जाओ ! हट जाओ !!" की आवाज़ें लगा कर उस के सामने से लोगों को हटा रहे थे। कुछ अ़र्से बा'द मुझे वोही शख़्स बग़दाद में लम्बे बाल, नंगे पाऊं और ह़सरत ज़दा नज़र आया, मैं ने हैरत से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ

क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' जवाब दिया : मैं ने ऐसी जगह (या'नी मक्कए पाक में) ''बुलन्दी'' (बड़ाई) चाही जहां लोग ''आ़जिज़ी'' करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग बुलन्दी पाते हैं ।

(الزواجرعن اقتراف الكبائر ج١ص ١٦٤)

वोही सर बर सरे मह़शर बुलन्दी पाएगा जो सर
यहां दुन्या में उन के आस्ताने पर झुका होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 187)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾79﴿ ह़ज की ख़्वाहिश थी मगर पल्ले ज़र न था

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने एक बार अपने गुलाम मुज़ाह़िम से फ़रमाया : मेरी **ह़ज** की ख़्वाहिश है, क्या तुम्हारे पास कुछ रक़म है ? अ़र्ज़ की : दस दीनार से कुछ ज़ाइद हैं । फ़रमाया : इतनी सी रक़म में **ह़ज** क्यूंकर हो सकता है ! कुछ ही दिन गुज़रे थे कि मुज़ाह़िम ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! तय्यारी कीजिये, हमें बनू मरवान के माल से 17 हज़ार दीनार (सोने की अशरफ़ियां) मिल गए हैं । फ़रमाया : इन को बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो, अगर येह ह़लाल के हैं तो हम ब क़द्रे ज़रूरत ले चुके हैं और अगर ह़राम के हैं तो हमें नहीं चाहिये । मुज़ाह़िम का बयान है कि जब **अमीरुल मोअमिनीन** ने देखा कि येह बात मुझ पर गिरां (ना गवार) गुज़री है तो फ़रमाया : देखो मुज़ाह़िम ! जो काम मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किया करूं उसे गिरां (बोझ) न समझा करो, मेरा नफ़्स तरक़्क़ी पसन्द और

ख़ूब से ख़ूब तर का मुश्ताक़ (तलबगार) है, जब भी इसे कोई मर्तबा मिला इस ने फ़ौरन इस से बुलन्दतर मर्तबे के हुसूल की कोशिश शुरूअ़ कर दी, दुन्यावी मनासिब (या'नी ओ़हदों) में से बुलन्दतर मन्सब (या'नी ओ़हदा) ख़िलाफ़त है जो मेरे नफ़्स को ह़ासिल हो चुका है, अब येह सिर्फ़ और सिर्फ़ जन्नत का मुश्ताक़ है।

(سیرت عمر بن عبد العزیز لابن عبد الحکم ص ۵۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

आख़िरी उ़म्र है क्या रोनक़े दुन्या देखूं
अब फ़क़त़ एक ही धुन है कि मदीना देखूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में उन लोगों के लिये दर्से इ़ब्रत है जो रिश्वत, सूद, जूए, तिजारत में धोका और झूट जैसे ना जाइज़ ज़राएअ़ से दौलत इकठ्ठी करते हैं और इसी में से **ह़ज** कर के समझते हैं कि हम ने बहुत बड़ी काम्याबी ह़ासिल कर ली है। ख़बरदार ! येह काम्याबी नहीं बल्कि "चोरी और सीना ज़ोरी" वाला मुआ़मला है और इस का अन्जाम बहुत भयानक है। ह़दीष शरीफ़ में है : जो माले ह़राम ले कर ह़ज को जाता है जब لَبَّيْك कहता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाता है : न तेरी لَبَّيْك क़बूल, न ख़िदमत पज़ीर (या'नी मन्ज़ूर) और तेरा ह़ज तेरे मुंह पर मरदूद है, यहां तक कि तू येह माले ह़राम कि तेरे क़ब्ज़े में है उस के मुस्तह़िक़ों को वापस दे। (التذکرة فی الوعظ لابن جوزی ص ١٢٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾80﴿ हर दिल अ़ज़ीज़ ख़लीफ़ा

मक़्बूलिय्यत और हर दिल अ़ज़ीज़ी भी एक बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ है, हुस्ने अख़्लाक़ और अ़द्लो इन्साफ़ की ब दौलत अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز को येह ह़ासिल था, चुनान्चे आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ एक बार **ह़ज** के मोसिमे बहार में जब **मैदाने अ़रफ़ात** पहुंचे तो लोगों की तवज्जोह का मर्कज़ बन गए। ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अबी सालेह़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ भी उस हुजूम में मौजूद थे, इन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : वल्लाह ! मेरे ख़याल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز से मह़ब्बत फ़रमाता है, वालिद साह़िब ने इस की दलील पूछी तो कहा : लोगों के दिलों में उन की ख़ूब इ़ज़्ज़त है, फिर येह ह़दीषे पाक बयान की, कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) से फ़रमाता है कि मैं फ़ुलां से मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करो चुनान्चे (ह़ज़रत) जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) उस से मह़ब्बत करते हैं, फिर आस्मान वालों में निदा देते (या'नी ए'लान करते) हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां से मह़ब्बत रखता है तुम लोग भी उस से मह़ब्बत करो, चुनान्चे आस्मान वाले उस से मह़ब्बत करने लगते हैं, इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दुन्या में मक़्बूले आ़म बना देता है। (تاریخِ دِمشق ج٤٥ص١٤٥)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
*वोह कि इस दर से फिरा **अल्लाह** उस से फिर गया*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾81﴿ बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 339 ता 341 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़गार, बेह़द ख़ूबरू और ह़सीन नौ जवान थे। सफ़रे **ह़ज** के दौरान **मक़ामे अब्वा** पर एक बार अपने ख़ैमे (Camp) में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का रफ़ीक़े सफ़र खाने का इन्तिज़ाम करने के लिये गया हुवा था। नागाह एक **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** (या'नी अ़रब की दीहाती औ़रत) ख़ैमे में दाख़िल हुई और उस ने चेहरे से निक़ाब उठा दिया ! उस का ह़ुस्न बहुत ज़ियादा फ़ित्ना बर्पा कर रहा था ! कहने लगी : मुझे "**कुछ**" दीजिये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ समझे शायद रोटी मांग रही है। कहने लगी : मैं वोह चाहती हूं जो बीवी अपने शोहर से चाहती है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **ख़ौफ़े ख़ुदा** से लरज़ते हुए फ़रमाया : "तुझे मेरे पास शैत़ान ने भेजा है।" इतना फ़रमाने के बा'द अपना सरे मुबारक घुटनों में रख कर ब आवाज़े बुलन्द रोने लगे। येह मन्ज़र देख कर **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** घबरा कर तेज़ तेज़ क़दम उठाए ख़ैमे से बाहर निकल गई। जब रफ़ीक़ (साथी) आया और देखा कि रो रो कर

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने आंखें सुजा दीं और गला बिठा दिया है, तो उस ने सबबे गिर्या (या'नी रोने का सबब) दर्याफ़्त किया, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने अव्वलन टालम टौल से काम लिया मगर उस के पैहम इसरार पर ह़क़ीक़त का इज़्हार कर दिया तो वोह भी फूट फूट कर रोने लगा। फ़रमाया : तुम क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ की : मुझे तो ज़ियादा रोना चाहिये क्यूंकि अगर आप की जगह मैं होता तो शायद सब्र न कर सकता (या'नी हो सकता है मैं गुनाह में पड़ जाता) दोनों ह़ज़रात رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْهِما रोते रहे यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ाज़िर हो गए। त़वाफ़ो सई वग़ैरा से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ह़जरे अस्वद के पास तशरीफ़ लाए और चादर से घुटनों के गिर्द घेरा बांध कर बैठ गए। इतने में ऊंघ आ गई और आ़लमे ख़्वाब में पहुंच गए, एक हुस्नो जमाल के पैकर, मुअ़त़्त़र मुअ़त़्त़र ख़ुश लिबास दराज़ क़द बुज़ुर्ग नज़र आए, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने पूछा : आप कौन हैं ? जवाब दिया : मैं (**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का नबी) यूसुफ़ हूं। अ़र्ज़ की : या नबियल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! **ज़ुलैख़ा** के साथ आप का वाक़िआ़ अ़जीब है। फ़रमाया : **मक़ामे अब्वा** पर आ'राबिय्या के साथ होने वाला आप का वाक़िआ़ अ़जीब तर (या'नी ज़ियादा अ़जीब) है।

(इह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 130 मुलख़्ख़सन)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

देखा आप ने ! हज के मुबारक सफ़र में शैतान किस त़रह हाजियों को गुनाहों में फंसाने की तरकीबें करता है मगर कुरबान जाइये आ़शिक़ाने रसूल के पाकीज़ा किर्दार पर कि वोह शैतान के हर वार को नाकाम बनाते चले जाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **सुलैमान बिन यसार** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने खुद चल कर आने वाली **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** को ठुकरा दिया बल्कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** से रोना धोना मचा दिया, जिस के नतीजे में ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की हौसला अफ्ज़ाई फ़रमाई । बहर ह़ाल दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि जिन्से मुख़ालिफ़ (या'नी मर्द का औ़रत और औ़रत का मर्द) लाख दिल लुभाए और गुनाह पर उक्साए मगर इन्सान को चाहिये कि हरगिज़ शैत़ान के दामे तज्वीर (تَزْوِیر या'नी धोके) में न आए, हर सूरत में उस के चुंगल से खुद को बचाए और ख़ूब अज्रो षवाब कमाए ।

आख़िरी उ़म्र है क्या रोनक़े दुन्या देखूं
अब फ़क़त़ एक ही धुन है कि मदीना देखूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾86﴿ ब कषरत रोने वाला ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुख़व्वल رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इजली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने मुझ से फ़रमाया : मेरा **ह़ज** का इरादा है किसी को मेरा रफ़ीक़े सफ़र बना दीजिये ।

चुनान्चे मैं ने अपने एक पड़ौसी को उन के साथ सफ़रे मदीना पर आमादा कर लिया। दूसरे दिन मेरा पड़ौसी मेरे पास आया और कहने लगा। मैं हज़रते सय्यिदुना बुहैम के साथ नहीं जा सकता। मैं ने हैरत से कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कूफ़ा भर में उन जैसा बा अख़्लाक़ आदमी नहीं देखा। आख़िर क्या वजह है कि तुम उन की रफ़ाक़त से खुद को महरूम कर रहे हो ? वोह बोला : मैं ने सुना है कि वोह अकषर रोते रहते हैं, इस लिये उन के साथ मेरा सफ़र खुश गवार नहीं रहेगा। मैं ने उस को समझाया कि येह बहुत अच्छे बुज़ुर्ग हैं, उन की सोह़बत اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये निहायत मन्फ़अ़त बख़्श होगी। वोह मान गया। जब सफ़र के लिये ऊंटों पर सामान लादा जाने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इ़जली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی एक दीवार के क़रीब बैठ कर रोने में मश्ग़ूल हो गए, ह़त्ता कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दाढ़ी मुबारक और सीना अश्कों से तर हो गया और **आंसू** ज़मीन पर टप टप गिरने लगे। मेरे पड़ौसी ने घबरा कर मुझ से कहा : अभी तो सफ़र की शुरूआ़त है और इन का ह़ाल येह है ख़ुदा जाने आगे क्या आ़लम होगा ! मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए कहा : घबराइये नहीं सफ़र का मुआ़मला है, हो सकता है बाल बच्चों की जुदाई में रो रहे हों और आगे चल कर क़रार आ जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इ़जली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने येह बात सुन ली और फ़रमाया : **वल्लाह** ! ऐसी बात नहीं, इस सफ़र के सबब मुझे "सफ़रे आख़िरत" याद आ गया। येह फ़रमाते ही

चीख़ें मार मार कर रोने लगे। पड़ौसी ने फिर परेशानी के आ़लम में मुझ से कहा : मैं इन के हमराह कैसे रह सकूंगा ? हां इन का सफ़र ह़ज़रते सय्यिदुना **दावूद ताई** और सय्यिदुना **सलाम अबुल अह़वस** رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعالٰی के साथ होना चाहिये क्यूंकि येह हर दो ह़ज़रात भी बहुत **रोते** हैं, उन के साथ इन की तरकीब ख़ूब रहेगी और मिल कर ख़ूब रोया करेंगे। मैं ने फिर पड़ौसी की हिम्मत बंधाई, आख़िरे कार वोह उन के साथ **सफ़रे मदीना** पर रवाना हो गया। **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुख़व्वल رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं : जब **ह़ज** से उन की वापसी हुई तो मैं अपने पड़ौसी ह़ाजी के पास गया, उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, मैं ने इन जैसा आदमी कहीं नहीं देखा, ह़ालांकि मैं मालदार था फिर भी ग़रीब होने के बा वुजूद मुझ पर ख़ूब ख़र्च करते थे, बूढ़े होने के बा वुजूद रोज़े रखते, मुझ बेरोज़ा जवान के लिये खाना बनाते और मेरी बेह़द ख़िदमत किया करते थे। मैं ने कहा : आप तो इन के रोने के सबब परेशान होते थे अब क्या ज़ेहन है ? कहा : पहले पहल मैं बल्कि दीगर क़ाफ़िले वाले भी उन की रोने की कषरत से घबरा जाते थे मगर आहिस्ता आहिस्ता उन की सोह़बत की बरकत से हम पर भी रिक़्क़त त़ारी होने लगी और उन के साथ हम सब भी मिल कर रोते थे। **ह़ज़रते** सय्यिदुना **मुख़व्वल** رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیہ कहते हैं : इस के बा'द मैं ह़ज़रते सय्यिदुना **बुहैम इजली** عَلَیہِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی की

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने पड़ौसी ह़ाजी के बारे में दर्याफ़्त किया तो फ़रमाया : बहुत अच्छा रफ़ीक़ (साथी) था, ज़िक्रुल्लाह और कुरआने करीम की तिलावत की कषरत करता था और उस के आंसूं बहुत जल्द बह जाया करते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। (البحرالعمیق ج ۱ ص ۳۰۰ مُلَخَّصًا)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

यादे नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर
मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾83﴿ ह़ाजियों की ह़ैरत अंगेज़ ख़ैरख़्वाही

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने **ह़ज** का इरादा किया तो कई आ़शिक़ाने रसूल साथ चलने के लिये तय्यार हो गए, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने सब से अख़राजात ले कर एक सन्दूक़ में डाल कर मह़फ़ूज़ कर लिये, फिर अपने पल्ले से सब के लिये सुवारियां किराये पर लीं और क़ाफ़िला सूए ह़रम रवां दवां हो गया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ क़ाफ़िले वालों को अपनी जेबे ख़ास से उ़म्दा से उ़म्दा खाना खिलाते रहे। जब येह क़ाफ़िला बग़दाद शरीफ़ पहुंचा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने सब के लिये बेहतरीन लिबास और खाने पीने का कषीर सामान

ख़रीदा। क़ाफ़िला मन्ज़िलें तै करता हुवा बिल आख़िर मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا हाज़िर हो गया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने अपने हर हर रफ़ीक़ को मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से उन के घर वालों की फ़रमाइश के मुताबिक़ चीज़ें ख़रीद कर इनायत फ़रमाईं। इस के बा'द क़ाफ़िला मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تعظِیماً وَّ تکْرِیماً की पुरनूर फ़ज़ाओं में दाख़िल हुवा और **मनासिके हज** अदा किये। हज के बा'द यहां से भी अपने पल्ले से सब को तबर्रुकात वग़ैरा ख़रीद कर दिये। वापसी में भी रास्ते भर आशिक़ाने रसूल पर दिल खोल कर ख़र्च किया। जब क़ाफ़िला अपने वतन पहुंच गया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उन के घरों पर ह़स्बे ज़रूरत पलस्तर वग़ैरा करवा कर चूना करवा दिया। तीन दिन बा'द अपने क़ाफ़िले के तमाम हाजियों की दा'वत की और बतौरे सोग़ात उन्हें बेहतरीन मल्बूसात अ़ता किये, जब सब खाना खा चुके तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने सन्दूक़ मंगवा कर खोला और हर एक हाजी की रक़म जूं की तूं वापस कर दी। (उ़यूनुल हिकायात, स. 254 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

धारे चलते हैं अ़ता के वोह है क़त़रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴿84﴾ इमाम शाफ़ेई की सफ़रे ह़रम में सख़ावत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام की सख़ावत बे मिष्ल थी, और क्यूं न हो, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : **अल्लाह** तआ़ला ने अपने हर वली को अच्छे अख़्लाक़ और सख़ावत की फ़ित़रत इनायत फ़रमाई है । (تاریخ مدینہ دمشق ج ٥٤ ص ٤٧٢) मन्क़ूल है, सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی जब (यमन के शहर) सनआ़ से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की त़रफ़ आए तो आप के पास दस हज़ार दराहिम थे, मक्के शरीफ़ के बाहर ख़ैमा लगाया और चादर बिछा कर सारी रक़म उस पर डाल दी, जो भी आता उसे मुठ्ठी भर कर अ़त़ा फ़रमा देते, जब ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी तो वोह चादर झाड़ दी, उस पर एक दिरहम भी बाक़ी न बचा था । (इह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 310 मुलख़्ख़सन)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !
हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عَلٰى محمَّد

﴿85﴾ मैं क्यूं न रोऊं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَادِر जब ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا तशरीफ़ ले गए और मस्जिदुल ह़राम में दाख़िल हुए तो बैतुल्लाह शरीफ़ को देखा

तो रोने लगे ह़त्ता कि रोने में आप की आवाज़ बुलन्द हो गई। किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! सब लोगों की नज़रें आप की त़रफ़ लग गई हैं, इस क़दर ज़ोर से गिर्या व ज़ारी न फ़रमाइये। फ़रमाया : "क्यूं ना रोऊं ! शायद **अल्लाह** तआ़ला मेरे रोने के सबब मुझ पर रह़मत की नज़र फ़रमा दे और मैं बरोज़े क़ियामत उस की बारगाह में काम्याब हो जाऊं।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने त़वाफ़ किया और "मक़ामे इब्राहीम" पर नमाज़ पढ़ी जब सजदे से सर उठाया तो सजदे की जगह आंसूंओं से तर थी। (رَوضُ الرِّياحين ص۱۱۳)

__अल्लाह__ عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

अरे ज़ाइरे मदीना ! तू ख़ुशी से हंस रहा है
दिले ग़मज़दा जो पाता तो कुछ और बात होती

(वसाइले बख़्शिश, स. 308)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾86﴿ लब्बैक कहते ही बेहोश हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ ने जब अ़ज़्मे ह़ज्जे बैतुल्लाह किया और एह़राम बांधा तो चेहरए मुबारका ज़र्द हो गया और **लब्बैक** न कह सके। लोगों ने अ़र्ज़ की : आप **लब्बैक** नहीं पढते ? फ़रमाया : मुझे डर है कहीं जवाब में "**ला लब्बैक**" न कह दिया जाए ! अ़र्ज़ की गई : एह़राम बांध कर **लब्बैक** कहना ज़रूरी है। आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने **लब्बैक** पढ़ी

तो **बेहोश** हो कर सुवारी पर से गिर पड़े और इख़्तितामे हज तक येही सूरत रही कि जब भी **लब्बैक** कहते बेहोश हो जाते।

(تهذيب التهذيب ج ٥ ص ٦٧٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

उंगलियां कानों में दे दे के सुना करते हैं
ख़ल्वते दिल में अ़जब शोर है बर्पा तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾87﴿ अपाहज (اَپاهج) ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا के रास्ते में एक **अपाहज ह़ाजी** को देखा जो घिसट कर चल रहा था, मैं ने उस से पूछा : तुम कहां से आए हो? कहने लगा : समरक़न्द से। मैं ने फिर पूछा : कितना अ़र्सा हुवा वहां से चले हुए? जवाब दिया : दस बरस से ज़ियादा हो गए हैं। मैं बड़े तअ़ज्जुब से उस को देखने लगा, इस पर वोह बोला : **ऐ शक़ीक़** (رَحمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيه) ! क्या देख रहे हो? मैं ने कहा : तुम्हारी कमज़ोरी और सफ़र की दराज़ी ने मुझे मुतअ़ज्जिब कर दिया। कहने लगा : ऐ शक़ीक़! सफ़र की दूरी को मेरा शौक़ (या'नी इश्क़) क़रीब कर देगा और मेरी कमज़ोरी का सहारा मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ है। ऐ शक़ीक़ ! तुम एक ज़ईफ़ (या'नी कमज़ोर) बन्दे पर तअ़ज्जुब कर रहे हो! इस को तो इस का मालिक عَزَّوَجَلَّ चला रहा है।

ना तुवानी का अलम हम ज़ो'फ़ा को क्या हो !

हाथ पकड़े हुए मौला की तुवानाई है (ज़ौक़े ना'त)

फिर उस ने दो अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है :

(1)......ऐ मेरे आक़ा عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ज़ियारत को आ रहा हूं और इश्क़ की मन्ज़िलें कठिन हैं, लेकिन शौक़ (इश्क़) उस शख़्स की मदद किया करता है जिस की माल मदद नहीं करता।

(2)......वोह हरगिज़ आ़शिक़ नहीं जिस को रास्ते की हलाकत का ख़ौफ़ हो और न ही वोह आ़शिक़ है जिस को रास्तों की सख़्ती ने चलने से रोक दिया। (رَوضُ الرَّياحين ص ١٢٠)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए

हिले बहाने वालों को येह राह डर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾88﴿ ईदे क़ुरबान में जान क़ुरबान कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के हमराह ह़ज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये जा रहा था, रास्ते में एक नौजवान ह़ाजी देखा जो बिग़ैर ज़ादे राह पैदल चल रहा था। मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने पूछा : ऐ नौ जवान ! कहां से आए हो ? उस

ने जवाब दिया : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के पास से। पूछा : कहां जा रहे हो ? कहा : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के पास। पूछा : ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) कहां है ? बोला : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मए करम पर है। मैं ने कहा : येह त़वील रास्ता बिग़ैर तोशे (या'नी खाने पीने) के त़ै नहीं होगा, तेरे पास कुछ है भी ? बोला : जी हां, मैं ने घर से निकलते वक़्त **पांच हुरूफ़** ज़ादे राह के त़ौर पर ले लिये थे। पूछा : वोह पांच हुरूफ़ कौन से हैं ? उस ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान : كٓهٰيٰعٓصٓ. पूछा : इन हुरूफ़ से क्या मुराद है ? **काफ़** से "काफ़ी" या'नी किफ़ायत करने वाला, **हा** से "हादी" या'नी हिदायत करने वाला, **या** से पनाह देने वाला, **ऐन** से "आ़लिम" या'नी जानने वाला, **स़ाद** से "सादिक़" या'नी सच्चा। तो जिस का रफ़ीक़ काफ़ी व हादी व मुअवी (या'नी पनाह देने वाला) व आ़लिम और सादिक़ हो वोह कैसे ज़ाएअ़ या परेशान हो सकता है और उसे क्या ज़रूरत है कि ज़ादे राह और पानी उठाए फिरे ! ह़ज़रते सय्यिदुना **मालिक** बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि उस **ह़ाजी** का कलाम सुन कर मैं ने उस को अपनी क़मीस पेश की। उस ने क़बूल करने से इन्कार करते हुए कहा : "ऐ शैख़ ! दुन्या की क़मीस से बरह्ना रहना बेहतर है क्यूंकि दुन्या की ह़लाल चीज़ों पर ह़िसाब और ह़राम चीज़ों पर अ़ज़ाब है।" जब रात का अन्धेरा छा गया तो उस **ह़ाजी** ने मुंह आस्मान की त़रफ़ उठाया और इस त़रह "मुनाजात" करने लगा : "ऐ वोह पाक ज़ात ! जिस को बन्दों की इत़ाअ़त से

ख़ुशी होती है और बन्दों के गुनाहों से कुछ नुक़्सान नहीं होता, मुझे वोह चीज़ या'नी इबादत अ़ता फ़रमा जिस से तुझे ख़ुशी होती है और वोह चीज़ या'नी गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे जिस से तेरा कोई नुक़्सान नहीं।" जब लोगों ने एहराम बांध कर "लब्बैक" कही तो वोह ख़ामोश था, मैं ने पूछा : तुम लब्बैक क्यूं नहीं कहते ? उस ने कहा : मुझे डर है कि मैं कहूं "**लब्बैक**" और वोह फ़रमा दे : "لَالَبَّیْکَ وَلَا سَعْدَیْکَ وَلَا اَسْمَعُ کَلَامَکَ وَلَااَنْظُرُ اِلَیْکَ" "या'नी न तेरी लब्बैक क़बूल है और न सा'दैक और न मैं तेरा कलाम सुनूं और न तेरी त़रफ़ देखूं। फिर वोह चला गया। मैं ने उस **ह़ाजी** को सारे रास्ते में फिर कहीं न देखा, बिल आख़िर **मिना** शरीफ़ में वोह नज़र आ गया उस वक़्त वोह कुछ अ़रबी अश्आ़र पढ़ रहा था जिन का तर्जमा येह है : (1)......बेशक वोह ह़बीब (या'नी प्यारा) जिस को मेरा ख़ून बहना पसन्दीदा है तो मेरा ख़ून उस के लिये ह़लाल है ह़रम में भी और ह़रम के बाहर भी (2)......ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरी रूह़ को इ़ल्म हो जाए कि वोह किस ज़ाते अक़्दस से मह़ब्बत करती है तो वोह क़दम के बजाए सर के बल खड़ी हो जाए (3)......ऐ मलामत करने वाले ! उस के इ़श्क़ पर मुझे मलामत न कर कि अगर तुझे वोह नज़र आ जाए जो मैं देखता हूं तो तू कभी भी मुझे मलामत न करे (4) लोगों ने ई़द के दिन भेड़, बकरियों और ऊंटों की कुरबानी की और मह़बूब ने उस दिन मेरी जान की कुरबानी की (5)......लोगों का ह़ज हुवा है और मेरा ह़ज मेरे मह़बूब के पास जाना है। लोगों ने कुरबानियां हदिया कीं और मैं ने अपनी जान और अपने ख़ून की कुरबानी का तोह़फ़ा पेश किया।

अश्आ़र पढ़ने के बा'द वोह गिड़गिड़ा कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! लोगों ने कुरबानियां कीं और तेरा कुर्ब हासिल किया और मेरे पास तो कुछ भी नहीं जिस के साथ तेरा कुर्ब (या'नी नज़्दीकी) हासिल कर सकूं सिवाए अपनी जान के, तो इसी को तेरी बारगाह में नज़्र करता हूं तू इसे क़बूल फ़रमा ।" येह कहने के बा'द उस **हाजी** ने एक चीख़ मारी, ज़मीन पर गिरा और उस की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : फिर यकायक ग़ैब से एक आवाज़ गूंज उठी : **येह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का प्यारा है जो इश्क़े इलाही की तल्वार से क़त्ल हुवा है।** फिर मैं ने उस ख़ुश नसीब **हाजी** की तजहीज़ो तक्फ़ीन की। (رَوضُ الرَّیاحِین ص ٩٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क्या नज़्र करूं प्यारे ! शै कौन सी मेरी है
येह रूह भी तेरी है, येह जान भी तेरी है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾89﴿ पुर असरार हाजी

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : मैं ने मैदाने अ़रफ़ात में एक **हाजी साहिब** को देखा जो कि रो रो कर अ़रबी में येह अश्आ़र पढ़ रहे थे।

तर्जमा : ﴾1﴿......वोह ज़ात हर ऐ़ब से पाक है, अगर हम अपनी आंखों से कांटों और गर्म सूइयों पर भी उस को सजदा करें तो फिर

भी उस की ने'मतों के ह़क़ का दसवां ह़िस्सा बल्कि दसवें का भी दसवां नहीं-नहीं बल्कि उस का भी दसवां ह़िस्सा अदा न हो

﴿2﴾......ऐ पाक ज़ात ! मैं ने कितनी मरतबा लग़्ज़िशें (या'नी ख़त़ाएं) कीं और कभी भी अपनी ना फ़रमानियों में तुझे याद न किया मगर ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू हमेशा मुझे दर पर्दा याद फ़रमाता रहा

﴿3﴾......मैं ने न जाने कितनी ही मरतबा गुनाहों के वक़्त जहालत से अपना पर्दा फ़ाश किया मगर तूने हमेशा मुझ पर लुत्फ़ो करम ही किया और अपने ह़िल्म के साथ मेरी पर्दापोशी फ़रमाई।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : फिर वोह मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए। मैं ने ह़ाजियों से पूछा कि येह ह़ाजी साह़िब कौन थे ? तो किसी ने बताया कि येह **ह़ज़रते अबू उ़बैद ख़्वास** عليه رحمة الله الجواد थे। इन के "ख़्वास" (या'नी ख़ूबियों) में से एक येह भी है कि इन्हों ने सत्तर बरस तक **ख़ौफ़े ख़ुदा** के सबब आस्मान की त़रफ़ मुंह नहीं उठाया। (ऐज़न, स. 98)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلّم

बे नवा, मुफ़्लिसो मोह़ताज व गदा कौन ? "कि मैं"
साह़िबे जूदो करम वस्फ़ है किस का ? "तेरा"

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾90﴿ बिग़ैर हज किये हाजी

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हम दोनों भाई एक क़ाफ़िले के साथ **हज** के लिये रवाना हुए, जब "कूफ़ा" पहुंचे तो मैं कुछ ख़रीदने के लिये बाज़ार की त़रफ़ निकला, राह में येह अ़जीब मन्ज़र देखा कि एक वीरान सी जगह पर एक मुर्दार पड़ा था और एक मफ़्लूकुल ह़ाल औ़रत चाक़ू से उस के गोश्त के टुकड़े काट काट कर एक टोकरी में रख रही थी। मैं ने ख़याल किया कि येह मुर्दार गोश्त लिये जा रही है इस पर ख़ामोश नहीं रहना चाहिये मुमकिन है कि येह कोई भटयारन हो कि येही पका कर लोगों को खिला दे, मैं चुपके से उस के पीछे हो लिया।

वोह औ़रत एक मकान पर आ कर रुकी और दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से आवाज़ आई कौन? उस ने कहा : खोलो! मैं ही बदह़ाल हूं। दरवाज़ा खुला और उस में से चार लड़कियां आईं जिन से बदह़ाली और मुसीबत के आषार ज़ाहिर हो रहे थे। उस औ़रत ने अन्दर जा कर वोह टोकरी उन लड़कियों के सामने रख दी और **रोते** हुए कहा : "इस को पका लो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो, **अल्लाह** तआ़ला का अपने बन्दों पर इख़्तियार है, लोगों के दिल उसी के क़ब्ज़े में हैं।" वोह लड़कियां उस गोश्त को काट काट कर आग पर भूनने लगीं। मुझे क़ल्बी रंज हुवा, मैं ने बाहर से आवाज़ दी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस को न खाना।" वोह बोली : तू कौन है?

मैं ने कहा : मैं एक परदेसी आदमी हूं। बोली : ऐ परदेसी ! हम खुद ही मुक़द्दर के क़ैदी हैं, तीन साल से हमारा कोई मुईनो मददगार नहीं, अब तू हम से क्या चाहता है ? मैं ने कहा : मजूसियों के एक फ़िर्क़े के सिवा किसी मज़हब में मुर्दार का खाना जाइज़ नहीं। वोह बोली : "हम ख़ानदाने नुबुव्वत के शरीफ़ (सय्यिद) हैं, इन लड़कियों का बाप बड़ा नेक आदमी था वोह अपने ही जैसों से इन का निकाह़ करना चाहता था, इस की नौबत न आई और उस का इन्तिक़ाल हो गया। जो तर्का (विर्षा) उस ने छोड़ा था वोह ख़त्म हो गया, हमें मा'लूम है कि मुर्दार खाना जाइज़ नहीं लेकिन ह़ालते इज़्तिरार में जाइज़ हो जाता है और हमारा चार दिन का फ़ाक़ा है।(1) ख़ानदाने सादात के दर्दनाक ह़ालात सुन कर मुझे **रोना** आ गया और मैं इन्तिहाई बेचैनी के साथ वहां से वापस हुवा।"

मैं ने भाई के पास आ कर कहा कि मेरा इरादा **ह़ज** का नहीं है। उस ने मुझे बहुत समझाया और **ह़ज** के फ़ज़ाइल बताए कि **ह़ाजी** ऐसी ह़ालत में लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता वग़ैरा वग़ैरा। मगर मैं ने ब इसरार अपने कपड़े, एह़राम की चादरें

1.... : बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़्ह़ा 373 पर है :

मस्अला 1 : इज़्तिरार की ह़ालत में या'नी जब कि जान जाने का अन्देशा है अगर ह़लाल चीज़ खाने के लिये नहीं मिलती तो ह़राम चीज़ या मुर्दार या दूसरे की चीज़ खा कर अपनी जान बचाए और उन चीज़ों के खा लेने पर इस सूरत में मुआख़ज़ा नहीं, बल्कि न खा कर मर जाने में मुआख़ज़ा है अगर्चे पराई चीज़ खाने में तावान देना होगा।

मस्अला 2 : प्यास से हलाक होने का अन्देशा है, तो किसी चीज़ को पी कर अपने को हलाकत से बचाना फ़र्ज़ है। पानी नहीं है और शराब मौजूद है और मा'लूम है कि इस के पी लेने में जान बच जाएगी, तो इतनी पी ले जिस से येह अन्देशा जाता रहे।

और जो सामान मेरे साथ था जिस में छे सो दिरहम नक़्द भी थे सब ले कर चल दिया। बाज़ार से 100 दिरहम का आटा और 100 दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और बाक़ी 400 दिरहम आटे में छुपा दिये और सादाते किराम के घर पहुंचा और सब सामान कपड़े और आटा वग़ैरा उन को पेश कर दिया। उस **औ़रत** ने **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा किया और इस त़रह़ दुआ़ दी : ऐ इब्ने सुलैमान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ़ करे और तुझे **ह़ज का षवाब** और अपनी जन्नत में जगह अ़त़ा फ़रमाए और इस का ऐसा बदला अ़त़ा करे जो तुझ पर भी ज़ाहिर हो जाए।" **सब से बड़ी लड़की** ने दुआ़ दी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा अज्र दुगना करे और तेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाए।" **दूसरी** ने इस त़रह़ दुआ़ दी : "**अल्लाह** तआ़ला तुझे इस से बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाए जितना तूने हमें दिया।" **तीसरी** ने दुआ़ देते हुए कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे नानाजान रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तेरा ह़श्र करे।" **चोथी** ने जो सब से छोटी थी उस ने यूं दुआ़ दी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने हम पर एह़सान किया तू उस का ने'मल बदल उस को जल्दी अ़त़ा कर और उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा।"

हुज्जाज का क़ाफ़िला रवाना हो गया और मैं उस की वापसी के इन्तिज़ार में **कूफ़े** ही में मजबूरन पड़ा रहा। यहां तक कि ह़ाजियों की वापसी शुरूअ़ हो गई। जूं ही हुज्जाज का एक क़ाफ़िला मेरी आंखों के सामने आया अपनी ह़ज की सआ़दत से मह़रूमी पर मेरे आंसू निकल आए। मैं उन से दुआ़एं लेने के लिये

आगे बढ़ा, जब उन से मुलाक़ात कर के मैं ने कहा : "अल्लाह तआ़ला आप हज़रात का **ह़ज** क़बूल फ़रमाए और आप के अख़राजात का बेहतरीन बदल अ़ता फ़रमाए।" उन में से एक ह़ाजी ने ह़ैरत का इज़्हार करते हुए कहा कि येह दुआ़ कैसी ? मैं ने कहा : "ऐसे ग़मज़दा शख़्स की दुआ़ जो दरवाज़े तक पहुंच कर ह़ाज़िरी से मह़रूम रह गया !" वोह कहने लगा : बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि आप वहां जाने से इन्कार करते हैं ! क्या आप हमारे साथ **अ़रफ़ात** के मैदान में नहीं थे ? क्या आप ने हमारे साथ शैत़ान को **कंकरियां** नहीं मारी थीं ? और क्या आप ने हमारे साथ **त़वाफ़** नहीं किये ? मैं अपने दिल में सोचने लगा कि यक़ीनन येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी लुत़्फ़ो करम है।

इतने में मेरे शहर के ह़ाजियों का क़ाफ़िला भी आ पहुंचा। मैं ने उन से भी कहा कि "अल्लाह तआ़ला आप ख़ुश नसीबों की सअ़्य मश्कूर फ़रमाए और आप का **ह़ज** क़बूल करे।" वोह भी ह़ैरान हो कर कहने लगे : आप को क्या हो गया है ! येह अजनबिय्यत कैसी !! क्या आप **अ़रफ़ात** में हमारे साथ न थे ? क्या हम ने मिलजुल कर **रमिये जमरात** नहीं की थी ? उन में से एक ह़ाजी साह़िब आगे बढ़े और मेरे क़रीब आ कर कहने लगे कि भाई ! अन्जान क्यूं बनते हैं ! हम मक्के मदीने में इकट्ठे ही तो थे ! येह देखिये ! जब हम रौज़ए अत़हर की ज़ियारत कर के बाबे जिब्रईल से बाहर आ रहे थे तो उस वक़्त भीड़ की वजह से आप ने येह **थेली** मुझे बत़ौरे अमानत दी थी जिस की मोहर पर लिखा हुवा है : مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ या'नी "जो हम से मुआ़मला करता है नफ़्अ़

पाता है।'' येह लीजिये अपनी थेली ! ह़ज़रते रबीअ़ عليه رَحمَةُ الله البديع फ़रमाते हैं कि खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने उस थेली को इस से पहले कभी देखा भी न था, खै़र मैं ने थेली ले ली। इशा की नमाज़ पढ़ कर अपना वज़ीफ़ा पूरा किया और लैट गया और सोचता रहा कि आखि़र कि़स्सा क्या है ! इसी में नींद ने घेर लिया, मेरी ज़ाहिरी आंख तो क्या बंद हुई, दिल की आंख खुल गई اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाब में **जनाबे रिसालते मआब** صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़्याब हुवा, मैं ने अपने मक्की मदनी आक़ा صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की खि़दमते बा बरकत में सलाम अ़र्ज़ किया और दस्त बोसी की। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुए सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : ''ऐ रबीअ़ ! हम कितने गवाह क़ाइम करें और तुम हो कि क़बूल ही नहीं करते। सुनो ! बात येह है कि जब तुम ने उस ख़ातून पर जो मेरी औलाद में से थी, एह़सान किया और अपना ज़ादे राह ईषार कर के अपना ह़ज **मुल्तवी** कर दिया तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि वोह इस का ने'मल बदल तुम्हें अ़ता फ़रमाए तो **अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता तुम्हारी सूरत पर पैदा फ़रमाया और हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक हर साल तुम्हारी त़रफ़ से **ह़ज** किया करे नीज़ दुन्या में तुम्हें येह इवज़ (या'नी बदला) दिया कि 600 दिरहम के बदले 600 दीनार (सोने की अशरफ़ियां) अ़ता फ़रमाए, तुम अपनी आंख ठन्डी रखो।'' फिर हुज़ूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى الله تعالى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने थेली की मोहर पर लिखे हुए मुबारक अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए : مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ (या'नी जो हम से मुआ़मला करता है नफ़्अ़ पाता है) ह़ज़रते रबीअ़ عليه رَحمَةُ الله البديع

फ़रमाते हैं कि जब मैं सो कर उठा और उस थेली को खोला तो उस में 600 सोने की अशरफ़ियां थीं। (رشفة الصّادى ص۲۰۳)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم

तेरे क़दमों का तबर्रुक यदे बैज़ाए कलीम
तेरे हाथों का दिया फ़ज़्ले मसीहाई है (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾91﴿ शैख़ शिब्ली عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ الوَلِی का ह़ज

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ الوَلِی जब ह़ज के लिये अ़रफ़ात शरीफ़ पहुंचे तो बिल्कुल चुप रहे, सूरज ग़ुरूब होने तक कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकाला, जब दौराने सअ़्य मीलैने अख़्ज़रैन से आगे बढ़े तो आंखों से आंसू बहने लगे, रोते हुए उन्हों ने अ़रबी में अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है :

﴾1﴿......मैं चल रहा हूं इस ह़ाल में कि मैं ने अपने दिल पर तेरी मह़ब्बत की मोहर लगा रखी है ताकि इस दिल पर तेरे सिवा किसी का गुज़र न हो ﴾2﴿......ऐ काश ! मुझ में येह इस्तिक़ामत होती कि मैं अपनी आंखों को बन्द रखता और उस वक़्त तक किसी को न देखता जब तक तुझे न देख लेता ﴾3﴿......जब आंखों से आंसू निकल कर रुख़्सारों पर बहने लगते हैं तो ज़ाहिर हो जाता है कि कौन वाक़ेई रो रहा है और किस का रोना बनावटी है। (رَوضُ الرَّیاحین ص ۱۰۰)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है

आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा (ज़ौक़े ना'त)

﴾92﴿ छे लाख में से सिर्फ़ छे !

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह जौहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं एक साल **अ़रफ़ात** शरीफ़ में था, मुझे ऊंघ आ गई और मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया, मैं ने देखा कि दो फ़िरिश्ते आस्मान से उतरे, उन में से एक ने दूसरे से पूछा : इस साल कितने **हाजी** आए ? उस ने जवाब दिया कि 6 लाख, मगर उन में से सिर्फ़ 6 ही का **हज** क़बूल हुवा है ! येह सुन कर मुझे बहुत रंज हुवा, जी चाहता था कि फूट फूट कर रोऊं, इतने में पहले फ़िरिश्ते ने दूसरे से पूछा : जिन का **हज** क़बूल नहीं हुवा, **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों के साथ क्या मुआ़मला किया ? दूसरे फ़िरिश्ते ने कहा : रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और 6 मक़्बूलीन के तुफ़ैल **6 लाख का हज** भी क़बूल फ़रमा लिया ।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ اللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (پ٢٨، الجمعۃ:٤)

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है)* (رَوضُ الرَّیاحِین ص١٠٧)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم

इस बेकसी में दिल को मेरे टेक लग गई

शोहरा सुना जो रह़मते बेकस नवाज़ का (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾93﴿ ग़ैबी अंगूर

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं सि. 113 हि. में **हज** के लिये पैदल चलता हुवा **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا पहुंचा। अ़स्र की नमाज़ के वक़्त **जबले अबी क़ुबैस** (1) पर गया तो वहां एक बुज़ुर्ग को देखा कि बैठे दुआ़एं मांग रहे हैं और يَارَبِّ يَارَبِّ इतनी मरतबा कहा कि दम घुटने लगा फिर इसी त़रह़ लगातार يَارَبَّاهُ يَارَبَّاهُ कहा, फिर इसी त़रह़ एक सांस में يَااَللّٰهُ يَااَللّٰهُ कहा, फिर इसी त़रह़ يَارَحْمٰنُ يَارَحْمٰنُ फिर يَارَحِيْمُ يَارَحِيْمُ फिर يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ कहते रहे। इस के बा'द कहा : "या **अल्लाह** ! मेरा अंगूरों का दिल चाहता है, अ़ता फ़रमा और मेरी चादरें पुरानी हो गई हैं।" **सय्यिदुना लैष** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उसी वक़्त मैं ने उन के पास एक **अंगूरों की टोकरी** रखी देखी, ह़ालांकि उस वक़्त रूए ज़मीन पर कहीं अंगूर नहीं होंगे और साथ ही **दो नई चादरें** भी मौजूद थीं ! जब वोह खाने लगे तो मैं ने अ़र्ज़ की : मैं भी आप के साथ खाऊंगा। फ़रमाया : क्यूं ? मैं ने अ़र्ज़ की : इस लिये कि जब आप दुआ़ फ़रमा रहे थे तो मैं **आमीन आमीन** कह रहा था। फ़रमाया : अच्छा आओ और खाओ लेकिन कुछ साथ न ले जाना।

मदीना

1. जबले अबी क़ुबैस मस्जिदे ह़राम के बाहर रुक्ने अस्वद के सामने है, येह दुन्या का सब से पहला पहाड़ है। हजरे अस्वद जन्नत से आने के बा'द एक माह इसी पहाड़ पर तशरीफ़ फ़रमा रहा था, और मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर भी यहीं ज़ुहूर पज़ीर हुवा था। وَاللّٰهُ و رسولُهٗ اعلم عزوجل وصلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم۔

मैं ने आगे बढ़ कर उन के साथ **अंगूर** खाने शुरूअ़ कर दिये, वोह अंगूर ऐसे लज़ीज़ थे कि मैं ने उन जैसे **अंगूर** कभी नहीं खाए थे, मैं ने ख़ूब पेट भर कर खाए मगर तअ़ज्जुब की बात येह है कि टोकरी में कुछ भी कमी न हुई। फिर वोह फ़रमाने लगे : इन दोनों चादरों में से एक पसन्द कर लो। मैं ने अ़र्ज़ की : चादर की मुझे ज़रूरत नहीं है। फ़रमाया : मुझ से पर्दा कर लो ताकि मैं इन को पहन लूं, मैं एक त़रफ़ हट गया तो उन्हों ने एक तहबन्द के त़ौर पर बांध ली और दूसरी औढ़ ली और जो चादरें पहले से पहने हुए थे उन को हाथ में ले कर पहाड़ के नीचे उतरे, मैं भी पीछे हो लिया। जब **सफ़ा व मरवह** के दरमियान पहुंचे तो एक साइल ने अ़र्ज़ की : "ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ! येह कपड़े मुझे पहना दीजिये **अल्लाह** तआ़ला आप को जन्नत का हुल्ला पहनाएगा।" तो उन्हों ने वोह दोनों चादरें उस को इनायत फ़रमा दीं और आगे बढ़ गए। मैं ने उस साइल से पूछा : वोह हाजी साहिब कौन थे ? उस ने बताया : **हज़रते सय्यिदुना इमामे जा'फ़र सादिक़** عليه رحمة الرّازِق थे। येह सुनते ही मैं उन की तरफ़ दौड़ा ताकि उन से कुछ सुनूं और फ़ैज़ हासिल करूं मगर अफ़्सोस ! मैं उन को न पा सका। (رَوضُ الرَّياحين ص ١١٤)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالى عليه واٰله وسلَّم

क्यूंकर ना मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

मस्तूरात की 4 हिकायात

﴾94﴿ आ़शिक़े रसूल ख़ातून ने रोते रोते जान दे दी

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर एक ख़ातून ने अ़र्ज़ की : मुझे ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **मुबारक** क़ब्र की ज़ियारत करवा दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुजरए शरीफ़ा खोला और उस **आ़शिक़े रसूल ख़ातून ने क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत कर के रोते रोते जान दे दी।** (الشفاء جزء ٢ ص ٢٣)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आप के इ़श्क़ में ऐ काश कि रोते रोते
येह निकल जाए मेरी जान मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 35)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

«95» उम्मुल मोअमिनीन ने नफ़्ली ह़ज से इन्कार फ़रमा दिया

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **सौदह** رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنھا **फ़र्ज़ ह़ज** अदा कर चुकी थीं। जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنھا से **नफ़्ली ह़ज्जो उमरह** के लिये अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : **मैं फ़र्ज़ ह़ज कर चुकी हूं।** मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे घर में रहने का हुक्म फ़रमाया है। **ख़ुदा की क़सम !** अब मेरे बजाए मेरा जनाज़ा ही घर से निकलेगा। रावी फ़रमाते हैं **ख़ुदा की क़सम !** इस के बा'द ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنھا घर से बाहर नहीं निकलीं। (تفسیردرّمنثورج٦ص٥٩٩)

इस ह़िकायत में इस्लामी बहनों के लिये एह़तियात के बे शुमार मदनी फूल हैं, वोह ज़माना बड़ा पाकीज़ा था, हर त़रफ़ पर्दे का दौर दौरा था मगर उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **सौदह** رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنھا ने पर्दे के साथ भी निकलना गवारा न फ़रमाया जब कि आज कल बेपर्दगी की नुहूसत छाई है, ऐसे में एह़तियात की किस क़दर ज़रूरत है हर बा शुऊर इस्लामी बहन समझ सकती है आज कल **ह़ज्जो उमरे** में भी मर्दों और औ़रतों का काफ़ी इख़्तिलात़ रहता है लिहाज़ा **उमरे** या **नफ़्ली ह़ज** पर जाने वालियों को ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये।

﴾96﴿ एक हज्जन के तुफ़ैल सब का हज क़बूल हो गया

हज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیہا ने पैदल और वोह भी नंगे पाऊं **हज** किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को जो भी खाना अ़ता फ़रमाता **ईषार** कर देतीं। का'बए मुशर्रफ़ा के क़रीब पहुंचते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं। जब होश में आईं तो अपना रुख़्सार बैतुल्लाह शरीफ़ पर रख कर अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह तेरे बन्दों की पनाह गाह है और तू इन से महब्बत फ़रमाता है, मौला ! अब तो आंखों में आंसू भी ख़त्म हो चुके हैं।" फिर त़वाफ़ किया, सअ़्य करने के बा'द जब **वुक़ूफ़े अ़रफ़ा** का इरादा किया तो बारी के दिन शुरूअ़ हो गए, रोते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह मुआ़मला तेरे सिवा किसी ग़ैर की त़रफ़ से होता तो मैं ज़रूर तेरी बारगाह में शिकायत करती मगर येह तो तेरी ही मशिय्यत (या'नी मर्ज़ी) से हुवा है लिहाज़ा शिकवा क्यूं कर सकती हूं !" येह कहते ही उन्हें हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : "ऐ राबिआ़ ! हम ने तेरे सबब तमाम हाजियों का **हज** क़बूल कर लिया और तेरी इस कमी की वजह से इन की कमियां भी पूरी कर दीं।" (الروض الفائق ص۶۰)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

अ़ली के वासिते़ सूरज को फैरने वाले
इशारा कर दो कि मेरा भी काम हो जाए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾97﴿ पैदल सफ़रे ह़ज करने वाली नाबीना बुढ़िया

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दाब علیھارحمة اللہ الوھّاب का शुमार बुलन्द पाया सालिह़ातो आ़बिदात में होता था। हर साल मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا पैदल **ह़ज** करने आया करती थीं। उन की उ़म्र 90 बरस हुई तो बीनाई चली गई। जब **ह़ज** का मौसिमे बहार आया तो कुछ ह़ज्जनें सफ़रे ह़ज पर रवानगी से पहले ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुईं, आप رحمة اللہ تعالی علیھا ने फ़र्ते शौक़ से बे क़रार हो कर रब्बे गफ़्फ़ार عَزَّ وَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! अगर्चे मेरी आंखों का नूर जा चुका है मगर तेरे दरबार की ह़ाज़िरी के शौक़ के अन्वार अब भी बाक़ी हैं।" फिर एह़राम बांध कर "لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ" कहते हुए **ह़ज** के क़ाफ़िले के साथ चल पड़ीं। आप رحمة اللہ تعالی علیھا औरतों के आगे आगे चलतीं और चलने में उन से सबक़त ले जातीं थीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुन्नून मिस्री** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं उन के ह़ाल पर बड़ा मुतअ़ज्जिब था कि हातिफ़े ग़ैबी सुनाई दी : "**ऐ ज़ुन्नून** ! क्या तुम उस बुढ़िया पर तअ़ज्जुब करते हो जिसे अपने मौला عَزَّ وَجَلَّ के घर का शौक़ है, पस **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने लुत्फ़ो करम फ़रमाते हुए उसे अपने घर की त़रफ़ चला दिया और इस की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई। (الروض الفائق ص١٤٨ ملخصا)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالی علیہ واٰلہ وسلَّم

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना
कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

उ-लमाए अहले सुन्नत की 17 हिकायात

﴾98﴿ आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी को ख़ुसूसी बुलावा मिला

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان आ़लिमे अजल्ल, मुफ़्तिये बे बदल और आ़शिक़े रसूले रब्बे लम यज़ल थे, "अपना जाना और है उन का बुलाना और है" के मिस्दाक़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी के लिये ख़ुसूसी बुलावा मिला और वोह यूं कि ख़्वाब में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़लब फ़रमाया : बा वुजूद बीमारी और कमज़ोरी के चन्द अह़बाब के हमराह रख़्ते सफ़र बांधा और सूए ह़रम रवाना हो गए, कुछ अ़क़ीदतमन्दों ने अ़लालत (या'नी बीमारी) के पेशे नज़र मश्वरा दिया कि येह सफ़र आयन्दा साल पर मुल्तवी कर दीजिये। फ़रमाया : "मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के क़स्द से क़दम दरवाज़े से बाहर रखूं फिर चाहे रूह़ उसी वक़्त परवाज़ कर जाए।" **मह़बूबे करीम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने फ़िदाई के जज़्बए मह़ब्बत की लाज रख ली और ख़्वाब ही में एक प्याले में **दवा** इनायत फ़रमाई जिस के पीने से इस क़दर इफ़ाक़ा हो गया कि **मनासिके ह़ज** की अदाएगी में रुकावट न रही। (سرورالقلوب "د")

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बंधना दियारे तयबा को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالى على محمَّد

﴾99﴿ अस्ले मुराद हाज़िरी उस पाक दर की है

आशिके़ माहे रिसालत, आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने दूसरे **सफ़रे हज** में मनासिके हज अदा करने के बा'द शदीद अ़लील (या'नी सख़्त बीमार) हो गए मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इम्तिदादे मरज़ (या'नी बीमारी के तवील हो जाने) में मुझे ज़ियादा फ़िक्र हाज़िरिये सरकारे आ'ज़म (صَلَّى الله تعالى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की थी। जब बुख़ार को इम्तिदाद (या'नी तूल) पकड़ता देखा, मैं ने उसी हालत में क़स्दे हाज़िरी किया, येह उ़-लमा (رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْهِم) मानेअ़ हुए (या'नी रोकने लगे)। अव्वल तो येह फ़रमाया : "कि हालत तो तुम्हारी येह है और सफ़र तवील !" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर सच पूछिये तो हाज़िरी का अस्ल मक़्सूद ज़ियारते त़य्यिबा है, दोनों बार इसी निय्यत से घर से चला, مَعَاذَ الله अगर येह न हो तो **हज** का लुत्फ़ नहीं।" उन्हों

ने फिर इस्रार और मेरी हालत का इश्आ़र किया (या'नी मेरी हालत याद दिलाई)। मैं ने ह़दीष पढ़ी : مَنْ حَجَّ وَلَمْ يَزُرْنِىْ فَقَدْ جَفَانِىْ जिस ने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर जफ़ा की। (كشف الخفاء ج٢ ص٢١٨ حديث٢٤٥٨) फ़रमाया : तुम एक बार तो ज़ियारत कर चुके हो। मैं ने कहा : मेरे नज़्दीक ह़दीष का येह मत़लब नहीं कि उ़म्र में कितने ही **ह़ज** करे ज़ियारत एक बार काफ़ी है बल्कि हर **ह़ज** के साथ ज़ियारत ज़रूर है, अब आप दुआ़ फ़रमाइये कि मैं **सरकार** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंच लूं। रौज़ए अक़्दस पर एक निगाह पड़ जाए अगर्चे उसी वक़्त दम निकल जाए। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा. 2 स. 201)

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़ते ही
खा के ग़श में गिर जाता फिर तड़प के मर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 410)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾100﴿ इमाम अह़मद रज़ा और दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे और मुतबह़्हिर (مُ-تَ-بَحْ-حِر) आ़लिमे दीन थे, कमो बेश 100 उ़लूमो फ़ुनून पर दस्तरस रखते थे, उ़-लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ने आप رَحْمَةُ اللّٰه تعَالٰى عَلَيْه को चौदहवीं सदी का **मुजद्दिद**

कहा, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने दीन को बातिल की आमेज़िश से पाक कर के **इह्याए सुन्नत** के लिये ज़बरदस्त काम किया, साथ ही लोगों के दिलों में जो शम्ए **इश्क़े रसूल** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रोशनी मध्धम पड़ती जा रही थी उसे अज़ सरे नौ फ़रूज़ां किया, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه बेशक फ़नाफ़िर्रसूल صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ थे, दूसरी बार जब ह़ज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत मिली और **मदीनए पाक** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी नसीब हुई तो बेदारी में ज़ियारत की ह़सरत लिये मुवाजहा शरीफ़ में पूरी रात ह़ाज़िर रह कर दुरूदे पाक का विर्द करते रहे, पहली रात क़िस्मत में येह सआ़दत न थी, दूसरी रात आ गई। मुवाजहा शरीफ़ में ह़ाज़िर हुए और दर्दे फ़िराक़ से बेताब हो कर एक ना'तिया ग़ज़ल पेश की जिस के चन्द अश्आ़र येह हैं :

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं
हर चराग़े मज़ार पर क़ुदसी कैसे परवाना वार फिरते हैं
उस गली का गदा हूं मैं जिस में मांगते ताजदार फिरते हैं
फूल क्या देखूं मेरी आंखों में दश्ते तै़बा के ख़ार फिरते हैं
कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(मक़्तअ़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने अज़ राहे तवाज़ोअ़ अपने आप को "कुत्ता" फ़रमाया है लेकिन आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत अदबन यहां "मंगता" – "शैदा" वग़ैरा लिखते और बोलते हैं उन्हीं की पैरवी में अदबन इस जगह "शैदा" लिख दिया है और ह़क़ीक़त भी येही है)

आप बाहगारे रिसालत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में दुरूदो सलाम पेश करते रहे, आख़िरे कार इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुई और क़िस्मत अंगड़ाई ले कर उठ बैठी, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आ़शिक़े ज़ार पर ख़ास करम फ़रमाया, निक़ाबे रुख़ उठ गया, **ख़ुश नसीब आ़शिक़** ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐ़न बेदारी की ह़ालत में चश्माने सर (या'नी सर की आंखों) से दीदार किया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

शरबते दीद ने इक और आग लगा दी दिल में
तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से
तह में रखा है इसे दिल ने गुमाने न दिया
सजदा करता जो मुझे इस की इजाज़त होती
क्या करूं इज़्न मुझे इस का ख़ुदा ने न दिया

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम सब को चाहिये कि हम भी अपने दिल में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ाएं और क़ल्ब में दीदार की तमन्ना परवान चढ़ाएं। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी तो हमारी भी क़िस्मत चमक उठेगी। कभी तो वोह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم करम फ़रमा ही देंगे।

सुना है आप हर आ़शिक़ के घर तशरीफ़ लाते हैं
कभी मेरे भी घर में हो चरागां या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾101﴿ मश्हूर आ़शिक़े रसूल अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी का अन्दाज़े अदब

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिष कोटल्वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं एक मरतबा जब मैं **ह़ज** करने गया तो मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की ह़ाज़िरी में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दीदार से मुशर्रफ़ होते वक़्त मैं ने "बाबुस्सलाम" के क़रीब और **गुम्बदे ख़ज़रा** के सामने एक सफ़ेद रीश और इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग को देखा जो क़ब्रे अन्वर की जानिब मुंह कर के दो ज़ानू बैठे कुछ पढ़ रहे थे। मा'लूम करने पर पता चला कि येह मश्हूरो मा'रूफ़ आ़लिमे दीन और ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي हैं। मैं उन की वजाहत और चेहरे की नूरानिय्यत देख कर बहुत मुतअष्षिर हुवा और उन के क़रीब जा कर बैठ गया और उन से गुफ़्तगू की कोशिश की, वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह न हुए तो मैं ने उन से कहा : मैं हिन्दूस्तान से आया हूं और आप की किताबें **हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन** और **जवाहिरुल बिह़ार** वग़ैरा मैं ने पढ़ी हैं जिन से मेरे दिल में आप की बड़ी अ़क़ीदत है। उन्हों ने येह बात सुन कर मेरी त़रफ़ मह़ब्बत से हाथ बढ़ाया और मुसाफ़ह़ा फ़रमाया।

मैं ने उन से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप क़ब्रे अन्वर से इतनी दूर क्यूं बैठे हैं ? तो **रो पड़े** और फ़रमाने लगे : **"मैं इस लाइक़ नहीं हूं कि क़रीब जा सकूं ।"** इस के बा'द मैं अकषर उन की जाए क़ियाम पर हाज़िर होता रहा और उन से "सनदे ह़दीष" भी ह़ासिल की । सय्यिदी **क़ुत्बे मदीना** ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की अहलियाए मोह़तरमा رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهَا को 84 **मरतबा नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा है ।**

(अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 195 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عليه واٰلهٖ وسلَّم

उन के दियार में तू कैसे चले फिरेगा ?
अ़त़्त़ार तेरी जुरअत तू जाएगा मदीना !!

(वसाइले बख़्शिश, स. 320)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾102﴿ पीर महेर अ़ली शाह को ज़ियारते मकीने गुम्बदे ख़ज़रा ब मक़ाम वादिये ह़मरा

ताजदारे गोलड़ह ह़ज़रते पीर महेर अ़ली शाह साह़िब رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : **मदीनए आ़लिया** के सफ़र में ब मुक़ाम **वादिये ह़मरा** डाकूओं के ह़म्ले की परेशानी की वजह से मजबूरन इशा की सुन्नतें मुझ से रह गईं, मौलवी मुह़म्मद ग़ाज़ी, मद्रसए

सौलतिया में शग़ले ता'लीमो तदरीस छोड़ कर हुस्ने ज़न की बिना पर ब ग़रज़े ख़िदमत इस मुक़द्दस सफ़र में मेरे शरीक हुए थे। इन रुफ़क़ा की मइय्यत में मैं क़ाफ़िले के एक त़रफ़ सो गया, क्या देखता हूं कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सियाह अ़रबी जुब्बा ज़ैबे तन फ़रमाए तशरीफ़ ला कर अपने जमाले बा कमाल से मुझे नई ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाते हैं, ऐसा मा'लूम हुवा कि मैं एक मस्जिद में ब ह़ालते मुराक़बा दो ज़ानू बैठा हूं, आंहुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब तशरीफ़ ला कर इर्शाद फ़रमाया कि **आले रसूल को सुन्नत तर्क नहीं करना चाहिये।** मैं ने इस ह़ालत में आंजनाब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दो पिन्डलियों को जो रेशम से भी ज़ियादा लत़ीफ़ थीं अपने दोनों हाथों से मज़्बूत़ पकड़ कर नाला व फ़ुग़ां करते (या'नी रोते बिलकते) हुए, اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰه कहना शुरूअ़ किया और आ़लमे मदहोशी में रोते हुए अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर कौन हैं? जवाब में वोही इर्शाद हुवा कि **आले रसूल को सुन्नत तर्क नहीं करना चाहिये।** तीन बार येही सुवालो जवाब होते रहे। तीसरी बार मेरे दिल में डाला गया कि जब आप निदाए या रसूलल्लाह से मन्अ़ नहीं फ़रमा रहे तो ज़ाहिर है कि ख़ुद आंह़ज़रत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, अगर कोई और बुज़ुर्ग होते तो इस कलिमे से मन्अ़ फ़रमाते, उस हुस्नो जमाले बा कमाल के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहूं! उस ज़ौक़ो मस्ती व फ़ैज़ाने करम के बयान से ज़बान आ़जिज़ है और तह़रीर

लंग (लाचार) अलबत्ता बादह ख़्वाराने इश्क़ो महब्बत (या'नी शराबे महब्बत पीने वालों) के हल्क़ में इन अब्यात (या'नी अश्आर) से एक जुर्आ़ (या'नी घूंट) और उस नाफ़ए मुश्क (मुश्क की थेली) से एक नफ़्हा (खुश गवार महक) डालना मुनासिब मा'लूम होता है। (मेहरे मुनीर स. 131 ता 132) ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह साहि़ब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने मज़्कूरा वाक़िए का अपने मशहूर कलाम में भी इशारा फ़रमाया है। उस के चन्द अश्आ़र मुलाह़ज़ा हों :

अज सिक मितरां दी वधेरी ऐ, क्यूं दिलड़ी उदास घनेरी ऐ ! लूं लूं विच शौक़ चिंगेरी ऐ, अज नैनां लाइयां क्यूं झड़ियां

اَلطَّیْفُ سَرٰی مِنْ طَلْعَتِهٖ، وَالشَّذْوُ بَدٰی مِنْ وَّفْرَتِهٖ فَسَکَرْتُ هُنَا مِنْ نَظْرَتِهٖ नैना दियां फ़ौजां सर चढ़ियां

मुख चन्द बदर शा'शानी ऐ, मथे चमके लाट नूरानी ऐ काली ज़ुल्फ़ ते अख मस्तानी ऐ, मख़्मूर अखीं हिन मद भरियां

दो अब्रो क़ोस मिषाले दिसन, जबीं तूं नोके मिज़ा दे तीर छुटन लबां सुर्ख़ आखां कि ला'ले यमन, चिट्टे दन्द मोती दियां हिन लड़ियां

इस सूरत नूं मैं जान आखां, जानान कि जाने जहान आखां सच आखां ते रब्ब दी शान आखां, जिस शान तूं शानां सब बनियां

ला हो मुख तूं मुख़त्तत बुर्दे यमन, मन भा नूरी झलक दिखाओ सजन औहा मिठियां गालीं अलाओ मिठन, जो ह़मरा वादी सन करियां

سُبْحٰنَ اللّٰهِ مَآ اَجْمَلَکَ، مَآ اَحْسَنَکَ مَآ اَکْمَلَکَ किथ्थे मेहरे अ़ली किथ्थे तेरी षना, मुस्ताक़ (1) अखीं किथ्थे जा लड़ियां

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾103﴿ सगे मदीना की नाज़ बरदारी

पंजाब (पाकिस्तान) के मशहूर आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग पीर सय्यिद **जमाअ़त अ़ली शाह मोह़द्दिष अ़ली पूरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی

---

1. ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने बतौ़रे आ़जिज़ी यहां लफ़्ज़ ''गुस्ताख़'' और आख़िर में ''लड़ियां'' लिखा है मगर ह़ज़रत का अदब करते हुए अकषर षना ख़्वान जिस त़रह पढ़ते हैं उसी त़रह मैं ने लिख दिया है। (मेहरे मुनीर, स. 500)

एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا गए तो उन के किसी मुरीद ने मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के एक **कुत्ते** को इत्तिफ़ाक़न ढेला मार दिया जिस की चोट से कुत्ता चीख़ा, ह़ज़रत शाह साह़िब से किसी ने कह दिया कि आप के फ़ुलां मुरीद ने मदीने शरीफ़ के एक **कुत्ते** को मारा है। येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बेचैन हो गए और अपने मुरीदों को हुक्म दिया कि फ़ौरन उस **कुत्ते** को तलाश कर के यहां लाओ। चुनान्चे **कुत्ता** लाया गया, शाह साह़िब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उठे और रोते हुए उस **कुत्ते** से मुख़ात़िब हो कर कहने लगे : ऐ दियारे ह़बीब के रहने वाले ! लिल्लाह मेरे मुरीद की इस लग़्ज़िश को मुआ़फ़ कर दे। फिर भुना हुवा गोश्त और दूध मंगवाया और उसे खिलाया-पिलाया, फिर उस से कहा : जमाअ़त अ़ली तुझ से मुआ़फ़ी चाहता है, ख़ुदारा इसे मुआ़फ़ कर देना। (सुन्नी उ़-लमा की ह़िकायात, स. 211 मुलख़्ख़सन)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

दिल के टुकड़े नज़्रे ह़ाज़िर लाए हैं
ऐ सगाने कूचए दिलदार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾104﴿ आक़ा बुलाएं तो उड़ कर जाना चाहिये

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिष कोटल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के जिगर गोशे ह़ज़रते मौलाना अबुन्नूर मुह़म्मद बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير

फ़रमाते हैं : **हज़रते** अमीरे मिल्लत पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुहद्दिष अ़ली पूरी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) ने कई **हज** किये, तक़रीबन हर साल मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का इ़श्क़ उन्हें इस शरफ़ से मुशर्रफ़ फ़रमाता । एक साल आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने ब ज़रीअ़ए हवाई जहाज़ सफ़रे ह़ज की तरकीब बनाई । वालिदे मुअ़ज़्ज़म (फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शरीफ़ मुहद्दिष कोटल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) को पता चला तो मुझे साथ ले कर अ़ली पूर शरीफ़ पहुंचे, ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, तो आप मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ही का ज़िक्रे ख़ैर कर रहे थे, वालिदे गिरामी को देख कर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया : मैं सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में फिर ह़ाज़िरी देने जा रहा हूं, वालिदे माजिद علیہ رحمۃُ اللّٰہ الحامد ने दर्याफ़्त किया : हुज़ूर ! इस बार सुना है आप हवाई जहाज़ से जा रहे हैं ? ह़ज़रत ने जवाब दिया : मौलवी साह़िब ! **यार बुलाए तो उड़ कर पहुंचना चाहिये** । येह जुम्ला कुछ ऐसे अन्दाज़ में फ़रमाया कि ख़ुद भी आबदीदा हो गए और ह़ाज़िरीन पर भी एक कैफ़ त़ारी हो गया । (सुन्नी उ़-लमा की ह़िकायात, स. 45)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तक़्दीर में ख़ुदाया अ़त्तार के मदीना
लिख दे फ़क़त़ मदीना सरकार का मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 302)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾105﴿ मौलाना सरदार अह़मद की खजूरे मदीना से मह़ब्बत

मह़बूब के शहर से मह़ब्बत सच्चे आ़शिक़ की अ़लामत है लिहाज़ा अ़ज़ीम आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते मुह़द्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अह़मद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَحَد **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से बहुत **मह़ब्बत** करते थे। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की मह़फ़िल में अकषर **दियारे मह़बूब** का तज़किरा होता रहता था। अगर कोई ज़ाइरे मदीना आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता तो उस से **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के ह़ालात पूछते, मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के रिहाइशी अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ैरिय्यत दर्याफ़्त फ़रमाते और अगर कोई तबर्रुक पेश करता तो बड़ी ख़ुशी से क़बूल फ़रमाते। एक मरतबा एक ह़ाजी साह़िब ने मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا की **खजूरें** पेश कीं, उस वक़्त दौरए ह़दीष जारी था, ख़ुरमाए मदीना (या'नी मदीने की खजूरें) ह़ाज़िरीन त़-लबा में तक़्सीम फ़रमाईं और **एक खजूर** अपनी दाढ़ों में दबा कर फ़रमाने लगे : "ख़ुरमाए मदीना (या'नी खजूरे मदीना) अपने मुंह में रख ली है, जब तक घुल कर अन्दर जाती रहेगी, ईमान ताज़ा होता रहेगा।"

(माख़ूज़न ह़याते मुह़द्दिषे आ'ज़मे पाकिस्तान, स. 155)

खजूरे मदीना से क्यूं हो न उल्फ़त
कि इस को आक़ा के कूचे से निस्बत

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾106﴿ मदीने में अपने बाल व नाख़ुन दफ़्न फ़रमाए

हज़रते मुहद्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : फ़क़ीर ने मदीनतुर्रसूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से वापसी के वक़्त अपने कुछ बाल और नाख़ुन मदीना शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में दफ़्न कर दिये और रसूले पाक صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मदीनए पाक में मरना तो मेरे इख़्तियार में नहीं अलबत्ता अपने जिस्म के चन्द अज्ज़ा दफ़्न कर के जा रहा हूं कि हम ग़रीबों के लिये येही ग़नीमत है।" (ऐज़न)

ज़ानो दिल छोड़ कर येह कह के चला हूं आ'ज़म
आ रहा हूं मेरा सामान मदीने में रहे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾107﴿ अब कुछ भी नहीं हम को मदीने के सिवा याद

मौलाना क़ाज़ी मज़्हरुल हक़ जहलमी बरास्ता कोइटा, ज़ाहिदान, बग़दाद शरीफ़, **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا और दूसरे मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो कर हज़रते मुहद्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد की ख़िदमत में हाज़िर हुए, जब क़ाज़ी साहिब का तआ़रुफ़ कराया गया (और अ़र्ज़ की गई कि येह मदीने की हाज़िरी से मुशर्रफ़ हो कर आए हैं) तो क़ाज़ी साहिब का हाथ थाम लिया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आंखों से आसूं बहने लगे, अगर्चे त़बीअ़त काफ़ी ना दुरुस्त थी, बीमारी में इज़ाफ़ा हो चुका था, लेकिन इस के बा वुजूद आप

رَحْمَةُاللهِ تعَالیٰ عَلَیْه उठ कर बैठ गए और क़ाज़ी साहिब से **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की बातें पूछने लगे, मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में रहने वाले अह़बाबे अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ैरिय्यत दर्याफ़्त फ़रमाई, मदीना शरीफ़ की गलियों की याद आई, गुम्बदे ख़ज़रा का नूरानी मन्ज़र निगाहों में फिरने लगा, मुक़द्दस जालियों के जल्वे दिल में उतरने लगे, रौज़ए अक़्दस का वक़ार दिलों पर छाने लगा, तसव्वुराते दियारे ह़बीबे ख़ुदा की नूरानी वादियों में गुम होने लगे और तमाम मह़फ़िल की कैफ़िय्यत येह हो गई कि

ग़ैरों की जफ़ा याद न अपनों की वफ़ा याद
अब कुछ भी नहीं हम को मदीने के सिवा याद

(ऐज़न 155 ता 156)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾108﴿ मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे। आप के बारे में येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को आप के दामाद ह़कीम सय्यिद या'क़ूब अ़ली साह़िब (मर्हूम) ने सुनाया था : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़ज्जे बैतुल्लाह पर तशरीफ़

ले गए। जब वोह **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में ह़ाज़िर हुए तो सुन्हरी जालियों के क़रीब देखा कि ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عليه رحمة الله العادِل भी मज्मअ़ में मौजूद हैं। मुलाक़ात की हिम्मत न हुई क्यूंकि बा अदब लोग वहां बातचीत नहीं करते। सलातो सलाम से फ़ारिग़ होने के बा'द बाहर तलाश किया मगर ज़ियारत न हुई। ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, **शैख़ुल अ़रबे वल अ़जम** क़ुत़्बे मदीना सय्यिदी व मौलाई ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के दरबारे फ़ैज़ आषार पर ह़ाज़िर हुए कि अ़रबो अ़जम के उ़-लमाए ह़क़ और मशाइख़े किराम ह़रमैने त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी के दौरान ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ज़ियारत के लिये ज़रूर ह़ाज़िर होते थे। वहां भी ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عليه رحمة الله العادِل के मुतअ़ल्लिक़ कोई मा'लूमात ह़ासिल न हुई। हैरान थे कि सदरुल अफ़ाज़िल عليه رحمة الله العادِل अगर तशरीफ़ लाए हैं तो कहां गए! दरीं अष्ना मुरादाबाद (हिन्द) से तार ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के आस्ताने अ़र्श निशान पर आया कि फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन साह़िब رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه का मुरादाबाद में विसाल हो गया है। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने जब वक़्त मिलाया तो वोही वक़्त था जिस वक़्त सुन्हरी जालियों के क़रीब सदरुल अफ़ाज़िल عليه رحمة الله العادِل नज़र आए थे,

फ़ौरन समझ गए कि जैसे ही इन्तिक़ाल फ़रमाया, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में सलातो सलाम के लिये ह़ाज़िर हो गए।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾109﴿ ऐ मदीने के दर्द तेरी जगह मेरे दिल में है

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने सि. 1390 हि. में ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की, इस ज़िम्न में सफ़रे मदीना का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में फिसल कर गिर गया। दाहिने हाथ की कलाई की हड्डी टूट गई, दर्द ज़ियादा हुवा तो मैं ने उसे बोसा दे कर कहा : ऐ मदीने के दर्द तेरी जगह मेरे दिल में है तू तो मुझे यार के दरवाज़े से मिला है।

तेरा दर्द मेरा दरमां तेरा ग़म मेरी ख़ुशी है
मुझे दर्द देने वाले तेरी बन्दा परवरी

दर्द तो उसी वक़्त से ग़ाइब हो गया मगर हाथ काम नहीं करता था, 17 दिन के बा'द मुस्तशफ़ा मुल्क या'नी शाही अस्पताल में एक्स-रे लिया तो हड्डी के दो टुकड़े आए जिन में क़दरे फ़ासिला है मगर हम ने इलाज नहीं कराया, फिर आहिस्ता आहिस्ता हाथ

काम भी करने लगा, **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के उस अस्पताल के डॉक्टर मुह़म्मद इस्माईल ने कहा कि येह ख़ास करीश्मा हुवा है कि येह हाथ त़िब्बी लिह़ाज़ से ह़रकत भी नहीं कर सकता, वोह एक्स-रे मेरे पास है, हड्डी अब तक टूटी हुई है, इस टूटे हाथ से तफ़्सीर लिख रहा हूं, मैं ने अपने इस टूटे हुए हाथ का इलाज सिर्फ़ येह किया कि आस्तानए आ़लिया पर खड़े हो कर अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! मेरा हाथ टूट गया है, ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक़ की टूटी पिन्डली जोड़ने वाले ! ऐ मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा का टूटा बाज़ू जोड़ देने वाले मेरा टूटा हाथ जोड़ दो। (तफ़्सीरे नई़मी, जि. 9 स. 388)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चांद को तोड़ने वाले आ जा
हम भी टूटी हुई तक़्दीर लिये फिरते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾110﴿ जन्नतुल बक़ीअ़ में लाशों के तबादले

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़ज में मेरे साथ एक पंजाबी बुज़ुर्ग थे जिन का नाम था सूफ़ी मुह़म्मद हुसैन, वोह मुझ से फ़रमाने लगे कि एक बार मैं शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुहाजिर इलाह आबादी की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि ह़दीष

शरीफ़ में तो आता है कि "हमारा मदीना भट्ठी है जैसे कि भट्ठी लोहे के मैल को निकाल देती है ऐसे ही ज़मीने मदीना ना अहल को अपने से निकाल देती है।" ह़ालांकि मुर्तद और मुनाफ़िक़ भी मदीनए पाक में मर कर यहां ही दफ़्न हो जाते हैं फिर इस ह़दीष का मत़लब क्या है? शाह साहि़ब ने मुझे कान पकड़ कर निकलवा दिया! मैं ह़ैरान था कि मुझे किस क़ुसूर में निकाला गया! रात को ख़्वाब में देखा कि मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान या'नी जन्नतुल बक़ीअ़ में खुदाई हो रही है। और ऊंटों पर बाहर से लाशें आ रही हैं और यहां से बाहर जा रही हैं। मैं उन लोगों के पास गया और पूछा कि क्या कर रहे हो? वोह बोले कि "जो ना अहल यहां दफ़्न हो गए हैं उन को बाहर पहुंचा रहे हैं और उ़श्शाक़े मदीना की उन लाशों को जो और जगह दफ़्न हो गई हैं यहां ला रहे हैं।" और दूसरे दिन फिर शाह साहि़ब की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, आप ने मुझे देखते ही फ़रमाया : अब समझे! ह़दीष का मत़लब येह है और कल तुम ने अग़यार (या'नी ग़ैरों) में असरार (या'नी भेद) पूछे थे जिस की तुम्हें सज़ा दी गई थी। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स.766)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बक़ीए पाक में अ़त्त़ार दफ़्न हो जाए
बराए ग़ौषो रज़ा अज़ पए ज़िया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾111﴿ ग़ज़ालिये ज़मां और मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां पर सुल्ताने दो जहां का एह़सां

एक मरतबा ह़ज़रते शैख़ अ़लाउद्दीन अल बिक्री अल मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते शैख़ अ़ली हुसैन मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के हां **मदीनए त़य्यिबा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में मह़फ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद हुई जो कि पुर ज़ौक़ मह़फ़िल थी और अन्वारे नबवी ख़ूब चमके। मह़फ़िल के इख़्तिताम पर मीरे मह़फ़िल ने तबर्रुकन जलेबी तक़्सीम की और फ़रमाया : आज रात मीलाद की जलेबी खाने वाले को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़ियारत होगी, कल अ़लल सुब्ह़ बा'द नमाज़े फ़ज्र मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हर एक अपनी कैफ़िय्यते दीदार सुनाए। ह़ाजी ग़ुलाम हुसैन मदनी मर्ह़ूम का बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने भी वोह जलेबी खाई थी, मुझे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, मैं ने इस ह़ाल में ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, कि दाहिनी जानिब बग़ल में (ग़ज़ालिये ज़मां राज़िये दौरां) ह़ज़रते क़िब्ला सय्यिद अह़मद सईद काज़िमी शाह साह़िब (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) हैं और दूसरे हाथ में (मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते) **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان) का हाथ पकड़ रखा है। (अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 53)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दीदार की भीक कब बटेगी
मंगता है उम्मीदवार आक़ा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾112﴿ अ़ल्लामा काज़िमी साहि़ब और ख़ारे मदीना

ग़ज़ालिये ज़मां ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद सई़द काज़िमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की पहली ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर पाऊं में एक ख़ार (या'नी कांटा) चुभ गया, जिस से सख़्त तकलीफ़ हो रही थी, निकालने लगा तो आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़ारे मदीना से मह़ब्बत याद आ गई तो मैं वहीं रुक गया और पाऊं से **कांटा** न निकाला कई दिन के बा'द ख़ुद ब ख़ुद दर्द रुक गया।" (ऐज़न)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन की ह़रम के ख़ार कशीदा हैं किस लिये
आंखों में आएं सर पे रहें दिल में घर करें

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ख़ारे सहराए नबी ! पाऊं से क्या काम तुझे
आ मेरी जान मेरे दिल में है रस्ता तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾113﴿ बा'दे विसाल आ'ला ह़ज़रत की दरबारे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िरी

क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी मदनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی (सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت

की वफ़ात के बा'द का वाक़िआ़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं : एक मरतबा मुवाजहा शरीफ़ में ह़ाज़िरी देने के लिये मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के "बाबुस्सलाम" से अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुवाजहा शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के खड़े हैं और सलाम पढ़ रहे हैं। मैं क़रीब गया तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए। मैं मुवाजहा शरीफ़ की त़रफ़ चला गया और सलातो सलाम का नज़राना पेश कर के अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! मुझे मेरे शैख़ (इमाम अह़मद रज़ा ख़ान) की ज़ियारत से मह़रूम न रखा जाए।" **सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मुवाजहा शरीफ़ की पाइंती (پا۔ اِن۔ تی) (या'नी क़दमैने शरीफ़ैन) की त़रफ़ देखा तो **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बैठे दिखाई दिये, मैं ने दौड़ कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की क़दम बोसी की और ज़ियारत से फ़ैज़याब हुवा। (ऐज़न, स. 238 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

ग़मे मुस्त़फ़ा जिस के सीने में है
गो कहीं भी रहे वोह मदीने में है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾114﴿ कुत़्बे मदीना और ग़रीब ज़ाइरे मदीना

हज़रते ह़कीम मुह़म्मद मूसा अमृतसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जिन दिनों में **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर था, **सय्यिदी कुत़्बे मदीना** ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى की ख़िदमत में भी ह़ाज़िरी होती। खाने के वक़्त एक मफ़्लूकुल ह़ाल शख़्स आता और खाना खा कर चला जाता। मैं ने एक दिन दिल में सोचा कि येह शख़्स ख़्वाह म ख़्वाह खाने के वक़्त आ जाता है और ह़ज़रत को तकलीफ़ देता है ! उसी दिन जब मह़फ़िल बर्ख़ास्त हुई। **सय्यिदी कुत़्बे मदीना** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़कीम मुह़म्मद मूसा ! मुझ से मिल कर जाना। मैं ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो फ़रमाया : ह़कीम साह़िब ! येह जो ग़रीबुल ह़ाल शख़्स हर रोज़ खाना खाने के लिये आता है, येह पाकिस्तान के शहर लाइलपूर (सरदाराबाद, फ़ैसलाबाद) में एक मिल में मा'मूली मुलाज़िम है, इसे हर साल शहनशाहे बह़्रो बर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत नसीब होती है, बड़ा ख़ुश बख़्त है और **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का ज़ाइर है। मैं इस लिये इस को खाना खिलाता हूं। (अन्वारे कुत़्बे मदीना, स. 277 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

थका मान्दा है वोह जो पाऊं अपने तोड़ कर बैठा
वोही पहुंचा हुवा ठहरा जो पहुंचा कूए जानां में (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात की 7 हिकायात

﴾115﴿ का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि एक रात चन्द औ़रतों को त़वाफ़े का'बा करता देख कर मैं वर्त़ए ह़ैरत में डूब गया ! (क्यूंकि वोह आ़म औ़रतों की त़रह़ नहीं थीं) जब वोह फ़ारिग़ हुईं तो बाहर निकल गईं। मैं उन के तआ़क़ुब में रवाना हुवा, वोह चलती रहीं यहां तक कि वोह एक वीरान जंगल में दाख़िल हो गईं, वहां कुछ मुअ़म्मर (या'नी बड़ी उ़म्र के) अफ़राद बैठे थे, उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ इब्ने ज़ुबैर ! आप यहां कैसे आ गए ?" मैं ने जवाब देने के बजाए उन से सुवाल कर दिया : "आप लोग कौन हैं ?" उन्हों ने कहा : "**हम जिन्नात हैं** ।" मैं ने अपने तआ़क़ुब और इस का सबब बयान किया, उन्हों ने कहा : "येह हमारी औ़रतें (या'नी जिन्नियां) हैं। ऐ इब्ने ज़ुबैर ! आप खाने में क्या पसन्द फ़रमाएंगे ?" मैं ने कहा : "ताज़ा पक्की **खजूरें** ।" ह़ालांकि उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में ताज़ा खजूर का कहीं नामो निशान न था। लेकिन वोह मेरे पास पक्की ताज़ा खजूरें ले आए। जब मैं खा चुका तो कहा : "जो बच गई हैं उन्हें साथ ले जाइये।" ह़ज़रते

मस्जिदे ख़ैफ़ मस्जिदे जिन्न मस्जिदे जिइर्रानह मस्जिदे निमरह मस्जिदे ग़मामह मस्जिदे जुमुआ़ मस्जिदे क़िब्लतैन

मक़ामे इब्राहीम ह़ज्रे अस्वद ग़ारे सौर ग़ारे ह़िरा जबले उह़ुद मेह़राबे नबवी मिम्बरे रसूल

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने वोह बची हुई खजूरें उठाईं और घर वापस आ गया।

(لقط المرجان فی احکام الجان ص ٢٤٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं
तेरी अ़त़ा का इशारा जो हो गया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾116﴿ चमकीला सांप

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मस्जिदे ह़राम में मौजूद थे कि एक सफ़ेद और सियाह रंग का **चमकीला सांप** आया, उस ने बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया फिर वोह "मक़ामे इब्राहीम" के पास आया और गोया नमाज़ अदा कर रहा था तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا उस के पास आ कर खड़े हो गए और फ़रमाया : "**ऐ सांप**! शायद तुम ने उ़मरे के अरकान पूरे कर लिये हैं और अब मैं तुम्हारे बारे में यहां के ना समझ लोगों से डरता हूं (या'नी कहीं वोह तुम्हें अस्ली सांप समझ कर मार न डालें लिहाज़ा तुम यहां से जल्दी चले जाओ)।" चुनान्चे वोह घूमा और आस्मान की त़रफ़ उड़ गया। (ऐज़न स.101)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कर दे हज का शरफ़ अ़ता या रब्ब सब्ज़ गुम्बद भी दे दिखा या रब्ब
येह तेरी ही तो है इनायत कि मुझ को मक्के बुला लिया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾117﴿ सांप नुमा जिन्न ने ह़जरे अस्वद चूमा

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुबैर رَحْمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब बैठे थे कि "इराक़ी दरवाज़े" से अचानक एक **सांप** दाख़िल हुवा और ख़ानए का'बा का त़वाफ़ किया फिर **ह़जरे अस्वद** के पास आया और उसे चूमा। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان ने उस से फ़रमाया : "**ऐ जिन्न** ! अब आप ने अपना **उ़मरह** अदा कर लिया है, हमारे बच्चे ख़ौफ़ज़दा हैं लिहाज़ा आप वापस चले जाइये।" चुनान्चे वोह जिस त़रफ़ से आया था उसी त़रफ़ से वापस चला गया। (ऐज़न, स. 100)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शरफ़ दे हज का मुझे बहरे मुस्त़फ़ा या रब्ब
रवाना सूए मदीना हो क़ाफ़िला या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 94)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾118﴿ पानी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला जिन्न

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दौरे ख़िलाफ़त में आ़शिक़ाने रसूल का एक क़ाफ़िला **ह़ज** के इरादे से निकला, उन्हें रास्ते में प्यास लगी, एक कुंवां नज़र आया मगर उस का पानी खारा था। लिहाज़ा वोह आगे बढ़ गए, ह़त्ता कि शाम हो गई लेकिन पानी न मिला। क़ाफ़िला रात भर चलता रहा यहां तक कि एक खजूर के दरख़्त के पास पहुंचा, यकायक एक **सियाह फ़ाम मोटा आदमी** नुमूदार हुवा, उस ने कहा : ऐ क़ाफ़िले वालो ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि वोह मुसलमान भाइयों के लिये वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है और मुसलमान भाइयों के लिये वोह चीज़ ना पसन्द करे जो अपने लिये ना पसन्द करता है।" तुम लोग यहां से आगे बढ़ो, एक टीला आएगा फिर अपनी दाईं जानिब मुड़ जाना वहां तुम्हें पानी मिल जाएगा। उन में से किसी ने कहा कि **अल्लाह** की क़सम ! मेरे ख़याल में येह शैत़ान है, दूसरे शख़्स ने तरदीद करते हुए कहा : "शैत़ान इस क़िस्म की बातें नहीं करता, येह कोई **मुसलमान जिन्न** है।" बहर ह़ाल वोह लोग चल पड़े और उस जिन्न की निशानदेही के मुत़ाबिक़ पानी तक पहुंच गए। (ایضاً ص۱۰۹ مُلَخَّصاً)

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना
कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿119﴾ ग़ौषे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم के क़ाफ़िलए हज का पुर असरार जवान

शहनशाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौषे पाक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق एक बार अपने मुरीदीन का क़ाफ़िला लिये **हज** के लिये रवाना हुए, जब येह क़ाफ़िला किसी मन्ज़िल पर उतरता तो सफ़ेद कपड़े में मल्बूस एक **पुर असरार जवान** कहीं से आ जाता, वोह उन के साथ खाता पीता नहीं था। हुज़ूर ग़ौषे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم ने अपने मुरीदों को वसिय्यत (या'नी ताकीद) फ़रमाई थी कि वोह इस "जवान" से बातचीत न करें। क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में दाख़िल हुवा और एक घर में क़ियाम पज़ीर हो गया। जब येह हुज्जाजे किराम घर से निकलते तो वोह **पुर असरार जवान** घर के अन्दर दाख़िल हो जाता और जब येह दाख़िल होते तो वोह बाहर निकल जाता। एक मरतबा सब लोग निकल गए लेकिन क़ाफ़िले के एक हाजी साहिब बैतुल ख़ला (Wash Room) में रह गए, इसी दौरान वोह **पुर असरार जवान** घर में दाख़िल हुवा तो उसे कोई नज़र नहीं आया। उस ने थेली खोली और एक गद्दर (या'नी अध पक्की खजूर) निकाल कर खाने लगा। जब वोह हाजी साहिब बैतुल ख़ला से निकले और उन की नज़र उस **पुर असरार जवान** पर पड़ी तो वोह वहां से चला गया। इस के बा'द फिर कभी क़ाफ़िले वालों के

पास नहीं आया। जब उन हाजी साहिब ने सरकारे ग़ौषे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को इस हैरत अंगेज़ बात की ख़बर दी तो फ़रमाया : **येह पुर असरार जवान उन जिन्नों में से है जिन्हों ने रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **से कुरआने मजीद सुना है।** (لقط المرجان ص ٢٣٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

जिन्नो इन्सान व मलक को है भरोसा तेरा
सरवरा मरजए कुल है दरे वाला तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾120﴿ बाग़ के जिन्नात

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारा क़ाफ़िला सूए हरम रवां दवां था, किसी सबब से मैं क़ाफ़िले से अलग हो गया और मुसल्सल तीन शबाना रोज़ चलता रहा, इस दौरान मुझे न भूक लगी न प्यास, न ही कोई हाजत पेश आई। आख़िरे कार मैं **एक हरे भरे लहलहाते गुलशन में निकला, वहां ख़ूब फलदार दरख़्त थे, हर तरफ़ ख़ुश्बूदार फूल खिले थे और बीच में एक छोटा सा तालाब था।** मैं ने अपने दिल में कहा : येह तो गोया जन्नत है। अचानक ख़ुश पोश बा इमामा अफ़राद का एक गुरौह आ गया, उन्हों ने मुझे सलाम किया, मैं ने जवाब दिया, मेरे दिल में ख़याल गुज़रा हो न हो येह **जिन्नात** हैं कि येह सर ज़मीन ही अ़जीबो ग़रीब है। इतने

में उन में से एक शख़्स बोला : "हम क़ौमे जिन्नात में से हैं, हमारा एक मस्अले में बाहम इख़्तिलाफ़ हो गया है। हम ने लैलतुल जिन्न में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का मुक़द्दस कलाम ब ज़बाने शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुनने का शरफ़ हासिल किया है और इसी पाक कलाम की वजह से तमाम दुन्यवी काम हम से ले लिये गए और **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत (मर्ज़ी) से इस जंगल में येह तालाब हमारा मक़ाम बना दिया गया है। मैं ने दर्याफ़्त किया कि मैं ने अपना **हज का क़ाफ़िला** जहां छोड़ा है, वोह जगह यहां से कितनी दूर है? येह सुन कर उन में से एक मुस्कुराया और कहने लगा : "ऐ अबू इस्हाक़! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही के लिये असरारो अ़जाइबात हैं, जहां इस वक़्त आप हैं, एक **जवान** के सिवा आज तक कोई नहीं आया और वोह भी यहीं वफ़ात पा गया।" येह कह कर उस ने एक त़रफ़ इशारा कर के बताया : "वोह रहा इस का मज़ार।" वोह मज़ार तालाब के कनारे था और उस के इर्द गिर्द ऐसे ख़ुशनुमा ख़ुश्बूदार फूल खिले हुए थे जो इस से पहले मैं ने कभी न देखे थे। बात जारी रखते हुए उस **जिन्न** ने कहा : "आप के और क़ाफ़िले के दरमियान इतने इतने महीने की मसाफ़त (या'नी फ़ासिला) है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्हा़क़ इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने उन **जिन्नात** से कहा : "मुझे उस **मर्हूम जवान** के बारे में कुछ बताइये।" तो एक ने कहा : "हम यहां तालाब के कनारे बैठे हुए मह़ब्बत का तज़्किरा कर रहे थे, हमारी गुफ़्त्गू जारी थी कि अचानक एक

जवान हमारे पास आया और उस ने सलाम किया। हम ने सलाम का जवाब दिया और उस से दर्याफ़्त किया : "ऐ जवान ! तुम कहां से आए हो ? बोला : **नैशापूर** के एक शहर से।" हम ने पूछा : "तुम वहां से कब निकले थे ?" उस ने जवाब दिया : "सात दिन क़ब्ल। हम ने पूछा : "अपने वत़न से निकलने की वजह ?" कहा : "**अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान :

وَاَنِیۡبُوۡۤا اِلٰى رَبِّكُمۡ وَاَسۡلِمُوۡا لَهٗ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ یَّاۡتِیَكُمُ الۡعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنۡصَرُوۡنَ ﴿۵۴﴾

(پ۲۴،الزمر:٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ और उस के हुज़ूर गर्दन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।*

हम ने उस से कुछ और भी सुवालात किये जिन के जवाबात देते देते उस ने यकायक एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। हम ने उसे यहां दफ़्न कर दिया और येह उस का मज़ार है (**अल्लाह** उस से राज़ी हो)। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیه फ़रमाते हैं : मैं **मर्हूम जवान** के अवसाफ़ सुन कर बहुत मुतअष्षिर (مُ.تَ.اَث.ثِر) हुवा और अ़क़ीदत से मैं मज़ार शरीफ़ के क़रीब गया तो उस के सिरहाने नर्गिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा था और येह इबारत लिखी हुई थी هٰذا قَبرُ حَبِيبِ اللّٰهِ قَتِيلِ الْغَيرَة या'नी येह **अल्लाह** तआ़ला के दोस्त की क़ब्र है उसे "ग़ैरत" ने क़त्ल

किया है। और एक वरक़ पर "اَلَا نَابَة" का मा'ना लिखा था। फिर **जिन्नात** ने मुझ से उस आयत की तफ़्सीर पूछी तो मैं ने बयान कर दी। वोह बहुत खुश हुए और उन का आपसी इख़्तिलाफ़ो इज़्तिरार जाता रहा और कहने लगे : हमें हमारे मस्अले का काफ़ी व शाफ़ी जवाब मिल गया। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيه फ़रमाते हैं : फिर मुझे नींद आ गई, जब बेदार हुवा तो (मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا) में तनईम के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنهَا की मस्जिद के पास अपने आप को पाया और मेरे पास एक "फूलों का गुलदस्ता" मौजूद था जो साल भर तरो ताज़ा रहा फिर कुछ अ़र्से बा'द वोह खुद ब खुद ग़ाइब हो गया।

(لقط المرجان ص ٢٤٠ مُلَخّصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

तमन्ना है दरख़्तों पर तेरे रोज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे ताइरे रूहे मुक़य्यद का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾121﴿ अ़जीबो ग़रीब छोटा सा परन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْهِمَا की हर साल **ह़ज** के मोसिमे बहार में मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ के अन्दर मुलाक़ात हुवा करती थी। एक शब जब कि भीड़

छट चुकी थी और अकषर हुज्जाजे किराम सो चुके थे, अलबत्ता बा'ज़ हुज्जाजे किराम इन दोनों हज़रात के साथ दीनी गुफ़्तगू कर रहे थे, यकायक एक **अ़जीबो ग़रीब छोटा सा परन्दा** आया और हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَحْمَۃُاللّٰہ تعالٰی عَلَیہ की एक जानिब हल्के़ में बैठ गया और सलाम किया, हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के सलाम का जवाब दिया और पूछा : तुम कौन हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक मुसलमान जिन्न हूं । पूछा : कहिये कैसे आना हुवा ? बोला : "क्या आप येह पसन्द नहीं फ़रमाते कि हम आप की मजलिस में बैठें और इल्म ह़ासिल करें ।" हमारे अन्दर आप से रिवायात बयान करने वाले बहुत से **जिन्नात** हैं, हम आप हज़रात के साथ बहुत से कामों में शरीक होते हैं मषलन नमाज़, जिहाद, बीमारों की इयादत, नमाज़े जनाज़ा और **ह़ज्जो** उ़मरह वग़ैरहा नीज़ आप से इल्म ह़ासिल करते और कुरआने करीम की तिलावत सुनते हैं । (كتاب الهواتف لابن ابی الدنيا ج ٢ ص ٥٢٦ رقم ١٧٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

आ़लमे वज्द में रक्सां मेरा पर पर होता

काश ! मैं गुम्बदे ख़ज़रा का कबूतर होता

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हैवानात की 9 हिकायात

﴾122﴿ दरिन्दा भी ताबेअ़ हो गया

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی और हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه दोनों **हज** के इरादे से निकले तो उन के सामने एक **दरिन्दा** आ गया। हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से फ़रमाया : "क्या आप इस दरिन्दे को नहीं देख रहे ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "डरिये मत।" फिर हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने उस का कान पकड़ कर दबाया तो वोह दुम हिलाने लगा, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने उस की दुम पकड़ ली, इस पर हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : क्या येह "शोहरत" नहीं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : "अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं अपना ज़ादे राह इस की पीठ पर लाद कर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ले जाता।" (الروض الفائق ص١٠٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

शेर का ख़त़रा क्या शेर ख़ुद कांप उठा !
सामने जब नबी का गुलाम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"क्या येह शोहरत नहीं" ? की वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दरिन्दे भी **अल्लाह** वालों के ताबेअ़ हो जाते हैं। इस ह़िकायत में मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ज़बरदस्त आ़लिम व मुह़द्दिष सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का सुवाल करना लोगों को ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के बारे में हुब्बे जाह के तअ़ल्लुक़ से बदगुमानी से बचाने के लिये था और इस सुवाल का उन्हों ने भी क्या ख़ूब जवाब इर्शाद फ़रमाया। बहर ह़ाल येह बड़ों की बातें हैं येह ह़ज़रात इख़्लास के पैकर हुवा करते थे और एक दूसरे की बाति़नी इस्लाह़ का ख़याल रखा करते थे।

﴾123﴿ शेर ने रास्ता बताया

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ रूम की सर ज़मीन में जिहाद के दौरान इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते हुए चले जा रहे थे कि अचानक जंगल से एक **शेर** निकल कर उन के सामने आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : یَا اَبَا الْحَارِثِ! اَنَا مَوْلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ऐ अबल ह़ारिष ! (येह शेर की कुन्यत है) मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम हूं और मेरा मुआ़मला येह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग पड़ गया हूं और लश्कर की तलाश में हूं। येह सुन कर **शेर** दुम हिलाता हुवा उन के पहलू में आ कर खड़ा हो गया और बराबर उन को अपने साथ में लिये हुए चलता रहा यहां तक कि येह लश्करे इस्लाम में पहुंच गए तो **शेर** वापस चला गया।

(مشکوۃ ج۲ص۴۰۰ حدیث۵۹۴۹)

शेर का ख़तरा क्या ! वोह बिगाड़ेगा क्या !
सामने जब नबी का गुलाम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾124﴿ कुरआने करीम की ता'ज़ीम करने वाले बन्दर की हिकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत**" 477 ता 478 पर **मेरे आक़ा** आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : एक मरतबा नन्हे मियां (या'नी सरकारे आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के सब से छोटे भाई अ़ल्लामा मुहम्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) अपनी छत पर **कुरआने अ़ज़ीम** पढ़ रहे थे, सामने दीवार पर एक **बन्दर** बैठा था, येह किसी काम को उठ कर गए, बन्दर दौड़ता हुवा सामने दीवार पर गुज़रा और उस पार जाना चाहता था जैसे ही कुरआने अ़ज़ीम के मुहाज़ात पर (या'नी सामने) आया, कुरआने अ़ज़ीम को सजदा किया और अपनी राह चला गया।

चांद शक़ हो पेड़ बोलें, जानवर सजदा करें
बा-रकल्लाह मर्जए आलम येही सरकार है

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾125﴿ बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ासा

एक पाकिस्तानी हाजी साहिब **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में हाज़िर हुए। जिस मकान में मुक़ीम हुए वहां

एक **बिल्ली** रहती थी जो रोज़ाना उन के क़रीब आती और वोह उस से प्यार करते, ह़ाजी साहिब के मन में **मदीने की बिल्ली** ख़ूब समा गई थी और उन्हों ने उसे पाकिस्तान ले जाने की निय्यत कर ली थी। ब तमाम हिफ़ाज़त ले जाने के लिये उन्हों ने एक पिन्जरे की भी तरकीब बना ली थी, जब हिज्रे मदीना की जां सोज़ घड़ियां क़रीब आईं, और मदीने की आख़िरी रात आ गई तो ह़ाजी साहिब ने बारगाहे रिसालत में अल वदाई सलाम पेश किया और घर आ कर लैट गए। ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाया, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "आप ख़ैरिय्यत से रुख़्सत होंगे मगर मेरी **बिल्ली** को साथ न ले जाना येह कई दिन से रोज़ाना मेरे दरबार में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करती है : मुझे बचा लीजिये ! मदीना छूट रहा है।" (मदीनतुर्रसूल, स. 419 मुलख़्ख़सन)

सबबे वुफ़ूरे रह़मत मेरी बे ज़बानियां हैं
न फ़ुग़ां के ढंग जानूं न मुझे पुकार आए (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾126﴿ हिरनी की पुकार ब हुज़ूरे शहनशाहे अबरार ﷺ

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا से रिवायत है कि **सरकारे** वाला तबार, बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सह़रा में थे। अचानक किसी ने पुकारा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुतवज्जेह हो

कर देखा मगर कोई नज़र न आया। फिर दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर देखा तो बंधी हुई एक **हिरनी** नज़र आई उस ने अ़र्ज़ की : اُدْنُ مِنِّی یارسول اللّٰہ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ! या'नी या रसूलल्लाह ! मेरे क़रीब तशरीफ़ लाइये। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़रीब तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : مَاحَاجَتُکِ या'नी तेरी क्या ह़ाजत है ? **हिरनी** बोली : उस पहाड़ में मेरे दो बच्चे हैं, आप मुझे खोल दीजिये, मैं उन दोनों को दूध पिला कर आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाऊंगी। फ़रमाया : क्या तू ऐसा करेगी ? **हिरनी** ने अ़र्ज़ की : अगर मैं ऐसा न करूं तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुझे **इशार** का अ़ज़ाब दे। (इशार ऐसी ह़ामिला ऊंटनी को कहते हैं जिस का दस माह गुज़र जाने के बा'द भी बच्चा बाहर न आए, और उस बेचारी पर बोझ लादा जाए जिस के सबब वोह तकलीफ़ से ख़ूब बिलबिलाए, चीख़े चिल्लाए) तो **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे खोल दिया और उस ने जा कर अपने बच्चों को दूध पिलाया और इस के बा'द वोह आ गई और आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बांध दिया। इतने में आ'राबी बेदार हो गया और उस ने देख कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप को कोई काम है ? फ़रमाया : हां इस **हिरनी** को छोड़ दे। उस ने उसे छोड़ दिया। वोह चोकड़ियां भरती हुई जा रही थी और येह कह रही थी : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰہ (मैं गवाही देती हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप **अल्लाह** के रसूल हैं)। (المعجم الکبیر ج ۲۳ ص ۳۳۱ حدیث ۷۶۳، الخصائص الکبری ج ۲ ص ۱۰۱)

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद हां यहीं चाहती है हिरनी दाद
*इसी दर पर शुतराने नाशाद गिलए **रन्जो अ़ना** करते हैं*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾127﴿ ऊंट ने त़वाफ़े का'बा किया और फिर....

सि. 815 हि. का वाक़िआ़ है, एक ऊंट अपने मालिक से ख़ुद को छुड़ा कर भाग खड़ा हुवा, यहां तक कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहुंचा और सीधा मस्जिदुल ह़राम में दाख़िल हो गया, लोग पकड़ने दौड़े मगर किसी के हाथ में न आया, उस ने का'बए मुशर्रफ़ा के गिर्द सात चक्कर लगाए फिर **ह़जरे अस्वद** पर अपने होंट रख दिये, इस के बा'द **मीज़ाबे रह़मत** के सामने खड़ा हो गया, उस की आंखों से टप टप आंसू गिर रहे थे, इसी त़रह़ रोते रोते वोह ज़मीन पर आ रहा और उस का दम निकल गया। लोगों ने उसे बसद एह़तिराम उठाया और **सफ़ा व मरवह** के दरमियान दफ़्ना दिया। (किताबुल ह़ज, स. 114 मुलख़्ख़सन) (उस दौर में आज कल की त़रह़ का मुआ़मला न था वहां तद्फ़ीन मुमकिन थी चुनान्चे शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिषे देहल्वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने बोस्तानुल मुह़द्दिषीन सफ़ह़ा 298 पर लिखा है : मश्हूर मुह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नसाई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی सफ़ा व मरवह के दरमियान मद्फ़ून हैं)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तसद्दुक़ हो रहे हैं लाखों बन्दे गिर्द फिर फिर कर
त़वाफ़े ख़ानए का'बा अ़जब दिलचस्प मन्ज़र है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾128﴿ ऊंटों ने आक़ा को सजदा किया

ग़ीलान बिन सलमा षक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम एक सफ़र में महबूबे रब्बे अक्बर, मक्के मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे, हम ने एक अ़जीब बात देखी (और वोह येह कि) हम एक मन्ज़िल में उतरे, वहां एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह**! मेरा एक बाग़ है कि मेरी और मेरे इ़याल की वोही वजहे मआ़श (या'नी गुजर बसर का ज़रीआ़) है उस में मेरे दो शुतर (या'नी दो ऊंट) आबकश (कुंवें से पानी खींचने वाले) थे, दोनों मस्त हो गए न अपने पास आने दें न बाग़ में क़दम रखने दें, किसी की ताक़त नहीं कि क़रीब जाए। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ सहाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) उठ कर उस के बाग़ को गए। फ़रमाया : खोल दे, अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह**! इन का मुआ़मला इस से सख़्त तर है, फ़रमाया : खोल, दरवाज़े को जुम्बिश (या'नी ह़रकत) होनी थी कि दोनों (ऊंट) शोर करते हवा की त़रह़ झपटे, दरवाज़ा खुला और उन्हों ने जब **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा फ़ौरन **सजदे** में गिर पड़े ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सर पकड़ कर मालिक के सिपुर्द कर दिये और फ़रमाया : "इन से काम ले और चारा ब ख़ूबी दे।" हाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह**! चोपाए हुज़ूर को सजदा करते हैं तो हुज़ूर के सबब हम पर **अल्लाह** की ने'मत तो बेहतर है, **अल्लाह** ने गुमराही से हम को राह दिखाई और हुज़ूर के हाथों पर हमें दुन्या व आख़िरत के मोहलिकों (या'नी

हलाक करने वाली चीज़ों) से नजात दी क्या हुज़ूर हम को इजाज़त न देंगे कि हम हुज़ूर को "सज्दा" करें, **नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सजदा मेरे लिये नहीं, वोह तो उसी ज़िन्दा के लिये है जो कभी न मरेगा, उम्मत में किसी को सजदे का हुक्म देता तो औ़रत को सजदए शोहर का। (دلائل النبوۃ ص ٢٢٨)

मलक व जिन्नो बशर पढ़ते हैं कलिमा उन का
जानवर संगो शजर करते हैं चर्चा उन का

(क़बालए बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾129﴿ ग़मे मुस्तफ़ा में जान देने वाले दो बे ज़बान

सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के सबब इन्सो जिन्न के साथ साथ बे ज़बान हैवान भी सदमे से दो चार हुए (1) एक **दराज़ गोश** (या'नी गधा) जिस पर जनाबे महबूबे बारी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अकषर सुवारी फ़रमाया करते थे, फ़र्ते ग़म से बेताब हो कर उस ने एक कुंवें में छलांग लगा कर जान दे दी (2) सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ास **ऊंटनी** भी दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बिग़ैर बे क़रार रहने लगी, खाना पीना छोड़ दिया और इस तरह उस ने भी भूक प्यास से जान दे दी।

(مدارِجُ النّبوت حصّہ ٢ ص ٤٤٤)

*उन के दर पर मौत आ जाए तो जी जाऊं **हसन***
उन के दर से दूर रह कर ज़िन्दगी अच्छी नहीं (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾130﴿ ह़रम शरीफ़ के कबूतरों की आस्तानए मह़बूब से मह़ब्बत

कु़त़्बे मदीना सय्यिदी व मुर्शिदी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा इन्तिज़ामिय्या ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ के ह़रमे अन्वर को साफ़ सुथरा रखने के लिये फ़ैसला किया कि ह़रम शरीफ़ में **कबूतरों** के लिये दाना न डाला जाए, इस त़रह़ **कबूतर** दाने की तलाश के लिये दूसरी जगहों में मुन्तक़िल हो जाएंगे। इस हुक्म पर अ़मल किया गया और कई दिन तक दाना न डाला गया **मगर कबूतरों की गुम्बदे ख़ज़रा से मह़ब्बत का येह आ़लम था कि भूक से मर रहे थे मगर आस्तानए मह़बूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **छोड़ने के लिये तय्यार नहीं थे।** अहले मदीना ने अपनी आंखों से येह इश्क़ो मह़ब्बत भरा मन्ज़र देखा, फिर दुन्या में येह बात शोहरत पकड़ गई तो लोगों ने हुकूमत को तार दिये और इसरार किया, तब हुकूमत ने फिर ह़स्बे साबिक़ **कबूतरों** को दाना डालना शुरूअ़ किया। (अन्वारे कु़त़्बे मदीना, स. 54 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

वोह मदीने के प्यारे कबूतर, जब नज़र आएं तुझ को बरादर
उन को थोड़े से दाने खिला कर, तू सलाम मेरा रो रो के कहना

(वसाइले बख़्शिश, स. 592)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मक्के की ज़ियारतें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़हा करें और नबी صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं । (مُسْنَدُ اَبِی یَعْلٰی ج٣ ص ٩٥ حدیث ٢٩٥١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰه **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا निहायत बा बरकत और साहिबे अ़ज़मत शहर है, हर मुसलमान इस की हाज़िरी की तमन्ना व ह़सरत रखता है और अगर षवाब की निय्यत हो तो यक़ीनन दीदारे **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا

की आरज़ू भी इबादत है। **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की ज़ियारतों के बा क़ाइदा बयान से क़ब्ल **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُهٗ के इस प्यारे शहर के फ़ज़ाइल मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये ताकि दिल में इस की मज़ीद अ़क़ीदत जागुज़ीं हो।

वहां प्यारा का'बा यहां सब्ज़ गुम्बद
वोह मक्का भी मीठा तो प्यारा मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 327)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा अम्न वाला शहर है

कुरआने करीम में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا का बयान किया गया है चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 126 में है :

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا

(پ ١، البقرة: ١٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ने कि ऐ रब (عَزَّوَجَلَّ) मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे।*

पारह 30 **सूरतुल बलद** की पहली आयत में है :

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١

(پ ٣٠، البلد: ١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुझे इस शहर की क़सम*

(या'नी मक्कए मुकर्रमा की) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स.1104)

मक्कतुल मुकर्रमा के दस हुरूफ़ की निस्बत से मक्के के दस नाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के बहुत से नाम किताबों में दर्ज हैं इन में से 10 येह हैं : ﴾1﴿ अल बलद ﴾2﴿ अल बलदुल अमीन ﴾3﴿ अल बलदह ﴾4﴿ अल क़रयह ﴾5﴿ अल क़ादिसिय्या ﴾6﴿ अल बैतुल अ़तीक़ ﴾7﴿ मआ़द ﴾8﴿ बक्का ﴾9﴿ अर्रासु ﴾10﴿ उम्मुल क़ुरा

(العقد الثمین فی تاریخ البلد الامین ج ۱ ص ۲۰٤)

रमज़ाने मक्कतुल मुकर्रमा

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "رَمَضَانُ بِمَکَّةَ اَفْضَلُ مِنْ اَلْفِ رَمَضَانَ بِغَیْرِ مَکَّةَ या'नी मक्के में रमज़ान गुज़ारना ग़ैरे मक्का में हज़ार रमज़ान गुज़ारने से अफ़्ज़ल है।"

(جمع الجوامع ج ٤ ص ۳۷۲ حدیث ۱۲۵۸۹)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में रह कर रमज़ानुल मुबारक के महीने के रोज़े रखना ग़ैरे मक्का के हज़ार रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों से अफ़्ज़ल है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस **मक्के** को अपने घर के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया, अपने बन्दों के लिये इस में **ह़ज** के मक़ामात बनाए, इस को अम्न वाला **ह़रम** बनाया और इस को बहुत सी ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा।

(فیض القدیر ج٤ ص ٥١ تحت الحدیث٤٤٧٨)

पाक घर के त़वाफ़ वालों पर
बारिश **अल्लाह** के करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمّد

मक्कतुल मुकर्रमा नबिय्ये करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم को मह़बूब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे ह़ज़्वरा के पास अपनी ऊंटनी पर बैठे फ़रमा रहे थे : **अल्लाह** की क़सम ! तू **अल्लाह** की सारी ज़मीन में बेहतरीन ज़मीन है और **अल्लाह** की तमाम ज़मीन में मुझे ज़ियादा प्यारी है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे इस जगह से न निकाला जाता तो मैं हरगिज़ न निकलता।

(ابن ماجه ج۳ ص۵۱۸ حديث۳۱۰۸)

शारेह़ बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक के तह़्त "नुज़्हतुल क़ारी" में लिखते हैं कि येह इर्शाद हिजरत के वक़्त का है, उस वक़्त तक मदीनए त़य्यिबा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ नहीं हुवा था। उस वक़्त तक मक्का पूरी सर ज़मीन से अफ़्ज़ल था मगर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो येह शरफ़ इसे ह़ासिल हो गया। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2 स. 711)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان "मिर्आतुल मनाजीह़" में लिखते हैं : जम्हूर उ-लमा (या'नी अकषर उ-लमा) के नज़्दीक मक्कए मुअ़ज़्ज़मा शहरे मदीनए मुनव्वरा से अफ़्ज़ल और **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ियादा प्यारा है उन की दलील येह ह़दीष है । **इमाम मालिक** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق) के हां मदीनए मुनव्वरा मक्कए मुकर्रमा से अफ़्ज़ल है । वोह इस ह़दीष के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि इस में पहली ह़ालत का ज़िक्र है, फिर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **मदीनए मुनव्वरा** ज़ियादा प्यारा हो गया । फ़तवा येही है कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा मदीनए मुनव्वरा से अफ़्ज़ल है मगर उ़श्शाक़ की निगाह में मदीनए मुनव्वरा अफ़्ज़ल, क्यूंकि वोह मह़बूब की आराम गाह है । (मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 204)

मक्के से इस लिये भी अफ़्ज़ल हुवा मदीना
ह़िस्से में इस के आया मीठे नबी का रोज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा अफ़्ज़ल है या मदीनए मुनव्वरा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" स. 236 पर है : **अ़र्ज़ :** हुज़ूर ! मदीनए त़य्यिबा में एक नमाज़ पचास हज़ार का षवाब रखती है और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा

में एक लाख का, इस से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का अफ़्ज़ल होना समझा जाता है ? **इर्शाद :** जम्हूर ह़नफ़िय्या (या'नी अकषर ह़नफ़ी उ़-लमा) का येही मस्लक है और **इमाम मालिक** عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰهِ الْخَالِق के नज़्दीक **मदीना** अफ़्ज़ल और येही मज़हब अमीरुल मुअमिनीन **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का है। एक सहा़बी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा अफ़्ज़ल है। (सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने) फ़रमाया : क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीने से अफ़्ज़ल है ! उन्हों ने कहा : وَاللّٰه! بیتُ اللّٰه وحَرَمُ اللّٰه फ़रमाया : मैं बैतुल्लाह और ह़रमुल्लाह में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीने से अफ़्ज़ल है ? उन्हों ने कहा : ब खुदा ख़ानए खुदा व ह़रमे खुदा। फ़रमाया : मैं ख़ानए खुदा व ह़रमे खुदा में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीने से अफ़्ज़ल है ? (الموطّا ج۲ ص۳۹۶ حدیث ۱۷۰۰) वोह (सहा़बी) वोही कहते रहे और अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येही फ़रमाते रहे और येही मेरा (या'नी आ'ला ह़ज़रत का) मस्लक है। सह़ीह़ ह़दीष में है, **नबी** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلْمَدِیْنَۃُ خَیْرٌ لَّهُمْ لَوْ کَانُوْا یَعْلَمُوْنَ मदीना उन के लिये बेहतर है अगर वोह जानें। (بخاری ج۱ ص ٦١٨ حدیث ۱۸۷۵) दूसरी ह़दीष नस्से सरीह़ है कि फ़रमाया : اَلْمَدِیْنَۃُ خَیْرٌ مِّنْ مَّکَّۃَ या'नी मदीना मक्के से अफ़्ज़ल है। (مُعجَم کبیر ج٤ ص٢٨٨ حدیث ٤٤٥٠)

षवाब में फ़र्क़ क्यूं ?

और तफ़ावुते षवाब (या'नी षवाब में फ़र्क़) का जवाब बा सवाब (या'नी दुरुस्त जवाब) शैख़ मुह़क़्क़िक़ **अ़ब्दुल ह़क़** देहल्वी ने क्या ख़ूब दिया कि "मक्के में कमीयत (या'नी मिक़्दार) ज़ियादा

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ | मस्जिदे शैख़ैन

मक़ामे इब्राहीम | हजरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

है और **मदीने** में कैफ़िय्यत ।" ("जज़्बुल कुलूब" स. 18) या'नी वहां "मिक़्दार" ज़ियादा है और यहां "क़द्र" अफ़्ज़ू (या'नी मालिय्यत ज़ियादा) जिसे यूं समझें कि लाख रूपिये ज़ियादा कि पचास हज़ार अशरफ़ियां ? गिनती में वोह (या'नी लाख रूपिये) दूने (डबल) हैं और मालिय्यत में येह (या'नी पचास हज़ार अशरफ़ियां) दस गुनी । **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** में जिस त़रह़ एक नेकी लाख नेकियां हैं यूं ही एक गुनाह लाख गुनाह हैं और वहां (या'नी मक्का शरीफ़ में) गुनाह के इरादे पर भी गिरिफ़्त है जिस त़रह़ नेकी के इरादे पर षवाब । मदीनए त़य्यिबा में नेकी के इरादे पर षवाब और गुनाह के इरादे पर कुछ नहीं और गुनाह करे तो एक ही गुनाह और नेकी करे तो पचास हज़ार नेकियां । अ़जब नहीं कि ह़दीष में "خَيْرٌ لَّهُمْ" (या'नी उन के ह़क़ में बेहतर) का इशारा इसी त़रफ़ हो कि उन के ह़क़ में **मदीना** ही बेहतर है ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 236-238)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़्ह़ा 711 पर फ़रमाते हैं : तुर्बते अत़्हर या'नी वोह ज़मीन कि जिस्मे अन्वर से मुत्तसिल है का'बए मुअ़ज़्ज़मा बल्कि अ़र्श से भी अफ़्ज़ल है । बाक़ी मज़ार शरीफ़ का बालाई हिस्सा इस में दाख़िल नहीं । का'बए मुअ़ज़्ज़मा मदीनए त़य्यिबा से अफ़्ज़ल है, हां, इस में इख़्तिलाफ़ है कि मदीनए त़य्यिबा सिवाए मौज़ए तुर्बते अत़्हर और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा

सिवाए का'बए मुकर्रमा इन दोनों में कौन अफ़्ज़ल है, अकषर जानिबे षानी हैं (या'नी अकषर के नज़्दीक मक्कए मुअ़ज़्ज़मा अफ़्ज़ल है) और अपना मस्लक अव्वल (या'नी मदीनए तृय्यिबा अफ़्ज़ल है) और येही मज़हबे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ है, तृबरानी की ह़दीष में तसरीह़ है कि اَلۡمَدِیۡنَۃُ اَفۡضَلُ مِنۡ مَکَّۃَ (मदीना मक्के से अफ़्ज़ल है। (مُعۡجَم کَبِیر ج٤ ص٢٨٨ حدیث٤٤٥٠) وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 711)

मक्कए पाक पर मदीने पर
*बारिश **अल्लाह** के करम की है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा की ज़मीन क़ियामत तक ह़रम है

ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते शैबा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا ने फ़रमाया कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के दिन ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया : ऐ लोगो ! इस शहर को उसी दिन से **अल्लाह** ने **ह़रम** बना दिया है जिस दिन आस्मानो ज़मीन पैदा किये लिहाज़ा येह क़ियामत तक **अल्लाह** के ह़राम फ़रमाने से ह़राम (या'नी हुर्मत वाला) है।

(ابن ماجه ج٣ ص٥١٩ حدیث٣١٠٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी इस शहरे पाक का **ह़रम** शरीफ़ होना सिर्फ़ इस्लाम में नहीं है बल्कि

बड़ा पुराना मस्अला है, हर दीन में येह जगह मोह़तरम थी, वोह जो बाबे ह़रम मदीना में आ रहा है कि ह़ज़रते **इब्राहीम** عَلَيْهِ السَّلَام ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को **ह़रम** बनाया, वहां येह मत़लब है कि इस के **ह़रम** होने का ए'लान इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने किया, क्यूं कि तूफ़ाने नूह़ में जब बैतुल मा'मूर आस्मान पर उठा लिया तो लोग यहां की हुर्मत वग़ैरा भूल गए, ह़ज़रते **ख़लील** عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर इस का ए'लान फ़रमाया, (ह़दीषे पाक में) اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ (या'नी क़ियामत तक) फ़रमा कर बताया कि येह हुर्मत कभी मन्सूख़ न होगी।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 200)

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है
*बारिश **अल्लाह** के करम की है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा और मदीनतुल मुनव्वरा में दज्जाल दाख़िल नहीं होगा

मालिके बह़्रो बर, क़ासिमे कौषर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''لَا يَدْخُلُ الدَّجَّالُ مَكَّةَ وَلَا الْمَدِيْنَةَ'' या'नी **मक्के** और **मदीने** में दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकेगा। (مسند احمد بن حنبل، ج۱۰ص۸۵حديث ٢٦١٠٦)

मक्कतुल मुकर्रमा की गर्मी की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने फ़रमाया : ''مَنْ صَبَرَ عَلٰى حَرِّ مَكَّةَ سَاعَةً مِّنْ نَهَارٍ تَبَاعَدَتْ مِنْهُ النَّارُ'' या'नी जो शख़्स दिन के कुछ वक़्त मक्के की गर्मी पर सब्र करे जहन्नम की आग उस से दूर हो जाती है।'' (اخبار مكة ج٢ص٣١١حديث١٥٦٥)

मक्कतुल मुकर्रमा में बीमार होने वाले का अज्र

हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "जो शख़्स एक दिन मक्के में बीमार हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उसे उस नेक अ़मल का षवाब अ़ता फ़रमाता है जो वोह सात साल से कर रहा होता है (लेकिन बीमारी की वजह से न कर सकता हो) और अगर वोह (बीमार) मुसाफ़िर हो तो उसे दुगना अज्र अ़ता फ़रमाएगा।" (ऐज़न)

मक्कतुल मुकर्रमा में फ़ौत होने वाले से हि़साब नहीं होगा

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स की **हज** या **उ़मरह** करने की निय्यत थी और इसी हालत में उसे ह़रमैन या'नी मक्के या मदीने में मौत आ गई तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बरोज़े क़ियामत इस त़रह उठाएगा कि उस पर न हि़साब होगा न अ़ज़ाब, एक दूसरी रिवायत में है : بُعِثَ مِنَ الآمِنِینَ یَومَ الْقِیَامَۃِ या'नी वोह बरोज़े क़ियामत अम्न वाले लोगों में उठाया जाएगा।" (مصنف عبدالرزاق ج ۹ ص ۱۷٤ الحدیث۱۷٤۷۹)

आमेना के मकां पे रोज़ो शब
*बारिश **अल्लाह** के करम की है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 124)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मक्कतुल मुकर्रमा में मोह़तात रहिये !

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में हर दम रह़मतों की छमाछम बारिशें बरसती हैं, लुत़्फ़ो करम का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता, मांगने वाला कभी मह़रूम नहीं लौटता। **ह़रमे** मक्कए मुकर्रमा में एक नेकी लाख नेकियों के बराबर है मगर येह भी याद रहे कि वहां का एक गुनाह भी लाख गुना है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! येह जानने के बा वुजूद भी बिला तकल्लुफ़ गुनाहों का इर्तिकाब किया जाता है, मषलन 45 डिग्री के ज़ाविये के अन्दर अन्दर क़िब्ला रुख़ या क़िब्ले को पीठ किये इस्तिन्जा करना ह़राम है, नीज़ बद निगाही, दाढ़ी मुन्डाना, ग़ीबत, चुग़ली, झूट, वा'दा ख़िलाफ़ी, बिला वजहे शरई मुसलमान की दिल आज़ारी, ग़ुस्से का गुनाह भरा निफ़ाज़, ईज़ा देह तल्ख़ कलामी वग़ैरहा जराइम करते वक़्त अकषर लोगों को येह एह़सास तक नहीं होता कि हम जहन्नम का सामान कर रहे हैं, आह ! ह़रमे मक्कए पाक زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में अगर सिर्फ़ एक बार झूट बोल लिया, बिला इजाज़ते शरई किसी एक फ़र्द की दिल आज़ारी कर डाली, एक मरतबा ग़ीबत या चुग़ली का इर्तिकाब किया तो किसी और मक़ाम पर गोया एक एक लाख बार येह गुनाह सादिर हुए ! शायद वत़न में ज़िन्दगी भर भी कोई येह गुनाह लाख लाख बार न कर पाए ! इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वत़न में गुनाह कर लिया जाए, यक़ीनन वत़न में गुनाह करना भी अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार बनाता है, बेशक आग की मा'मूली सी चिंगारी बड़े से बड़ा गोदाम फूंक देने के लिये काफ़ी है।

मक्कतुल मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में वोही रहे जिसे ज़न्ने ग़ालिब हो कि यहां का एहतिराम बजा ला सकेगा, ख़ुद को गुनाहों से बचा सकेगा। करोड़ों हनफ़ियों के पेश्वा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه जिन्हों ने सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का सुन्हरी दौर पाया और ताबिइय्यत के शरफ़ से मुशर्रफ़ हुए, उस सलाहो फ़लाह (या'नी नेकी व भलाई) के दौर में लोगों को वहां बे एहतियातियों में मुलव्वष देखा तो ह़रमे (मक्कतुल मुकर्रमा) की रिहाइश मकरूह क़रार दी, आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه ही के मुक़ल्लिद ग्यारहवीं सदी हिजरी के बहुत बड़े हनफ़ी इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی क़ौले इमामे आ'ज़म पर तबसरा करते हुए फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم का ह़रमे (मक्कतुल मुकर्रमा) में सुकूनत (या'नी मुस्तक़िल रिहाइश) मकरूह कहना उन के अपने ज़माने के ए'तिबार से है, वरना आज कल यहां के रहने वालों का हम ने जो ह़ाल देखा है कि ह़राम वज़ाइफ़ (या'नी ना जाइज़ तनख़्वाहें) हड़प कर जाते हैं और इस अ़ज़मत वाले मक़ाम का अदब करने से क़ासिर रहते हैं, अगर सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم इन ह़ालात का मुशाहदा फ़रमाते (या'नी देखते) तो बिला शक यहां (या'नी ह़रमे मक्कतुल मुकर्रमा) की सुकूनत या'नी मुस्तक़िल रिहाइश **ह़राम** कहते।

(المسلك المتقسط فی المنسك المتوسط ص ٤٩٠)

मक्के में रहने के क़ाबिल हज़रात

येह भी ग्यारहवीं सदी हिजरी या'नी अब से तक़रीबन सवा तीन सो साल पुरानी बात है और अब.........? मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا का अदब करने के मुतअ़ल्लिक़ **आ'ला हज़रत** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُالرَّحۡمٰن **फ़तावा रज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़्ह़ा 689 पर फ़रमाते हैं : (साहिबे मदख़ल ह़ज़रते अ़ल्लामा) शैख़ अ़ब्दरी ने बा'ज़ अकाबिर औलिया قُدِّسَتۡ اَسۡرَارُهُمۡ के बारे में येह भी नक़्ल किया कि वोह चालीस साल मक्के में रहे मगर **ह़रमे मक्का** (जो कि मीलों तक फैला हुवा है उस) में पेशाब न करते और न ही वहां लैटते थे। फिर फ़रमाया : ऐसे लोगों के लिये मुजावरत (या'नी मुस्तक़िल रिहाइश) मुस्तह़ब है, या इन्हीं को इजाज़त दी जा सकती थी। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 289)

मक्के में मुलाज़मत व तिजारत करने वाले ग़ौर फ़रमाएं

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में जहां एक नेकी लाख नेकी है वहां एक गुनाह भी लाख गुना है, आ़म शख़्स उ़मूमन गुनाहों से बच नहीं पाता इस वजह से भी उसे मक्कए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में मुलाज़मत व तिजारत वग़ैरा के लिये क़ियाम नहीं करना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا जो यक़ीनन मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में रहने के क़ाबिल थे फिर भी गुनाहों के ख़ौफ़ से हिजरत कर के **ताइफ़** शरीफ़ तशरीफ़ ले गए। **आ'ला ह़ज़रत**, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़ह़ा 693 पर नक़्ल करते हैं : **फ़क़ीह** की ता'रीफ़ इमाम ह़सन बसरी رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه ने यूं की है : दुन्या से ए'राज़ करने (या'नी बचने) वाला, आख़िरत का शौक़ रखने वाला, और अपने उ़यूब से आगाह शख़्स **फ़क़ीह** कहलाता है । ऐसे लोग बिला शुबा मुजावरते मक्का (या'नी मक्के में मुस्तक़िल रिहाइश) के अहल हैं और **अल्लाह** की क़सम ! ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنۡهُمَا उन अहल लोगों में से भी बड़े हैं, लेकिन अकाबिर (या'नी दीनी ए'तिबार से बड़े लोग) हमेशा अपने आप को छोटा और आ़जिज़ समझते हैं, ग़ौर तो कीजिये ! कितना फ़र्क़ है इन में और उन में ! कि जो ग़लती नहीं करता वोह अ़ज़ाब से डरता है और जो गुनाह से मह़फ़ूज़ नहीं वोह सलामती का दा'वा करता है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 693)

मक्के में ज़ियादा रहने से का'बे की हैबत में कमी आ सकती है

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में त़वील क़ियाम से जहां गुनाहों के सबब हलाकत का ख़ौफ़ है वहां जो गुनाहों से मोह़तात़ रहने वाले हैं उन के लिये भी येह इमकान रहता है कि दिल में का'बए मुशर्रफ़ा की हैबत में कमी आ जाए। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़ह़ा 688 पर नक़्ल करते हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنۡهُ को देखिये

वोह जब **हज** से फ़ारिग़ होते तो लोगों में दौरा करते और फ़रमाते : "**ऐ अहले यमन** ! यमन चले जाओ, **ऐ अहले इराक़** ! इराक़ चले जाओ, **ऐ अहले शाम** ! अपने वत़न शाम लौट जाओ ताकि तुम्हारे जेह्नों में तुम्हारे रब के घर (का'बतुल्लाह) की हैबत खूब क़ाइम रहे।" (येह नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं : येह उस दौर की बात है जब सह़ाबा या ताबेईन थे जो निहायत मोअद्दब और निहायत ही एह़तिरामो इकराम करने वाले थे, हमारे इस दौर का क्या ह़ाल होगा ! **अल्लाह** तआ़ला ही इस्लाहे़ अह़वाल की तौफ़ीक़ दे। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि.10 स. 688)

बदन कहीं भी हो मगर दिल मक्के मदीने में रहे

आ'ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़ह़ा 690 पर फ़रमाते हैं : (साहि़बे मदख़ल ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की) **क़ूतुल क़ुलूब** से नक़्ल किया है : बा'ज़ अस्लाफ़ से (मन्क़ूल) है : "बहुत से ख़ुरासान (ईरान) में रिहाइश पज़ीर लोग इस बैतुल्लाह का त़वाफ़ करने वाले के मुक़ाबले में का'बा शरीफ़ से ज़ियादा क़रीब हैं।" बा'ज़ ने फ़रमाया : "बन्दा अपने शहर में हो और उस का दिल **अल्लाह** तआ़ला के घर (या'नी का'बतुल्लाह) से मुतअ़ल्लिक़ हो येह इस से बेहतर है कि बन्दा बैतुल्लाह में हो और दिल किसी और शहर के साथ वाबस्ता हो।"

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने ह़रमैने त़य्यिबैन زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मुजावरत (या'नी मुस्तक़िल क़ियाम)

के बारे में किये गए सुवाल के जवाब में तफ़्सीली दलाइल देने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''बिल जुम्ला हमारे दौर में मुजावरत (या'नी मुस्तक़िल रिहाइश) की क़त्अ़न इजाज़त नहीं, अ़क़्लमन्द अपने लिये फ़क़त् एह़तियात् ही की राह अपनाता है और हर उस रास्ते से इजतिनाब करता (या'नी बचता) है जिस से हलाकत में गिरने का ख़दशा हो, जिस ने अपने नफ़्स को सच्चा समझा (कि बस जी ख़ैर है, कुछ नहीं होता) उस ने झूटे की तसदीक़ की (कि नफ़्स जो कि है ही झूटा उस को सच्चा समझ बैठा !) और खुद उस का मुशाहिदा भी करे (या'नी देख भी ले) गा। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 10 स. 698)

(ह़रमैने त़य्यिबैन में रिहाइश इख़्तियार करने के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 677 ता 698 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

ह़रम है उसे साह़ते हर दो आ़लम
जो दिल हो चुका है शिकारे मदीना (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

''वाह क्या बात प्यारे मक्के की''

के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मक्कतुल मुकर्रमा की 19 ख़ुसूसिय्यात

(मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की बे शुमार ख़ूबियों से यहां सिर्फ़ उन्नीस ख़ुसूसिय्यात का ज़िक्र किया गया है)

✤ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में पैदा हुए ✤ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

दीने इस्लाम की तब्लीग़ का आग़ाज़ यहीं फ़रमाया ❖ यहीं का'बए मुशर्रफ़ा है, इसी का तवाफ़ किया जाता है और नमाज़ में दुन्या भर से इसी त़रफ़ मुंह किया जाता है ❖ मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ यहीं पर है जिस में एक नमाज़ का षवाब एक लाख नमाज़ के बराबर है ❖ आबे ज़म ज़म का कुंवां ❖ ह़जरे अस्वद ❖ "मक़ामे इब्राहीम" और ❖ **सफ़ा मरवह** यहीं हैं ❖ मीक़ात के बाहर से आने वाले बिग़ैर एह़राम के मक्के में दाख़िल नहीं हो सकते ❖ दुन्या भर से मुसलमान **ह़ज** की सआ़दत पाने के लिये यहीं ह़ाज़िर होते हैं ❖ जो इस शहरे मुक़द्दस में दाख़िल हो जाए मामून (अम्न पाने वाला) होगा ❖ (दिन का कुछ वक़्त) यहां की गर्मी पर सब्र कर लेने वाले को जहन्नम की आग से दूर किया जाता है ❖ यहां ग़ारे ह़िरा है जहां मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर पहली वह़्य नाज़िल हुई ❖ यहां पर हर मौसिम के फल मिलते हैं ❖ मे'राजुन्नबी और ❖ चांद के दो टुकड़े होने के मो'जिज़ात इस शहर में ज़ाहिर हुए ❖ दुन्या का सब से पहला पहाड़ जबले अबी क़ुबैस यहीं वाक़ेअ़ है ❖ प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां अपनी ह़याते ज़ाहिरी के 53 बरस गुज़ारे ❖ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी का ज़ुहूर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में ही होगा।

मैं मक्के में जा कर करूंगा त़वाफ़ और
नसीब आबे ज़म ज़म मुझे होगा पीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 323)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की सब से अ़ज़ीम ज़ियारत गाह का'बए मुशर्रफ़ा है। हर मुसलमान इस के दीदारो त़वाफ़ के लिये बे क़रार रहता है। **का'बतुल्लाह** के बारे में बा'ज़ **दिलचस्प मा'लूमात** पेश की जाती हैं। क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर **का'बा शरीफ़** का ज़िक्रे ख़ैर किया गया है। चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** आयत 125 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِذۡ جَعَلۡنَا الۡبَیۡتَ مَثَابَۃً لِّلنَّاسِ وَاَمۡنًا ؕ (پ١،البقرۃ:١٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और याद करो जब हम ने इस घर को लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया।*

ह़रम में दरिन्दे शिकार का पीछा नहीं करते

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में लिखते हैं : (इस आयते मुबारका के लफ़्ज़) "बैत" से **का'बा शरीफ़** मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल। "अम्न" बनाने से येह मुराद है कि **ह़रमे का'बा** में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते, छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून (मह़फ़ूज़) हो जाता है। **ह़रम** को इस लिये "ह़रम" कहा जाता है कि इस में क़त्ल, शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है। (تفسیرات احمدیہ ص ٣٤) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां इस से तअ़र्रुज़ (या'नी रोक-टोक) न किया जाएगा। (تفسیر نسفی ص٧٧)

का'बा सारे जहान के लिये राहनुमा है

अल्लाह रहमान का पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 96 में फ़रमाने आलीशान है :

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٦﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्के में है, बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा।*

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तहत तहरीर फ़रमाते हैं : ऐ मुसलमानो ! या ऐ सारे इन्सानो ! यक़ीन से जान लो कि सारी रूए ज़मीन पर सब से पहले और सब से अफ़्ज़ल घर जो लोगों के दीनी और दुन्यवी फ़ाइदों के लिये पैदा किया गया और बनाया गया वोही है जो कि मक्का शरीफ़ में वाक़ेअ़ है, न बैतुल मुक़द्दस जो दरजे में भी का'बे के बा'द है और फ़ज़ीलत में भी।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 4 स. 29 मुख़्तसरन)

"अल्लाह का पाक घर" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से का'बा शरीफ़ के बारे में 12 मदनी फूल

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं, इन में से कुछ अ़र्ज़ किये जाते हैं :

﴾1﴿ बैतुल मुक़द्दस के मश्हूर बानी हज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلام हैं कि आप ने जिन्नात से ता'मीर कराया मगर **का'बतुल्लाह** के मश्हूर

बानी हज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَیۡهِ السَّلَام हैं ﴾2﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** में मक़ामे इब्राहीम, संगे अस्वद वग़ैरा ऐसी क़ुदरत की निशानियां मौजूद हैं जो बैतुल मुक़द्दस में नहीं ﴾3﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** पर परन्दे नहीं उड़ते बल्कि उस के आस पास फट (या'नी हट) जाते हैं ﴾4﴿ **ह़रमे का'बा** में बकरी और शेर एक जगह पानी पी लेते हैं, वहां शिकारी जानवर भी शिकार नहीं करते ﴾5﴿ **ह़रमे का'बा** में ता क़ियामत जंगो क़िताल ह़राम है ﴾6﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** सारे हिजाज़ियों ख़ुसूसन मक्के वालों की परवरिश का ज़रीआ़ है कि वोह जगह ग़ैर ज़ी ज़र्अ़ (या'नी बे आबो ग्याह) है, जहां मआ़श के ज़राएअ़ सब नापैद हैं मगर वहां के बाशिन्दे दूसरों से ज़ियादा मज़े में हैं, ग़रज़ कि वोह जगह सिर्फ़ इबादतों के लिये है ﴾7﴿ रब तआ़ला ने **का'बे** की हिफ़ाज़त ख़ुद फ़रमाई कि फ़ील (या'नी हाथी) वालों को अबाबील से मरवा दिया ﴾8﴿ ह़ज हमेशा **का'बे** ही का हुवा, बैतुल मुक़द्दस का ह़ज कभी न हुवा ﴾9﴿ **अल्लाह** के आख़िरी नबी हुज़ूर मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास मक्का शरीफ़ में पैदा हुए ﴾10﴿ रब तआ़ला ने **का'बे** के शहर ही को بَلَدٌ اَمِيۡنٌ (या'नी अम्न वाला शहर) फ़रमाया और इसी की क़सम फ़रमाई कि फ़रमाया : "وَهٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِيۡنِ ۙ﴿۳﴾"

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इस अम्न वाले शहर की (क़सम)*

﴾11﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास एक "नेकी" का षवाब एक लाख और बैतुल मुक़द्दस के पास पचास हज़ार ﴾12﴿ **फ़िरिश्तों** और बहुत से अम्बिया عَلَیۡهِمُ السَّلَام का क़िब्ला **का'बा** ही रहा न कि **बैतुल मुक़द्दस**। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4 स. 30-31)

बीमार परन्दे हवाए का'बा से इलाज करते हैं

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में पारह 4 सूरए आले इमरान की 97 वीं आयते करीमा فِيۡهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ (***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उस में खुली निशानियां हैं)* की तफ़्सीर में लिखते हैं : जो इस की हुर्मतो फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं, उन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परन्दे **का'बा शरीफ़** के ऊपर नहीं बैठते और उस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परन्दे बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि **हवाए का'बा** में हो कर गुज़र जाएं इसी से इन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश (या'नी जंगली जानवर) एक दूसरे को ह़रम में ईज़ा नहीं देते ह़त्ता कि **कुत्ते** उस सरज़मीन में **हिरन** पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** की त़रफ़ खिचते हैं और उस की त़रफ़ नज़र करने से आसूं जारी होते हैं और **हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे औलिया उस के गिर्द हाज़िर होती हैं** और जो कोई उस की बेहुर्मती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

का'बे की ज़ियारत इबादत है

ह़दीषे पाक में है : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** देखना इबादत, कुरआने अ़ज़ीम को देखना इबादत है और आ़लिम का चेहरा देखना इबादत है। (فردوس الاخبار،حدیث ۲۷۹۱ ج ۱ ص ۳۷٦) एक और रिवायत में है : ज़म ज़म की त़रफ़ देखना इबादत है।

(اخبارمکۃ للفاکھی ج ۲ ص ۱٤ حدیث ۱۱۰٥)

का'बा क़िब्ला है

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब का'बा शरीफ़ में दाख़िल हुए तो उस के गोशों (या'नी कोनों) में दुआ़ मांगी और नमाज़ न पढ़ी ह़त्ता कि वहां से तशरीफ़ ले आए जब निकले तो दो रक्अ़तें **का'बे** के सामने पढ़ीं और फ़रमाया : येह है **क़िब्ला**।

(بخاری ج ۱ ص ۱٥٦ حدیث ۳۹۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "येह है **क़िब्ला**" की वज़ाह़त में लिखते हैं : या'नी ता क़ियामत **का'बा** तमाम मुसलमानों का **क़िब्ला** हो चुका कभी मन्सूख़ (Cancel) न होगा, इस में लत़ीफ़ (या'नी बारीक) इशारा इस त़रफ़ भी हो रहा है कि **का'बे** का हर हिस्सा **क़िब्ला** है सारा **का'बा** नमाज़ी के सामने होना ज़रूरी नहीं।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 429)

का'बे के अन्दर नमाज़ में कहां रुख़ करे ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़्ह़ा 487 पर मस्अला नम्बर 50 है : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के अन्दर नमाज़ पढ़ी, तो जिस रुख़ चाहे पढ़े, **का'बे** की छत पर भी नमाज़ हो जाएगी, मगर उस की छत पर चढ़ना मम्नूअ़ है । (غُنیه ص٦١٦ وغیرها)

सिर्फ़ तीन मस्जिदों के लिये सफ़र की ह़दीष मअ़ तशरीह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन मस्जिदों के सिवा और किसी त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं (या'नी सफ़र न किया जाए) (1) मस्जिदे ह़राम, (2) मस्जिदे नबवी और (3) मस्जिदे अक़्सा । (بخاری ج١ ص٤٠١ حدیث١١٨٩)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी सिवा इन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ इस लिये सफ़र कर के जाना कि वहां नमाज़ का षवाब ज़ियादा है मम्नूअ़ है जैसे बा'ज़ लोग जुमुआ़ पढ़ने बदायूं से देहली जाते थे ताकि वहां की जामेअ़ मस्जिद में षवाब ज़ियादा मिले येह ग़लत़ है । (तीन के इलावा) **हर जगह की मस्जिदें षवाब में बराबर हैं** । इस तौजीह (दलील)

पर ह़दीष बिल्कुल वाज़ेह़ है। बा'ज़ लोगों ने इस के मा'ना येह समझे कि सिवा इन तीन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ सफ़र ही ह़राम है। लिहाज़ा उ़र्स, ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा के लिये सफ़र ह़राम। अगर येह मत़लब हो तो फिर तिजारत, इलाज, दोस्तों की मुलाक़ात, इ़ल्मे दीन सीखने वग़ैरा तमाम कामों के लिये सफ़र ह़राम होंगे और येह ह़दीष, क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही होगी और दीगर अह़ादीष के भी, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ (پ٧،الانعام:١١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमा दो, ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा।*

"मिर्क़ात" ने इसी जगह और "शामी" ने (बाब) "ज़ियारते क़ुबूर" में फ़रमाया कि "चूंकि **इन तीन मसाजिद के सिवा तमाम मस्जिदें षवाब में बराबर हैं** इस लिये और मस्जिदों की त़रफ़ (ज़ियादा षवाब ह़ासिल करने की निय्यत से) सफ़र मम्नूअ़ है और औलियाउल्लाह की क़ब्रें फ़ुयूज़ो बरकात में मुख़्तलिफ़ हैं, लिहाज़ा ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र जाइज़।"

(मिर्आतुल मनाजीह़ जि.1 स. 431, مرقاة ج٢ ص٢٩٧ تحت الحديث ٦٩٣، ردالمحتار ج٣ ص١٧٨)

हर क़दम पर नेकी और ख़ता की मुआ़फ़ी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अबुल क़ासिम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "जो **ख़ानए का'बा** के क़स्द (या'नी इरादे) से आया और ऊंट पर सुवार हुवा तो ऊंट जो क़दम उठाता और रखता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के बदले उस के लिये नेकी लिखता है और ख़ता मिटाता है और दरजा बुलन्द फ़रमाता है, यहां तक कि जब **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास पहुंचा और त़वाफ़ किया और सफ़ा व मरवह के दरमियान **सअ़्य** की फिर सर मुंडाया या बाल कतरवाए तो गुनाहों से ऐसा निकल गया, जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۴۷۸ حدیث۴۱۱۵)

सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام और का'बा

हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब जन्नत से इस दुन्या में तशरीफ़ लाए तो रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वह़शत व तन्हाई की फ़रियाद की। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **का'बे** की ता'मीर और उस के **त़वाफ़** का हुक्म दिया, हज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने तक येही **का'बा** बर क़रार रहा, तूफ़ाने नूह़ में इस का'बे को सातवें आस्मान की त़रफ़ ऊपर का'बे के हुदूद की सीध में उठा लिया गया, अब वहां पर फ़िरिश्ते उस घर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं। (تفسیر کبیر ج۳ ص۲۹۶)

विलादत की ख़ुशी में का'बे पर झन्डा

सय्यिदतुना आमेना رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہا फ़रमाती हैं : मैं ने देखा कि तीन झन्डे नस्ब किये गए। एक मशरिक़ में, दूसरा मग़रिब में, तीसरा **का'बे की छत** पर और नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई। (خَصائِصِ کُبریٰ ج۱ ص۸۲ مختصراً)

रूहुल अमीं ने गाड़ा का'बे की छत पे झन्डा

ता अ़र्श उड़ा फरेरा सुब्हे शबे विलादत (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

का'बे की एक ज़बान और दो होंट हैं

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक **का'बे की एक ज़बान और दो होंट** हैं और इस ने शिकायत करते हुए अ़र्ज़ की : **या रब्ब** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी त़रफ़ बार बार आने वाले और मेरी ज़ियारत करने वाले कम हो गए हैं ! तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : मैं ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और सजदे करने वाला इन्सान पैदा फ़रमाने वाला हूं जो तेरा इस त़रह़ मुश्ताक़ (या'नी शौक़ रखने वाला) होगा जिस त़रह़ **कबूतरी** अपने अन्डों की मुश्ताक़ (या'नी शौक़ रखने वाली) होती है।

(معجم اوسط ج ٤ ص ٣٠٥ حدیث ٦٠٦٦)

लश्करे सुलैमान और का'बा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 561 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़्हा 130 पर है : **ह़ज़रते** सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का तख़्त हवा पर उड़ता जा रहा था जब **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** से गुज़रा तो का'बा रोया और बारगाहे अह़दिय्यत में (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर) अ़र्ज़ की, कि एक नबी तेरे अम्बिया से और एक लश्कर तेरे लश्करों से गुज़रा, न मुझ में उतरा न नमाज़ पढ़ी। इस पर इर्शादे बारी तआ़ला हुवा : न रो ! मैं तेरा **ह़ज** अपने बन्दों पर **फ़र्ज़** करूंगा जो तेरी त़रफ़ ऐसे टूटेंगे जैसे परन्दा अपने घोंसले की त़रफ़ और ऐसे रोते हुए दौड़ेंगे जिस त़रह़ ऊंटनी अपने बच्चे के शौक़ में और तुझ (या'नी तेरे शहर) में **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को पैदा करूंगा जो मुझे सब अम्बिया (عَلَیْہِمُ السَّلَام) से ज़ियादा प्यारा है। (تفسیر بغوی ج ۳ ص ۳۵۱ ملخّصاً)

का'बा सोने की ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर में लाया जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "तौरात शरीफ़" में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत अपने सात लाख मुक़र्रब फ़िरिश्तों को भेजेगा जिन में से हर एक के हाथ में सोने की एक ज़न्जीर होगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "जाओ ! और **का'बा** इन ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर की त़रफ़ ले आओ," फ़िरिश्ते जाएंगे उसे ज़न्जीरों से बांध कर खींचेंगे और एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "ऐ का'बतुल्लाह ! चल।" तो का'बए मुबारका कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा जब तक मेरा सुवाल पूरा न हो जाए।" फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "तू सुवाल

कर !" तो **का'बा** बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे पड़ोस में मदफ़ून मोअमिनीन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।" तो **का'बा** शरीफ़ एक आवाज़ सुनेगा : "मैं ने तेरी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली।" ह़ज़रते सय्यिदुना **वहब** बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "फिर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में दफ़्न होने वालों को उठाया जाएगा जिन के **चेहरे सफ़ेद** होंगे। वोह सब एह़राम की ह़ालत में **का'बे** के गिर्द जम्अ़ हो कर तल्बिय्या (या'नी लब्बैक) कह रहे होंगे। फिर फ़िरिश्ते कहेंगे : **ऐ का'बा** ! अब चल। तो वोह कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा, जब तक कि मेरी दरख़्वास्त क़बूल हो जाए।" तो फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : तू मांग, तुझे दिया जाएगा। तो **का'बा** शरीफ़ कहेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे गुनहगार बन्दे जो इकठ्ठे हो कर दूर दूर से गुबार आलूद मेरे पास आए। उन्हों ने अपने अह्लो इयाल और अह़बाब को छोड़ा, उन्हों ने फ़रमां बरदारी और ज़ियारत के शौक़ में निकल कर तेरे हुक्म के मुताबिक़ **मनासिके ह़ज** अदा किये, तो मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि उन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा, उन को क़ियामत की घबराहट से अम्न इनायत फ़रमा और उन्हें मेरे गिर्द जम्अ़ कर दे।" तो एक फ़िरिश्ता निदा देगा : **ऐ का'बा** ! उन में ऐसे लोग भी होंगे जिन्हों ने तेरे त़वाफ़ के बा'द गुनाहों का इर्तिकाब किया होगा और इन पर इसरार कर के अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर लिया होगा। तो **का'बा** अ़र्ज़ करेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन गुनहगारों के ह़क़ में भी मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मैं ने उन के ह़क़ में तेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाई।" तो वोही फ़िरिश्ता निदा करेगा : जिस ने **का'बे** की

ज़ियारत की थी वोह दीगर लोगों से अलग हो जाए। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन सब को **का'बे** के गिर्द जम्अ़ कर देगा। उन के चेहरे सफ़ेद होंगे और वोह जहन्नम से बे ख़ौफ़ हो कर त़वाफ़ करते हुए तल्बिया कहेंगे। फिर फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का'बतुल्लाह ! चल। तो का'बा शरीफ़ (इस त़रह़) तल्बिया कहेगा :

"لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ، وَالْخَیْرُ کُلُّہٗ،
بِیَدَیْکَ، لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ
لَکَ وَالْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ،"

फिर फ़िरिश्ते उस को खींच कर मैदाने मह़शर तक ले जाएंगे।

(الروض الفائق ص٦٦)

बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह से वा'दा फ़रमाया कि हर साल छे लाख अफ़राद इस का ह़ज करेंगे, अगर कम हुए तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों के ज़रीए़ उन की कमी पूरी फ़रमा देगा। और बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا **पहली रात की दुल्हन** की त़रह़ उठाया जाएगा तो जिन लोगों ने इस का **ह़ज** किया वोह इस के पर्दों के साथ लटके होंगे और इस के गिर्द त़वाफ़ कर रहे होंगे यहां तक कि येह (या'नी का'बा शरीफ़) **जन्नत** में दाख़िल होगा तो वोह भी उस के साथ दाख़िल हो जाएंगे। (इह़याउल उ़लूम, जि.1 स. 324)

तसद्दुक़ हो रहे हैं लाखों बन्दे गिर्द फिर फिर कर
त़वाफ़े ख़ानए का'बा अ़जब दिलचस्प मन्ज़र है

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

त़वाफ़ के फ़ज़ाइल

पारह 17 सूरतुल ह़ज्ज आयत 29 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

(پ١٧، حج:٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस आज़ाद घर का त़वाफ़ करें।*

त़वाफ़ की इब्तिदा कैसे हुई ?

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में नक़्ल फ़रमाते हैं : (साह़िबे तफ़्सीर) रूहुल बयान और (साह़िबे तफ़्सीर) अ़ज़ीज़ी ने फ़रमाया कि ज़मीन से पहले पानी ही पानी था। क़ुदरती तौर पर दो हज़ार साल पहले का'बे की जगह उस पर **सफ़ेद झाग** पैदा हुवा। कुछ रोज़ में उस को फैला कर ज़मीन कर दिया गया फिर जब फ़िरिश्तों को रब (عَزَّوَجَلَّ) ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश की ख़बर दी तो उन्हों ने अपना ख़िलाफ़त का इस्तिह़क़ाक़ (या'नी ह़क़दार होने का दा'वा) पेश किया और आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश की ह़िक्मत पूछी। मगर इस जुरअत की मा'ज़िरत में तौबा की निय्यत से सात बरस अ़र्शे आ'ज़म का **त़वाफ़** किया, हुक्मे इलाही हुवा कि ज़मीन में भी इसी झाग की जगह निशान लगा दो जहां मेरे बन्दे ख़ता कर के इस के **त़वाफ़** से मुझे राज़ी किया करें।

(تفسیرنعیمی ج١ص٦٤١،تفسیرروح البیان ج١ص٢٣٠)

तवाफ़ में हर क़दम के बदले दस नेकियां और......

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि जिस ने गिन कर त़वाफ़ के सात फैरे किये और फिर दो रक्अ़तें अदा कीं तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है। और **त़वाफ़** करते हुए आदमी के हर क़दम के बदले उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और दस दरजात बुलन्द किये जाते हैं।

(مسند امام احمد بن حنبل ج۲ص ۲۰۲ حدیث۴۴۶۲)

गुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बैतुल्लाह के त़वाफ़ के सात फैरे करे और उस में कोई लग्व (या'नी बेहूदा) बात न करे तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।

(المعجم الکبیر ج ۲۰ ص ۳۶۰ حدیث۸۴۵)

गुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स मुसलमान गुलाम को आज़ाद करेगा इस (गुलाम) के हर उ़ज़्व के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (आज़ाद करने वाले) के हर उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा।" हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मरजाना رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने जब सय्यिदुना ज़ैनुल

आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमते आ़ली में येह ह़दीषे पाक सुनाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपना एक ऐसा **गु़लाम आज़ाद** कर दिया जिस की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا **दस हज़ार दिरहम** क़ीमत लगा चुके थे।

(بُخاری ج ۲ ص ۱۵۰ حدیث ۲۰۱۷)

रोज़ाना 120 रह़मतों का नुज़ूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बैतुल ह़राम का ह़ज करने वालों पर हर रोज़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ 120 **रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है 60 **त़वाफ़** करने वालों के लिये और 40 **नमाज़** पढ़ने वालों के लिये और 20 नज़र करने वालों के लिये।" (الترغیب والترھیب ج۲ص۱۲۳حدیث۶) याद रखिये ! इस ह़दीषे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत सिर्फ़ ह़ाजियों के लिये है।

पचास मरतबा त़वाफ़ करने की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जिस ने 50 मरतबा त़वाफ़ किया गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे आज अपनी मां से पैदा हुवा। (ترمذی ج ۲ ص ۲۴۴ حدیث ۸۶۷)

तवाफ़ नमाज़ की तरह है

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बैतुल्लाह के गिर्द **तवाफ़** नमाज़ की तरह है सिवाए इस के कि तुम इस में कलाम कर सकते हो, तो जो **तवाफ़** में कलाम करे तो अच्छा ही कलाम करे। (ترمذی ج ٢ ص ٢٨٦ حدیث٩٦٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ह़दीषे पाक के इस ह़िस्से "बैतुल्लाह के गिर्द **तवाफ़ नमाज़ की तरह है**" के तह़त फ़रमाते हैं : "**तवाफ़** भी नमाज़ की तरह बेहतरीन इबादत है। उ़–लमा फ़रमाते हैं कि मक्के वालों के लिये (नफ़्ली) नमाज़ (नफ़्ली) **तवाफ़** से अफ़्ज़ल है और बाहर वालों के लिये (नफ़्ली) **तवाफ़** (नफ़्ली) नमाज़ से अफ़्ज़ल कि उन्हें इस ख़ास ज़माने ही में तवाफ़ मुयस्सर होता है।"

(मिर्आत, जि. 4, स. 132)

तवाफ़े का'बा के लिये वुज़ू वाजिब है

वुज़ू न हो तो नमाज़ व सजदए तिलावत और कुरआन शरीफ़ छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है और **ख़ानए का'बा** के तवाफ़ के लिये वुज़ू वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 301-302)

शदीद गर्मी में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने ख़ामोश, ज़िक्रे इलाही के साथ, शिद्दत की गर्मी में त़वाफ़ इस त़रह़ किया कि न कलाम किया, न किसी को ईज़ा दी और हर शौत़ (या'नी फेरे) पर इस्तिलाम किया तो हर क़दम पर सत्तर हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी। सत्तर हज़ार गुनाह मह़्व होंगे और सत्तर हज़ार दरजे बुलन्द होंगे। (किताबुल ह़ज, स. 280)

बरसात में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत

ह़दीषे पाक में है : जिस ने **बरसात में त़वाफ़** के सात चक्कर लगाए उस के साबिक़ा (या'नी पिछले) गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (قوتُ القلوب ج٢ ص١٩٨)

जब हम बारिश में त़वाफ़ कर चुके तो.....

हज़रते सय्यिदुना अबू इक़ाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने बारिश के दौरान हज़रते सय्यिदुना **अनस** बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का **त़वाफ़** किया। जब हम **त़वाफ़** मुकम्मल करने के बा'द "मक़ामे इब्राहीम" पर ह़ाज़िर हुए और दो रक्अ़तें अदा कीं तो हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हम से फ़रमाया कि "नए सिरे से अ़मल शुरूअ़ करो

क्यूंकि तुम्हारी मग़्फ़िरत हो चुकी है।" फिर फ़रमाया कि जब हम ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **बारिश** के दौरान **तवाफ़** किया था तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इसी तरह फ़रमाया था। (ابن ماجه ج٣ص٥٢٣حديث٣١١٨)

आ'ला ह़ज़रत ने बारिश में त़वाफ़े का'बा किया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़्ह़ा 209 पर है : जब अवाख़िरे मुह़र्रम (या'नी मुह़र्रमुल ह़राम के आख़िरी दिनों) में بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی सिह़्ह़त हुई। वहां एक सुल्तानी ह़माम है मैं उस में नहाया। बाहर निकला हूं कि अब्र (या'नी बादल) देखा, ह़रम शरीफ़ पहुंचते पहुंचते बरसना शुरूअ़ हुवा। मुझे ह़दीष याद आई कि "जो **मीह** (या'नी बरसात) बरसते में **तवाफ़** करे वोह रह़मते इलाही में तैरता है।" फ़ौरन संगे अस्वद शरीफ़ का बोसा ले कर **बारिश** ही में सात फेरे **तवाफ़** किया, बुख़ार फिर औद कर (या'नी वापस) आया। मौलाना सय्यिद इस्माईल ने फ़रमाया : "एक ज़ईफ़ ह़दीष के लिये तुम ने अपने बदन की येह बे एह़तियाती की !" मैं ने कहा : "ह़दीष ज़ईफ़ है मगर उम्मीद بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی क़वी (या'नी ताक़तवर) है।" येह **तवाफ़** بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی बहुत मज़े का था। **बारिश** के सबब ताइफ़ीन (या'नी तवाफ़ करने वालों) की वोह कष्रत न थी।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सए दुवुम स. 209)

आज कल बारिश में त़वाफ़ की दुश्वारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه के दौर में ह़ाजियों की ता'दाद बहुत कम होती थी मगर आज कल काफ़ी बढ़ चुकी है। लिहाज़ा **बारिश** के अन्दर **त़वाफ़** में ठीक ठाक हुजूम होता है, इस में मर्दों और औ़रतों का इख़्तिलात़, बे एह़तियात़ियों की वजह से बे पर्दगियों, बे सितरियों के मुआ़मलात, मीज़ाबे रह़मत से ह़त़ीम शरीफ़ में निछावर होने वाले पानी में ग़ुस्ल करने वालों और वालियों की लपक झपक वग़ैरा सब कुछ होता है, लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर ह़ाजियों को ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये कि कहीं मुस्तह़ब पर अ़मल करते करते गुनाहों में न जा पड़ें। अगर औ़रतों से बदन टकराए बिग़ैर **बारिश में त़वाफ़** मुमकिन न हो तब तो जान बूझ कर ऐसा करने वाले षवाब के ह़क़दार होने के बजाए गुनहगार होंगे। हां जिन दिनों भीड़ न हो, मौक़अ़ मिलने पर बारिश में त़वाफ़ की सआ़दत ज़रूर ह़ासिल करनी चाहिये।

मदीने में चलूं मक्के की गलियों में फिरूं या रब्ब!
मैं बारिश में त़वाफ़े ख़ानए का'बा करूं या रब्ब!

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सफ़ा मरवह

येह दोनों पहाड़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 158 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۵۸﴾

(پ۲، البقرة: ۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक सफ़ा और मरवह* ***अल्लाह*** *के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फैरे करे और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो* ***अल्लाह*** *नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।*

मर्द व औ़रत पथ्थर बन गए

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : पिछले ज़माने में एक शख़्स था **इसाफ़** और एक औ़रत थी **नाइला**, उन्हों ने ख़ानए का'बा में एक दूसरे को बद निय्यती से हाथ लगाया। अ़ज़ाबे इलाही से दोनों पथ्थर हो (या'नी बुत बन) गए और इ़ब्रत के लिये "इसाफ़" को तो **सफ़ा** पहाड़ पर रख दिया गया और "नाइला" को **मरवह** पर ताकि लोग उन्हें देख कर यहां गुनाह के ख़याल से बचें, कुछ ज़माने के बा'द जब जहालत का ज़ोर हुवा तो लोगों ने उन की परस्तिश

शुरूअ़ कर दी कि जब सफ़ा और मरवह के दरमियान दौड़ते तो ता'ज़ीम के इरादे से उन्हें छू लेते, मुसलमानों (सहाबए किराम) को **सफ़ा मरवह** के दरमियान दौड़ना ना पसन्द हुवा क्यूंकि इस में बुत परस्तों और बुत परस्ती से मुशाबहत थी। तब येह आयते करीमा उतरी जिस में उन की तसल्ली फ़रमाई गई कि तुम्हारा येह काम (या'नी सअ़्य करना) रिज़ाए इलाही के लिये है, तुम इस में हरज न समझो। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2 स. 97)

बीबी हाजिरा की सअ़्य की ईमान अफ़रोज़ हिकायत

हुक्मे इलाही से हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام खजूरों की एक टोकरी, कुछ रोटी के टुकड़े और पानी का मश्कीज़ा दे कर सय्यिदतुना **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और अपने दूध पीते लख़्ते जिगर हज़रते सय्यिदुना **इस्माईल** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बे आबो गियाह मैदान में छोड़ कर वापस तशरीफ़ ले गए। **मुफ़स्सिरे शहीर** हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जब तक ख़ुरमा (या'नी खजूरें) और पानी रहा हज़रते **हाजिरा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) इत्मिनान से गुज़र करती और फ़रज़न्द को दूध पिलाती रहीं मगर पानी ख़त्म होने पर प्यास ने सताया, लख़्ते जिगर ने बे इख़्तियार रोना शुरूअ़ कर दिया अपनी तो इतनी फ़िक्र न हुई मगर नूरे नज़र की बे क़रारी देखी न गई, उठीं और **सफ़ा** पर चढ़ीं कि शायद कहीं पानी का निशान मिले मगर न मिला, मायूस हो कर नीचे उतरीं, **मरवह**

पहाड़ की त़रफ़ रवाना हुई मगर नज़र फ़रज़न्द पर थी, राह के कुछ हिस्से में फ़रज़न्द से आड़ हो गई तो आप उसे जल्द तै़ करने के लिये दौड़ कर चलीं, इस आड़ से निकल जाने पर फिर आहिस्ता चलीं, यहां तक कि "मरवह" पर पहुंच गई वहां चढ़ कर भी पानी कहीं न देखा फिर "सफ़ा" की त़रफ़ रवाना हुई। इसी त़रह **सात चक्कर** किये हर दफ़्अ़ा दरमियान में दौड़ती थीं (सफ़ा व मरवह की सअ़्य इसी की यादगार है) अख़ीर बार "मरवह" पर चढ़ीं तो एक हैबतनाक आवाज़ कान में पड़ी ! डर कर फ़रज़न्द के पास आईं देखा कि वोह रोते में अपनी एड़ियां ज़मीन पर रगड़ रहे हैं जिस से शीरीं (या'नी मीठे) पानी का चश्मा जारी है ! बहुत खुश हुईं और उस के गिर्द मिट्टी जम्अ़ कर के फ़रमाने लगीं : يَامَاءُ زَمْ زَمْ (या'नी) "ऐ पानी ! ठहर ठहर" इस लिये इस का नाम **आबे ज़म ज़म** हुवा। (तफ़्सीरे नईमी जि.1 स. 694)

इस में ज़म ज़म हो कि थम थम, इस में जमजम हो कि बेश
कषरते कौषर में ज़म ज़म की त़रह़ कम कम नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

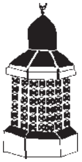

मक़ामे इब्राहीम

मक़ामे इब्राहीम का क़ुरआने करीम में ज़िक्र किया गया है चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 125 में इर्शाद होता है :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।*

"मक़ामे इब्राहीम" **जन्नती पथ्थर** है । हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस पर तीन मरतबा खड़े हुए : (1) इस मुबारक पथ्थर पर खड़े हुए और आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बहू (ज़ौजए सय्यिदुना इस्माई़ल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सरे अन्वर धुलाया (2) ता'मीरे का'बा के वक़्त जब दीवारें ऊंची हुईं, सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : कोई पथ्थर लाओ ताकि उस पर खड़े हो कर दीवार बनाएं । सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पथ्थर की तलाश में "जबले अबी क़ुबैस" पर तशरीफ़ ले गए । राह में हज़रते सय्यिदुना **जिब्रील** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मिले और कहा कि आइये मैं आप को एक पथ्थर बताऊं जो **आदम** عَلَیْہِ السَّلَام के साथ दुन्या में आया और उसे **इद्रीस** عَلَیْہِ السَّلَام ने "तूफ़ाने नूही" के ख़ौफ़ से इस पहाड़ में दफ़्न कर दिया है, उस जगह छोटे बड़े दो पथ्थर मदफ़ून हैं **छोटे** को तो का'बे की दीवार में दरवाज़े के क़रीब लगा दो कि हर त़वाफ़ करने वाला उस को चूमा करे या'नी संगे अस्वद और **बड़े** पर इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ والتسلیم खड़े हो कर इमारत बनाएं । चुनान्चे आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दोनों पथ्थर ले आए और

क'बा शरीफ़

सफ़ा मरवह

मक़ामे इब्राहीम

हज़रे अस्वद

येह पैग़ामे इलाही भी पहुंचाया। इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हुक्मे इलाही के मुताबिक़ संगे अस्वद को तो एक गोशे में लगा दिया और बड़े पर खड़े हो कर ता'मीर का काम जारी किया जिस क़दर इमारत बुलन्द होती जाती थी येह पथ्थर भी ऊंचा होता जाता था यहां तक कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ता'मीर से फ़ारिग़ हुए।

(तफ़्सीरे नईमी, जि.1 स. 280)

होते कहां ख़लील बना का'बा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हजरे अस्वद

येह पथ्थर है, हदीषे पाक में है : **रुक्न** (या'नी हजरे अस्वद) और **मक़ामे** (इब्राहीम) दो "जन्नती याक़ूत" हैं। पहले बहुत नूरानी थे। **अल्लाह** तआला ने इन का नूर महव कर (या'नी छुपा) दिया अगर ऐसा न होता तो येह मशरिक़ व मग़रिब को चमकाते। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1 स. 630) एक और रिवायत में है : जब **संगे अस्वद** दीवारे का'बा में क़ाइम किया गया तो उस की रोशनी चारों त़रफ़ दूर तक जाती थी जहां तक उस की रोशनी पहुंची वहां तक **हरम की हुदूद** मुक़र्रर हुईं जिस में शिकार करना मन्अ़ है और **संगे अस्वद** का रंग बिल्कुल सफ़ेद था गुनहगारों के हाथों से सियाह हो गया। (ऐज़न स. 680-681)

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे चूमा है। **फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ ह़जरे अस्वद ! मैं जानता हूं तू पथ्थर है, नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक नहीं, अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते न देखा होता तो तुझे कभी न चूमता। (बलदुल अमीन, स. 61) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की **दो आंखें** होंगी जिस से देखेगा, **ज़बान** होगी जिस से बोलेगा और अपने इस्तिलाम करने वाले के ह़क़ में गवाही देगा।

(ترمذی ج٢ص٢٨٦حدیث٩٦٣)

ह़जरे अस्वद की 6 ख़ुसूसिय्यात

❖ इस का मस करना (या'नी छूना) गुनाहों को मिटाता है ❖ ए'लाने नुबुव्वत से पहले भी येह **पथ्थर** मुबारक शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम कहता था ❖ इस पथ्थर शरीफ़ को फिर एक मरतबा अपनी अस्ल शक्ल पर कर दिया जाएगा ❖ क़ियामत के दिन इस का ह़ज्म (या'नी जसामत) जबले अबी क़ुबैस जितना होगा। (بلدالامین ص٦٢ و الجامع اللطیف لابن ظھیرۃ ص ٣٧، ٣٨)

कालक जबीं की सजदए दर से छुड़ाओगे
मुझ को भी ले चलो येह तमन्ना ह़जर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मसाजिद

(1) मस्जिदुल ह़राम

मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मश्हूर तरीन मस्जिद, "मस्जिदुल ह़राम" है, इसी में का'बए मुशर्रफ़ा जल्वा फ़रमा है। कई अह़ादीषे मुबारका में इस बात की सराह़त की गई है कि **मस्जिदुल ह़राम** में एक नमाज़ दूसरी मस्जिद में **एक लाख नमाज़ें** अदा करने के बराबर है। क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर मस्जिदुल ह़राम का ज़िक्रे ख़ैर किया गया है मषलन 15 वें पारे की इब्तिदाई आयत में है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक।*

मस्जिदुल ह़राम में 70 अम्बियाए किराम के मज़ारात

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 7 सफ़ह़ा 303 ता 304 पर नक़्ल करते हैं :

किसी नबी या वली के कुर्ब में (या'नी क़रीब) मस्जिद बनाना और उन की क़ब्रे करीम के पास नमाज़ पढ़ना न उन दो निय्यतों से (या'नी न नमाज़ से क़ब्र की ता'ज़ीम मक़्सूद हो न ही उस क़ब्र की तरफ़ मुंह करने की निय्यत हो) बल्कि इस लिये कि इन की मदद मुझे पहुंचे इन के कुर्ब की बरकत से मेरी इबादत कामिल हो, इस में कुछ मुज़ायक़ा नहीं कि वारिद हुवा है कि **इस्माईल** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मज़ारे पाक "हतीम" में मीज़ाबुर्रहमत के नीचे है और हतीम में और संगे अस्वद व ज़म ज़म के दरमियान **सत्तर पयग़म्बरों** عَلٰى نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **की क़ब्रें** हैं और वहां नमाज़ पढ़ने से किसी ने मन्अ़ न फ़रमाया। (لمعات التنقیح شرح مشکاۃ المصابیح ج ٣ ص ٥٢)

"या नबी ! चश्मे करम"

के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिदुल ह़रम में "नमाज़े मुस्तफ़ा" के 11 मक़ामात

﴾1﴿ बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर ﴾2﴿ मक़ामे इब्राहीम के पीछे ﴾3﴿ मताफ़ के कनारे पर हजरे अस्वद की सीध में ﴾4﴿ हतीम और बाबुल का'बा के दरमियान रुक्ने इराक़ी के क़रीब ﴾5﴿ मक़ामे हुफ़रा पर जो बाबुल का'बा और हतीम के दरमियान दीवारे का'बा की जड़ में है। इस मक़ाम को "मक़ामे इमामते जिब्राईल" भी कहते हैं। शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी मक़ाम पर सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को पांच नमाज़ों में इमामत का

मस्जिदुल ह़राम

मस्जिदे जिन्न

मस्जिदे जिइर्रानह

मस्जिदे तनईम

शरफ़ बख़्शा । इसी मुबारक मक़ाम पर सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने "ता'मीरे का'बा" के वक़्त मिट्टी का गारा बनाया था ﴿6﴾ बाबुल का'बा की त़रफ़ रुख़ कर के (दरवाज़ए का'बा की सीध में नमाज़ अदा करना तमाम अत़राफ़ की सीध से अफ़्ज़ल है[1]) ﴿7﴾ मीज़ाबे रह़मत की त़रफ़ रुख़ कर के। (कहा जाता है कि मज़ारे ज़ियाबार में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए पुर अन्वार इसी जानिब है) ﴿8﴾ तमाम ह़त़ीम में ख़ुसूसन मीज़ाबे रह़मत के नीचे ﴿9﴾ रुक्ने अस्वद और **रुक्ने यमानी** के दरमियान ﴿10﴾ **रुक्ने शामी** के क़रीब इस त़रह़ कि "बाबे उ़मरह" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते अक़्दस के पीछे होता। ख़्वाह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर नमाज़ अदा फ़रमाते या बाहर ﴿11﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नमाज़ पढ़ने के मक़ाम पर जो कि रुक्ने यमानी के दाईं या बाईं त़रफ़ है और ज़ाहिर तर येह है कि मुसल्लाए आदम "मुस्तजार" पर है। (किताबुल ह़ज, स. 274)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) मस्जिदे जिन्न

येह मस्जिद जन्नतुल मा'ला के क़रीब वाक़ेअ़ है। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से नमाज़े फ़ज्र में क़ुरआने पाक की तिलावत सुन कर यहां **जिन्नात** मुसलमान हुए थे।

مدینہ

[1]... कहा जाता है : पाक व हिन्द दरवाज़ए का'बा ही की सम्त वाक़ेअ़ हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ ؕ وَاللّٰہُ تعالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बूढ़ा जिन्न

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने एक **बूढ़े जिन्न** को देखा जो एक बेश क़ीमत ख़ूबसूरत जुब्बा पहने बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ रहा है, उस के सलाम फैरने पर उन्हों ने उसे सलाम किया, सलाम का जवाब दिया और कहा : आप इस जुब्बे पर तअ़ज्जुब कर रहे हैं ! येह जुब्बा 700 बरस से मेरे पास है, मैं ने इसी जुब्बे में **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दीदार किया है, इसी में प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत पाई है। और मज़ीद सुनिये, मैं उन्हीं **जिन्नात** में से हूं जिन के बारे में **सूरतुल जिन्न** नाज़िल हुई है। (صفۃ الصفوۃ ج ٤ ص ٣٥٧، بلد الامین ص ١٢٨)

जिन्नो इन्सान व मलक को है भरोसा तेरा
सरवरा ! मरजए़ कुल है दरे वाला तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) मस्जिदुर्रायह

येह मस्जिदे जिन्न के क़रीब ही सीधे हाथ की त़रफ़ है। ''रायह'' अ़रबी में झन्डे को कहते हैं। येह वोह तारीख़ी मक़ाम है जहां **फ़त्ह़े मक्का** के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, सरदारे

मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना झन्डा शरीफ़ नस्ब फ़रमाया था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(4) मस्जिदे ख़ैफ़

येह मिना शरीफ़ में वाक़ेअ़ है। हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़ अदा फ़रमाई है। मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : صَلّٰى فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ سَبْعُوْنَ نَبِيًّا या'नी मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 **अम्बिया** (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई। (مُعجَم اَوسط ج٤ ص١١٧ حديث ٥٤٠٧) एक और रिवायत में फ़रमाया : فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ قَبْرُ سَبْعِيْنَ نَبِيًّا ؑ या'नी मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 **अम्बिया** (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की क़ब्रें हैं। (مُعجَم كبير ج١٢ ص٣١٦ حديث ١٣٥٢٥)

अब इस मस्जिद शरीफ़ की काफ़ी तौसीअ़ हो चुकी है, मज़ारात की ज़ियारत नहीं हो सकती। ज़ाइरीने किराम को चाहिये कि बसद अ़क़ीदत व एहतिराम इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत करें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमतों में इस त़रह सलाम अ़र्ज़ करें : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَنْبِيَآءَ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर ईसाले षवाब कर के दुआ़ मांगें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(5) मस्जिदे जिइर्रानह

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا से जानिबे ताइफ़ तक़रीबन 26 किलो मीटर पर वाके़अ़ है। आप भी यहां से उ़मरे का एह़राम बांधिये कि फ़त्हे़ मक्का के बा'द ताइफ़ शरीफ़ फ़त्ह़ कर के वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां से **उ़मरे** का एह़राम ज़ेबे तन फ़रमाया था। यूसुफ़ बिन माहक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡخَالِق फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइर्रानह से 300 अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उ़मरे का एह़राम बांधा है, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिइर्रानह पर अपना अ़सा मुबारक गाड़ा जिस से पानी का चश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और मीठा था। (ब-लदुल अमीन, स. 221, अख़्बारे मक्का जि. 5, स. 62-69) मश्हूर है उस जगह पर कुंवां है। सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ताइफ़ से वापसी पर यहां क़ियाम किया और यहीं माले ग़नीमत भी तक़्सीम फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से उ़मरे का एह़राम बांधा था। (ब-लदुल अमीन स. 220-221) इस जगह की निस्बत कु़रैश की एक औ़रत की त़रफ़ है जिस का लक़ब जिइर्रानह था। (ऐज़न स. 137) अ़वाम इस मक़ाम को "बड़ा उ़मरह" बोलते हैं। येह निहायत ही पुरसोज़ मक़ाम है, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی "अख़्बारुल अख़्यार" में नक़्ल करते हैं

कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने मुझे ताकीद फ़रमाई है कि मौक़अ़ मिलने पर **जिइर्रानह** (جِ-عِرۡ-رانه) से ज़रूर उ़मरे का एह़राम बांधना कि येह ऐसा मुतबर्रक मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के मुख़्तसर से हिस्से के अन्दर सो से ज़ाइद बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है اَلۡحمدُ للّٰه علٰی اِحۡسانِهٖ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی का मा'मूल था कि उ़मरे का एह़राम बांधने के लिये रोज़ा रख कर पैदल जिइर्राना जाया करते थे। (मुलख़्ख़सन अज़ अख़्बारुल अख़्यार, स. 278)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) मस्जिदे तनईम

मस्जिदुल ह़राम से तक़रीबन सात किलो मीटर पर हुदूदे ह़रम से बाहर मक़ामे तनईम पर येह आ़लीशान मस्जिद वाक़ेअ़ है, इसे "मस्जिदे आ़इशा" भी कहते हैं। ख़ुश नसीब ज़ाइरीने किराम यहां से **उ़मरे** का एह़राम बांधते हैं, अ़वाम इस मक़ाम को "छोटा उ़मरह" बोलते हैं। इस मस्जिद का तारीख़ी पसे मन्ज़र मुलाहज़ा हो चुनान्चे सि. 9 हि. में जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ह़ज** के लिये तशरीफ़ लाए उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا साथ थीं, बारी

के दिनों के बाइ़ष त़वाफ़ अदा न कर सकीं, हुज़ूर सरवरे मा'सूम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो उन्हें मग़्मूम पाया। फ़रमाया : आ़इशा परेशान न हो येह आ़रिज़ा बनाते आदम (या'नी ख़्वातीन) पर लिखा गया है। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को फ़रमाया : आ़इशा को ले जाएं और मक़ामे तनई़म से एह़राम बांध कर उ़मरह कर लें। (بخاری ج ۱ ص۱۲۷ حدیث۳۱۷،بلدالامین ص ۱۳۸)

अबू लहब और उस की बीवी की क़ब्रें

इब्ने जुबैर ने अपने सफ़रनामे में लिखा है : तनई़म से कुछ दूर बाईं त़रफ़ **अबू लहब** और उस की बीवी **उम्मे जमील** की क़ब्रें हैं जिन पर पथ्थरों के ढेर लगे हुए हैं अब तक लोग आते जाते इन मन्हूस क़ब्रों पर पथराव करते हैं। (وَالعِیاذُ بِاللّٰہِ تعالٰی)

(ब-लदुल अमीन स.138, तारीख़े मक्का, स. 445)

आज कल का मा'लूम नहीं कि इन की क़ब्रें नज़र आती हैं या ज़मीन में धंस गई हैं या किसी इमारत तले दब गई हैं। बहर ह़ाल येह कोई ज़ियारत गाह नहीं सिर्फ़ इ़ब्रत के लिये तज़्किरा कर दिया है।

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !

कि जिस को तू ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

मस्जिदे तनईम की ता'मीरात

तनईम के इस तारीख़ी मक़ाम पर सब से पहले मुहम्मद बिन अ़ली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने मस्जिद ता'मीर की, फिर अबुल अ़ब्बास अमीरे मक्का ने क़ुब्बा (या'नी गुम्बद) बनवाया, बा'द अज़ां एक बूढ़ी ख़ातून ने ख़ूबसूरत मस्जिद बनवाई।

(ब-लदुल अमीन, स. 138-139)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى محمَّد

(7) मस्जिदे निमरह

येह आ़लीशान मस्जिद मैदाने अ़रफ़ात के मग़रिबी (west) कनारे पर अपने जल्वे लुटा रही है, इस के मज़ीद दो नाम येह हैं : (1) मस्जिदे अ़रफ़ा (2) मस्जिदे इब्राहीम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى محمَّد

(8) मस्जिदे ज़ी तुवा

मस्जिदुल ह़राम से जानिबे तनईम जाते हुए रास्ते में येह मस्जिद वाक़ेअ़ थी। **शहनशाहे दो आ़लम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़मरह या ह़ज के मुबारक सफ़र में इसी मस्जिदे मुक़द्दस को नवाज़ा, यहां रात क़ियाम भी फ़रमाया। **हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की

इत्तिबाअ़ या'नी पैरवी में सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने भी अपने अस्फ़ारे मुक़द्दसा (या'नी मुबारक सफ़रों) में ऐसा ही किया। (ब-लदुल अमीन, स. 143, بخاری ج۱ص۲۳۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(9) मस्जिदे कब्श

मस्जिदे कब्श कोहे षबीर के पहलू में है। इसी मुक़द्दस मक़ाम पर सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इर्शाद हुवा :

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾

(پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाया हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।*

(ब-लदुल अमीन, स. 144)

कहा जाता है इसी मक़ाम पर **हज़रते** सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़ब्ह के लिये लिटाया गया था, यहीं जन्नत से नाज़िल शुदा मेंढा ज़ब्ह हुवा था, येह क़बूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम है, अब मस्जिद की ज़ियारत नहीं हो सकती। येह मक़ाम **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से आते वक़्त "बड़े शैत़ान" की सीधी जानिब 70 या 80 क़दम के फ़ासिले पर है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़ारे मुर्सलात

ग़ारे मुर्सलात मिना शरीफ़ की मस्जिदे ख़ैफ़ से शुमाल (NORTH) की त़रफ़ पहाड़ पर वाक़ेअ़ है, येह पहाड़ अ़रफ़ात शरीफ़ से मिना आते हुए सीधे हाथ की त़रफ़ पड़ेगा। **सरवरे काइनात** صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم पर इस मुबारक ग़ार में "**सूरतुल मुर्सलात**" नाज़िल हुई। कहा जाता है सरकारे नामदार صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم इस मुबारक ग़ार में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो ऊपर के पथ्थर से सरे अन्वर मस (TOUCH) हुवा, पथ्थर नर्म हो गया और उस में **सरे पाक का निशान** बन गया। आ़शिक़ाने रसूल हुसूले बरकत के लिये इस निशाने मुबारक से अपना सर लगाते हैं। (بلدالامین ص ۲۱۵،کتاب الحج ص ۲۹۷ بتغیر)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ुत़्बुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं: हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلدالامین ص ۲۰۱) यहां पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप **कोहे मरवह** के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये। सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दूर ही से नज़र आ जाएगा। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد

की वालिदए मोहतरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़-ज़मत निशान की जगह लाइब्रेरी क़ाइम है और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : ''مَکْتَبَۃُ مَکَّۃَ الْمُکَرَّمَۃ''

जबले अबू क़ुबैस

येह दुन्या का सब से पहला पहाड़ है, मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मरवह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का क़ह़त़ साली के मौक़अ़ पर इस पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीषे पाक में है कि **ह़जरे अस्वद** जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था (الترغیب والترہیب ج۲ص۱۲۵حدیث۲۰) इस पहाड़ को ''**अल अमीन**'' भी कहा गया है कि ''**तूफ़ाने नूह़**'' में ह़जरे अस्वद इस पहाड़ पर ब ह़िफ़ाज़त तमाम तशरीफ़ फ़रमा रहा, एक रिवायत के मुत़ाबिक़ का'बए मुशर्रफ़ा की ता'मीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पुकार कर अ़र्ज़ की : ''ह़जरे अस्वद इधर है।'' (بلدالامین ص ٤٠٢ بتغیر قلیل) मन्क़ूल है, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी पहाड़ पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **चांद** के दो टुकड़े फ़रमाए थे। चूंकि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है चुनान्चे इस पर से चांद देखा जाता था पहली (दूसरी और तीसरी) रात के चांद को हिलाल कहते हैं लिहाज़ा इस जगह पर बत़ौरे यादगार **मस्जिदे हिलाल** ता'मीर की गई। बा'ज़ लोग इसे मस्जिदे बिलाल

मस्जिदे निमरह

ग़ारे जबले सौर

ग़ारे ह़िरा

जन्नतुल मा’ला

पहाड़ وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم । कहते हैं رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अब शाही मह़ल ता'मीर कर दिया गया है, और अब इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत नहीं हो सकती। सि. 1409 हि. के मौसिमे ह़ज में इस मह़ल के क़रीब बम के धमाके हुए थे और कई हुज्जाजे किराम ने जामे शहादत नोश किया था, इस लिये अब मह़ल के गिर्द सख़्त पहरा रहता है। मह़ल की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र इसी पहाड़ की सुरंगों में बनाए हुए वुज़ूख़ाने भी ख़त्म कर दिये गए हैं। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इसी जबले अबू क़ुबैस पर वाक़ेअ़ "**ग़ारुल कन्ज़**" में मदफ़ून हैं जब कि एक मुस्तनद रिवायत के मुत़ाबिक़ **मस्जिदे ख़ैफ़** में दफ़्न हैं जो कि **मिना** शरीफ़ में है।

وَاللّٰہُ تعالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم۔

जबले नूरो जबले सौर और उन के ग़ारों को सलाम
नूर बरसाते पहाड़ों की क़ितारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 581)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मकान

मक्के मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में रहे इसी मकाने आ़लीशान में सुकूनत पज़ीर रहे। शहज़ादए अ़ज़ीम सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के

इलावा तमाम औलाद ब शुमूल शहज़ादिये कौनैन बीबी **फ़ातिमा** ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا की यहीं विलादत हुई। सय्यिदुना **जिब्राईले** अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने बारहा इस मकाने आ़लीशान के अन्दर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी दी, **हुज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कषरत से नुज़ूले वह्य इसी में हुवा। **मस्जिदे ह़राम** के बा'द मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में इस से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई मक़ाम नहीं। सद करोड़ बल्कि अरबों खरबों अफ़्सोस ! कि अब इस मकाने वाला शान के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है। **मरवह** की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ बाबुल मरवह निकल कर बाईं त़रफ़ (LEFT SIDE) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये।

ऐ ख़दीजा ! आप के घर की फ़ज़ाओं को सलाम
ठन्डी ठन्डी दिलकुशा महकी हवाओं को सलाम

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ारे जबले षौर

येह ग़ारे मुबारक **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की दाईं जानिब "मह़ल्लए मस्फ़ला" की त़रफ़ कमो बेश चार किलो मीटर पर वाक़ेअ़ "जबले षौर" में है। येह वोह मुक़द्दस ग़ार है जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में है, मक्के मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने यारे ग़ार व यारे मज़ार आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते **सय्यिदुना सिद्दीक़े** अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के साथ ब वक़्ते

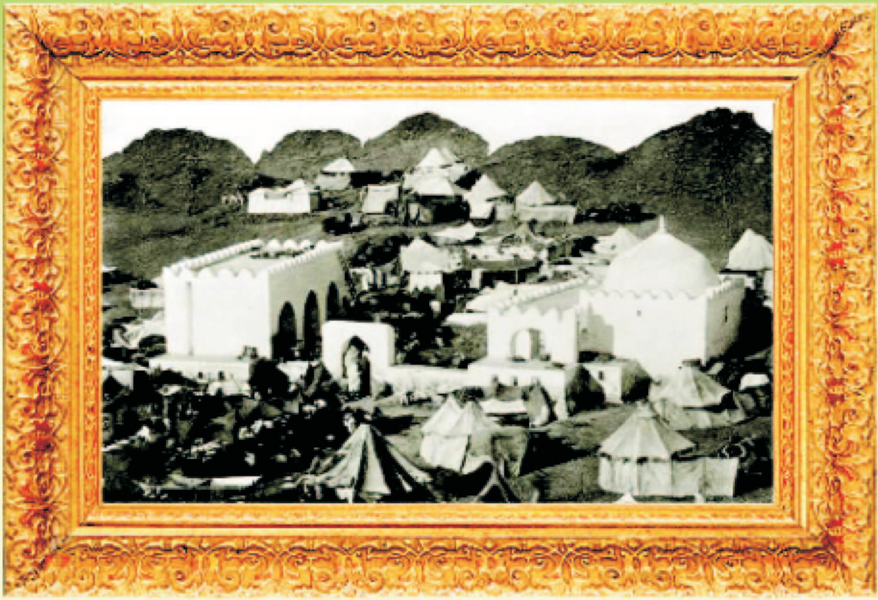

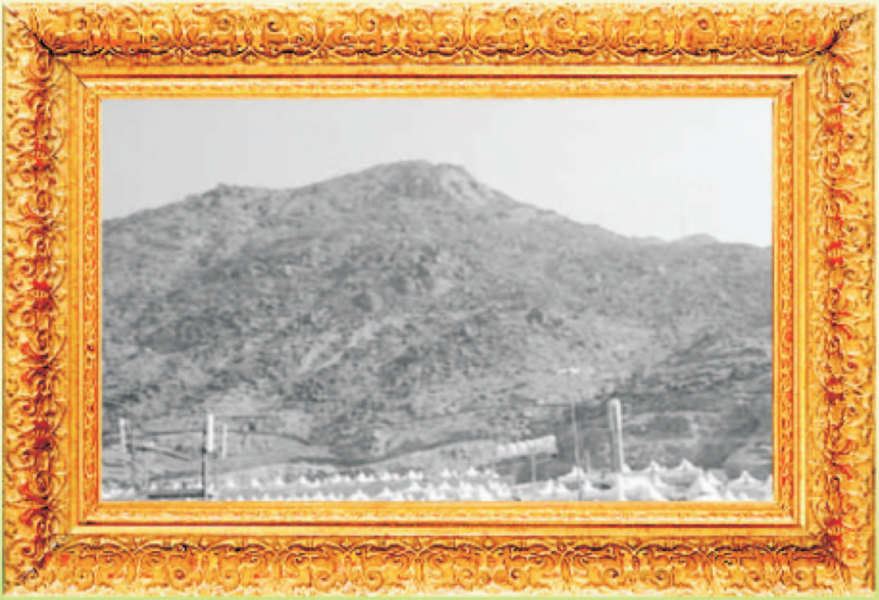

ग़ारे मुर्सलात

विलादत गाहे सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

हिजरत यहां **तीन रात** क़ियाम पज़ीर रहे। जब दुश्मन तलाशते हुए **ग़ारे सौर** के मुंह पर आ पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ग़मज़दा हो गए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दुश्मन इतने क़रीब आ चुके हैं कि अगर वोह अपने क़दमों की त़रफ़ नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ग़म न खा बेशक* ***अल्लाह*** *हमारे साथ है* (پ ١٠، التوبۃ: ٤٠)

इसी **जबले सौर** पर क़ाबील ने सय्यिदुना **ह़ाबील** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को शहीद किया।

ख़ूब चूमे हैं क़दम सौरो हिरा ने शाह के
महके महके प्यारे प्यारे दोनों ग़ारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 582)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ारे ह़िरा

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ुहूरे रिसालत से पहले यहां ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे हैं। येह क़िब्ला रुख़ वाक़ेअ़ है। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर पहली वह़्य इसी ग़ार में उतरी जो कि اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ से مَا لَمْ یَعْلَمْ तक पांच आयतें हैं। येह ग़ार मुबारक मस्जिदुल ह़राम से जानिबे मशरिक़ तक़रीबन तीन मील पर वाक़ेअ़ "जबले ह़िरा" पर है, इस मुबारक पहाड़ को **जबले नूर** भी कहते हैं। "ग़ारे ह़िरा" ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ग़ारे सौर ने तीन दिन तक सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जब कि **ग़ारे ह़िरा**

सुल्ताने दो सरा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा।

क़िस्मते षौरो ह़िरा की ह़िर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दारे अरक़म

दारे अरक़म कोहे सफ़ा के क़रीब वाके़अ़ था। जब कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार की त़रफ़ से ख़त़रात बढ़े तो सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसी में पोशीदा त़ौर पर तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसी मकाने आ़लीशान में कई साहि़बान मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इसी मकाने बरकत निशान में दाख़िले इस्लाम हुए। इसी में पारह 10 **सूरतुल अन्फ़ाल** आयत नम्बर 64 يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۴﴾ नाज़िल हुई। ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد की वालिदए माजिदा رحمۃاللہ تعالی علیھا ने इस जगह पर **मस्जिद** बनवाई। बा'द के कई ख़ुलफ़ा अपने अपने दौर में इस की तज़्ईन (या'नी ज़ीनत देने) में ह़िस्सा लेते रहे। अब येह तौसीअ़ में शामिल कर लिया गया है और इस की कोई अ़लामत नहीं मिलती।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मह़ल्लए मस्फ़ला

येह मह़ल्ला बड़ा तारीख़ी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام यहीं रहा करते थे, ह़ज़राते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी इसी मह़ल्लए मुबारका में क़ियाम पज़ीर थे। येह मह़ल्ला ख़ानए का'बा के ह़िस्सए दीवार "**मुस्तजार**" की जानिब वाक़ेअ़ है।

रह़मतें हों उस मह़ल्ले पर ऐ रब्बे दो जहां !

था मकां इस में नबी का थे सह़ाबा के मकां

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नतुल मा'ला

जन्नतुल बक़ीअ़ के बा'द जन्नतुल मा'ला दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है। यहां उम्मुल मुअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कई सह़ाबा व ताबेईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِم اَجْمَعِیْن और औलिया व सालिह़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के मज़ाराते मुक़द्दसा हैं। अब इन के क़ुब्बे (या'नी गुम्बद) वग़ैरा शहीद कर दिये गए हैं, मज़ारात मिस्मार कर के उन पर रास्ते निकाले गए हैं। लिहाज़ा बाहर रह कर दूर ही से इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइ़र्राना | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ | मस्जिदे शैख़ैन

मक़ामे इब्राहीम | हजरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेहराबे नबवी | मिम्बरे रसूल

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ

सलाम हो आप पर ऐ क़ब्रों में रहने वाले

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

मोमिनो और मुसलमानो ! और हम भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ ط

आप से मिलने वाले हैं, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आप की और अपनी आ़फ़िय्यत के त़ालिब हैं।

अपनी, अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की मग़फ़िरत के लिये दुआ़ मांगिये और बिल ख़ुसूस अहले जन्नतुल मा'ला के लिये ईसाले षवाब भी कीजिये। इस क़ब्रिस्तान में दुआ़ क़बूल होती है।

जन्नतुल मा'ला के मदफ़ूनीन पर लाखों सलाम
*बे अ़दद हों रह़मतें **अल्लाह** की उन पर मुदाम*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मज़ारे मैमूना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से ब ह़ालते एह़राम निकाह़ फ़रमाया। **मदीना** रोड पर ‟नवारिया'' के क़रीब मक़ामे सरिफ़ पर वाक़ेअ़ है। येह मज़ार शरीफ़ अगर्चे **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से बाहर है ताहम यहां हुज्जाज कोशिश करें तो ह़ाज़िरी दे सकते हैं, हुसूले सआ़दत और ब उम्मीदे नुज़ूले रह़मत सय्यिदतुना मैमूना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

के मज़ार शरीफ़ का ज़िक्रे ख़ैर किया जाता है। ता दमे तह़रीर (16 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1433 हि.) यहां की ह़ाज़िरी का एक त़रीक़ा येह है कि आप बस 2 A या 13 में सुवार हो जाइये, येह बस मदीना रोड पर तनईम या'नी मस्जिदे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से गुज़रती हुई आगे बढ़ती है, मस्जिदुल ह़राम से तक़रीबन 17 किलो मीटर पर इस का आख़िरी स्टॉप "नवारिया" है, यहां उतर जाइये और पलट कर रोड के उसी कनारे पर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की त़रफ़ चलना शुरूअ़ कीजिये, दस या पन्दरह मिनट चलने के बा'द एक पोलीस चेक पोस्ट (नुक्तए तफ़्तीश) है फिर मौक़िफ़े हुज्जाज बना हुवा है इस से थोड़ा आगे रोड की उसी जानिब एक चार दीवारी नज़र आएगी, यहीं उम्मुल मुअमिनीन **ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। येह मज़ार मुबारक सड़क के बीच में है। लोगों का कहना है कि सड़क की ता'मीर के लिये इस मज़ार शरीफ़ को शहीद करने की कोशिश की गई तो ट्रेक्टर (TRACTOR) उलट जाता था, नाचार यहां चार दीवारी बना दी गई। हमारी प्यारी प्यारी अम्मी जान सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की **करामत** मरह़बा !!!

अहले इस्लाम की मदराने शफ़ीक़ बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

बा'दे वफ़ात सय्यिदतुना मैमूना ने अंगूर खिलाए

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **मैमूना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की बा'दे वफ़ात रूनुमा होने वाली **करामत** पढ़िये और ईमान ताज़ा कीजिये। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मज़ारे पुर अन्वार

का ज़ाहिरी दरवाज़ा जिन दिनों ज़ाइरीन के लिये खुला रहता था उन दिनों की **हिकायत** एक ज़ाइर की ज़बानी सुनिये : आधी रात के वक़्त हम मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا जाने वाले रास्ते पर वाक़ेअ़ मक़ामे सरिफ़ पहुंचे जहां उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **मैमूना** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का मज़ार है, अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि उस दिन मैं ने कुछ नहीं खाया था, भूक की शिद्दत की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे चुकी थी, रोटी ह़ासिल करने की बहुत कोशिश की मगर कहीं से न मिली, मजबूरन ज़ियारत के लिये हुजरए मुक़द्दसा में गया, मैं ने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के सामने सलाम अ़र्ज़ किया, **सूरतुल फ़ातिह़ा** और **सूरतुल इख़्लास** पढ़ कर उन की रूहे पुर फ़ुतूह़ को ईसाले षवाब किया, फ़क़ीराना सदा लगाई : "ऐ प्यारी अम्मीजान ! मैं आप का मेहमान हूं, खाने के लिये कुछ इनायत फ़रमाइये और अपने अल्ताफ़े करीमाना से मुझे मह़रूम न लौटाइये।" मैं बैठा हुवा था कि रज़्ज़ाक़े मुत़्लक़ جَلَّ جَلَالُهٗ की त़रफ़ से यकायक **ताज़ा अंगूर के दो गुच्छे** मेरे हाथ में आ गए ! अ़जीब तरीन बात येह थी कि सर्दियों का मोसिम था और कहीं भी ताज़ा अंगूर मुयस्सर न थे, मैं ह़ैरान रह गया, एक गुच्छा तो मैं ने वहीं खा लिया, मज़ार शरीफ़ से बाहर आ कर एक एक दाना साथियों में तक़्सीम कर दिया। (मख़्ज़ने अह़मदी, स. 99)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !
हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मदीने की ज़ियारतें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج۲ ص۳۲۸ حدیث۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़िक्रे मदीना आ़शिक़ाने रसूल के लिये बाइ़से राह़ते क़ल्बो सीना है । उ़श्शाक़े मदीना इस की फ़ुर्क़त में तड़पते और ज़ियारत के बेह़द मुश्ताक़ रहते हैं । दुन्या की जितनी ज़बानों में जिस क़दर क़सीदे मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के हिज्रो फ़िराक़ और इस के दीदार की तमन्ना में पढ़े गए या पढ़े जाते हैं उतने दुन्या के किसी और शहर या ख़ित़्त़े के लिये नहीं पढ़े गए और नहीं पढ़े जाते, जिसे एक बार भी मदीने का दीदार हो जाता

है वोह अपने आप को बख़्त बेदार समझता और मदीने में गुज़रे हुए ह़सीन लम्ह़ात को हमेशा के लिये यादगार क़रार देता है। किसी आ़शिक़े रसूल ने क्या ख़ूब कहा है !

वोही साअ़तें थी सुरूर की, वोही दिन थे ह़ासिले ज़िन्दगी
ब हुज़ूरे शाफ़ेए़ उम्मतां मेरी जिन दिनों त़लबी रही

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारात की तफ़्सीलात से क़ब्ल दियारे ह़बीब के कुछ फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये ताकि दिल में मदीने की मह़ब्बत व लगन मज़ीद मौजज़न हो :

क़ुरआने पाक में ज़िक्रे मदीना

क़ुरआने करीम में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर **ज़िक्रे मदीना** किया गया है मषलन पारह 28 **सूरतुल मुनाफ़िक़ून** आयत नम्बर 8 में है :

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

(پ ٢٨، المنافقون:٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहते हैं : "हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है" और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।*

"मदीनतुल मुनव्वरा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मदीने के 12 नाम

मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने कमो बेश 100 नाम लिखे हैं और दुन्या के किसी भी शहर के इतने नाम नहीं । हुसूले बरकत के लिये यहां सिर्फ़ 12 मुबारक नाम पेश किये जाते हैं :

﴾1﴿ मदीना ﴾2﴿ मदीनतुर्रसूल ﴾3﴿ तै़य्यिबा ﴾4﴿ दारुल अबरार ﴾5﴿ ता़बा ﴾6﴿ मुबारका ﴾7﴿ नाजिया ﴾8﴿ आ़सिमा ﴾9﴿ शाफ़िया ﴾10﴿ ह़सना ﴾11﴿ जज़ी़रतुल अ़रब ﴾12﴿ सय्यिदतुल बुलदान

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द
सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मदीनतुल मुनव्वरा में मरने की फ़ज़ीलत

दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "तुम में से जो मदीने में मरने की इस्तिता़अ़त रखे वोह मदीने ही में मरे क्यूंकि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के ह़क़ में गवाही दूंगा ।"

(شعب الايمان ج ٣ ص ٤٩٧ حديث١٤٨٢)

ज़मीं थोड़ी सी दे दे बहरे मदफ़न अपने कूचे में

लगा दे मेरे प्यारे मेरी मिट्टी भी ठिकाने से (ज़ौक़ ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

दज्जाल मदीनतुल मुनव्वरा में दाख़िल नहीं हो सक्ता

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार है : عَلٰى اَنْقَابِ الْمَدِيْنَةِ مَلَائِكَةٌ لَّا يَدْخُلُهَا الطَّاعُوْنُ وَلَا الدَّجَّالُ मदीने में दाख़िल होने के तमाम रास्तों पर फ़िरिश्ते हैं, इस में ताऊ़न और **दज्जाल** दाख़िल न होंगे ।

(بُخاری ج ۱ ص ٦١٩ حديث ١٨٨٠)

मदीनतुल मुनव्वरा हर आफ़त से महफ़ूज़

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! मदीने में न कोई घाटी है न कोई रास्ता मगर इस पर दो फ़िरिश्ते हैं जो इस की हिफ़ाज़त कर रहे हैं।" (مسلم ص ٧١٤ حديث ١٣٧٤)

इमाम नववी (نَ-وَ-وی) फ़रमाते हैं : इस रिवायत में **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की फ़ज़ीलत का बयान है और ताजदारे रिसालत صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में उस की हिफ़ाज़त की जाती थी, कषरत से फ़िरिश्ते हिफ़ाज़त करते और उन्हों ने तमाम घाटियों को सरकारे मदीना صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये घेरा हुवा है। (شرح صحيح مسلم للنووى ج ٥ جزء ٩ ص ١٤٨)

मलाइक लगाते हैं आंखों में अपनी

शबो रोज़ ख़ाके मज़ारे मदीना (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मदीने के ताज़ा फल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि लोग जब मौसिम का पहला **फल** देखते, उसे हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में ह़ाज़िर लाते, सरकारे नामदार (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) उसे ले कर इस त़रह़ दुआ़ करते : इलाही ! तू हमारे लिये हमारे फलों में बरकत दे और हमारे लिये हमारे मदीने में बरकत कर और हमारे साअ़ व मुद (येह पैमानों के नाम हैं इन) में बरकत कर, **या अल्लाह** ! (عَزَّ وَجَلَّ) बेशक इब्राहीम तेरे बन्दे और तेरे ख़लील और तेरे नबी हैं और बेशक मैं तेरा बन्दा और तेरा नबी हूं। उन्हों ने मक्के के लिये तुझ से दुआ़ की और मैं मदीने के लिये तुझ से दुआ़ करता हूं, उसी की मिष्ल जिस की दुआ़ मक्के के लिये उन्हों ने की और उतनी ही और (या'नी मदीने की बरकतें मक्के से दुगनी हों)। फिर जो छोटा बच्चा सामने होता उसे बुला कर वोह फल अ़त़ा फ़रमा देते। (مسلم ص۷۱۳ حدیث۱۳۷۳)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !
हैं सख़ी के माल में हक़दार हम

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदीना लोगों को पाक व साफ़ करेगा

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल पज़ीर है : "मुझे एक ऐसी बस्ती की त़रफ़ (हिजरत) का हुक्म हुवा जो तमाम बस्तियों को खा जाएगी (सब पर ग़ालिब आएगी) लोग उसे "यष़रिब" कहते हैं और वोह **मदीना** है, (येह बस्ती) लोगों को इस त़रह पाक व साफ़ करेगी जैसे भट्टी लोहे के मैल को।" (صحیح البخاری حدیث۱۸۷۱، ج۱، ص۶۱۷)

मदीने को यष़रिब कहना गुनाह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا को "यष़रिब" कहने की मुमानअ़त की गई है। फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़्हा 116 पर है : मदीनए त़य्यिबा को यष़रिब कहना ना जाइज़ व मम्नूअ़ व गुनाह और कहने वाला गुनहगार। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मदीना को **यष़रिब** कहे उस पर तौबा वाजिब है, मदीना **त़ाबा** है मदीना **त़ाबा** है। अ़ल्लामा मनावी **"तैसीर शर्हे जामेए़ सग़ीर"** में फ़रमाते हैं : इस ह़दीष़ से मा'लूम हुवा कि मदीनए

तय्यिबा का **यषरिब** नाम रखना **ह़राम** है कि **यषरिब** कहने से तौबा का हुक्म फ़रमाया और तौबा गुनाह ही से होती है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स.116)

यषरिब कहना क्यूं मन्अ़ है ?

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़्हा 119 पर है : ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **अशिअ़तुल्लमआ़त शर्हुल मिश्कात** में फ़रमाते हैं : आंह़ज़रत صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां लोगों के रहने सहने और जम्अ़ होने और उस शहर से मह़ब्बत की वजह से उस का नाम **"मदीना"** रखा और आप صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे **यषरिब** कहने से मन्अ़ फ़रमाया इस लिये कि येह ज़मानए जाहिलिय्यत का नाम है या इस लिये कि येह "षर्बुन" से बना है जिस के मा'ना हलाकत और फ़साद है और तषरीबुन ब मा'ना सरज़निश और मलामत है **या** इस वजह से कि **यषरिब** किसी बुत या किसी जाबिर व सरकश बन्दे का नाम था। **इमाम बुख़ारी** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی) अपनी तारीख़ में एक ह़दीष लाए हैं कि जो कोई **एक मरतबा "यषरिब"** कह दे तो उसे (कफ़्फ़ारे में) **दस मरतबा "मदीना"** कहना चाहिये। कुरआने मजीद में जो "يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ" (या'नी ऐ यषरिब वालो !) आया है। वोह दर अस्ल मुनाफ़िक़ीन का क़ौल (या'नी कही हुई बात) है कि **यषरिब** कह कर वोह **मदीनतुल मुनव्वरा** की तौहीन का इराद रखते थे। एक दूसरी रिवायत में है कि **यषरिब** कहने वाला **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़फ़ार (या'नी तौबा) करे और मुआ़फ़ी मांगे। और

बा'ज़ ने फ़रमाया है कि **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا को जो **यषरिब** कहे उस को सज़ा देनी चाहिये। हैरत की बात है कि बा'ज़ बड़े लोगों की ज़बान से अश्आ़र में लफ़्ज़ "**यषरिब**" सादिर हुवा है और **अल्लाह** तआ़ला ख़ूब जानता है और अ़ज़्मतो शान वाले का इ़ल्म बिल्कुल पुख़्ता और हर त़रह़ से मुकम्मल है।

ज़िन्दगी क्या है ! मदीने के किसी कूचे में मौत
मौत पाको हिन्द के ज़ुल्मत कदे की ज़िन्दगी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

मदीने की सख़्तियों पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मेरा कोई उम्मती मदीने की तकलीफ़ और सख़्ती पर सब्र न करेगा मगर मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) होऊंगा। (مسلم ص٧١٦ حديث١٣٧٨)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : (या'नी) शफ़ाअ़ते ख़ुसूसी। ह़क़ येह है कि येह **वा'दा** सारी उम्मत के लिये है कि **मदीने** में मरने वाले हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इस शफ़ाअ़त के मुस्तह़िक़ हैं।

त़यबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बंद
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत से पहले मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रहना बेहतर था और हिजरत के बा'द फ़त्हे मक्का से पहले मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रहना मुसलमान को मन्अ़ हो गया, हिजरत वाजिब हो गई और फ़त्हे मक्का के बा'द वहां रहना तो जाइज़ हुवा, मगर मदीनए मुनव्वरा में रहना अफ़्ज़ल क़रार पाया कि यहां हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कुर्ब है, इसी लिये ज़ियादा तर फ़ज़ाइल मदीनए पाक में रहने के आए हैं।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 210)

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा
के रहते हैं मेरे आक़ा मेरे दिलबर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 406)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा बेहतर है

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : “अहले मदीना पर एक ज़माना ऐसा ज़रूर आएगा कि लोग ख़ुशह़ाली की तलाश में यहां से चरागाहों की त़रफ़ निकल जाएंगे, फिर जब वोह ख़ुशह़ाली पा लेंगे तो लौट कर आएंगे और अहले मदीना को उस कुशादगी की त़रफ़ जाने पर आमादा करेंगे ह़ालांकि अगर वोह जान लें तो मदीना उन के लिये बेहतर है।” (مسند امام احمد بن حنبل ج ٥ ص ١٠٦ حدیث ١٤٦٨٦)

उन के दर की भीक छोड़ीं सरवरी के वासिते

उन के दर की भीक अच्छी, सरवरी अच्छी नहीं (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

मदीनतुल मुनव्वरा की तंगदस्ती पर सब्र करने वाले के लिये शफ़ाअ़त की बिशारत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **मदीने** में चीज़ों के निर्ख़ (या'नी भाव) बढ़ गए और ह़ालात सख़्त हो गए तो सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब्र करो और ख़ुश हो जाओ कि मैं ने तुम्हारे साअ़ और मुद को बा बरकत कर दिया और इकठ्ठे हो कर खाया करो क्यूंकि एक का खाना दो को और दो का खाना चार को और चार का खाना पांच और छे को किफ़ायत करता है और बेशक बरकत जमाअ़त में है तो जिस ने **मदीने** की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा और जो इस के ह़ालात से मुंह फैर कर **मदीने** से निकला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बेहतर लोगों को इस में बसा देगा और जिस ने **अहले मदीना** से बुराई करने का इरादा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस त़रह़ पिघला देगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता है। (مجمع الزوائد ج۳ ص۶۵۷ حدیث۵۸۱۹)

शहे कौनैन ने जब सदक़ा बांटा

ज़माने भर को दम में कर दिया ख़ुश (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मदीनए त़य्यिबा की तकालीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 243 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बिहिश्त की कुन्जियां" सफ़्ह़ा 116 पर है : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स बिल क़स्द (या'नी इरादतन) मेरी ज़ियारत को आया वोह क़ियामत के दिन मेरी मुह़ाफ़ज़त (या'नी ह़िफ़ाज़त) में रहेगा और जो शख़्स मदीने में सुकूनत (या'नी रिहाइश इख़्तियार) करेगा और मदीने की तकालीफ़ पर सब्र करेगा तो मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा और उस की शफ़ाअ़त करूंगा और जो शख़्स ह़रमैन (या'नी मक्के-मदीने) में से किसी एक में मरेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को इस ह़ाल में क़ब्र से उठाएगा कि वोह क़ियामत के ख़ौफ़ से अम्न में रहेगा। (مشکاۃ المصابیح ج ۱ ص ۵۱۲ حدیث ۲۷۵۵)

मदीने में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?

याद रहे ! **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में सिर्फ़ उसी को क़ियाम की इजाज़त है जो यहां का एह़तिराम बर क़रार रख सकता हो, जो ऐसा नहीं कर सकता उस के लिये यहां

मुस्तक़िल या ज़ियादा अ़र्से रिहाइश की मुमानअ़त है चुनान्चे **फ़तावा रज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 10 सफ़्हा 695 पर है : (साहिबे फ़त्हुल क़दीर फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं : क्यूंकि मदीनए तय्यिबा में रहमत अकषर, लुत्फ़ वाफ़िर, करम सब से वसीअ़ और अ़फ़्व (या'नी मुआ़फ़ी मिलना) सब से जल्दी होता है जैसा कि शाहिदे मुजर्रब (या'नी तजरिबे से षाबित) है وَالْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ العٰلَمِين इस के बा वुजूद उक्ताने का डर और वहां के एह़तिरामो तौक़ीर में क़िल्लते अदब का ख़ौफ़ तो मौजूद है और येह भी तो मुजावरत से मानेअ़ (या'नी मुस्तक़िल रिहाइश से रुकावट) है, हां वोह अफ़राद जो फ़िरिश्ता सिफ़त हों तो उन का वहां ठहरना और (तवीले रिहाइश इख़्तियार कर के) फ़ौत होना सआ़दते कामिला है।

मदीने में इस्तिन्जा करने के मुतअ़ल्लिक़ हिकायत

आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 10 सफ़्हा 689 पर "अल मदख़ल" के ह़वाले से **ह़िकायत** नक़्ल करते हैं : "अस्सय्यिदुल जलील अबू अ़ब्दुल्लाह क़ाज़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में बयान किया गया कि उन्हें शहरे मदीना में रफ़्ए ह़ाजत की ज़रूरत पेश आई तो वोह शहर में एक मक़ाम की तरफ़ गए और वहां क़ज़ाए ह़ाजत का इरादा किया तो ग़ैब से आवाज़ आई जो इस अ़मल से उन्हें मन्अ़ कर रही थी, तो उन्हों ने कहा : "तमाम हुज्जाज ऐसा करते हैं," तो जवाब में तीन दफ़्आ़ आवाज़ आई : कहां के हुज्जाज ? कहां के हुज्जाज ? कहां के हुज्जाज ? फिर वोह शहर से बाहर चले गए और रफ़्ए ह़ाजत की (या'नी पेशाब वग़ैरा) और फिर लौटे।

मदीने का अस्ल क़ियाम आक़ा के अह़काम पर अ़मल करना है

आगे चल कर साहिबे मदख़ल के ह़वाले से मज़ीद तह़रीर है : हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुजावरत आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अवामिर इत्तिबाअ़ (या'नी अह़कामात की बजा आवरी) और नवाही से इजतिनाब (या'नी जिन बातों से मन्अ़ फ़रमाया उन से बचने) की सूरत में है ख़्वाह इन्सान किसी जगह मुक़ीम हो, और अस्लन (ह़क़ीक़तन) मुजावरत येही है ।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 689)

ग़मे मुस्तफ़ा जिस के सीने में है
गो कहीं भी रहे वोह मदीने में है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

“प्यारा प्यारा है मदीना” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से मदीनतुल मुनव्वरा की 17 ख़ुसूसिय्यात

(यूं तो मदीने में बे शुमार ख़ूबियां हैं मगर हुसूले बरकत के लिये यहां सिर्फ़ 17 बयान की हैं)

✤ रूए ज़मीन का कोई ऐसा शहर नहीं जिस के अस्माए गिरामी या'नी मुबारक नाम इतनी कषरत को पहुंचे हों जितने **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के नाम हैं, बा'ज़ उ़-लमा ने 100 तक नाम तह़रीर किये हैं ✤ **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ऐसा

शहर है जिस की मह़ब्बत और हिज्रो फ़ुर्क़त में दुआ के अन्दर सब से ज़ियादा ज़बानों और सब से ज़ियादा ता'दाद में क़सीदे लिखे गए, लिखे जा रहे हैं और लिखे जाते रहेंगे ❁ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की त़रफ़ हिजरत की और यहीं क़ियाम पज़ीर रहे ❁ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस का नाम त़ाबा रखा ❁ सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के क़रीब पहुंच कर ज़ियादतिये शौक़ से अपनी सुवारी तेज़ कर देते ❁ **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ल्बे मुबारक सुकून पाता ❁ यहां का गर्दो गुबार अपने चेहरए अन्वर से साफ़ न फ़रमाते और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم को भी इस से मन्अ़ फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते कि **ख़ाके मदीना में शिफ़ा** है । (جذب القلوب ص ٢٢) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो तबूक में शामिल होने से रह जाने वाले कुछ सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان मिले । उन्हों ने गर्द उड़ाई, एक शख़्स ने अपनी नाक ढांप ली आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की नाक से कपड़ा हटाया और इर्शाद

फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! "मदीने की ख़ाक में हर बीमारी से शिफ़ा है ।" (جامع الاصول للجزری ج٩ص٢٩٧حدیث٦٩٦٢) ❖ जब कोई मुसलमान ज़ियारत की निय्यत से **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आता है तो फ़िरिश्ते रह़मत के तोह़फ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करते हैं । (जज़्बुल क़ुलूब स. 211) ❖ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में मरने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई ❖ यहां मरने वाले की **सरकारे मदीनए मुनव्वरा**, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे ❖ जो वुज़ू कर के आए और मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में नमाज़ अदा करे उसे **ह़ज** का षवाब मिलता है ❖ हुजरए मुबारका और मिम्बरे मुनव्वर के दरमियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ (जन्नत की क्यारी) है ❖ मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में एक नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है (ابن ماجہ ج٢ ص١٧٦ حدیث١٤١٣) ❖ **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की सर ज़मीन पर मज़ारे मुस्त़फ़ा है जहां सुब्ह़ो शाम सत्तर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं ❖ यहां की ज़मीन का वोह मुबारक ह़िस्सा जिस पर **रसूले अन्वर**, मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुनव्वर तशरीफ़ फ़रमा है वोह हर मक़ाम ह़त्ता कि ख़ानए

का'बा, बैतुल मा'मूर, अ़र्शो कुर्सी और जन्नत से भी अफ़्ज़ल है। ❖ दज्जाल **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में दाखि़ल नहीं हो सकेगा ❖ अहले मदीना से बुराई का इरादा करने वाला अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा ❖ यहां का क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ दुन्या के तमाम क़ब्रिस्तानों से अफ़्ज़ल है, यहां तक़रीबन 10 हज़ार सहाबए किराम व अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बे शुमार ताबेईने किराम व औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام और दीगर खुश नसीब मुसलमान मदफ़ून हैं।

रहें उन के जल्वे बसें उन के जल्वे
मेरा दिल बने यादगारे मदीना (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अराज़ी का हुसूल

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अराज़ी (या'नी ज़मीन) दो यतीम बच्चों **सहल** और **सुहैल** (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की मिल्किय्यत थी, यहां मुशरिकीन की क़ब्रें थीं, ज़मीन ना हमवार थी, येह दोनों बच्चे हज़रते सय्यिदुना **असअ़द बिन ज़ुरारा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़ेरे किफ़ालत (ज़िम्मेदारी) थे। इस ज़मीन पर खजूरें खुश्क की जाती थीं। **हुज़ूर सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ने बच्चों से फ़रमाया : येह क़ित्अ़ए अराज़ी (या'नी PLOT) हमें फ़रोख़्त कर दो ताकि यहां मस्जिद ता'मीर की जा सके। बच्चों ने बसद अदबो नियाज़ अ़र्ज़ की : आक़ा ! येह अराज़ी हमारी त़रफ़ से बत़ौरे नज़राना क़बूल फ़रमाइये तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की इस पेशकश को शरफ़े क़बूलिय्यत से न नवाज़ा। बिल आख़िर क़ीमत अदा कर के येह ज़मीन ख़रीद ली गई। आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते **सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 10 हज़ार दीनार अदा किये (مدینۃُ الرّسول ص ۱۳۰) दूसरी रिवायत में है कि येह जगह बनू नज्जार की थी। सरकारे दो जहान صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से येह जगह क़ीमतन फ़रमाई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम इस की क़ीमत (या'नी अज्र) **अल्लाह** तआ़ला से लेंगे। (वफ़ाउल वफ़ा जि. 1, स. 323) अराज़ी का रक़्बा तक़रीबन 100 मुरब्बअ़ गज़ था।

बारगाहे रिसालत में जिब्राईले अमीन की हाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है, जब हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'मीर का इरादा फ़रमाया तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस की ऊंचाई सात हाथ (या'नी तक़रीबन साढ़े तीन गज़) रखिये, इस की तज़ईन (या'नी ज़ैबो ज़ीनत) में तकल्लुफ़ न हो। (वफ़ाउल वफ़ा जि.1, स. 336)

उस वक़्त ता'मीरात का येही अन्दाज़ था, मस्जिद में ताक़ नुमा मेहराब, गुम्बद और मनारा वग़ैरा न होता। तब्दीलिये हालात के सबब अब आलीशान मस्जिदें बनाने की इजाज़त है।

फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 8 सफ़हा 106 पर "दुर्रे मुख़्तार" के हवाले से दिये हुए एक जुज़इये का हिस्सा है : (मेहराब के इलावा (मस्जिद के दीगर हिस्से) मुनक़्क़श करने में कोई हरज नहीं) क्यूंकि मेहराब का नक़्शो निगार नमाज़ी को मशग़ूल (ग़ाफ़िल) कर देता है, अलबत्ता बहुत ज़ियादा नक़्शो निगार के लिये तकल्लुफ़ करना खुसूसन दीवारे क़िब्ला में मकरूह है।

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'मीर

इस क़त्अ़ए अराज़ी (PLOT) से खजूरों के दरख़्त कटवा दिये गए, मुशरिकीन की क़ब्रें उखड़वा दी गईं। (रबीउ़ल अव्वल सि. 1 हि. मुताबिक़ अक्तूबर सि. 622 ई. में मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का संगे बुन्याद रखा गया।) सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के साथ ख़ुद हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ईंटें उठा उठा कर लाते और अपनी ज़बाने फ़ैज़े तर्जमान से येह भी फ़रमाते : اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْاَجْرَ اَجْرُ الْاٰخِرَة ۔ فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَة ऐ रब्बे क़ुद्दूस ! आख़िरत का बदला ही बेहतर है तू अन्सार और मुहाजिरीन पर रहम फ़रमा।

(वफ़ाउल वफ़ा, जि. 1, स. 326-328)

ता'मीरे मस्जिदे नबवी में आक़ा ने शिर्कत फ़रमाई

सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मदीने वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ईंटें उठा कर ला रहे थे, येह देख कर मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह ईंटें मुझे दे दीजिये मैं ले जाता हूं। फ़रमाया : और काफ़ी ईंटें रखी हैं, उठा लाओ ! येह मैं ले जा रहा हूं। (مسند امام احمد ج٣ص٣٢٣حدیث٨٩٦٠)

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कच्ची ईंटों से ता'मीर की गई और उस की छत खजूर की शाख़ों से थी और उस के सुतून खजूर के तने थे। (वफ़ाउल वफ़ा, जि.1, स. 327)

तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों
हों सलामे आ़जिज़ाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 285)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में नमाज़ के फ़ज़ाइल

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

(1) जिस ने **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में चालीस नमाज़ें मुतवातिर अदा कीं उस के लिये जहन्नम और निफ़ाक़ से नजात लिख दी जाती है। (مسند امام احمد ج ٤ ص ٣١١ حدیث١٢٥٨٤)

(2) जो पाक व साफ़ हो कर सिर्फ़ मेरी मस्जिद में नमाज़ की अदाएगी के इरादे से निकला यहां तक कि उस में नमाज़ अदा की तो उस का षवाब **हज** के बराबर है। (شعب الایمان ج٣ص٤٩٩حدیث٤١٩١)

(3) मेरी इस मस्जिद की एक नमाज़ पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है। (ابن ماجه ج ٢ ص ١٧٦ حديث ١٤١٣)

सद ग़ैरते फ़िरदौस मदीने की ज़मीं है
बाइष है येही इस का कि तू इस में मकीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

रौज़ए रसूल के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद हर आंख का नूर और हर दिल का सुरूर है। हर आ़शिक़े रसूल इस बात का तमन्नाई होता है कि वोह जीते जी कम अज़ कम एक बार तो ज़रूर सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार के दीदारे फ़रह़त आषार से शरफ़याब हो। **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में सब से बा बरकत बल्कि रूए ज़मीन की अ़ज़ीम तरीन ज़ियारत गाह **रौज़ए रसूल** है। किसी आ़शिक़े रसूल ने कितना प्यारा शे'र रक़म किया है :

ए'ज़ाज़ येह ह़ासिल है तो ह़ासिल है ज़मीं को
अफ़्लाक पे तो गुम्बदे ख़ज़रा नहीं कोई

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरवरे दो जहान का मकाने अ़र्श निशान

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मशरिक़ी जानिब वोह **बुक़्अ़ए नूर** वाक़ेअ़ है जहां मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वागर हैं, येह वोही हुजरए मुबारका है जिसे **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पहली बार ता'मीर के वक़्त ही सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिहाइश के लिये तय्यार किया गया था और यहीं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا तक़रीबन 9 बरस तक अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में ह़ाज़िर रहीं, इसी बिना पर इसे **हुजरए आ़इशा** भी कहते हैं। गारे और मिट्टी से बनी दीवारों और खजूर की टहनियों और पत्तों की छत पर मुश्तमिल मुख़्तसर रक़्बे का येह घर शायद उस वक़्त **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की सादा तरीन इमारत थी। इस मकाने आ़लीशान की छत शरीफ़ की बुलन्दी क़दे आदम या'नी इन्सानी क़द से एक हाथ (या'नी तक़रीबन आधा गज़ ज़ियादा बुलन्द) थी। बा'द में इस के अत़राफ़

में ऐसे ही हुजुराते मुबारका दीगर उम्महातुल मुअमिनीन رضی اللہ تعالیٰ عنھن के लिये यके बा'दे दीगरे ता'मीर किये गए। हज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिष देहल्वी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ मकानात ज़रीदे नख़्ल या'नी खजूर की साफ़ टहनियों के थे, उन को कम्बल से ढांपा हुवा था और दरवाज़े पर भी कम्बल के पर्दे थे। तमाम मकानात क़िब्ले की त़रफ़ और मशरिक़ो शाम की जानिब थे, मग़रिब की सम्त कोई मकान न था। बा'ज़ मकान शरीफ़ कच्ची ईंटों के भी थे। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 97)

जिन आ़शिक़ाने रसूल को अपने मकान छोटे और तंग मह़सूस होते हैं उन को चाहिये कि सुल्ताने दो जहान صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मकाने आ़लीशान पर ग़ौर कर के अपने लिये सब्रो तह़म्मुल का सामान करें।

ख़ुसरवे कौनो मकां और तवाज़ोअ़ ऐसी
हाथ तकिया है तेरा ख़ाक बिछौना तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हुजरए मुबारका में विसालो तदफ़ीन

रसूले बे मिषाल, साह़िबे जूदो नवाल, ह़बीबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसी **हुजरए आ़इशा** में ज़ाहिरी विसाल फ़रमाया, घर के जिस ह़िस्से में इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा वोही ह़िस्सए ज़मीन आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे

अन्वर बनने और जिस्मे मुनव्वर से लिपटने से मुशर्रफ़ हुवा। उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا अपनी वफ़ात शरीफ़ तक इसी हुज्रए मुक़द्दसा में मुक़ीम रहीं।

शैख़ैने करीमैन की हुजरए मुतह्हरा में तदफ़ीन

अमीरुल मुअमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का जब वक़्ते रुख़्सत आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने **वसिय्यत** फ़रमाई कि मेरे जनाज़े को शाहे बह्रो बर, मदीने के ताजवर, ह़बीबे दावर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पाक दर के सामने रख कर अ़र्ज़ करना : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, اَلسَّلامُ عَلَیْکَ یَارَسُولَ اللّٰہِ ھٰذَا اَبُوبَکرٍ بِالْبَاب अबू बक्र ह़ाज़िरे दरबार है।" अगर दरवाज़ए मुबारका ख़ुद ब ख़ुद खुल जाए तो अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर देना। बा'दे रिह़लत ह़स्बे वसिय्यत रौज़ए अन्वर के सामने जनाज़ए मुबारका रख कर जूं ही अ़र्ज़ किया गया : "اَلسَّلامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ ! अबू बक्र ह़ाज़िरे दरबार है।" **दरवाज़े का ताला ख़ुद ब ख़ुद खुल गया** और आवाज़ आने लगी : اُدْخِلُوا الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْبِ فَاِنَّ الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْبِ مُشْتَاقٌ दोस्त को दोस्त से मिला दो कि दोस्त को दोस्त का इश्तियाक़ (या'नी शौक़) है।"

(ابنِ عساکِر ج ٣٠ ص ٤٣٦، تفسیر کبیر ج ٧ ص ٤٣٣)

चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू (या'नी बराबर) में दफ़्न किया गया और क़ब्र इस त़रह़ खोदी गई कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का मुबारक सर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक शानों (या'नी बरकत वाले कन्धों) के सामने आता था। फिर तक़रीबन 10 साल बा'द जब इमामुल आ़दिलीन, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन ख़त्ताब** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने शहादत पाई तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ भी हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के पहलूए अन्वर में मदफ़ून हुए।

या इलाही ! अज़ पए ह़ज़राते सिद्दीक़ो उ़मर

ख़ैर दे दुन्या के अन्दर आख़िरत मह़मूद कर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हुजरए मुक़द्दसा दो ह़िस्सों में तक़्सीम था

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا का हुजरए मुबारका दो ह़िस्सों में मुन्क़सिम (या'नी तक़्सीम) था, एक वोह ह़िस्सा जहां क़ुबूरे मुबारका थीं और दुसरा वोह जहां आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا की रिहाइश थी, दोनों ह़िस्सों के दरमियान एक दीवार थी, आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं

अपने घर के उस हिस्से में जिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और मेरे वालिदे माजिद (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ) आराम फ़रमा थे, इस ह़ाल में दाख़िल हुवा करती थी कि पर्दे का कुछ ख़ास एहतिमाम न होता था, मैं कहती थी कि एक मेरे शोहरे नामदार हैं और दूसरे मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार। जब उन के साथ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ दफ़्न हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से ह़या की बिना पर इस त़रह़ दाख़िल होती थी कि मैं ने अपने जिस्म को ख़ूब अच्छी त़रह़ कपड़ों में लपेटा हुवा होता था। (مسند امام احمد ج ١٠ ص ١٢ حدیث ٢٥٧١٨)

मा'लूम हुवा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہا को इस अम्र में कोई शक न था कि दुन्या से पर्दा फ़रमा लेने के बा वुजूद भी साहिबे मे'राज صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और प्यारे पिदर सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ अपने अपने रौज़ए अन्वर के अन्दर रहते हुए भी मुझे देख रहे हैं और येही अ़क़ीदा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के बारे में था जभी तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के रौज़ए अत़हर में दफ़्न होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہا ह़ाज़िरी देते वक़्त पर्दे का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाया करती थीं। ह़ालांकि क़ब्रों के पास इस त़रह़ पर्दे का हुक्म नहीं है।

मेरी मदनी बेटियां या रब्ब ! सभी पर्दा करें
सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत बहरे सिद्दीक़ा करें

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

शैख़ैने करीमैन के बा'द कोई यहां दफ़्न नहीं हुवा

शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا के बा'द हुजरए मुबारका में किसी और की तदफ़ीन की तरकीब नहीं बनी, जुन्नूरैन, जामेउ़ल कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ष्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की शहादत अगर्चे **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में हुई लेकिन एक फ़सादी गुरौह ने हुजरए पाक के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की तदफ़ीन नहीं होने दी चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया गया। जब कि मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم की शहादत **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से बहुत दूर **कूफ़े** में हुई लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की तदफ़ीन भी हुजरए मुत़ह्हरा में न हुई। जब नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को ज़ह्र दे कर शहीद किया गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की तदफ़ीन हुजरए मुक़द्दसा में करने की कोशिश हुई तो उस वक़्त **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا का गवर्नर मरवान जो कि अहले बैत का मुख़ालिफ़ था, मुसल्लह़ हो कर आड़े आया चुनान्चे ख़ूनीं तसादुम से बचने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में कर दी गई।

वोह ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हुजरए मुबारका का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया

सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہَا का जब विसाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہَا को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया गया और हुजरए मुत़ह्हरा के दरवाज़ए मुबारका के बाहर एक मज़्बूत़ दीवार खड़ी कर के उस में दाख़िले का रास्ता बन्द कर दिया गया। उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہَا के विसाल के बा'द वोह जगह भी ख़ाली हो गई जहां आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہَا क़ियाम पज़ीर थीं, यूं अब हुजरए मुनव्वरा में चोथी क़ब्र की जगह ख़ाली है। क़ुर्बे क़ियामत में ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहु़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नुज़ूल होगा और बा'दे इन्तिक़ाल आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तदफ़ीन हुजरए पाक में की जाएगी।

हुजरए मुबारका की दीवारों की ता'मीर

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में मकाने आ़लीशान की दीवारें पक्की न थीं, सब से पहले अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ ने पक्की दीवारें ता'मीर करवाईं, फिर पहली सदी के मुजद्दिद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने

पहली सदी हिजरी में जब **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'मीरे नौ की तो सियाह पथ्थरों से (बिग़ैर दरवाज़े के) दीवारें बना कर **हुजरए आइशा** का अस्ली रक़्बा महफ़ूज़ कर दिया और उस के गिर्द पंजगोशा (या'नी पांच कोने वाली) दीवार ता'मीर करवा दी जिस में कोई दरवाज़ा नहीं है।

जाली मुबारक की तारीख़

मक़्सूरा शरीफ़ लोहे और पीतल की उस जाली मुबारक को कहा जाता है जिसे क़ुबूरे मुबारका के अत़राफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ता'मीर कर्दा पंजगोशा (पांच कोनी) दीवार के इर्द गिर्द नस्ब किया गया है। सब से पहले मिस्री सुल्त़ान रुक्नुद्दीन बैबर्स ने 668 हि. में लकड़ी की जाली मुबारक बनाई थी, उस वक़्त उस की बुलन्दी दो आदमियों के क़द के बराबर थी। फिर शाहे ज़ैनुद्दीन कत्बुग़ा ने 694 हि. में इस के ऊपर मज़ीद जाली बढ़ा दी जो छत से जा लगी। 886 हि. में आतश ज़दगी के ह़ादिषे में येह जाली मुबारक शहीद हो गई तो सुल्त़ान क़ायित्बाई ने लोहे और पीतल की जालियां तय्यार करवाईं जिन में से पीतल की जालियां जानिबे क़िब्ला जब कि लोहे की जालियां बक़िय्या तीनों अत़राफ़ में नस्ब की गई। मक़्सूरा शरीफ़ में कई दरवाज़े हैं : एक क़िब्ले की दीवार में जिस का नाम बाबुत्तौबा है, एक मग़रिबी दीवार में जिसे बाबुल वुफ़ूद कहते हैं, एक मशरिक़ी दीवार में जिस का नाम बाबे फ़ात़िमा है और एक शिमाली जानिब जिसे बाबुत्तहज्जुद कहते हैं। बाबे फ़ात़िमा के इलावा तमाम दरवाज़े बन्द ही रहते हैं, बाबे फ़ात़िमा

भी उसी वक़्त खोला जाता है जब कोई गवर्नमेन्ट का मेहमान या वफ़्द आए, येह लोग अगर्चे मक़्सूरा शरीफ़ या'नी जाली मुबारक में दाख़िल तो हो जाते हैं लेकिन पंजगोशा दीवार के अन्दर नहीं जा सकते क्यूंकि इस में दाख़िले का कोई दरवाज़ा ही नहीं है। पंजगोशा के इर्द गिर्द बड़े बड़े पर्दे आवेज़ां हैं।

तीन क़ब्रों की नक़्ली तसावीर

आज कल तीन क़ब्रों की तसवीर वाले तुग़रे बाज़ार में बिकते हैं, जिस में एक क़ब्र सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दो क़ब्रें शैख़ैने करीमैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की त़रफ़ मन्सूब की हुई हैं, येह जा'ली (नक़्ली) हैं क्यूंकि तीनों मुबारक क़ब्रें पंजगोशा दीवारों के अन्दर हैं और अन्दर ह़ाज़िर होने का कोई रास्ता ही नहीं। जब ज़ाहिरी आंखों से इन मुबारक क़ब्रों की ज़ियारत मुमकिन ही नहीं तो येह तसवीरें कहां से और किस त़रह़ उतारी गईं ?

हिज्रो फ़िराक़ में जो या रब्ब ! तड़प रहे हैं
उन को दिखा दे मौला मीठे नबी का रोज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 299)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रौज़ए अन्वर पर गुम्बदे अत़हर की ता'मीर

हुजरए मुबारका पर पहले किसी क़िस्म का गुम्बद न था, छत पर सिर्फ़ निस्फ़ क़दे आदम (या'नी आधे इन्सानी क़द) के बराबर चार दीवारी थी ताकि जो कोई भी किसी ग़रज़ से **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की छत पर जाए उसे एह़सास रहे कि वोह निहायत अदब के मक़ाम पर है और कहीं भूल में भी उस पर न

चढ़े। यहां येह बयान करना **दिलचस्पी** से ख़ाली नहीं कि अ़ब्बासी ख़िलाफ़त के इब्तिदाई दौर में मुक़्तदर शख़्सिय्यात के मज़ारात पर **गुम्बद** बनाने का सिल्सिला हुवा और फिर देखते ही देखते बग़दाद शरीफ़ और दिमश्क़ में **गुम्बद** दीनी शख़्सिय्यात के मज़ारात का बा क़ाइदा हिस्सा बन गया। बग़दाद शरीफ़ में **इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर भी गुम्बद सल्जूक़ी सुल्त़ान मलिक शाह ने **पांचवी सदी** में ता'मीर करवाया था। इस के बा'द इस त़र्ज़े ता'मीर को मिस्र में ख़ूब रवाज मिला और वहां थोड़े ही अ़र्से में बहुत से मज़ारात पर गुम्बद बन गए। जब क़लावून ख़ानदान का दौर आया तो गुम्बद तक़रीबन तमाम मुस्लिम अ़लाक़ों में आ़म हो चुका था। मिस्र में चूंकि येह फ़न्ने ता'मीर बहुत मक़्बूल था इस लिये सुल्त़ान मन्सूर क़लावून ने जब रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **पहली मरतबा गुम्बद** बनवाने का फ़ैसला किया तो मिस्री मे'मारों की ख़िदमात ह़ासिल की गईं जिन्हों ने अपने हुनर को काम में लाते हुए सि. **678 हिजरी में ह़ुजरए मुत़ह्हरा पर लकड़ी के तख़्तों की मदद से ख़ूबसूरत गुम्बद बनाया।** रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत ने इस गुम्बद शरीफ़ को ऐसा हुस्न बख़्शा कि ज़ाइरीने मदीना की आंखों का तारा बन गया।

वसीला तुझ को बू बक्रो उ़मर, उ़स्मानो ह़ैदर का
इलाही तू अ़त़ा कर दे हमें भी घर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 404)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्राना | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे इजाबह | मस्जिदे जुमुआ | मस्जिदे ग़मामह

मक़ामे इब्राहीम | ह़जरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे ह़िरा | जबले उह़ुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

बड़े और छोटे गुम्बद शरीफ़ की ता'मीर

पहला गुम्बद शरीफ़ तक़रीबन एक सदी तक आ़शिक़ाने रसूल की आंखें ठन्डी करता रहा। फिर वक़्त गुज़रने के साथ साथ सीसा पिलाए हुए लकड़ी के तख़्तों में से चन्द तख़्ते "ज़ईफ़" हो गए, चुनान्चे सुल्तानुन्नासिर ह़सन बिन मुह़म्मद क़लावून ने गुम्बद शरीफ़ की कुछ ख़िदमत की, फिर बा'द में सुल्तान अशरफ़ शा'बान बिन हुसैन बीन मुह़म्मद ने 765 हिजरी में मज़ीद ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल की। अभी एक सदी और गुज़री होगी कि इस बात की ज़रूरत मह़सूस हुई कि गुम्बद शरीफ़ की वसीअ़ बुन्यादों पर "ख़िदमत" या ता'मीरे नौ की जाए और साथ ही उस पंजगोशा इह़ाते की भी "ता'मीरी ख़िदमत" की जाए जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने बनवाया था। सुल्तान अशरफ़ क़ायित्बाई ने अव्वलन अपने एक नुमायन्दे को इस की तह़क़ीक़ात पर मामूर किया। नुमायन्दे की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ हुजरए मुत़ह्हरा की दीवारों की "ख़िदमत" की अशद्द ज़रूरत थी और ख़ास त़ौर पर पंजगोशा शरीफ़ की शर्क़ी (EAST) दीवार की भी कि इस में कुछ दराड़ें पड़नी शुरूअ़ हो गई थीं। चुनान्चे 14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 881 सिने हिजरी को **पंजगोशा** शरीफ़ के मुतअष्षिरा हिस्से निकाल लिये गए, साथ ही साथ **हुजरए मुत़ह्हरा** की पुरानी छत शरीफ़ भी हटा ली गई और शर्क़ी जानिब तक़रीबन एक तिहाई हिस्से पर छत डाल दी गई जिस से येह एक तहख़ाने

की मानिन्द नज़र आने लगा, जब कि बाक़ी के दो तिहाई हिस्से पर छत की तरकीब नहीं की गई बल्कि इस के ऊपर **तीनों मुबारक क़ब्रों** के सिरहानों की जानिब मुनक़्क़श पथ्थरों से बना हुवा एक **छोटा सा मगर अ़ज़मत में बहुत बड़ा गुम्बद** हुजरए पाक पर ता'मीर कर दिया गया उस के ऊपर सफ़ेद संगे मरमर लगाया गया और पीतल का हिलाल (चांद) नस्ब कर दिया गया। उस के ऊपर **मस्जिदुन्नबविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की छत को मज़ीद बुलन्द कर दिया गया ताकि येह छोटा गुम्बद अपने हिलाल (चांद) समेत मस्जिदे करीम की छत शरीफ़ के नीचे आ जाए। फिर उस के ऊपर **बड़ा गुम्बद** शरीफ़ ता'मीर किया गया। 17 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 881 हिजरी को हुजरए मुत़ह्हरा की "ख़िदमत" और ता'मीरे नौ का काम शुरूअ़ हुवा और दो माह में मुकम्मल हुवा, येह काम 7 शव्वालुल मुकर्रम 881 हिजरी को ख़त्म हुवा। सुल्त़ान क़ैतबाई मुअर्रख़ा 22 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 881 हि. को **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हुए और उन्हों ने उसी मक़ाम से हाज़िरी दी जहां से अ़वामुन्नास खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करते हैं (या'नी जाली मुबारक के सामने खड़े हो कर मुवाजहा शरीफ़ के सामने से) जब उन्हें जाली मुबारक के अन्दर दाख़िल होने की अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाने लगे : मैं इस क़ाबिल कहां ! अगर मुमकिन होता तो मैं मुवाजहा शरीफ़ से भी दूर खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करता।

न हम आने के लाइक़ थे न क़ाबिल मुंह दिखाने के
मगर उन का करम बन्दा नवाज़ व बन्दा परवर है (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मोअज़्ज़िन पर दौराने अज़ान आस्मानी बिजली गिरी

13 रमज़ानुल मुबारक 886 हिजरी को आस्माने मदीना का मत्लअ़ अब्र आलूद था, मोअज़्ज़िन साहिब ह़स्बे मा'मूल मीनारए रईसिया पर अज़ान देने की ग़रज़ से चढ़े ही थे कि अचानक उन पर बिजली गिरी, मोअज़्ज़िन साहिब मौक़अ़ पर ही शहीद हो गए और मीनारए रईसिया **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जानिब गिर पड़ा, मस्जिदे करीम में आग भड़क उठी, ना गहानी आग की लपेट में आ कर और भगदड़ वग़ैरा में मज़ीद दस आदमी फ़ौत हुए, आग और मीनारे के गिरने से गुम्बद शरीफ़ को भी "सदमा" पहुंचा और कुछ मल्बा हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर भी ह़ाज़िरी के लिये जा पहुंचा, ता हम हुजरए शरीफ़ा "सदमे" से मह़फ़ूज़ रहा, अगर्चे फ़ौरी नौइय्यत की "ता'मीरी ख़िदमत" तो करवा दी गई मगर मुकम्मल तफ़्सीलात के साथ सुल्त़ान क़ायित्बाई को 16 रमज़ानुल मुबारक को क़ासिद के ज़रीए पैग़ाम भेज दिया गया। सुल्त़ान ने मिस्र से ज़रूरी सामान और एक सो से ज़ियादा मे'मार कारीगर और मज़दूर **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا रवाना कर दिये। काम शुरूअ़ कर दिया गया, बाहर वाला गुम्बद शरीफ़ जिस को बहुत ज़ियादा "सदमा" पहुंचा था मुकम्मल तौर पर हटा लिया गया, सुल्त़ान क़ायित्बाई के हुक्म से 892 सिने हिजरी में बाहर की जानिब एक नया गुम्बद शरीफ़ ता'मीर किया गया जो कि सदियों तक क़ाइम रहा।

सब्ज़ गुम्बद कब बनाया

किसी ज़रूरत की वजह से तुर्की सुल्तान मह़मूद बिन अ़ब्दुल ह़मीद ख़ान ने सुल्तान क़ायित्बाई का बनवाया हुवा गुम्बद शरीफ़ शहीद करवा कर 1233 हिजरी में दोबारा गुम्बद ता'मीर करवा दिया। 1253 हि. मुत़ाबिक़ 1837 ई. में इसे **सब्ज़ रंग** कर दिया गया और इस के सब्ज़ रंग की वजह से इसे **गुम्बदे ख़ज़रा** कहा जाता है। इस में 67 रोशन दान हैं, जिन में से कुछ तो गोल शक्ल के हैं और बाक़ी मुस्तत़ील (या'नी लमचोरस) हैं।

गुम्बदे ख़ज़रा ख़ुदा तुझ को सलामत रखे
देख लेते हैं तुझे, प्यास बुझा लेते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

दोनों गुम्बदों में एक छोटा सा सूराख़ रखा गया

नीचले गुम्बद शरीफ़ के ऊपर एक ऐसा सूराख़ रखा गया है जिस से क़ब्र शरीफ़ और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल नहीं रहती, उस पर एक बारीक जाली लगाई गई है ताकि उस में कबूतर वग़ैरा दाख़िल न हो सकें। और बिल्कुल इसी त़रह़ उस के ऐन ऊपर गुम्बदे ख़ज़रा में जुनूब की सम्त हिलाल (चांद) के नीचे भी सूराख़ रखा गया था, जब कभी क़ह़त़ का सामना होता अहले मदीना इस रोज़न (सूराख़ शरीफ़) को खोल दिया करते थे, जूंही धूप की किरनें हुजरए मुत़ह्हरा के अन्दर ह़ाज़िरी की सआ़दत पातीं, बादल पानी ले कर ह़ाज़िर हो जाते और अहले मदीना के लिये ख़ूब बाराने रह़मत बरसाते। अब उसे बन्द कर दिया गया है।

बादल घिरे हुए हैं बारिश बरस रही है
लगता है क्या सुहाना मीठे नबी का रोज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 299)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुम्बद शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ रंग

गुम्बद शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ अदवार में मुख़्तलिफ़ रंगों की वजह से उसे इन रंगों की निस्बत से शोहरत रही है, मषलन जब उस का रंग सफ़ेद था तो उसे "कुब्बतुल बैज़ा" कहते, जब नीला रंग हुवा तो उसे "कुब्बतुज़्ज़रक़ा" कहने लगे, और फिर 1253 हि. मुताबिक़ 1837 ई. से अब तक येह **सब्ज़ रंग** की वजह से "**कुब्बतुल ख़ज़रा**" (या'नी सब्ज़ गुम्बद) के नाम से मशहूर है। येह निहायत दिल आवेज़, बहुत ही प्यारा और आ़शिक़ाने रसूल की आंखों का तारा है, दुन्या भर के आ़शिक़ाने रसूल इस से बेह़द मह़ब्बत करते हैं और इस की एक अ़लामत येह भी है कि दुन्या भर की बे शुमार मस्जिदों के गुम्बद "**गुम्बदे ख़ज़रा**" की याद में सब्ज़ रंग के बनाए जाते हैं। बा'ज़ मसाजिद पर तो गुम्बदों की शक्लो शबाहत और सब्ज़ रंगत में काफ़ी मुशाबहत (या'नी यक्सानिय्यत) देखी जाती है जिस की एक मिषाल बाबरी चोक बाबुल मदीना कराची में वाक़ेअ़ मस्जिदे कन्ज़ुल ईमान पर बना हुवा **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** है।

कैसा है प्यारा प्यारा येह सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद
कितना है मीठा मीठा मीठे नबी का रोज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 298)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदे नबवी के 8 सुतूने रहमत

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रहमतों भरे आठ सुतूनों को ख़ुसूसी फ़ज़ीलत हासिल है, इन पर इन के नाम भी लिखे हुए हैं और रौज़तुल जन्नह (या'नी जन्नत की क्यारी) के अन्दर 6 सुतूनों की ज़ियारत मुमकिन है, दो सुतून चूंकि अब हुजरए मुतह्हरा के अन्दर हैं लिहाज़ा उन की ज़ियारत मुश्किल है। सुतून को अ़रबी में "उस्तुवाना" कहते हैं। आठों उस्तुवानात की तफ़्सील येह है :

(1) उस्तुवानए हन्नाना

येह सुतूने रहमत सीधी जानिब मेहराबे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बिल्कुल मिला हुवा है। "मिम्बरे मुनव्वर" बनने से पहले सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर के एक तने से टेक लगा कर खुत्बा इर्शाद फ़रमाते थे। जब मिम्बरे अत़्हर बनाया गया और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर खुत़्बा इर्शाद फ़रमाया तो वोह **तना** आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) में फट गया और चीखें़ मार कर रोने और गाभन ऊंटनी की त़रह़ चिल्लाने लगा, येह ह़ाल देख कर तमाम ह़ाज़िरीन भी बे इख़्तियार रोने लगे। **सरकारे बह़्रो बर** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे मुनव्वर से उतर कर उस **खजूर के तने** पर दस्ते अन्वर फैर कर फ़रमाया : "तू चाहे तो तुझे तेरी जगह छोड़ दूं जिस ह़ालत में तू पहले था, अगर तू चाहे तो जन्नत में लगा दूं ताकि जन्नती तेरा फल खाते रहें," लम्ह़े भर के बा'द **सरकारे नामदार** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ने सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "इस ने जन्नत इख़्तियार की ।" इसी रोने की वजह से उस तने का नाम "ह़न्नाना" पड़ गया । **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी** عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی जब येह वाक़िआ़ सुनते तो ख़ूब रोते और फ़रमाते : ऐ लोगो ! जब खजूर का एक बे जान तना फ़िराक़े रसूल में रो सकता है तो क्या तुम नहीं रो सकते ? (وفاء الوفاء ج ١ ص٣٨٨، ٣٨٩۔ ٣٩٠، ٤٣٩)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ उस्तुवानए आ़इशा

येह सुतूने रह़मत रौज़ए अन्वर से तीसरे नम्बर पर है और मिम्बरे मुनव्वर से भी तीसरे नम्बर पर । रह़मते अनाम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने और कई अकाबिर सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने यहां बारहा नमाज़ पढ़ी है और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم यहां अकषर तशरीफ़ रखा करते थे । (وفاء الوفاء ج ١ ص ٤٤١)

अगर लोगों को पता लग जाए तो कुर्आ़ अन्दाज़ी करें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने एक मरतबा सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार बयान किया : "**मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में एक जगह बहुत ज़ियादा बा बरकत है, अगर लोगों को इ़ल्म हो जाए तो उन्हें वहां नमाज़ पढ़ने के लिये हुजूम की वजह से कुर्आ़ डालना पड़े !" सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने सय्यिदतुना

आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से वोह जगह दर्याफ़्त करना चाही मगर उन्हों ने बताने से पहलू तही की, बा'द अज़ां सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इसरार पर उन्हों ने जगह की निशानदेही फ़रमा दी जिस पर मौसूफ़ फ़ौरन वहां पहुंचे और नफ़्ल पढ़ने में मसरूफ़ हो गए। इस त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को भी उस **सुतूने रह़मत** का इ़ल्म हो गया। इसी वजह से उसे "उस्तुवानए आ़इशा" कहा जाता है। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ येह जगह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये ख़ुसूसी अहम्मिय्यत रखती है। (وفاء الوفاء ج ١ ص ٤٤٠)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ उस्तुवानए तौबा

येह सुतूने रह़मत क़ब्रे अन्वर से दूसरे और मिम्बरे मुनव्वर से चोथे नम्बर पर है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर यहां नफ़्ल अदा फ़रमाते थे। मुसाफ़िर या मेहमान भी यहां आ कर ठहरते थे। इसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ुक़रा व मसाकीन ह़ज़रात में क़ुरआने करीम की ता'लीम और इस्लामी अह़काम की तर्बिय्यत फ़रमाते थे। इस सुतूने रह़मत का दूसरा नाम "उस्तुवानए अबू लुबाबा" है। एक ग़लत़ी की बिना पर ब ग़रज़े क़बूले तौबा ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू लुबाबा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने आप को इसी सुतूने रह़मत के साथ बंधवा दिया था और क़सम खा ली थी कि जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मुबारक हाथों से आज़ाद नहीं फ़रमाएंगे न इस क़ैद से निकलूंगा न

खाऊंगा न पियूंगा, बस इसी ह़ालत में मर जाऊंगा या मेरा गुनाह बख़्शा जाएगा। उन्हें सिर्फ़ नमाज़ों और त़बई ह़ाजतों के लिये खोला जाता, वोह तक़रीबन सात दिन बंधे रहे न कुछ खाया न पिया, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई और आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने दस्ते पुर अन्वार से खोला। (وفاء الوفاء ج ۱ ص ۴۴۲، ۴۴۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾4﴿ उस्तुवानतुस्सरीर

येह सुतूने रह़मत उस्तुवानए तौबा की मशरिक़ी जानिब जाली मुबारक से मिला हुवा है। जब ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के लिये **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में क़ियाम फ़रमाते तो कभी इसी जगह **सरीर** या'नी चारपाई बिछाते जो खजूर की शाख़ों से बनी हुई थी। और अकषर रात को **ह़सीर** या'नी चटाई पर इस्तिराह़त (या'नी आराम) फ़रमाते। (وفاء الوفاء ج ۱ ص ۴۴۷، جذب القلوب ص ۹۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾5﴿ उस्तुवानतुल ह़रस

इसे "उस्तुवानतुल ह़रस" और "उस्तुवानए अ़ली" भी कहते हैं। ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم अकषर यहां नवाफ़िल अदा फ़रमाते और रातों को मह़बूबे बारी صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पहरेदारी की ख़िदमात अन्जाम देते। (وفاء الوفاء ج ۱ ص ۴۴۸، ۴۴۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾6﴿ उस्तुवानए वुफ़ूद

येह सुतूने रह़मत उस्तुवानतुल ह़रस के पीछे वाके़अ़ है। जब कभी गिर्दो नवाह़ से वुफ़ूदे अ़रब क़बूले इस्लाम के लिये दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर होते तो हमारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अकषर इसी मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर उन को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाते और सहाबए किबार عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان इर्द गिर्द बैठते। (وفاء الوفاء ج١ ص٤٤٩)

इक सम्त अ़ली इक सम्त उ़मर, सिद्दीक़ इधर उ़ष्मान उधर
इन जगमग जगमग तारों में, महताब का आ़लम क्या होगा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾7﴿ उस्तुवानए जिब्राईल

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अकषर यहीं वह़्य ले कर नाज़िल होते। येह सुतूने मुबारक सय्यिदा बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنھا के हुजरए पाक से मुत्तसिल और "सुफ़्फ़ा शरीफ़" के ठीक सामने या'नी क़िब्ले की सम्त सब्ज़ जाली मुबारक के अन्दर है। (जज़्बुल कुलूब, स. 94)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾8﴿ उस्तुवानए तहज्जुद

यहां सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारहा **तहज्जुद** अदा फ़रमाई है, येह सुतूने रह़मत "सुफ़्फ़ा शरीफ़" के सामने जानिबे क़िब्ला हुजरए फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पीछे जानिबे शिमाल सब्ज़ जालियों के अन्दर है। (وفاء الوفاء ج ۱ ص ٤٥٢) बाहर कुरआने पाक रखने की अलमारियों के सबब ज़ियारत मुश्किल है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दीगर सुतून भी मुतबर्रक हैं

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुतज़क्करा आठ सुतूने रह़मत बेशक अफ़्ज़ल तरीन हैं मगर दीगर सुतून मुबारक भी बल्कि सारी ही मस्जिद शरीफ़ मुतबर्रक है। क़दीम **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** के हर हर सुतून पर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक नज़र पड़ी है और कोई भी उस्तुवाना (या'नी सुतून) ऐसा नहीं जहां सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने नमाज़ न पढ़ी हो। सह़ीह़ बुख़ारी में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बड़े बड़े सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देखा है कि वोह मग़रिब के वक़्त सुतूनों की त़रफ़ सबक़त करते या'नी जल्दी जल्दी पहुंचते थे। (بخاری ج ۱ ص ۱۸۷ حدیث ۵۰۳)

मे'राज का समां है कहां पहुंचे ज़ाइरो !
कुर्सी से ऊंची कुर्सी इसी पाक घर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

रौज़तुल जन्नह (जन्नत की क्यारी)

ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका (जिस में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुरअन्वार है) और मिम्बरे नूरबार (जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी हिस्सा जिस का तूल (या'नी लम्बाई) 22 मीटर और अ़र्ज़ (या'नी चोड़ाई) 15 मीटर है। रौज़तुल जन्नह या'नी "जन्नत की क्यारी" है। चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِّنْ رِّيَاضِ الْجَنَّةِ या'नी मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(بُخاری ج ۱ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۵)

आ़म बोलचाल में लोग इसे "**रियाज़ुल जन्नह**" कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ "**रौज़तुल जन्नह**" है।

येह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द इस की आबो ताब से आतश सक़र की है

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रौज़ए रसूल

सब्ज़ गुम्बद

रौज़तुल जन्नह

मेह़राबे नबवी علٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

मेह़राबे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ता दमे तह़रीर **चार मेह़राबें** अपने अन्वार लुटा रही हैं (1) मेह़राबुन्नबी (2) मेह़राबे उ़षमानी (3) मेह़राबे तहज्जुद (4) मेह़राबे सुलैमानी। यहां सिर्फ़ **मेह़राबुन्नबी** का ज़िक्र किया जाता है : तह़वीले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की तब्दीली) का हुक्म नाज़िल होने के बा'द 14 या 15 रोज़ तक **इमामुल अम्बिया** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में सुतूने आ़इशा के सामने खड़े हो कर इमामत फ़रमाते रहे फिर 15 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** सि. 2 हि. को "सुतूने ह़न्नाना" के मक़ाम को शरफ़े क़ियाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह मेह़राब शरीफ़ इसी जगह पर का'बए मुशर्रफ़ा के "मीज़ाबे रह़मत" की सम्त बनी हुई है। हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के दौरे ज़र्रीन में मेह़राब की मौजूदा अ़लामत राइज नहीं थी इस को पहली सदी के मुजद्दिद, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز ने ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हुक्म से 88 हिजरी (706 ई.) में ईजाद किया और येह वोह "बिदअ़ते ह़सना" है जिसे तमाम उम्मत ने क़बूल किया और अब दुन्या भर की मसाजिद की त़ाक़ नुमा मेह़राबें ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز की ईजादे मुबारक से बरकतें लिये हुए हैं। इस से येह बात भी सीखने को मिली कि दौरे

सहाबा में किसी चीज़ का न होना उसे ना जाइज़ नहीं कर देता, जैसे येही मुरव्वजा मेहराब, संगे मरमर के मिम्बर, मसाजिद पर गुम्बद व मीनार, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद व मीनार, क़ुबूरे औलिया पर इमारत व गुम्बद, ख़त्मे बुख़ारी, माइक पर अज़ान व ख़ुत्बा, अज़ान से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ पढ़ना, हर साल जश्ने विलादत की धूमधाम, ग्यारवीं शरीफ़, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन वग़ैरा वग़ैरा।

मेहराबो मिम्बर और वोह हरयाली जालियां
और मस्जिदे ह़बीब का जलवा नसीब हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 119)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मिम्बरे रसूल

दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

(1) مِنْبَرِیْ عَلٰی حَوْضِیْ या'नी मेरा मिम्बर मेरे ह़ौज़ (या'नी ह़ौज़े कौषर) पर है। (بُخاری ج ۱ ص ۴۰۳ حدیث ۱۱۹۶) **मिम्बर शरीफ़ का वोह** गोला जिसे रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم थामा करते थे, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (बरकत के लिये) उस पर हाथ फैरा करते थे। (اَلطَّبَقَاتُ الْكُبرٰى لِابنِ سَعد ج ۱ ص ۱۹۶)

(2) مِنْبَرِیْ عَلٰی تُرْعَةٍ مِّنْ تُرَعِ الْجَنَّة या'नी मेरा मिम्बर जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में वाक़ेअ़ है। (وَفاءُ الْوَفاء ج ۱ ص ۴۲۶)

अस्ल मिम्बरे मुनव्वर लकड़ी का था

सरवरे कौनो मकान, सुल्त़ाने ज़मीनो ज़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सब से पहला मिम्बरे मुनव्वर 8 हिजरी में तय्यार किया गया था, उस के तीन ज़ीने थे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बरे

मुत़ह्हर पर रौनक़ अफ़रोज़ होते वक़्त तीसरे दरजे (या'नी ज़ीने) पर बैठते और दूसरे दरजे पर पाउं मुबारक रखते थे। **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बरे मुबारक का तूल (या'नी लम्बाई) दो हाथ, अ़र्ज़ (या'नी चोड़ाई) एक हाथ और हर ज़ीने की चोड़ाई एक बालिश्त थी। (جذب القلوب ص۹۰) दरमियान वाला हिस्सा जिस के साथ तकिया (या'नी टेक) लगाते थे वोह एक हाथ लम्बा और जिन हिस्सों पर ख़ुत़्बे के लिये बैठते वक़्त हाथ मुबारक रखते थे वोह एक बालिश्त और दो उंगल उंचे थे। (وفاء الوفاء ج۱ص ۴۰۰،۴۰۲) मिम्बरे मुनव्वर मुबारक के तीनों जानिब पांच लकड़ियां लगी होती थीं। मिम्बरे अत़हर की कैफ़िय्यत हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी और ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِين के ज़माने में भी क़ाईम रही। (جذب القلوب ص۹۰) मौजूदा दौर के संगे मरमर के मिम्बर "दौरे सह़ाबा" में न होने के बा वुजूद जाइज़ हैं !

छुप छुप के देखूं मिम्बरे अक़्दस की फिर बहार
शायद कभी तो शाह का जलवा नसीब हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 119)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक़ामे अज़ाने बिलाल की निशान दही नहीं हो सकती

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अन्दर जन्नत की क्यारी में मौजूद मिम्बर शरीफ़ के ऐन सामने आठ सुतूनों पर क़ाइम संगे मरमर का

ख़ूबसूरत चबूतरा है, इसे "मुकब्बिरिया" कहते हैं, इसी पर खड़े हो कर अज़ान व इक़ामत कही जाती है। येह याद रहे ! इस जगह पर ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ का अज़ान देना षाबित नहीं। (ملخصا جستجوئے مدینہ ص۵۱۸) ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ कहां खड़े हो कर अज़ान देते थे अब उस जगह की निशान दही दुश्वार है, इस की तारीख़ मुलाह़ज़ा हो : अह़कामे अज़ान के निफ़ाज़ के बा'द शुरूअ़ शुरूअ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल इब्ने रबाह़ **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** के क़रीब वाक़ेअ़ एक ऊंचे मकान की छत पर तशरीफ़ ले जा कर अज़ान दिया करते थे मगर इस के बा'द इन के लिये लकड़ी का एक स्टूल बनवा दिया गया था जिस पर खड़े हो कर वोह उस वक़्त तक अज़ान देते रहे जब तक कि वोह आ़ज़िमे दिमश्क़ नहीं हुए। इस स्टूल को हुजरए उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُما) की छत पर रख दिया गया था जिस पर खड़े हो कर अज़ान दी जाती थी। इस के बा'द आले उ़मर फ़ारूक़ ने इसे सय्यिदुना ह़ज़रते बिलाल इब्ने रबाह़ ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के तबर्रुक और आषार के तौ़र पर संभाल लिया था जो कि सदियों तक मह़फ़ूज़ रहा। क़ुत़बुद्दीन ह़नफ़ी (मुतवफ़्फ़ा 990 हिजरी) अपनी तारीख़े मदीना में तसदीक़ करते हैं कि उन के अय्याम में भी वोह स्टूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के आषार के तौ़र पर मह़फ़ूज़ था फिर जब दारे आले उ़मर को एक मद्रसे में तह़वील कर दिया गया तब भी वोह मुतबर्रक आषार क़ाइमो दाइम रहा लेकीन बीसवीं सदी के शुरूअ़ में वोह गोशए गुमनामी में चला गया।

सुफ़्फ़ा शरीफ़

सुफ़्फ़ा साइबान और साएदार जगह को कहते हैं। **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बाबे जिब्राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दाख़िल हों तो कुछ क़दम चलने के बा'द सीधे हाथ की जानिब सुफ़्फ़ा शरीफ़ अपने जल्वे लुटा रहा है। सुफ़्फ़ा ज़मीन से आधा मीटर बुलन्द है जब कि इस की लम्बाई 12 मीटर और चोड़ाई 8 मीटर है और इस के अत़राफ़ में तक़रीबन दो फुट उंची पीतल की जाली का ख़ूबसूरत ह़िसार (या'नी जंगला) बना हुवा है, यहां ज़ाइरीन तिलावते क़ुरआने मुबीन भी करते हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं। येही वोह मक़ाम है जहां फ़ुक़राए मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का एक गुरौह इस्लामी ता'लीम के ह़ुसूल और तत़हीरे क़ुलूब (या'नी दिलों की पाकीज़गी के ह़ुसूल) की ख़ात़िर सुब्ह़ो शाम क़ियाम पज़ीर रहता था। इन की ता'दाद 70 और 400 के दरमियान रही है। **ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जब कहीं से **स-दक़ा** ह़ाज़िर किया जाता तो अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के यहां भिजवा देते और अगर कहीं से हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा व नज़राना) ह़ाज़िरे ख़िदमत होता तो ख़ुद भी तनावुल फ़रमाते और **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी शरीक फ़रमा लेते। इल्मे दीन के येह शाइक़ीन निहायत सादा और ग़रीब व मिस्कीन हुवा करते थे। इन्हीं में से एक मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

बयान फ़रमाते हैं : मैं ने 70 **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** को देखा कि उन के पास चादर तक न थी फ़क़त़ तहबन्द था या कम्बल जिसे अपनी गर्दन में बांध कर लटका लेते थे और वोह भी इस क़दर छोटा होता कि किसी की आधी पिन्डलियों तक पहुंचता और किसी के टख़्नों तक और हाथ से इसे थामे रहते कि कहीं सित्र खुल न जाए। (بخاری ج۱ ص۱۲۹ حدیث٤٤٢) सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाया करते थे : क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! कि मैं बसा अवक़ात भूक की शिद्दत के बाइ़ष अपना शिकम (या'नी पेट) और सीना ज़मीन पर लगा देता और बा'ज़ अवक़ात पेट पर पथ्थर बांध लेता ताकि सीधा खड़ा हो सकूं। (بخاری ج٤ ص ٢٣٤ حدیث ٦٤٥٢)

जनाबे **रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन इ़ल्मे दीन के आ़शिक़ीन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते हुए अपने वज्द आफ़रीन कलिमात से नवाज़ते हुए उन से फ़रमाया : अगर तुम्हें मा'लूम हो जाए कि रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कैसे कैसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं तो तुम तमन्ना करते कि काश ! फ़क़्रो फ़ाक़े का येह सिलसिला और त़वील हो जाए। (ترمذی ج٤ ص١٦٢ حدیث٢٣٧٥)

जुस्तुजू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे
हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 144)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मसाजिदे मदीना

मदीनए मुनव्वरा زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً और इस के गिर्दो नवाह़ में **मुतअ़द्दिद** ऐसी मसाजिद हैं जो **अल्लाह** के मह़बूब, फ़ातिहुल कुलूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब हैं। इन में अकषर के निशानात ख़त्म हो चुके हैं। ताहम हुसूले बरकत के लिये चन्द का ज़िक्र किया जाता है ताकि ज़ाइरीने आ़शिक़ीन इन्हें तलाश कर के जहां जहां मस्जिदें मिलें वहां नफ़्लें पढ़ें और जहां आषार न पाएं वहां ब निगाहे ह़सरत फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर के बरकत ह़ासिल करें और वहां दुआ़एं मांगें कि जहां जहां सुल्त़ाने कौनो मकां صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई है वहां दुआ़ क़बूल होती है। **मोह़क़्क़िक़े अ़लल इत़लाक़, ख़ातिमुल मोह़द्दिषीन** ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इश्क़ो मस्ती में डूब कर कितनी प्यारी बात कही है कि "अरबाबे बसीरत (या'नी दिल की नज़र रखने वाले) येह जानते हैं कि इन (मक्के मदीने के) पहाड़ों और वादियों में अषरे जमाले मुह़म्मदी और ज़ुहूरे कमाले अह़मदी से किस क़दर नुरानिय्यत ज़ाहिर हो रही है! बेशक इस का सबब यही है कि इन तमाम जगहों में कोई भी ऐसा ज़र्रा नहीं जिस पर नज़रे मुबारक न पड़ी हो और वोह दीदारे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से शरफ़याब न हुवा हो। (جذب القلوب ص ۱٤۸)

आ के मैं रूह़ की हर तह में समो लूं तुझ को
ऐ हवा तू ने सरकार को देखा होगा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

﴾1﴿ मस्जिदे क़ुबा

मदीनए तृय्यिबा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا से तक़रीबन तीन किलो मीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ "क़ुबा" नामी एक क़दीमी गाउं है जहां येह **मुतबर्रक** मस्जिद बनी हुई है, क़ुरआने करीम और अह़ादीषे सह़ीह़ा में इस के फ़ज़ाइल निहायत एहतिमाम से बयान फ़रमाए गए हैं। **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरमियानी चाल से चल कर तक़रीबन 40 मिनट में आ़शिक़ाने रसूल मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते को कभी पैदल तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे क़ुबा** तशरीफ़ ले जाते थे। (بُخاری ج ١ ص ٤٠٢ حديث ١١٩٣)

उ़मरे का षवाब

दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

﴾1﴿ मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना "उ़मरे" के बराबर है

(ترمذی ج١ص٣٤٨ حديث٣٢٤)

﴾2﴿ जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे क़ुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी तो उसे "उ़मरे" का षवाब मिलेगा।

(ابنِ ماجه ج٢ ص١٧٥ حديث١٤١٢)

फ़ारूक़े आ'ज़म और क़ुबा

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنهُ मस्जिदे क़ुबा में दाख़िल हुए तो इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! मुझे इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ पढ़ने के बा'द चार रक्अ़तें

मिम्बरे रसूल

सुफ़्फ़ा शरीफ़

मस्जिदे क़ुबा

ख़म्सा (या सबआ़) मसाजिद

पढ़ने से ज़ियादा महबूब है, और अगर येह मस्जिद दूर-दराज़ अ़लाक़े में होती तब भी हम ऊंटों के जिगर फ़ना कर देते (या'नी इस की ज़ियारत के लिये हम ज़रूर सफ़र करते)। (كنزالعمال ج٧ص٦٢حديث٣٨١٧٤)

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और क़ुबा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में ह़ाज़िर होते थे। (مسلم ص٧٢٤حديث١٣٩٩)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾2﴿ मस्जिदे फ़ज़ीख़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे क़ुबा से मशरिक़ी जानिब एक किलो मीटर के फ़ासिले पर है। जब लश्करे इस्लाम ने बनी नुज़ैर का मुह़ासरा किया था, उस वक़्त शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ख़ैमा यहीं लगाया गया था और इस मक़ाम पर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने 6 दिन नमाज़ें अदा फ़रमाई थीं। (وفاء الوفاء ج٣ص٨٢١) इस की यादगार में येह मस्जिद बनाई गई। बा'ज़ लोग ग़लत़ फ़हमी के सबब इस को "मस्जिदे शम्स" कहते थे। ऑगष्ट 2001 ई. में येह मुबारक मस्जिद शहीद कर दी गई, कुछ अ़र्सा मलबा शरीफ़ तशरीफ़ फ़रमा रहा फिर वोह भी उठा लिया गया, जगह हमवार हो गई और अ़लाक़े के लोगों की गाड़ियों की पार्किंग की जगह बन गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾3﴿ ख़म्सा (या सब्आ़) मसाजिद

मदीनए तृय्यिबा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا के शिमाल मग्रिबी तरफ़ सल्अ़ पहाड़ के दामन में पांच मस्जिदें एक दूसरे के क़रीब क़रीब वाक़ेअ़ हैं। दर अस्ल यहां पहले सात मसाजिद हुवा करती थीं। अ़रबी में सात को "सब्अ़" कहते हैं लिहाज़ा येह अ़लाक़ा "सब्अ़ मसाजिद" के नाम से जाना जाता था। कुछ साल क़ब्ल दो मसाजिद शहीद कर के वहां लारी अड्डा, दुकानें और पार्किंग एरिया वग़ैरा की तरकीब कर ली गई। चूंकि अब पांच मस्जिदें रह गई हैं और अ़रबी में पांच को "ख़म्सा" कहते हैं इस लिये आहिस्ता आहिस्ता येह मक़ाम "**ख़म्सा मसाजिद**" के नाम से मशहूर हो गया। इन पांच में से एक मस्जिद ब नाम "**मस्जिदुल फ़त्ह़**" टीले पर वाक़ेअ़ है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ियां भी मौजूद हैं। "ग़ज़्वए अह़ज़ाब" के मौक़अ़ पर (जिसे ग़ज़्वए ख़न्दक़ भी कहा जाता है) हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदुल फ़त्ह़ के मक़ाम पर पीर, मंगल, बुध तीन दिन मुसलमानों की फ़त्ह़ो नुस्रत के लिये दुआ़ फ़रमाई, तीसरे दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान फ़त्ह़ की बिशारत मिली और ऐसी फ़त्हे कामिल ह़ासिल हुई कि इस के बा'द हमेशा कुफ़्फ़ार मग़्लूब (या'नी दबे हुए) रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنهُ फ़रमाते है : "जब मुझे मुश्किल पेश आती है तो "मस्जिदे फ़त्ह़" में जा कर दुआ़ मांगता हूं तो मुश्किल ह़ल हो जाती है।" मस्जिदुल फ़त्ह़ के

इलावा दीगर छे मस्जिदों के नाम येह हैं : (1) मस्जिदे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (येह अस्ल में मस्जिदे अ़ली बिन अबी त़ालिब है) (2) मस्जिदे सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (शहीद हो चुकी है) (3) मस्जिदे सय्यिदुना अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم येह माज़िये क़रीब में मस्जिदे अबू बक्र सिद्दीक़ के नाम से जानी जाती थी अब शहीद कर दी गई है (4) मस्जिदे सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (येह मस्जिद दौरे सह़ाबा में न थी, इस की कोई तारीख़ मन्क़ूल नहीं, कहा जाता है कि 1329 हि. (1911) के बा'द बनाई गई है) (5) मस्जिदे सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (6) मस्जिदे अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (शहीद हो चुकी है ।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《4》 मस्जिदे ग़मामा

मक्कए मुकर्रमा زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا या जद्दा शरीफ़ से जब **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا आते हैं तो **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आने से क़ब्ल ऊंचे क़ुब्बों (गुम्बदों) वाली एक निहायत ही ख़ूब सूरत मस्जिद आती है येही "मस्जिदे ग़मामा" है। हमारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सि. 2 हि. में पहली बार ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा की नमाज़ इस मक़ाम पर खुले मैदान में अदा फ़रमाई है । यहीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारिश के लिये दुआ़ फ़रमाई, दुआ़ फ़रमाते ही बादल घिर गए और बारिश बरसनी शुरूअ़ हो गई। "बादल"

को अ़रबी ज़बान में **ग़मामा** कहते हैं इसी निस्बत से इसे अब **मस्जिदे ग़मामा** कहते हैं। यहां खुला मैदान था, पहली सदी के मुजद्दिद, **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने यहां मस्जिद ता'मीर करवा दी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾5﴿ मस्जिदे इजाबा

येह मस्जिद मुबारक **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا की क़दीम तरीन 9 मसाजिद में से एक है जो कि शारेए़ मलिक फ़ैसल (**पुराना नाम** शारेए़ सित्तीन या पहले त़रीक़े दाइरी Round about) पर जन्नतुल बक़ीअ़ की शिमाल मशरिक़ी जानिब (शारेए़ सित्तीन और शारेए़ मलिक अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के चौक की उलटी त़रफ़) वाक़ेअ़ है। इस मक़ाम पर एक बार हमारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और "तीन दुआ़एं" फ़रमाईं इन में से दो क़बूल हुईं और एक से रोक दिया गया। वोह तीन दुआ़एं येह थीं :

(1) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत क़ह़त़ साली के सबब हलाक न हो। (क़बूल हुई)

(2) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत पानी में डूब कर हलाक न हो। (क़बूल हुई)

(3) या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत आपस में न लड़े। (रोक दिया गया) (مُسلِم ص١٥٤٤ حديث٢٨٩٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

《6》 मस्जिदे सुक़्या

येह मस्जिद शरीफ़, अ़जाइब घर के क़रीब **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً के रेल्वे स्टेशन के इहाते में है, **मस्जिदे सुक़्या** उस तारीख़ी मक़ाम पर बनाई गई थी जहां येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ हुवा था चुनान्चे **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काइनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم बयान करते हैं : सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में हम **मदीनए तय्यिबा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً से निकले। जब सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنهُ के हर्रतुस्सुक़्या के क़रीब पहुंचे तो आप صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी त़लब फ़रमाया, वुज़ू कर के क़िब्ला रू खड़े हो कर अहालियाने मदीनए बा सकीना زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً के लिये इस त़रह़ ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! इब्राहीम तेरे बन्दे और ख़लील थे, उन्हों ने मक्के वालों के लिये बरकत की दुआ़ फ़रमाई थी और मैं तेरा बन्दा और रसूल हूं तुझ से अहले मदीना के लिये दुआ़ करता हूं कि इन के **मुद** और **साअ़** (येह दो पैमानों के नाम हैं, इन) में अहले मक्का की निस्बत दो गुना बरकत अ़त़ा फ़रमा। (تِرمِذی ج٥ ص٤٨٢ حديث٣٩٤٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ मस्जिदे सजदा

"मस्जिदे सजदा" उस मुक़द्दस मक़ाम पर वाक़ेअ़ है जहां एक मशहूर वाक़िआ़ हुवा था। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" सफ़ह़ा 496 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **शहनशाहे** ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सजदे में तशरीफ़ ले गए, आप ने सजदा इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रूहे मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो ! चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा, जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ? : मैं ने जवाबन अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : जिब्रईले अमीन (عَلَیۡہِ السَّلَام) ने मुझ से कहा : "क्या आप (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को येह बात ख़ुश नहीं करती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाउंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल फ़रमाउंगा।" (مسند احمد ج ۱ص ۴۰۶ حدیث ۱۶۶۲)

बत़ौरे यादगार इस मक़ामे पुर अन्वार पर "**मस्जिदे सजदा**" बना दी गई थी। आज कल वोह जदीद ता'मीर के साथ मौजूद तो है मगर वहां आवेज़ां तख़्ती पर "मस्जिदे अबू ज़र" लिखा हुवा है।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿8﴾ मस्जिदे ज़िबाब (या मस्जिदे राया)

"**षनिय्यतुल वदाअ़**" से जबले उहुद की त़रफ़ जाते हुए उलटे हाथ पर **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً से शिमाल (NORTH) की त़रफ़ "ज़िबाब" नामी पहाड़ पर ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर या बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ "ग़ज़्वए ख़न्दक़" के मौक़अ़ पर **सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ैमा शरीफ़ नस्ब किया गया था। रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "जबले ज़िबाब" पर नमाज़ भी अदा फ़रमाई है। (جذب القلوب ١٣٦، ١٣٧، وفاء الوفاء ج٢ ص ٨٤٥)

इस मुबारक पहाड़ पर **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز ने बतौरे यादगार एक मस्जिद बनाई जिसे "मस्जिदे ज़िबाब" या "मस्जिदे राया" कहा जाता है। इसे माज़ी में मस्जिदे क़रैन और "मस्जिदे ज़ाविया" के नाम से भी पुकारा जाता था।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿9﴾ मस्जिदे ऐ़नैन

येह मस्जिद शरीफ़ मज़ारे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दरवाज़ए मुबारका के सामने जानिबे क़िब्ला वाक़ेअ़ पहाड़ "जबलुर्रुमात" पर वाक़ेअ़ थी, उहुद के दिन लश्करे इस्लाम के तीर अन्दाज़ इस पर खड़े थे। कहते हैं, सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ | मस्जिदे क़िब्लतैन

मक़ामे इब्राहीम | हज्रे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेहराबे नबवी | मिम्बरे रसूल

को इसी मक़ाम पर बरछी लगी थी। सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मअ़ सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان वहां मुसल्लह़ नमाज़ अदा फ़रमाई थी।"

(وفاء الوفاء ج۲ ص ۸۴۸-۸۴۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ मस्जिदे मश्रबा उम्मे इब्राहीम

येह मस्जिद शरीफ़ ह़र्रए शरक़िय्या के क़रीब नख़्लिस्तान (या'नी खजूर के बाग़) में वाक़ेअ़ थी। **मश्रबा** या'नी बाग़ और **उम्मे इब्राहीम** से मुराद **उम्मुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना मारिया क़िब्तिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हैं, येह इन ही का बाग़ था और ह़क़ीक़ी मदनी मुन्ने, आ़शिक़ाने रसूल की आंखों के तारे, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दुलारे ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की विलादते बा सआ़दत यहीं हुई थी। **सरकारे मदीना** صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का यहां **नमाज़** पढ़ना षाबित है। (جذب القلوب ص ۱۲۷)

आज कल येह मुक़द्दस **मश्रबा** या'नी मुबारक बाग़ क़ब्रिस्तान बना हुवा है और इसे चार दीवारी में बन्द कर दिया गया है और यहां आ़शिक़ाने रसूल का दाख़िला मम्नूअ़ है, क़ब्रिस्तान के दरमियान एक छोटी सी क़दीम मस्जिद है जिस के सेह़्न में एक निहायत ही ख़स्ताह़ाल कुंवां है। एक मुअर्रिख़ का बयान है : "मुझे जब भी दाख़िले में काम्याबी मिली, मैं ने इस मस्जिद में

मस्जिदे मश्रबा उम्मे इब्राहीम

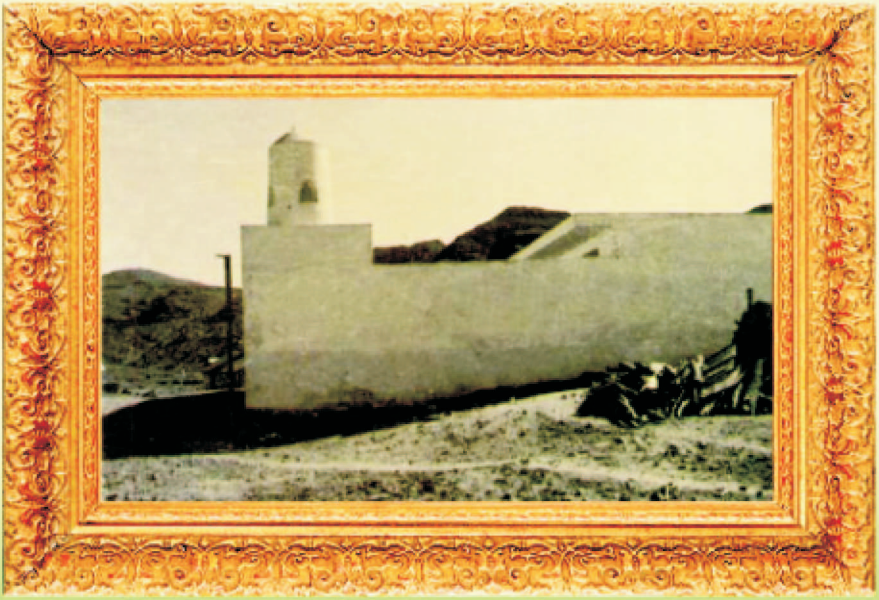

मस्जिदे बनी ह़राम

मस्जिदे ग़मामा

मस्जिदे इजाबा

तदफ़ीन का सामान पाया है !" मौजूदा चार दीवारी के बाहर पुरानी तर्ज़ की एक बिग़ैर छत की मस्जिद बना दी गई है। एक मुह़क़्क़िक़ का कहना है कि इस की कोई तारीख़ी हैषिय्यत नहीं अस्ल मस्जिद शरीफ़ मशरबा (या'नी बाग़ शरीफ़) के अन्दर ही है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾11﴿ मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा

येह मस्जिद शरीफ़ ह़र्रए शरक़िय्या के पास "मस्जिदे शम्स" से काफ़ी फ़ासिले पर जानिबे मशरिक़ (EAST) मस्जिदे फ़ज़ीह़ और मशरबए उम्मे इब्राहीम के दरमियान वाक़ेअ़ थी। **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बनू क़ुरैज़ा के मुह़ासरे के दौरान इस मस्जिद को नमाज़ के लिये मुक़र्रर किया था। (فتح الباری ج٨ص١٠٦)

एक रिवायत के मुताबिक़ "**मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा**" उस मुक़द्दस मक़ाम पर बनाई गई थी जहां 5 हिजरी (627 ई.) में "**ग़ज़्वए बनू क़ुरैज़ा**" के मौक़अ़ पर मह़बूबे रब्बे अ़र्श صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये "अ़रीश" (या'नी धूप से बचने के लिये साइबान) नस्ब किया गया था। एक रिवायत के मुताबिक़ क़रीब ही एक ख़ातून का घर था जिस में सरकारे मदीना صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **नमाज़** अदा फ़रमाई थी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने तौसीअ़ के दौरान इस मुबारक मकान को भी मस्जिद शरीफ़ में शामिल कर लिया था। (جذب القلوب ص١٢٦)

अब उस मस्जिदे बनू क़ुरैज़ा की ज़ियारत नहीं हो सकती। **आह!** उस मुक़द्दस मक़ाम पर पिछले सालों "वर्कशोप" बनी हुई देखी गई थी ! वहां की फ़ज़ाओं को ह़सरत से चूमिये और इ़श्क़े रसूल में दिल जलाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾12﴿ मस्जिदुन्नूर

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन ह़ुज़ैर और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُما दोनों दरबारे रिसालत से काफ़ी रात गुज़रने के बा'द अपने घरों को रवाना हुए। अन्धेरी रात में जब रास्ता नज़र नहीं आया तो अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन ह़ुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **लाठी रोशन** हो गई और येह दोनों उस की रोशनी में चलते रहे। जब दोनों का रास्ता अलग अलग हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की **लाठी** भी रोशन हो गई और दोनों अपनी अपनी लाठी शरीफ़ की रोशनी में अपने अपने घर पहुंच गए। (مسند امام احمد ج ٤ ص ٢٧٧ حديث ١٢٤٠٧)

जिधर दोनों सह़ाबी जुदा हुए थे वहां या'नी **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के शिमाल मशरिक़ी ह़िस्से में जन्नतुल बक़ीअ़ के उस पार जहां क़बीला बनी अ़ब्दुल अशहल आबाद था पहली सदी हिजरी के मुजद्दिद **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने "मस्जिदुन्नूर" ता'मीर करवाई थी। अब उस की ज़ियारत नहीं हो सकती, **आशिक़ाने रसूल** सिर्फ़ फ़ज़ाएं चूम कर बरकतें ह़ासिल करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾13﴿ मस्जिदे फ़स्ह़

जबले उहुद के दामन में “शअ़बे जर्रार” की जानिब एक छोटी सी मस्जिद है। ग़ज़्वए उहुद के मशहूर व मा'रूफ़ कमसिन मुजाहिद ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां चन्द नमाज़े अदा की थीं। (تاریخ المدینۃ المنورہ لابن شبه ج ۱ ص ۵۷) **मत़री** के क़ौल के मुत़ाबिक़ “ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें यहां अदा फ़रमाई थीं।” (وفاء الوفاء ج ۳ ص ۸۴۸)

बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के नज़दीक ग़ज़्वए उहुद में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ख़्महाए मुबारका यहां धोए गए थे इस लिये येह “मस्जिदे ग़ुस्ल” के नाम से भी जानी जाती थी। सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ ने बहुत साल पहले उस मक़ाम पर मस्जिद का एक खन्डर देखा था जिस के गिर्द लोहे के ख़ारदार तार लगे हुए थे। ग़ालिबन येह “मस्जिदे फ़स्ह़” ही थी। इस मस्जिद शरीफ़ की ज़बूंह़ाली ख़ून के आंसू बहाने का मक़ाम है कि येह हमारे मक्की मदनी सरकार, राह़ते क़ल्बे बे क़रार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सजदा गाह की यादगार है। ख़ुदा जाने अब वोह खन्डर भी बाक़ी है या नहीं !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ मस्जिदे बनी ज़फ़र (या मस्जिदे बग़्ला)

जन्नतुल बक़ीअ़ के शरक़ी जानिब (या'नी EAST में) हर्रए शरक़िय्या की त़रफ़ "औस" नामी क़बीले की एक शाख़ "कबीलए बनी ज़फ़र" आबाद था, येह "मस्जिदे बनी ज़फ़र" वहां थी, इसे मस्जिदे बग़्ला (या'नी ख़च्चर वाली मस्जिद) भी कहा जाता है। वहां **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक चट्टान पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से तिलावत सुनी थी, और इस क़दर रोए थे कि दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो गई थी। (معجم کبیر ج۹ص۲۴۳حدیث۸۴۶۰) वोह चट्टान मुबारक तबर्रुकन मस्जिद में रखी गई थी, **आ़शिक़ाने रसूल** उस की ज़ियारत से अपनी आंखें ठन्डी करते थे। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि बे औलाद औरतें उस पर बैठ कर दुआ़ करतीं तो औलाद की ने'मत से सरफ़राज़ हो जाती थीं। (جذب القلوب ص۱۲۸) वहां और भी तबर्रुकात थे, जिन में एक पथ्थर शरीफ़ पर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **सुवारी के ख़च्चर** के सुम (या'नी खुर) मुबारक का निशान था, एक पथ्थरे मुनव्वर पर बे कसों के यावर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की कोहनी मुबारक और मुक़द्दस उंगलियों के निशानात थे। (ایضاً)

अफ़सोस न अब उस मस्जिद की इमारत रही न ही तबर्रुकात। **आ़शिक़ाने रसूल** सिर्फ़ वहां की फ़ज़ाओं की ज़ियारत फ़रमाएं, दिल जलाएं और हो सके तो आंसू बहाएं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ मस्जिदे माइदा

मस्जिदे बनी ज़फ़र के क़रीब ही "मस्जिदे माइदा" वाक़ेअ़ थी। मन्क़ूल है येह उसी मक़ाम पर बनी थी जिसे सुल्ताने कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नजरान के नसरानियों के साथ मुबाहले के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था और जिस जगह सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये लकड़ियां गाड़ कर अपनी चादर तान कर साइबान खड़ा किया था और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अहले बैत के हमराह वहां तशरीफ़ लाए थे। एक तारीख़ी रिवायत के मुताबिक़ इस मक़ाम पर आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और अहले बैते अत्हार के लिये जन्नत से "**पांच पियालों**" में खाना नाज़िल हुवा था। इस लिये इसे "**मस्जिदे पन्ज पियाला**" भी कहते हैं। यहां आ़शिक़ाने रसूल ने बतौरे यादगार गुम्बद बनाए थे।

सि. 1400 हि. में सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ ने इस मुक़द्दस मक़ाम के खन्डर की ज़ियारत की थी, गुम्बद वग़ैरा मौजूद नहीं थे और येह लिखते वक़्त फ़ज़ाओं के सिवा कुछ नहीं बचा। **आ़शिक़ाने रसूल** के लिये उन फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर के इ़श्क़े रसूल में दिल जलाना भी बहुत बड़ी सआ़दत है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ़ | मस्जिदे शैख़ैन

मक़ामे इब्राहीम | ग़ारे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेहराबे नबवी | मिम्बरे रसूल

﴾16﴿ मस्जिदे बनी ह़राम

येह मस्जिद शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के उसी मकाने आ़लीशान की जगह पर आ़शिक़े रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیز ने बनवाई थी जहां सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के येह तीन मो'जिज़ात ज़ाहिर हुए थे :

﴾1﴿ एक बकरी में बहुत सारे (एक रिवायत के मुत़ाबिक़ 1500) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का पेट भर गया था।

﴾2﴿ सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हड्डियों पर दस्ते मुबारक रख कर कुछ पढ़ा तो बकरी ज़िन्दा हो गई थी।

﴾3﴿ सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ौत शुदा दो मदनी मुन्ने सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ज़िन्दा हो गए थे। *(इन ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त की तफ़सील "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 345 ता 349 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)*

इसी मकाने अ़ज़ीमुश्शान में सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक नमाज़ भी अदा फ़रमाई थी। येह मस्जिद शरीफ़, **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ख़म्सा मसाजिद जाते हुए "अस्सीह़" के अ़लाक़े में सड़क के सीधे हाथ पर उस बस्ती के अन्दर वाक़ेअ़ है जो कि जबले सिल्अ़ के दामन में आबाद है। सि. 1409 हि. में क़दीम बुन्यादों पर यहां शानदार मस्जिद बना दी गई है मगर बाहर मुल्कों से आए हुए हुज्जाज व मो'तमिरीन अकषर इस के दीदार से मह़रूम ही रहते हैं क्यूंकि इसे आबादी के अन्दर जा कर तलाश करना दुशवार है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ मस्जिदे शैख़ैन

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ पर जाते हुए उलटे हाथ पर दूर ही से येह मस्जिद शरीफ़ नज़र आ जाती है। इस मुबारक मक़ाम को बहुत सारी मदनी निस्बतें ह़ासिल हैं मषलन ﴾1﴿ ग़ज़्वए उहुद के लिये जाते हुए सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां पहला पड़ाव फ़रमाया और रात का कुछ ह़िस्सा गुज़ारा था ﴾2﴿ यहां आक़ाए मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक या दो नमाज़ें अदा फ़रमाई थीं ﴾3﴿ इसी जगह जिस्मे पुर अन्वार पर हथयार और ज़िर्हें सजाई थी ﴾4﴿ यहां जंगी तय्यारियों का मुआ़यना और मुजाहिदीन का इन्तिख़ाब फ़रमाया था और कई मदनी मुन्नों को वापस लौटाया था ﴾5﴿ यहीं मदनी मुन्ने ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ बड़े नज़र आने के लिये पाऊं की उंगलियों पर खड़े हो गए थे तो बारगाहे रह़मत से इजाज़त मिल गई थी, इस पर एक और मदनी मुन्ने सय्यिदुना **समुरा बिन जुन्दुब** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की थी कि मैं राफ़ेअ़ से ज़ियादा त़ाक़तवर हूं, फिर दोनों में कुश्ती हुई और समुरा ग़ालिब आ गए थे और साथ चलने की इजाज़त पा गए थे। इस मस्जिद शरीफ़ को "**मस्जिदुश्शैख़ैन**" कहने की वजह येह है कि यहां एक बूढ़े अन्धे यहूदी और अन्धी यहूदन बूढ़िया के जुदा जुदा दो क़ल्ए थे। बूढ़े को अ़रबी में "**शैख़**" कहते

हैं इस वजह से वोह आबादी दो बूढ़ों के सबब "**शैख़ैन**" के नाम से मशहूर थी। इस मस्जिद शरीफ़ के और भी नाम हैं : (1) मस्जिदे दिर्अ़ (2) मस्जिदे बदाइअ़ और (3) मस्जिदे अ़दवी।

आज कल अवक़ाफ़े मदीना की त़रफ़ से जदीद त़र्ज़ पर ता'मीर कर के इस का नाम "मस्जिदे ख़ैर" रखा गया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾18﴿ मस्जिदे मिस्तराह़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे शैख़ैन से थोड़े ही फ़ासिले पर उहुद शरीफ़ की त़रफ़ जाते हुए ऐन सड़क पर वाक़ेअ़ है। इब्तिदाए इस्लाम में इसे "मस्जिदे बनी ह़ारिषा" कहा जाता था क्यूंकि वहां क़बीलए बनी ह़ारिषा (औसी) आबाद था। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ एक सह़ाबी (सय्यिदुना ह़ारिष बिन सा'द बिन उ़बैदुल ह़ारिषी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारी मस्जिद में नमाज़ अदा फ़रमाई थी।" (وفاء الوفاء ج۲ص۸۶۵)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए उहुद से वापसी पर यहां थोड़ी देर इस्तिराह़त या'नी आराम फ़रमाया था। इसी लिये इसे मस्जिदे मिस्तराह़ कहा जाता है। आज कल यहां आ़लीशान मस्जिद बनी हुई है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

मस्जिदे शैख़ैन

मस्जिदे मिस्तारह्

मस्जिदे मिस्बह् (या मस्जिदे बनी उनैफ़)

मस्जिदे जुमुआ़

《19》 मस्जिदे मिस्बह़ (या मस्जिद बनी उनैफ़)

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे क़ुबा के सामने वाले अ़लाक़े में वाक़ेअ़ है। मस्जिदे क़ुबा के सामने सर्विस रोड पर आबादी के अन्दर की त़रफ़ दाख़िल हों तो आगे चल कर "मुस्तव दआ़तुल ग़स्सान" के फ़ौरन बा'द एक ख़स्ता हाल मस्जिद शरीफ़ की ग़ैर मुसक़्क़फ़ (या'नी बिग़ैर छत के) चार दीवारी नज़र आती थी जिस के अत़राफ़ में मलबे का ढेर भी देखा गया है। (ख़ुदा जाने ता दमे तह़रीर वोह मस्जिद किस ह़ाल में है !) **क़बीलए बनी उनैफ़** के लोग यहां आबाद थे, इस मक़ाम पर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जम्अ़ हो कर सरकारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मक्का शरीफ़ से आमद का इन्तिज़ार किया करते थे, आख़िरे कार इन की मुराद बर आई और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ब सूरते हिजरत तशरीफ़ आवरी हो गई। इसी मक़ाम पर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत के बा'द **पहली नमाज़े फ़ज्र** अदा फ़रमाई थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《20》 मस्जिदे बनी ज़ुरैक़

बैअ़ते अ़क़बए अव्वल में ईमान लाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** के मह़बूब, फ़ातिहुल क़ुलूब صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के **मदीनए मुनव्वरा**

زادھااللّٰہ شرفًاوّ تعظیماً में वुरूदे मसऊ़द से क़ब्ल ही येह मस्जिद शरीफ़ बना ली थी और ईमान लाने वाले ह़ज़रात वहां नमाज़ पढ़ते और सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ को बारगाहे रिसालत से उस वक़्त तक का नाज़िल शुदा कुरआने करीम का जो ह़िस्सा इनायत हुवा था उस की तिलावत करते थे। सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم इस मस्जिद में दाख़िल हुए हैं। (وفاءالوفاج۲ص۸۵۷)

मस्जिदे ज़ुरैक़ मस्जिदे ग़मामा और मौजूदा कोर्ट के दरमियानी ह़िस्से में किसी जगह पर वाक़ेअ़ थी, आह ! इस तारीख़ी और मदीने की सब से पहली मस्जिद का अब कोई नामो निशान बाक़ी नहीं रहा। आ़शिक़ाने रसूल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वहां की फ़ज़ाओं को निगाहों से चूम कर बरकतें ह़ासिल करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾21﴿ मस्जिदे क़तीबा

मदीनए मुनव्वरा زادھااللّٰہ شرفًاوّ تعظیماً के अव्वलीन अन्सारी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ग़ज़्वए उहुद में शहीद हो गए। मुबारक लाश की आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ के मकाने आ़लीशान ही में तदफ़ीन की गई। बा'द में ख़ानदान वालों ने उस मकाने बरकत निशान पर इस त़रह़ मस्जिद ता'मीर की, कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ का मज़ारे पुर अन्वार सह़न में आ गया। सूफ़िय्याए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السّلام का मश्हूर सिलसिलए त़रीक़त "सनौसिया" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ही की औलाद से जारी

हुवा है। इस मस्जिद शरीफ़ के क़रीब उ़षमानियों (तुर्कों) ने अ़रिज़ी फ़ौजी बारकें बनवाई हुई थीं चूंकि अ़रबी में फ़ौजी बटालियन या यूनिट को "कतीबा" कहते हैं इस लिये वोह अ़लाक़ा "कतीबा" कहलाने लगा और इसी वजह से उस मस्जिद शरीफ़ को "मस्जिदुल कतीबा" कहा जाने लगा। येह मस्जिद मअ़ एक क़दीम मीनार इस तह़रीर से चन्द साल क़ब्ल तक बाक़ी थी, पन्ज वक़्ता नमाज़ों की भी तरकीब थी, अलबत्ता सद करोड़ अफ़सोस कि मज़ार शरीफ़ शहीद कर के फ़र्श हमवार कर दिया गया था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾22﴿ मस्जिदे बनी दीनार

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعالٰی عَنْهُ ने हिजरत के बा'द **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعْظِيْمًا में ख़ानदाने बनी दीनार बिन्नज्जार की एक ख़ातून से शादी फ़रमाई, एक बार उन्हों ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दा'वत पेश की और तशरीफ़ ला कर नमाज़ अदा कर के घर को मुनव्वर करने की इल्तिजा की। शरफ़े क़बूलिय्यत से सर फ़राज़ी मिली और वहां क़दम रंजा फ़रमा कर शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई। (وفاء الوفاء ج٢ص ٨٦٦) इसी मकाने आ़लीशान पर सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने बतौरे यादगार "मस्जिदे बनी दीनार" बनवाई।

बा'द में अ़लाक़ए बनी दीनार में धोबियों की आबादी हो गई, वहां धोबी धाट बन गए, जिस से वोह महल्ला "अ़लाक़ए ग़ुस्सालीन" मशहूर हुवा और येह मस्जिद, "मस्जिदे ग़ुस्सालीन" कहलाने लगी। आज कल इसे "मस्जिदे मुग़ैसला" कहते हैं। इस मस्जिद शरीफ़ का नया महल्ले वुक़ूअ़ या'नी पता : **महल्लतुल मालिह़,** मद्रसा अ़स्कलिया के पीछे आबादी में तक़रीबन आधा किलो मीटर अन्दर की त़रफ़ है। अब इस तारीख़ी मुतबर्रक मस्जिद के क़रीब जदीद सहूलतों से आरास्ता एक बड़ी मस्जिद बना दी गई है। जिस की वजह से इस मुबारक मस्जिद की त़रफ़ लोगों का रुजह़ान कम है और इस की अस्ल ह़ैषिय्यत पर गुमनामी की धुन्दलाहट छा रही है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾23﴿ मस्जिदे मीनारतैन

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़राम बिन सा'द बिन मुह़य्यिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मक़ाम पर नमाज़ पढ़ी थी। (وفاء الوفاء ج ٢ ص ٨٧٨ - ٨٧٩) आ़शिक़ाने रसूल ने बत़ौरे यादगार यहां "मस्जिदे मीनारतैन" ता'मीर फ़रमाई। इस का पता येह है : **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से शारेए़ अ़म्बरिय्या (क़दीम नाम शारेए़ मक्का) से हो कर वादिये अ़क़ीक़ की त़रफ़ जाएं तो तक़रीबन आधे किलो मीटर के फ़ासिले पर पेट्रोल पम्प आएगा, इस से थोड़ा सा आगे

सीधे हाथ पर एक खुला मैदान है जहां इस तह़रीर से क़ब्ल दूर ही से इस मस्जिद शरीफ़ के खन्डरात नज़र आ जाते थे। बक़ौल एक जदीद मुअर्रिख़ के उस मक़ाम पर अब एक बहुत बड़ी मस्जिद बनाने का मन्सूबा तय्यार हो गया है, जिसे "मस्जिदे मीनारतैन" ही के नाम से पुकारा जाएगा, मगर सद करोड़ अफ़सोस ! वोह ज़ाहिरन मुख़्तसर सी मस्जिद जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सजदा गाह बनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा था वोह ग़लत़ मन्सूबा-बन्दी से नई इमारत के सद्र दरवाज़े (मेन एन्टरन्स) के पास مَعَاذَاللّٰه जूते उतारने की जगह पड़ती है।

(इस तह़क़ीक़ को ता दमे तह़रीर कुछ साल गुज़र चुके हैं, हो सकता है नई मस्जिद अब बन चुकी हो)

मरी हुई बकरी

येह मशहूर वाक़िआ़ भी "मस्जिदे मीनारतैन" वाले मक़ाम की त़रफ़ गुज़रते हुए हुवा था। चुनान्चे एक मरतबा **शाहे ख़ैरुल अनाम**, साह़िबे गैसूए मुश्क फ़ाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हमराह इसी मक़ाम से गुज़र रहे थे। अचानक हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे मुबारका एक **मुर्दा बकरी** पर पड़ी जिस से बदबू आ रही थी, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नाक पर कपड़े डाल लिये जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस बकरी का अपने मालिक पर क्या अषर देखते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

येह क्या असर दिखा सकती है ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला के सामने येह दुन्या इस से भी हलकी है जितना येह बकरी अपने मालिक के लिये हलकी है।

(وفاء الوفاء ج۲ ص۸۷۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾24﴿ मस्जिदे जुमुआ़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे क़ुबा से **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ जाते हुए सीधे हाथ पर आती है। हिजरते मुबारका के मौक़अ़ पर क़ुबा शरीफ़ से फ़ारिग़ हो कर **महबूबे रब्बुल अनाम**, साहिबे गैसूए अम्बर फ़ाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मअ़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आ़ज़िमे मदीना हुए और येह जुलूस मुबारक जब "बनी सालिम" के अ़लाक़े से गुज़रा तो मक़ामी ह़ज़रात ने कुछ देर अपने यहां क़ियाम की इल्तिजा की, जो मन्ज़ूर कर ली गई। इसी दौरान नमाज़े जुमुआ़ का वक़्त आ गया, तो रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हमराह बा जमाअ़त पहली नमाज़े **जुमुअ़तुल मुबारक** अदा फ़रमाई। जहां नमाज़ अदा की गई वहां बा क़ाइदा मस्जिद बना ली गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾25﴿ मस्जिदे मि'रास

येह मस्जिद शरीफ़ मीक़ाते अहले मदीना "ज़ुल हुलैफ़ा" के क़िब्ले की जानिब हुवा करती थी। येह उस मक़्दस जगह पर

वाक़ेअ़ थी जहां शहनशाहे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً से वापसी पर रात गुज़ारी थी और आराम फ़रमाया था। अब इस मस्जिदे मुबारक की ज़ियारत नहीं हो सकती !

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

﴾26﴿ मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जुनूबे मग़रिब में तक़रीबन 9 किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। आज कल येह मक़ामे बीरे अ़ली या अबयारे अ़ली के नाम से मशहूर है और येह **अहले मदीनए मुनव्वरा की मीक़ात** है। मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा का पुराना नाम "मस्जिदे शजरा" है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً से "शजरा" के रास्ते से बाहर तशरीफ़ ले जाते और मुअ़र्रस के रास्ते से मदीने आते और जब **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً तशरीफ़ ले जाते तो "मस्जिदे शजरह" में नमाज़ पढ़ते थे और जब वापस तशरीफ़ फ़रमा होते तो ज़ुल हुलैफ़ा में नाले के बीच में नमाज़ अदा करते थे, वहीं रात भर क़ियाम रहता यहां तक कि सुब्ह होती। (بخاری ج۱ ص ۵۱٦ حدیث۱۵۳۳) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले ग़ैबदान

आक़ाए दो जहान صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुल हुलैफ़ा में रात बसर फ़रमाई और इस की मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। (مسلم ص٦٠٧حدیث ١١٨٨)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **ह़िज्जतुल वदाअ़** के लिये तशरीफ़ ले जाते वक़्त जुल हुलैफ़ा पहुंचे तो वहां मस्जिद में दो रक्अ़त पढ़ीं। (ایضاً ص٣٩٤،تاریخ المدینۃ المنورہ ص٥٠١۔٥٠٢) अब यहां ब नाम "मस्जिदे जुल हुलैफ़ा" एक आ़लीशान मस्जिद क़ाइम है।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾27﴿ मस्जिदे क़िब्लतैन

येह मुबारक मस्जिद **अल ह़र्रतुल वबरह (अल ह़र्रतुल ग़रबिय्यतु) में "वादिये अ़क़ीक़"** के "अल अ़रसा" नामी मैदान के क़रीब **वाक़ेअ़** है। मस्जिदे ख़मसा भी वहीं क़रीब ही वाक़ेअ़ हैं। "बीरे रूमा" (या'नी सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का कुंवां) **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا से जाते हुए इस मस्जिद शरीफ़ के दाएं (या'नी सीधी) जानिब है। हुज़ूरे पुरनूर, फ़ैज़े गन्जूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाई है। येह मस्जिदे मुक़द्दस "बनू सुलैम" के नाम से मुतआ़रफ़ थी क्यूंकि यहां क़बीलए बनू सुलैम आबाद था। हिजरत के सत्तरहवें महीने 15 रजबुल मुरज्जब सि. 2 हि. (जनवरी सि. 624 ई.) ब रोज़ शम्बा (या'नी हफ़्ते के रोज़) मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा

मस्जिदे क़िब्लतैन

जबले उहुद

मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा رضی اللہ تعالی عنہ

यहां पर अभी ज़ोहर की दो रक्अ़त अदा फ़रमाई थी कि तह़वीले क़िब्ला का हुक्म नाज़िल हो गया, बक़िया दो रक्अ़त बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के अदा फ़रमाईं। इस वजह से इस का नाम **मस्जिदे क़िब्लतैन** (या'नी दो क़िब्लो वाली मस्जिद) हुवा। बत़ौरे यादगार आ़शिक़ाने रसूल ने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ दीवार में क़िब्ले का निशान बना दिया था और इस में "आयाते तह़वीले क़िब्ला" नक़्श कर दी थी, आ़शिक़ीने ज़ाइरीन इस निशान को भी मस कर के बरकत ह़ासिल करते थे। अब वोह दीवार शरीफ़ हटा दी गई है और सद्र दरवाज़े की जानिब छत पर क़िब्लए अव्वल की सम्त के इज़्हार के लिये मुसल्ले का नक़्श बना दिया गया है।

जबले उहुद

जबले उहुद मदीनए मुनव्वरा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيمًا की जानिबे शिमाल वाक़ेअ़ येह एक निहायत ही मुक़द्दस पहाड़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू अ़ब्स बिन जब्र** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اُحُدٌ هٰذَاجَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ या'नी "येह उहुद पहाड़ हम से मह़ब्बत करता है और हम इस से मह़ब्बत करते हैं। (मज़ीद फ़रमाया :) और येह जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर है जब कि **ऐ़र** जो हम से दुश्मनी करता है और हम उसे दुश्मन समझते हैं, वोह जहन्नम के दरवाज़ो में से एक दरवाज़े पर है।" (مُعجَم اَوسط ج٥ص ٣٧حديث ٦٥٠٥)

जबले ऐ़र उहुद पहाड़ के सामने जुनूब (South) की त़रफ़ **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِيۡمًا के रास्ते में वाक़ेअ़ है जिसे सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दुश्मन क़रार दिया है। **मा'लूम** हुवा जमादात (या'नी ठोस चीज़ों) में भी **मह़ब्बत व अ़दावत** की कैफ़िय्यत पाई जाती है।

मज़ारे सय्यिदुना हारून

ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मज़ारे पुर अन्वार **जबले उहुद** पर वाक़ेअ़ है। मगर **अफ़सोस !** अब इस की ज़ियारत बेह़द मुश्किल है, पहाड़ के नीचे ही से "السلام علیک یانبیَّ اللّٰہ" अ़र्ज़ कर दीजिये।

मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ग़ज़्वए उहुद (सि. 3 ही.) में शहीद हुए थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार उहुद शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ है। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के मज़ारात भी हैं। नीज़ ग़ज़्वए उहुद में 70 सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने जामे शहादत नोश किया था। उन में से बेशतर शुहदाए उहुद भी साथ ही बनी हुई चार दीवारी में हैं।

बा'ज़ शुहदाए उहुद के मज़ारात की निशान दही

इन में से चन्द शुहदाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मुबारक क़ब्रें सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत गाह से "सय्यिदुश्शुहदा अमीरे ह़म्ज़ा स्कूल" की दूसरी जानिब एक छोटी सी घाटी पर हैं जिस के गिर्द तुर्कों ने एक चार दीवारी ता'मीर करवा दी थी। उस चार दीवारी को ह़ाल ही में मज़ीद बुलन्द कर दिया गया है। येह एक छोटा सा क़ब्रिस्तान है जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ , आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के एक गुलाम और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के एक भतीजे की मुबारक क़ब्रें हैं। पहली बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिनुल ह़राम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को इकठ्ठे एक क़ब्र में दफ़्न किया गया था, मगर जब तदफ़ीने नौ हुई तो इन को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा क़ब्रों में मुन्तक़िल किया गया। "वाक़िदी" के क़ौल के मुत़ाबिक़ इस क़ब्रिस्तान में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन ज़ैद, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन रबीअ़, ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दा बिन ह़स्ह़ास** رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن भी मदफ़ून हैं। (تاریخ المدینۃ المنورۃ لابن شبہ ج۱ ص۱۲۹)

इस के इ़लावा मज़ीद दो सह़ाबए किराम ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल यमन** और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ल्लाद बिन अ़म्र बिन जमूह़ भी वहीं आराम फ़रमा हैं। رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल के शुरूअ़ में क़ुबूरे शुहदाए उहुद पर आते और फ़रमाते : اَلسَّلاَمُ عَلَیۡکُمۡ بِمَاصَبَرۡتُمۡ فَنِعۡمَ عُقۡبَی الدَّارِ (या'नी सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला !)

(مصنف عبدالرزاق ج٣ص ٣٨١حديث ٦٧٤٥)

शुहदाए उहुद عَلَیۡھِمُ الرِّضْوَان को सलाम करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल करते हैं : जो शख़्स उन शुहदाए उहुद से गुज़रे और इन को सलाम करे येह क़ियामत तक उस पर सलाम भेजते रहते हैं । शुहदाए उहुद عَلَیۡھِمُ الرِّضْوَان और बिल ख़ुसूस मज़ारे सय्यिदुश्शुहदा सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से बारहा जवाबे सलाम की आवाज़ सुनी गई है । (جذب القلوب ص ١٧٧)

सय्यिदुना ह़म्ज़ा की ख़िदमत में सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَاسَیِّدَنَاحَمۡزَةُ ؕ اَلسَّلَامُ

तर्जमा : सलाम हो आप पर ऐ सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ । सलाम

عَلَیۡكَ یَاعَمَّ رَسُوۡلِ اللّٰهِ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَیۡكَ

हो आप पर ऐ मोह़तरम चचा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के, सलाम हो

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ | मस्जिदे शैख़ैन | मक़ामे इब्राहीम | ह़जरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे ह़िरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

يَا عَمَّ نَبِيِّ اللهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ

आप पर ऐ अ़म्मे बुज़ुर्गवार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

حَبِيْبِ اللهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ चचा

الْمُصْطَفٰى ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الشُّهَدَآءِ

मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के, सलाम हो आप पर ऐ सरदार शहीदों के

وَيَا اَسَدَ اللهِ وَاَسَدَ رَسُوْلِهٖ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

और ऐ शेर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के और शेर उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के, सलाम

يَا سَيِّدَنَا عَبْدَ اللهِ بْنَ جَحْشٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

हो आप पर ऐ सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ । सलाम हो आप पर

يَا مُصْعَبَ بْنَ عُمَيْرٍ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا

ऐ मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ । सलाम हो ऐ

شُهَدَآءَ اُحُدٍ كَآفَّةً عَآمَّةً وَّرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط

शुहदाए उहुद आप सभी पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और बरकतें ।

शुहदाए उहुद को मजमूई सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَآءُ يَا سُعَدَآءُ

तर्जमा : सलाम हो आप पर ऐ शहीदो ! ऐ नेक बख़्तो !

يَا نُجَبَآءُ يَا نُقَبَآءُ يَا اَهْلَ الصِّدْقِ وَالْوَفَاءِ ط

ऐ शरीफ़ो ऐ सरदारो ! ऐ मुजस्समे सिद्क़ो वफ़ा !

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا مُجَاهِدِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

सलाम हो आप पर ऐ मुजाहिदो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद का हक़ अदा करने वालो !

حَقَّ جِهَادِهٖ ط ﴿سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ ط﴾ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَآءَ

ख़ूब मिला सलाम हो ऐ शुहदाए

اُحُدٍ كَافَّةً عَامَّةً وَّرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط

उहुद आप सभी पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों ।

एक चुप सौ[100] सुख

तालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा का पड़ोस

28 शव्वालुल मुकर्रम, सि. 1433 ही.
16-9-2012

मस्जिदे ख़ैफ़ · मस्जिदे जिन्न · मस्जिदे जिइर्रानह · मस्जिदे निमरह · मस्जिदे ग़मामह · मस्जिदे जुमुआ · मस्जिदे शैख़ैन
मक़ामे इब्राहीम · हजरे अस्वद · ग़ारे सौर · ग़ारे हिरा · जबले उहुद · मेहराबे नबवी · मिम्बरे रसूल

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قراٰنِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	فردوس الاخبار	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت
درمنثور	دارالفکر بیروت	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر نسفی	دارالمعرفۃ بیروت	جامع صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر بغوی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر روح البیان	داراحیاء التراث العربی بیروت	کتاب الهواتف	المکتبۃ العصریۃ بیروت
تفسیرات احمدیہ	کوئٹہ	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	دلائل النبوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور	جامع الاصول	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح البخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	فتح الباری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن الترمذی	دارالفکر بیروت	شرح صحیح مسلم	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	شرح الزرقانی علی المؤطا	داراحیاء التراث العربی بیروت
مؤطا امام مالک	دارالمعرفۃ بیروت	فیض القدیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد بن حنبل	دارالفکر بیروت	مرقاۃ	دارالفکر بیروت
مشکوٰۃ المصابیح	دارالکتب العلمیۃ بیروت	لمعات التنقیح	مکتبۃ المعارف العلمیۃ مرکز الاولیاء لاہور
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	نزہۃ القاری	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور
مصنف عبدالرزاق	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تہذیب التہذیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت	الطبقات الکبریٰ لابن سعد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	الطبقات الکبریٰ للشعرانی	دارالفکر بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مواہب اللدنیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الترغیب والترھیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	وفاء الوفاء	داراحیاء التراث العربی بیروت

جذب القلوب	نوری بک ڈپو مرکز الاولیاء لاہور	عیون الحکایات	دارالکتب العلمیۃ بیروت
حجۃ اللّٰہ علی العلمین	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	روض الفائق	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شواہد الحق	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	روض الریاحین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الشفاء	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	رشفۃ الصادی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بستان المحدثین	باب المدینہ کراچی	لقط المرجان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ المدینۃ المنورہ لابن شبہ	دارالفکر ایران	غنیۃ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
تاریخ مدینہ دمشق	دارالفکر بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
اخبار مکہ	دار حضر بیروت	المسلک المتقسط فی المنسک المتوسط	باب المدینہ کراچی
تاریخ الاسلام	دارالکتاب العربی بیروت	رفیق المناسک	جامعہ اسلامیہ مدینۃ العلوم باب المدینہ کراچی
خصائص کبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بحرالعمیق	مؤسسۃ الریان بیروت
مدارج النبوت	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند	الحاوی للفتاوی	دارالفکر بیروت
سیرتِ عمر بن عبدالعزیز	المکتبۃ الوہبہ	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
العقد الثمین	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کتاب الحج	مکتبہ نعمانیہ ضیاء کوٹ سیالکوٹ
بحرالدموع	دارالفجر دمشق	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
رسالۃ القشیریۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہشت کی کنجیاں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
اخبار الاخیار	فاروق اکیڈمی گمبٹ	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مستطرف	دارالفکر بیروت	جنت میں لے جانے والے اعمال	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
التذکرۃ فی الوعظ	دارالمعرفۃ بیروت	بلد الامین	مکتبہ نظامیہ ساہیوال
قوت القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مدینۃ الرسول	مکتبہ نظامیہ ساہیوال
لباب الاحیاء	دارالبیروتی دمشق	سنی علماء کی حکایات	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور
احیاء العلوم	دار صادر بیروت	حیات محدث اعظم پاکستان	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الزواجر	دارالمعرفۃ بیروت	مخزنِ احمدی	ہند
احسن الوعاء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ	مہرِ منیر	نظریۂ پاکستان پرنٹرز مدینۃ الاولیاء ملتان
سرور القلوب	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور	پردے کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
انوار علمائے اہلسنت، سندھ	زاویہ پبلیشرز مرکز الاولیاء لاہور	الجامع اللطیف لابن ظہیرۃ	دار احیاء الکتب العربی مصر
انوارِ قطب مدینہ	برکاتی پبلیشرز باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ**" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

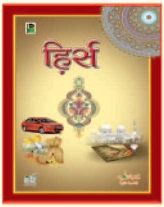

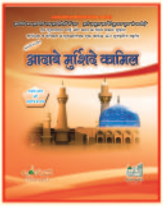

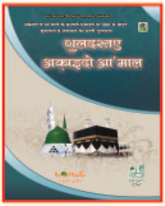

मक्तबतुल मदीना की शाखें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E- mail:maktabaahmedabad@gmail.com